CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसान्तर का वैविध्य

राम बदन राय

RajGuru Math, Shival... Collection, Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment- Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

B.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसान्तर का वैविध्य

श्रद्धेय स्वामी जी
राजगुरु मठ, वाराणसी
को
ससम्मान,

24.1.21

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसान्तर का वैविध्य

राम बदन राय

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ISBN 978-93-88799-49-2

रसान्तर का वैविध्य

© राम बदन राय

पहला संस्करण (सजिल्द) : 2020

मूल्य : 490.00 रुपए

प्रकाशक

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II

ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

फ़ोन : 0-9871856053

ई-मेल : antika56@gmail.com

वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : विनय अंबर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

RASAANTAR KA VAIVIDHYA by Ram Badan Ray

Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II

Ghaziabad-201005 (UP) India

Price : ₹ 490.00

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम शुभेच्छु
प्रियवर विशिष्ठ
सुधी साहित्यकार
डॉ. गजाधर शर्मा 'गंगेश'
को सादर-सप्रीति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रम

कृतित्व-व्यक्तित्व

भोजपुरी—भारती के भदंत भारवि वाणी विभव 'विधुर जी' 11
गँवईं साहित्य और विवेकी राय 14
पुनर्जागरण और प्रेमचन्द 18
भक्त भदंत विद्यापति की भक्ति-भावना 21
युग द्रष्टा भाषा कवि कबीर 24
वीणापाणि भगवती के भव्य प्रासाद—भगवती प्रसाद 27

आकलन

जायसी का प्रेम पयोधि पद्मावत 33
गोदान : गँवईं गुहार की गवेषणा 37
विवेकी राय विरचित 'सोनामाटी'—पूर्वांचल का टुकड़ा भर नरक 41
एक अजूबा ज़िंदगी की शोधपूर्ण शिनाख्त—'शैलूष' 48
मेरी राय में डॉ. राय की रम्य रचना 'श्वेत पत्र' 52
श्रीकृष्ण राय हृदयेश और उनका उत्कृष्ट काव्य सृजन सत्यासत्य 55
'महेंद्र मिश्र बनाम महेंदर मिसिर' : भगवती प्रसाद द्विवेदी 57

आज़ादी की आग

आज़ादी की आन : उग्र का योगदान 61
दहक रही मिट्टी स्वदेश की, खौल रहा गंगा का पानी 65
उठती जब नग्न तलवार है स्वतंत्रता की 68
गांधी जी और किसान आंदोलन 73

वनिताभूषण

बिहँसे भाल-अटारी बिंदिया 79
नयनाभिराम नथ—एक अकटा कथालाप 82

ललित लेख

खोलो मन का द्वार : सावन की मनुहार 89
कार्तिक की कमनीयता 92
होली जब दस्तक देती है... 96
रंग बरसे भींजे—मगर महज चुनर वाली ही नहीं 99
चितचोर चैत की चारू चितवनें 101

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाह रे बिनियाँ! बनाम उ.प्र. के पूर्वांचलीय गाँवों में ग़ज़ब की ग़रीबी 107
गँवईं साहित्य बनाम भोजपुरी लोक गीत 109

व्यंग्य-विनोद

उफ्, यह बेवफा बाढ़! 117
एक दोस्ती की दयनीय दास्तां 120
हाले होली, कमाले के.पी. 123
रहिमन सड़क बनाइए 126
अहम का वहम बनाम बाबूजी की फहम 129
हिंदी भाषायाम पी-एच.डी. प्रपंच 133

धार्मिक-पौराणिक

शिव परमात्मा की प्राचीनतम परिकल्पना 139
श्रीकृष्ण संपूर्णावतार क्यों? 142
कोहली की राम कथा 146
सिद्धाश्रम बनाम बक्सर 149

कथा-कहानी

प्लीज़ आप उसे पागल न समझें 155
यह कब कहा? 164
औकात 166
सुधार में सहयोग 167
यतीम 170
मेरा कुसूर क्या है? 172
झूठ क मोटरी 178
एक भोजपुरी हास्य कथा 178
प्रत्यावर्तन 182
मनुष्यत्व बोध 184
जूता और आदमी 185
प्यार और दीवार 186

घुमक्कड़ी

मेरी नज़रों में नेपाल-1979 193
चलते-चलाते—आइए आपको अपना घर घुमा दें 204

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृतित्व-व्यक्तित्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी—भारती के भदंत भारवि वाणी विभव 'विधुर जी'

आज से कुछ दशक पूर्व का एक दर्शनीय दृश्य—दँवरी नधी है। गेहूँ के बोझ खुल-छित्तर गए हैं। चूँकि तब ट्रेक्टर या थ्रेसर का जमाना नहीं था, अत: उसके पके-सूखे डंठलों को बैल अपने भारी-भरकम क्षिप्र खुरों से रौंद-कुचल रहे हैं।

—उस पीछे से बैलों को हाँक रहे गँवई-मनई को पहचान रहे हैं, आप? ज़रा ग़ौर से देखिए। हाँ-हाँ वही। खासा दुबला-पतला, थका-हारा, कुछ-कुछ क्षय रोग से आक्रांत जर्जर जिस्म। एक-दूसरे से कसकर चिपके सूखे सांवले होंठ। चेहरे पर पसरी एक सौम्य स्थित-प्रज्ञता। धोती-कुर्ता वाला सादा-सफेद लिबास। अरे यार! अब भी नहीं पहचाना! ख़ैर, मैं बता ही दे रहा हूँ। मगर हाँ, आइंदा ज़रूर ख़याल रखिएगा। ये सुयश मोह से दूर, निहायत संकोची, मित भाषी, निपट देहाती, बेइंतहा परिश्रमी, खांटी किसान, नर पुंगव, कवि-कोविद, भोजपुरी-भूषण, साहित्य शिरोमणि श्री राम बृक्ष राय 'विधुर' हैं। किन्तु क्या विधुर जी के विषय में आपके लिए सिर्फ़ इतना ही जान लेना काफ़ी है? जी नहीं।

उत्तर प्रदेशीय ग़ाज़ीपुर जिलान्तर्गत, मुहम्मदाबाद तहसील के मुड़ेरा गाँव में श्री राजपति राय के किसान परिवार में एक जनवरी, 1927 को जनमे श्री लेखमन राय के सुपुत्र, भोजपुरी भाषा के प्रवर प्रणेता, साहित्य के सुधी साधक, विज्ञ विदग्ध स्व. श्री विधुर जी को यदि सचमुच आप जानना ही चाहते हैं, तो विधुर विरचित कविता, कहानी तथा निबंधादि लिखी कृतियों का अवगाहन कीजिए। उनके भोजपुरी काव्य संग्रह 'झुरुकि बहे ना' की सरस कविताओं का रसास्वादन कीजिए। 'खैरा पीपर कबहुं न डोले' कथा संग्रह की रसीली कहानियों को चखिए-चखाइए। 'रंगभूमि में दो राम' तथा 'सत्यरथी' खण्ड काव्यों के अखण्ड आनंद से आप्लावित होइए। रामकथा की श्रृंगार सिक्त मनोहारी कृति 'सीता स्वयंवर' की सुरसरि-सुधा में गोते लगाइए।

राम बृक्ष 'विधुर' ने स्वयंवर शोभित सीता-सौंदर्य की जो रेखाएँ अपनी कुशल तूलिका से उकेरी हैं, सचमुच अपने आप में उत्कृष्ट कला का द्योतन करती हैं। हाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कंगन को आरसी क्या! दृष्टान्त सामने है—

पाँव महावर माथ पे रोरी, नैन बड़ा निक लागत बांके
सारी सोहाति सरीर के ऊपर, बूटे अनूप अनेकन टांके
कानन कुंडल लोल हिया बिच, सोहत सूधर मोतिन माला
बारहिं बार सिया मुख के, छबि चान अनेक निहारि लजाला
ऊपर नैन उठे ना लजाधुर, राम सिवा उर में केहु नाहीं
बादरि टारि हंसे बिजुरी, जस खेलत हास कि ओठन माहीं

भोजपुरी के सिद्धहस्त प्रणेता राम बृक्ष विधुर आजीवन कृषक कर्म के साथ–साथ काव्य प्रणयन करते हुए एकान्त साहित्य साधना में सम्पूर्ण समर्पित रहे। जिये जाते सामान्य जीवन की भाँति ही विधुर विरचित सृजन में भी सर्वत्र बोध गम्य सहजता मुखर हुई है। लोक गीत, लोक धुन, लोक जीवन, लोक साहित्य के साथ–साथ खड़ी बोली में भी आपकी निराली पैठ है। आपके विषय में विश्रुत विद्वान डॉ. विवेकी राय के उद्‌गार हैं—'अप्रस्तुतों की रूपवादी तामझाम और लक्षणा–व्यंजना अथवा वक्रोक्तियों की ऐंठी काव्य मुद्राओं से ऊबे काव्य रसिकों को निस्संदेह इनकी रचनाओं से आस्वादगत विराम मिलेगा। सहज मधुरता जिसे कहते हैं, कवि को ग्राम संस्कृति की विरासत के रूप में मिली है। शायद कवि का उपनाम मधु से मधुर की भाँति विधु से विधुर रूप में गृहीत है।'

जनपदीय (ग़ाज़ीपुर) भोजपुरी के भीष्म–पितामह वरेण्य विधुर जी के साहित्य में गाँव की गुलाबी गंध है। ऐसी सहज मिठास है जो अन्यत्र, कम से कम भोजपुरी साहित्य में अलभ्य है। आपने गाँव को बहुत क़रीब से भोगा है। पल–पल को रत्ती–रत्ती आत्मसात किया है। करइलांचल की उर्वरा माटी इसकी सोंधी सुगंध, आपके रग–रग में समायी हुई है। साँसों में रची–बसी है। इसीलिए इनकी लेखनी से गाँव–जवार की सच्ची तस्वीर रूपायित हुई है।

साहित्य जगत में प्रायः अचर्चित किन्तु भोजपुरी के शीर्षस्थ कवियों में निर्भ्रान्त पांक्तेय विधुर जी कभी भी यश प्रार्थी नहीं हुए। महानगरों, शहरों या क़स्बों में उनकी कृतियों पर कभी चर्चा नहीं हुई। वे चर्चित साहित्यकार विवेकी राय, राम विचार पाण्डेय, विंध्याचल राय 'अचल', चतुरी चाचा, पाण्डेय कपिल तथा सुन्दर ओझा आदि के समकालीन थे, और इनमें से किसी से भी कम प्रतिभा संपन्न न थे। सच पूछा जाय, तो वे अपने ढंग के अनूठे लेखक थे। बेसुध बनाम चतुरी चाचा और प्राध्यापक अचल के अनूठेपन से उनकी समानता ज़रूर की जा सकती है, जबकि ये तीनों अलग–अलग, क्रमशः व्यंग्यकार, कथाकार और कवि के रूप में ख्यात थे। ग़ाज़ीपुर के कनुआन नामक गाँव में एक बार उनका स्वागत–अभिनन्दन अवश्य हुआ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसमें इन पंक्तियों का लेखक भी विद्यमान था। किन्तु इसे उनके एकान्तिक जीवन का एक अपवाद ही समझा जाना चाहिए। पत्र-पत्रिकाओं में उन्हें समुचित रूप से उजागर नहीं किया गया, जिसके वे वास्तविक हक़दार थे। यही वजह है कि सन् सतहत्तर से पूर्व भोजपुरी अकादमी बिहार द्वारा प्रकाशित परिचायिका (बुकलेट) में विधुर जी का परिचय क्या, नाम तक न पाकर मुझे बड़ा क्षोभ हुआ।

विधुर जी ने साहित्य (कवि रूप) को अर्थ का साधन कभी नहीं बनाया। वे अपनी ईमानदार लेखनी के सहारे स्वान्तः सुखाय, निस्संग-निस्तरंग किसी छायादार पेड़ तले, किसी घनी बँसवार की छाँव में, कहीं पम्पिंग सेट (जल उगलने की मशीन) के टुटहे मकान में, टाट बिछी ज़मीन पर या मूंज से बुनी छोटी-पतली बँसखट पर, बीड़ी फुकफुकाते लिखते रहे। विशुद्ध रूप से गँवईं के मनई में जीते रहे। इस प्रकार यह मौन साधक आजीवन निस्पृह भाव से बहु जन हिताय, बहु जन सुखाय माँ सरस्वती की सेवा करते हुए गोलोकवासी हो गया। ऐसे तपः पूत, पूज्यपाद विधुर जी की पावन स्मृति को कोटिशः नमन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गँवई साहित्य और विवेकी राय

हिंदी साहित्य में संभवतः पहली बार भारतीय गाँवों को मुंशी प्रेमचंद ने अपनी ईमानदार आँखों से परखा था। पुस्तकों, पत्रिकाओं के माध्यम से शहरी वातावरण में भी गाँव-संसार सजीव हो उठा। राष्ट्रोद्धार के चक्कर में गांधी जी भी ग्रामीण गलियों का चक्कर लगा गए। अतः देश प्रेमियों के लिए गोदान बने गाँव और गाँवों का देश बना भारत। जिसके लिए पंत जी ने सर्टिफिकेट तैयार कर दिया 'भारत माता ग्राम वासिनी' लिखकर। फिर तो 'है अपना हिंदुस्तान कहाँ, वह बसा हमारे गाँवों में' का स्वीय (आत्मीय) अंतर्बोध बहुतों ने किया।

इसके बाद भी पूर्णता-उत्कृष्टता के शिखर पर पहुँचने का प्रायः श्रेय शहरी जीवन के साहित्य को ही मिला, जिसका भौतिक परिवेश, अधुनातन दृष्टिकोण, नए शब्द जाल लगभग ग्राम्य जीवन के साहित्य से अलग रहा। जहाँ मोड़ नहीं नुक्कड़ है, सोने-बैठने के कमरे नहीं, बेड रूम हैं ड्राइंग रूम हैं। सुबह की चाय बेड टी है। जहाँ व्यक्ति सामाजिक, चुस्त-फुर्तीला या तेज़ नहीं, सोशल स्मार्ट और फास्ट होता है। इस प्रकार जहाँ बेरोक-टोक उगते चले आ रहे कुछ बनैले अंग्रेज़ी शब्दों की चकाचौंध है। ऐडजस्टमेण्ट, कैक्टस, कंपनसेट, क्लाइमेक्स, मॉड, परफारमेंस, रोमांस, हाय-हेलो-हाउ आंटी, अंकल, मैडम, डैडी वग़ैरह की लम्बी तालिका खींची जा सकती है, किन्तु कहीं तो विराम लेना पड़ेगा ही। बरसाती घास की तरह उगते अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों-कालेजों ने तो और भी पतली हालत बना रखी है।

इस संदर्भ में जुलाई, 1978 की कादम्बिनी का एक विचारोत्तेजक अंश दर्शनीय है—'बड़े शहरों की कहानी ही शायद कहानी रह गई है।.....उन्होंने अपनी मौलिक सूझबूझ में अंग्रेज़ी के शब्दों और वाक्यों का बेलाग प्रयोग कर अपनी बौद्धिकता को पाठकों पर लादना चाहा। इस प्रक्रिया में कुछ बहुत बड़े मज़ाक़ भी हो गए यानी एक बड़े कथाकार ने गाँव की संकरी पगडंडी पर ब्यूक कार उतार दी। काश, उन्होंने ब्यूक जैसी लम्बी-चौड़ी कार देखी होती, तो समझ में आया होता।' ('समय के हस्ताक्षर' शीर्षक पृष्ठ 21 से साभार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव की कथा-व्यथा को कुछ लोग आंचलिक साहित्य की संज्ञा दे बैठे। उसके लेखक पर लेबल चिपक गया 'आंचलिक लेखक'। और धीरे-धीरे आंचलिक अपने अर्थ के विपरीत आंशिक या छोटा होने का बोध कराने लगा। समुद्र रूपी गाँव, शहर रूपी नदी में डूब गया। शहर का ग्लैमर (चमक-दमक) मनई भरे गँवई में कहाँ! इस प्रकार बहुमत पर अल्पमत हावी हो गया। 'गँवई गुहार' काव्य-संग्रह में प्रकाशित मेरी एक तुकबन्दी है—'गाँवों के शोषण पर शहर में सहर है / बीस विषमुक्त हैं तो अस्सी को ज़हर है / ताज्जुब है जिन्होंने लड़कर आज़ादी ली / वे ही गुलाम हैं / उन्हीं पर कहर है।' आख़िर इस ग्रामबहुल देश में ग्राम-जीवन से संबंधित कितनी सामग्री पत्र-पत्रिकाओं में छप रही है? प्रश्न है, आंचलित (केवल क्षेत्र विशेष) लेखक बनने का ख़तरा कौन मोल ले? फिर ग्राम्य संवेदनशील लेखकों ने आंचलिकता की हवा को ज़ोर लगाकर इस प्रकार फूँका कि जहाँ उनकी लेखनी मज़दूर ज़िंदाबाद के नारे लगाती थीं, लाज भरे घूँघट में भारतीय संस्कृत की झाँकी प्रस्तुत करती थी, किसान के पसीने उगलती थी, वहाँ ग्रामीण बालाओं के आँचल माथे से कंधे पर खिसकने लगे, एकदम ग़ायब होने लगे। उनकी चाल थिरकने लगी। कुल्हे मटकने लगे। काजल सजे नैन सैन बुझाने लगे। कैबरे डांसरों की लटक-झटक ग्रामीण उत्सवों में भी दीखने लगी। आहिस्ता-आहिस्ता शहरी वातावरण गाँव को प्रभावित करने लगा। अब किसान हल नहीं चलाता, वह ट्रैक्टर चलाते हुए फ़िल्मी गीत गाता है। आल्हा होली चैता बिरहा कजरी लोरकी जैसे ग्राम्य गीत अब कहीं-कहीं ही सुनाई पड़ते हैं। शायद इसीलिए खैनी से खाकी (बीड़ी) तक, लिंगोट से लुंगी तक, गाँवों के इस दो क़दम बदलाव में लेखक चार क़दम आगे सिगरेट और पैण्ट-बेलबाटम तक पहुँचने लगा है।

इस तरह सोचते-लिखते बहक जाने के लिए क्षमा चाहूँगा। बात कर रहा था गँवई साहित्य की और इसी बहाने टूट पड़ा, तेज़ी से बदलती गाँवों की तस्वीर पर, जो अब सतही साहित्य नहीं, विशिष्ट साहित्य बन गया है। दरअसल मैं भी अपने आपको इसमें एक बारगी अलग नहीं कर पाया हूँ। सतही साहित्यकार से ऊँचा उठने का लोभ जो है। आख़िर गाँव को गाँव के रूप में कब तक पकड़े-संभाले रहा जाए?

बीसवीं सदी के सातवें दशक में एक लोकप्रिय लोक साहित्कार सामने आया विवेकी राय। डॉ. राय ने व्यंग्य, कविता, रेखाचित्र, डायरी, फीचर, निबंध, कहानी, उपन्यास, रिपोर्ताज, समीक्षा आदि बहुत कुछ लिखा है, किन्तु मूलतः वे ग्राम्य कथाकार के रूप में उभरकर पाठकों के सामने आये। 'राज मार्ग की कोयल मोटर' पर सैर करने वाला कवि बहारन राम हरिजन के परिवार को भूख के ल्यूनिक पर बैठा चंद्र लोक की सैर कराने वाला अन्यतम उपन्यासकार बन गया, गँवई गुहार बन गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यही नहीं, कहना चाहिए इससे एक क़दम और आगे लोक मानस का चहेता साहित्यकार बन बैठा। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचलीय गाँवों में उसकी साहित्यिक क्षमता की तूती बोलने लगी। रचनाएँ, सोरठी-बृजभार, सदाबृज-सारंगा और तोता-मैना की सी पसंद की जाने लगीं। 'लोकऋण' लिख कर उसने ग्राम्य लोक जीवन से उऋण होते-होते, ग्राम्य जीवन की सच्ची साखी के रूप में खुला दिल या कहें, कोरा काग़ज़ (श्वेत पत्र) फैलाकर रख दिया।

सन् 1945 से आज तक उनकी साहित्य यात्रा अर्गला, जीवन परिधि, किसानों का देश, गाँवों की दुनिया, त्रिधारा, फिर बैतलवा डाल पर, रजनी गंधा, अध्ययन आलोक, बबूल, के कहल चुनरी रंगालऽ, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य और ग्राम जीवन, पुरुष पुराण, नयी कोयल, लोकऋण, गूंगा जहाज, जुलूस रुका है, अगदह भागीरथी माटी, श्वेत पत्र, सोना माटी, समर शेष है, मंगल भवन आदि अनेक रचनाओं तथा पुस्तक-पत्रिकाओं का संकलन-संपादन बहुत लम्बा है। इन सबमें गँवईं माटी की सोंधी गुलाबी गंध है। एक ऐसा रसीला स्वाद है, जो अन्यत्र हिंदी साहित्य में दुर्लभ है। जिसमें भैंस बैठती नहीं, 'हिरती' है। कंधे पर हल लिए किसान नदी को 'हेलकर' पार करता है। मज़दूर मज़दूरी नहीं 'मजूरी' करता है, नौकरी नहीं 'चरवाही' करता है, लेटता नहीं 'ओठंगता' है। लोग शोर नहीं 'हल्ला' मचाते हैं। इस प्रकार डॉ. राय ग्रामीण संवेदना के सच्चे पारखी हैं। बतौर बानगी उनके कुछ उद्धरण—

"सच्चे! धत्त मर्दवा, उतने बड़े बादसाह होके, भला टके सेर वाला मटिहा तमाकू पीते होंगे? ...ना-ना-ना, तमाखू माने गांजा।"

"हे पंच! परमेसर बरोबर!! मैं पेट के वास्ते सगरी जिनगी परदेस में गंवा, सरन में आया हूँ। ई अपन गाँव...केतना पियारा लगता है।"

"कैसी आगलग्गी मची है सरकार! कोई किसी से भरमुँह बोलता नहीं है। भरी बंदूक जइसा नथुना फुला बा, आड़ा-तिरछा आवा-जाही है। कनियाते-मनियाते, हूँफते जनावर जइसे ई गाँव के मनई लोगन को का हो गया है?"—'लोकऋण' उपन्यास से

"राम चीज़ ने अपनी लंगोटी की टेंट से चुनौटी निकाली। ...ज़मीन पर बिछाकर ढरक गया।"—'श्वेत पत्र' उपन्यास से

एक जमाना गुज़र गया, जब प्रेमचन्द की धनियाँ गोदान हेतु बीस आने पैसे के लिए तरस कर रह गई थी। डॉ. राय को खेद है कि वह स्थिति आज इस बीसवीं सदी में भी टली नहीं है। उन्हें ग्राम जीवन की ह्रासोन्मुख चुनौतियाँ अपराजेय-सी लगती हैं। उन्होंने गाँवों को बहुत क़रीब से देखा है, देखा ही नहीं, बल्कि जीया है। गाँव की तीखी-मीठी गंध उनके जेहन में समाई हुई है, साँसों में रची-पची है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रामीण कुव्यवस्था और बदहाली को रोते-सिसकते जी लेना परस्पर विरोधी होते हुए भी कितना कटु सत्य है, यह कोई डॉ. राय की लेखनी से पूछे। संभवतः इसीलिए उनकी लेखनी में गाँव की आत्मा बोलती है। वे गाँवों के उत्तरोत्तर पराभव से संतप्त हैं, पूरी तरह अभिशप्त हैं।

आश्चर्य है, इसके बाद भी डॉ. राय का ग्राम-भाव नहीं छूटता। उनके जीवन में यह चोली दामन की तरह चिपका हुआ है। विभिन्न विसंगतियों से आहत यह गँवईं साहित्यकार गिरते-संभलते कितना आगे निकल गया है। उनकी कर्म गति कितनी अथक है! स्वयं उन्हीं के शब्दों में—"सन् 45 से आज तक क्या साँस लेने का कभी मौक़ा मिला? कितना लिख गया सन 57 से 69 तक 'आज' के साप्ताहिक स्तंभ 'मन बोध मास्टर की डायरी' में। कितना लिख गया इधर प्रतिवर्ष तीस-पैंतीस रचनाओं के औसत में हिंदी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में!"—वाराणसी से प्रकाशित मासिक 'कहानीकार' के स्तम्भ 'मैं अपनी नज़र में' पूर्णांक 64 से।

डॉ. राय मात्र अपनी ईमानदार लेखनी के बलबूते, सामान्य आवास में, मूंज से बुनी चारपायी और चौकी (लकड़ी का तख्त) में, अपनी वर्षों पुरानी खड़खड़िया साइकिल में, यानी पूरी तरह आपाद मस्तक गँवईं के मनई में आख़िरी साँस तक जीते रहे हैं। ऐसे तपःपूत साहित्य साधक को कोटिशः नमन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनर्जागरण और प्रेमचन्द

प्रेमचंद जी एक क्रांतिकारी फनकार थे। वे कथा साहित्य के शहंशाह कहे गए। उनका जन्म उस समय हुआ जब भारतीय इतिहास पुनर्जागरण के दौर से गुज़र रहा था। 1857 के विप्लव के बाद भारत पूरी तरह ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बन चुका था। धीरे-धीरे अंग्रेज़ी शिक्षा तथा ईसाई धर्म का ज़ोर बढ़ने लगा था।

इधर धार्मिक सामाजिक आंदोलन भी राष्ट्रीय जागरण की भूमिका तैयार करने लगे थे। पूर्वी भारत में ब्रह्म समाज, उत्तर में देव समाज, महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज पुनर्जागरण में सहायक थे ही। लॉर्ड विलियम बैंटिंग का मानवतावादी दृष्टिकोण भी इसमें कम सहायक ना हुआ। आर्य समाज ने प्राचीन आर्य गौरव यानी हिंदू धर्म के पुनरुद्धार का अभियान चलाया। इसी तरह मुस्लिम नेताओं के सुधारवादी एवं उग्र आंदोलनों ने इस देश में उनके घटते प्रभाव को पुन:स्थापित करने का बीड़ा उठाया, जिसे बाद में सर सैयद अहमद खां के नेतृत्व में नई दिशा मिली। पंजाब में उन्नीसवीं सदी के अंतिम चरण में सिखों के मध्य सिंह सभा की लहर उठी। वे अपने पृथक अस्तित्व को तलाशने लगे थे। प्रेमचंद के साहित्य पर इन पुनरुत्थानवादी आंदोलनों की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है।

प्रेमचंद जी कायस्थ थे। उन्हें उर्दू फारसी का माहौल विरासत के रूप में प्राप्त था। फिर भी चूँकि वे हिंदू थे, अत: हिंदू पुनरुत्थान के समर्थक बने। ध्यातव्य है कि 1912 में ही वे आर्य समाज के नियमित, यानी सक्रिय सदस्य थे और जीवन पर्यंत बने रहे। नंददुलारे बाजपेयी के अनुसार प्रेमचंद जी राष्ट्रीय आंदोलन के शिथिल पड़ने पर सन 24, 25, 26 में जब-तब हिंदू संगठन का नेतृत्व भी किए।

1885 में स्थापित कांग्रेस के प्रारंभिक वर्षों को देखने से पता चलता है कि उसके सदस्य अंग्रेज़ी सरकार के दुश्मन नहीं थे, वरन सरकार के प्रति अपनी वफादारी की लंबी चौड़ी घोषणाएँ भी करते थे। कालांतर में लाल-बाल-पाल (लाजपत राय, गंगाधर तिलक, विपिन चंद्र) तथा उनके जैसे अनेक नेताओं ने ही राष्ट्रीय चेतना का प्राण फूँका। फिर तो सरकारी नौकरी (शिक्षा विभाग में डिप्टी इंस्पेक्टर) को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लात मारकर प्रेमचंद भी स्वाधीनता आंदोलन के साथ हो गए।

1917 की रूसी क्रांति की सफलता से भी प्रेमचंद प्रभावित हुए। रूसी जारशाही के प्रतीक के रूप में गोदान का खन्ना पात्र सर्जित किया लगता है। क्रांतिकारी मज़दूर उसकी गन्ना मिल को जलाकर खाक कर देते हैं। अपनी प्रगतिशील पत्नी गोविंदी के सामने वह आत्म प्रलाप करता है—"हमने रिश्वत दी, रिश्वत ली। किसानों की ईख तोलने के लिए नकली बाट रखे और गलत आदमी नियुक्त किये।" पुनः गोविन्दी क्रांति की चेतना जगाती है—"उस धन से हमें क्या सुख मिला! सबेरे से आधी रात तक एक न एक झंझट। लड़के तुमसे बात करने को तरस जाते थे।" फिर इस तरह की सामाजिक समस्याओं का हल प्रेमचंद ने बहुत पहले दे दिया था। उन्होंने कहा, 'ऐसे असामाजिक तत्वों का सामाजिक बहिष्कार करो।" 'प्रेमाश्रम' की रचना 1918-19 में हुई। प्रथम विश्व युद्ध का अंत, रूसी क्रांति की सफलता और मज़दूर किसानों की रक्षा आदि स्थितियों ने प्रेमचंद को व्यापक रूप से सोचने-समझने के लिए प्रेरित किया। शायद इसीलिए प्रेमाश्रम का ज्ञानशंकर अद्योपांत अपने अंह से पीड़ित होकर अत्याचार का रास्ता अपनाता है। यही नहीं स्विट्जरलैंड की रिफरेण्डम की जिस व्यवस्था को साकार करने का स्वप्न जे.पी. ने देखा था, उसे बहुत पहले प्रेमचंद देख चुके थे।

महाजनी सभ्यता को प्रेमचंद ने 'हंस' के अपने आख़िरी संपादकीय में बेनकाब कर दिया था। निश्चय ही उनका यह लेख ही रूस भी समाजवादी क्रांति से प्रभावित था। उन्होंने लिखा, 'अब एक नयी सभ्यता का सूर्य सुदूर पश्चिम में उदय हो रहा है, जिसने इस नाटकीय महाजनवाद या पूंजीवाद की जड़ खोदकर फेंक दी है.....।' किंतु पूर्व में, भारत में उसकी जड़ें क्या खोदकर फेंक दी गई है? महात्मा गांधी, प्रेमचंद, जयप्रकाश तथा लोहिया के प्रयास कहाँ तक सफल हुए हैं? पूँजीवादी जो गोदान के समय गाँव के किसान को क़र्ज़ देता था, आज इतना ताक़तवर बन चुका है कि उसने पूरे हिंदुस्तान को अपनी जेब में डाल लिया है। कौन नहीं जानता कि पूंजी के डेढ़ दर्जन घराने सारे हिंदुस्तान की दौलत अपनी तिजोरियों में समेटे हुए है? कौन नहीं जानता कि आज़ादी के बाद शोषक वर्ग (शासक और पूंजीपति) पहले से अधिक देश भक्त बन गया है? अधिक मीठी बोली बोलने लगा है। तब के अनेक ब्रिटिश भक्त अब भारत भक्त बन गए हैं। वे अपने हितों की सुरक्षा में अधिक सक्षम हैं। लाखों और करोड़ों की संख्या में गोबर (गोदानीय), गाँव से भागकर नगरों में आए हैं और पूंजीवादी तंत्र द्वारा परिचालित कल-कारख़ानों में अपना श्रम बेचते हुए बेपहचान हो गए हैं।

20वीं सदी के आरंभ से आज़ादी तक का भारतीय राजनीतिक और सामाजिक चित्र अनेक विसंगतियों और आंतरिक विरोधों से भरा हुआ है। हमारा आंदोलन अनेक प्रकार की सांप्रदायिक धार्मिक और क्षेत्रीयतावादी घाटियों से गुज़रता हुआ उस मार्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर आया है, जिसे समाजवादी जनतांत्रिक और धर्मनिरपेक्षता की संज्ञा दी जाती हैं। इस अंतराल की विसंगतियाँ प्रेमचंद के साहित्य में भी उभर कर आई हैं। गोदान की सिलिया चमारिन को जब पंडित मातादीन ने भ्रष्ट कर दिया तो उसका बाप भी झिंगुरी से कहता है—'हम आज मातादीन को तो चमार बना के छोड़ेंगे, या अपना और उनका रक्त एक कर देंगे, फिर सबने मातादीन के मुँह में हड्डी का टुकड़ा जबरदस्ती घुसेड़ ही दिया—'तुम हमें ब्राह्मण नहीं बना सकते, मुदा हम तुम्हें चमार बना सकते हैं।'

नारी पुनर्जागरण पर भी प्रेमचंद की दृष्टि गई है। गोदान में पहले की आवारा तितली बनी मालती अब ग़रीबों से इलाज का पैसा नहीं लेती। उसमें समाज सेवा की भावना कूट-कूट कर भर गई है। जिस दिन से धनियाँ ने दरोगा को लताड़ा, वह भवानी का अवतार समझी जाने लगी। झुनियाँ के विवाह में विधवा विवाह की स्वीकृति है। प्रेमचंद जी अंतर्जातीय विवाह समर्थक भी थे, किंतु विभिन्न संस्कृतियों के नहीं। शायद उस जमाने में अभी इतना संभव नहीं था। उन्होंने रंगभूमी में राजपूत और ईसाई के वैवाहिक संबंध को इनकार कर दिया है। उनके अनुसार अपवाद वश ही इस तरह का वैवाहिक जीवन सुखी रह सकता है गोदान में सिलिया चमारिन और पंडित दातादीन एक-दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पित हैं। अतः यह अंतर्जातीय विवाह की पूर्ण स्वीकृति है। प्रेमचंद नारी स्वतंत्रता के पूर्ण समर्थक थे। नारी उनकी दृष्टि में भोग्या नहीं, सेवा, शक्ति और निर्माण की देवी है।

कहानियों में उनके प्रथम दौर की कहानियाँ तो प्रायः संयोग और हृदय परिवर्तन से ओत प्रोत हैं, किंतु दूसरे दौर यानी 1920-30 के बीच 'मुक्तिमार्ग', 'शंखनाद' 'आत्माराम' तथा 'सवा सेर गेहूँ' आदि रचनाएँ नवजागरण का संदेश देते हैं। इन पर बापू और उनके सिद्धांतों का सीधा प्रभाव दीखता है। यह संयुक्त परिवार की रक्षा, जमींदारों-महाजनों के हाथों पिसती हुई निरीह जनता, पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव से चकाचौंध होना, पंडितों-पुरोहितों द्वारा लूटे जा रहे भोले-भाले धर्म परायण लोग, अछूतों की शोचनीय स्थिति, नशाखोरी, हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक समस्या, दूषित वैवाहिक प्रथा तथा भारतीय स्वतंत्रता के प्रति पुनर्जागरण का संदेश देती हैं। इन रचनाओं से पता चलता है कि स्वराज्य प्राप्ति और स्वाधीनता आंदोलन को वे एक नैतिक धर्म मानते थे। अप्रैल 1930 के 'हंस' में उन्होंने लिखा था, "स्वाधीन बनकर आधी खा लेना, गुलामी की पूरी से कहीं अच्छा है।" 1909 में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'सोजे वतन' को देखकर गोराशाही थर्रा उठी थी। पुस्तक की होली जलाकर हम्मीरपुर का कलक्टर गुस्से से काँपते हुए बेसाख्ता चीख़ उठा था, "खैर मनाओ कि मुगल सल्तनत में नहीं हो, वरना तुम्हारे हाथ काट लिए जाते।" यह था उनके पुनर्जागरण का जोश, जो वक़्त की धार पर दौड़ने लगा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त भदंत विद्यापति की भक्ति-भावना

वाणी विभव विद्यापति की कवि-कोकिल कमनीय काकली से भक्ति रस की जो अजस्त्र धारा प्रवाहित हुई, वह मिथिला की अमराइयों से होती हुई सुदूरांचलों तक जन मानस को आप्यायित करती चली गई। अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उनकी कलकंठी कूक की मृदुलता ने मैथिली से अनभिज्ञ मानव मन को भी गूंगे के गुड़ की तरह परितृप्त अथवा कहें, तन्मय किया। किंचित इसके मूल में कवि की लेखनी की लीला कम, उनकी भक्ति विभोर विह्वल वाणी की आर्त पुकार अधिक परिलक्षित होती है। यही कारण है कि मिथिलांचल से महकी इस भक्ति सुरभि ने दूरस्थ अंचलों के घर-आंगन को भी महकाया। गो कि कवि के प्रणयन में राधा कृष्ण की क्रीड़ाओं की इतनी बहुलता है, क्रीड़ाओं में श्रृंगारिकता की इतनी मोटी परत है कि अनेक विज्ञ आलोचकों की दृष्टि में वे विशुद्ध श्रृंगारिक कवि हो गए हैं। किंतु इस अवधारणा के विपरीत स्थानान्तर से जो उन्होंने विभिन्न देवी-देवताओं की आराधना की है, वह उन्हें भक्त कवि सिद्ध करने के लिए कम नहीं है। विद्यापति एक आस्तिक हिंदू थे। हिंदू देवी-देवताओं के प्रति उनमें अपार श्रद्धा-भक्ति थी। उनकी उपासना पद्धति सूर, तुलसी तथा मीरा से कुछ पृथक, कदाचित अधिक बहुमुखी-बहु आयामी थी।

तथाकथित अन्य भक्त कवियों की तरह विज्ञ-विदग्ध विद्यापति ने किसी एक देवता (भगवान) को सर्वोच्चता प्रदान नहीं की है। 'पुरुष-परीक्षा' में जहाँ उन्होंने दुर्गा को महत्त्व दिया है, वहीं 'राग तरंगिणी' में भगवान शंकर को (देखें पृष्ठ 108)। एक स्थल पर कवि ने विष्णु और शिव की एकरूपता भी स्वीकार की है। इसी प्रकार अनेक पदों में उन्होंने अकेले विष्णु की ही स्तुति की है। इन आधारों को साक्ष्य बनाकर कुछ आलोचक उन्हें वैष्णव, कुछ शाक्त तो अनेक शैव सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। कुछ आलोचक विद्वानों ने उन्हें पंच देवोपासक भी प्रमाणित करने की चेष्टा की है। इस प्रकार मरे हुए हाथी को अंधों द्वारा पकड़-छूकर पैर, पूंछ, सूंढ़ तथा कान आदि सिद्ध करने के प्रयास हुए हैं।

डॉ. श्याम सुन्दर दास ने अपनी पुस्तक 'हिंदी भाषा और साहित्य' में कवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को वैष्णव भक्त स्वीकार किया है। विद्यापति की वैष्णवी भक्ति को महा प्रभु चैतन्य ने अपने स्वर माधुर्य की तन्मयता में बहुजन मध्य संप्रेषित कर आलोचकों के लिए अच्छा अवसर प्रदान कर दिया। किंतु उनका यह विचार किसी भी तरह गले नहीं उतर सकता, क्योंकि रामोपासक तुलसी ने तो अपनी समन्वयवादी भावना के कारण 'विनय पत्रिका' में भगवान बुद्ध के प्रति भी अनन्य श्रद्धा निर्देशित की है—'शुद्ध बौद्धे क.....वन्दे कृपालं।' और इस आधार पर तुलसी को कदापि बौद्ध नहीं बनाया जा सकता।

मिथिला में शाक्त लोगों की संख्या अच्छी-खासी रही है, और इस आधार पर विद्यापति शक्ति पूजक थे, ऐसा सिद्ध करने वाले भी आलोचक हैं। श्री भगीरथी शुक्ल ने 'माधुरी' (1936) में लेख लिख कर यह सिद्ध करने की सर्वाधिक कोशिश की।

महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री ने स्व संपादित पुस्तक 'कीर्तिलता' की भूमिका में महाकवि को पंचदेवोपासक बताया है। स्मृति (स्मार्त) के अनुसार इस पद्धति में गणेश, सूर्य, विष्णु, दुर्गा और शिव की उपासना विहित है। किन्तु उल्लेखनीय है कि कवि ने कहीं भी सूर्य की उपासना की हो, ऐसा नहीं दीखता।

विद्यापति को शैव भक्त सिद्ध करने वालों की संख्या सर्वाधिक है। श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का तर्क है कि कवि के पिता श्री गणपति ठाकुर शैव थे। उन्होंने शिवाराधना से विद्यापति सदृश भारत विश्रुत पुत्र-रत्न प्राप्त किया था। शिव (उगना) विद्यापति के सेवक बनकर रहे, जिनकी यकायक अनुपस्थिति पर वे रो-रोकर कहने लगे, 'उगना रे मोर कतए गेला।' ऐसी प्रसिद्ध जनश्रुति है। फिर विद्यापति के शिव मंदिर बनवाने तथा अन्यत्र उनकी समाधि पर शिव मंदिर निर्मित किए जाने की बात भी प्रच्छन्न रूप में आती है। आलोचक प्रवर शुक्ल जी भी इस मत के समर्थक हैं।

एकेश्वर वादी भक्ति साधना के उपासक मानने वाले विद्वानों की संख्या भी कम नहीं है। महाकवि ने इस तथ्य को एक जगह स्वीकार भी किया है। अपनी पुस्तक 'पुरुष-परीक्षा' में वे कहते हैं कि कोई तो विष्णु की आराधना करते हैं, अन्य शिव को पूजते हैं। संसार में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो ब्रह्मा को ही अपना आराध्य मानते हैं। वस्तुतः ये एक ही नाम के कई भेद हैं। ईश्वर एक ही है।

यहाँ थोड़ा विषयान्तर करना चाहूँगा। प्रायः हर व्यक्ति के विचार; समय, परिस्थिति, स्थान, उम्र तथा बढ़ती समझ के अनुसार बदलते रहते हैं। आगे चलकर वह किसी एक विचार पर टिक-ठहर भी जाता है। इस लेख का लेखक अपनी माँ के प्रभाव में आकर, पहले अपने ग्राम देवता योगेश्वर (जिनका कल्पित विग्रह सहित गाँव के बीचोबीच मंदिर आज भी है।) का भक्त बना। दस-बारह बरस की उम्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में एक पद 'जाके प्रिय न राम वैदेही...' के भावार्थ से प्रभावित होकर 'सीता-राम' का उपासक बना, पुनः वह शिवाराधक बना। फिर वह कृष्ण के व्यक्तित्व एवं गीता से प्रभावित हो, कृष्णोपासक हुआ। भगवान बुद्ध के दर्शन ने भी उसे बहुत प्रभावित किया। आज वह इन सबका सम्मान करते हुए निराकार ब्रह्म की ही मात्र पूजा-साधना-आराधना करता है। तो क्या विद्यापति जी के साथ ऐसा संभावित नहीं है?

निष्कर्षतः मिथिला सर्वदा से अपनी धार्मिक सहिष्णुता के लिए प्रख्यात रही है। अतः वहाँ के आम्रकुंजों से देश-देशान्तर तक मैथिल कवि की सहिष्णु भक्ति लहर तुलसी सदृश समान रूप से तरंगायित है, प्रवहमान है। यद्यपि शिव के प्रति उनकी आस्था कुछ अधिक अवश्य प्रतीत होती है। फिर भी किसी एक देव या कुछ देवों के साथ उनकी समीपता स्थापित करना समीचीन-तर्क संगत नहीं लगता। वे जिस तरह बहुजन-सर्वजन सुखाय उच्च कोटीय कवि थे, उसी तरह बहु देवाय भक्त भी। समयांतर के साथ कमोबेश उन्होंने एक ईश्वर के कई विग्रहों की वंदना-उपासना की है। विशिष्ठ कृतित्व के चलते साहित्य की दुनिया में उनकी उपस्थिति सदैव बनी रहेगी। चूड़ान्त भक्त कवियों में भी परिगणित होते रहेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग द्रष्टा भाषा कवि कबीर

कबीर ने विद्या मंदिर नहीं देखा। रस, छंद, अलंकार के विषय में सोचना तो दूर रहा, मसि-काग़ज़ का स्पर्श तक नहीं किया। इसके बावजूद व्यावहारिक-आध्यात्मिक ज्ञान के क्षेत्र में वे इतने बढ़-चढ़कर थे, किंचित ही कोई समकालीन कवि उनकी समानता में आए। जिस तरह उन्हें मानवीय जीवन का बहुमुखी ज्ञान था, उसी तरह अनेक स्थल पर घूमने एवं निवास करने के कारण उनका भाषिक ज्ञान भी असीम था। शायद इसीलिए उनकी बेलाग और अक्खढ़ भाषा को कतिपय विद्वानों ने सधुक्कड़ी, बेमेल खिचड़ी, अनगढ़, अव्यवस्थित तथा रुखी-सूखी कहा।

कुछ लोगों ने कबीर के नाथपंथी और मुस्लिम संस्कार के आधार पर उन्हें खड़ी बोली के उस रूप का कवि माना है, जो अमीर खुसरो, वली तथा दक्खिनी हिंदी के अन्य कवियों एवं राजस्थानी कवियों की रचनाओं में पाया जाता है। दूसरी ओर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी तथा उदय नारायण तिवारी प्रभृति भाषा-पंडितों ने कबीर को काशीवासी होने के कारण उनकी भाषा को पूर्वी या भोजपुरी माना है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र लिखते है—''साखियों की भाषा में खड़ी बोली का जितना अधिक व्यवहार मिलता है, उतना सबद में नहीं। उसमें ब्रजी के शब्द कुछ अधिक मिलते हैं। रमैनी में पूर्वी रूप बराबर दिखाई देते हैं, जैसे 'कोई-कोई' या 'कोऊ-कोऊ' के स्थान पर 'केऊ-केऊ।''

(हिंदी साहित्य का अतीत : भाग-एक)

कबीर भाषा की दृष्टि से लोक नायक हैं। रीतिकालीन कवियों के समान शब्द-कौशल और उक्ति-वैचित्र्य के द्वारा सामन्तों का मनोरंजन उनका अभीष्ट नहीं था। उन्होंने अपनी बात लोक भाषा में कही। उनकी भाषा का निर्माण उस विस्तृत भू-भाग से हुआ था, जो पूरब में बिहार से लेकर पश्चिम में राजस्थान एवं पंजाब तक फैला है।

खड़ी बोली का अच्छा प्रयोग इन पंक्तियों में देखने योग्य है—

कबीर कहता जात हूँ, सुणता है सब कोइ।
राम कहे भला होइगा, नहितर भला न होइ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आऊँगा न जाऊँगा, मरूँगा न जीऊँगा।
गुरु के सबद में, रमि-रमि रहूँगा॥

आगे उधृत पंक्तियों में 'अवड़ियाँ', 'जीभड़ियाँ' पंजाबी के शब्द हैं, और 'पड्या' राजस्थानी (क्रिया)—

'अवड़ियाँ झाईं पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड्या, राम पुकारि-पुकारि॥'

इसी प्रकार 'जब लगि धसै न आभ' में 'धसै' शब्द ब्रजभाषा का है, तो 'आभ' फारसी के 'आब' का बिगड़ा हुआ रूप है।

कबीर की वाणी के विषय हैं—अरूप, अलख और अगोचर ब्रह्म, जिसे अभिधा द्वारा व्यक्त करना संभव नहीं। कबीर ने उसका ध्वनन किया है। डॉ. राम कुमार वर्मा ने लिखा है, "उनका भावोन्माद इतना तेज़ होता है, कि बोलचाल के साधारण शब्द उसका बोझ संभाल नहीं पाते।"

यत्र-तत्र भ्रमण एवं सत्संग के कारण कबीरदास का शब्द भंडार असीम था। ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, बुंदेली, राजस्थानी तथा भोजपुरी के अलावा, पंजाबी, गुजराती तथा विदेशी भाषाओं—अरबी-फारसी के शब्द भी उनकी वाणी से निःसृत हुए हैं। उन्होंने अपनी भाषा में अनेक स्थलों पर सैना-बैना रूपकों का सहारा लिया है, प्रतीकों का प्रयोग किया है। उनके लोहार, कुम्भकार, बढ़ई, जुलाहा एवं कृषक के जीवन-व्यवसाय से लिए गए शब्द इतने व्यंजक और अर्थगांभीर्य से संपन्न हैं, कि उनके पर्याय खड़ी बोली में नहीं मिल पाते, यथा कसनी, बनजिया, पुटोला, ढीकुली, पासंग, तेवर, पलीता तथा निहोरा आदि।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं, "भाषा पर कबीर का ज़बरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूम में प्रकट करना चाहा, उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा दिया है। बन गया तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर (यानी ज़बरदस्ती)। भाषा कुछ कबीर के सामने लाचार-सी नज़र आती है।"

(कबीर, पृ. 217)

कबीर के समय में अरबी-फारसी के प्रयोग काफ़ी बढ़ गए थे। अरबी मुस्लिम शासकों की धर्म भाषा थी और फारसी राजभाषा। कबीर की यह विशेषता है कि जब उन्होंने हिंदू विधि-विधानों का खण्डन किया है, तब संस्कृत के तत्सम-तद्भव शब्दों को व्यवहृत किया है और जब मुल्ला-मौलवियों को फटकारा है, तब अरबी-फारसी का सहारा लिया है। इससे उनकी भाषा में स्वभाविकता है, सहज मिठास है तथा मस्तीभरा अक्खड़पन है, जो तत्कालीन साहित्य में अन्यत्र अगोचर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुल मिलाकर इस आशुकवि की भाषा हार्दिकता से समन्वित है। वह सत्य की खोज में बही है। जहाँ तक उसकी प्रभविष्णुता का प्रश्न है, तुलसी के प्रादुर्भाव के पूर्व वह बेजोड़ है, अनुपमेय है। अपनी समन्वयात्मक भाषा के बल पर ही इस महाकवि शिरोमणि संत ने अपने युग का प्रवर्तन किया, संदेह नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीणापाणि भगवती के भव्य प्रासाद—भगवती प्रसाद

माँ सरस्वती की सेवा में अहर्निश समर्पित, गिने-चुने स्थापित साहित्यकारों में भगवती प्रसाद द्विवेदी का नाम निसन्देह सादर परिगणित है। न केवल कुशल लेखनी से, बल्कि मधुर वाणी और विनम्र व्यवहार से भी, ये मुझे नख-शिख साहित्यकार लगते हैं। इनकी अहंविहीन विनयशीलता, सहयोगी भाव की सज्जनता, किसी को भी बरबस आकृष्ट कर लेने में सक्षम है। थोड़े में कहूँ तो, सौम्य मुखाकृति, आपाद मस्तक सुदर्शन काया के कुबेर, द्विवेदी जी का जितना बाह्य आकर्षक है, उससे कई गुना आकर्षक है इनका अंत:व्यक्तित्व। आइये, इनकी कुछ ऐसी विशिष्ठ विशेषताओं की पड़ताल करते हैं, जो इन्हें अन्य से अलग करती हैं, अनन्य बनाती हैं।

सबसे पहली या प्रमुख बात कि द्विवेदी जी सस्ती लोकप्रियता पाने के पीछे अंधी दौड़ लगाने वाले अधीर लेखक नहीं हैं। आप ऐसे अनेक स्वनामधन्य लेखकों से परिचित होंगे, जो अपनी माटी की भाषा भोजपुरी छोड़, हिंदी में लिखने लगे हैं। ऐसा सिर्फ़ इसलिए कि हिंदी की तुलना में भोजपुरी के पाठक बेहद कम हैं या इसमें अच्छी पत्रिकाओं का, प्रकाशकों का नितान्त अभाव है। शोहरत की गुंजाइश नहीं के बराबर है। इन्होंने किसी के आग्रह पर या किसी को ख़ुश करने के लिए, अगर कभी-कभार भोजपुरी के लिए कुछ कृपा पूर्वक लिखा भी, तो भिखारी को भीख देने की तरह ही। भाई भगवती प्रसाद जी के साथ ऐसा कत्तई नहीं है। ये भोजपुरी के लिए भी उतने ही समर्पित हैं, जितना हिंदी के लिए। भोजपुरी के माध्यम से इन्होंने हिंदी साहित्य को जितना समृद्ध किया है, उतना करने वाले आज उंगली पर गिने जाने वाले ही रह गए हैं। इस बात की गवाही के लिए भोजपुरी में लिखी इनकी 'ठेंगा' (कहानी संग्रह), 'जौ-जौ आगर' (कविता संग्रह), 'दरद के डहर' तथा 'सांच के आंच' (उपन्यास द्वय) आदि पुस्तकें पढ़ी जा सकती हैं।

आज थोड़ी-सी दया-दृष्टि पाने के लिए नामचीन आलोचक नामवर जी की विरुदावली गाने वाले, या तथाकथित बड़ी पत्रिकाओं के संपादकों के दाय का कसीदे काढ़ने वाले, आपको ढेरों मिल जाएँगे, किंतु भिखारी ठाकुर या महेंदर मिसिर जैसों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की विपुल देन को याद करने वाले कितने लोग हैं? इस तरह का शोधपूर्ण सराहनीय कार्य द्विवेदीजी ने बख़ूबी किया है। इनकी लिखी 'भिखारी ठाकुर : भोजपुरी के भारतेन्दु' तथा 'महेन्दर मिसिर : भोजपुरिया गीतकार' किताबें न केवल पठनीय बल्कि संग्रहणीय भी हैं।

कविता, कहानी और उपन्यास आदि की तुलना में बाल साहित्य पर काम करने वालों की संख्या आज भी अत्यंत विरल है। वजह है कि इस पर लिखने वालों को प्राय: वह लोकप्रियता नहीं मिल पाती, जो किसी कवि, कथाकार या निबंधकार को भी, जल्दी ही मिल जाती है। फिर ऐसे बाल साहित्य को सिरजने की जोखिम कौन उठाने जाए! किसी साहित्य के विद्यार्थी से दो-चार बड़े कवियों, कथाकारों या निबंधकारों के नाम पूछे जाने पर, कुछ न कुछ जवाब ज़रूर मिल जाते हैं, जबकि दो-चार बाल-साहित्यकारों के नाम पूछे जाने पर वही विद्यार्थी बगलें झाँकने लगता है। किंतु यह जोखिम द्विवेदी जी ने बख़ूबी उठाया है। इन्होंने बाल साहित्य के क्षेत्र में न केवल मात्रात्मक बल्कि गुणात्मक लेखन भी बड़े मनोयोग से जमकर किया है। बच्चों, या कहें वात्सल्य के प्रति, इनकी अनुभूति की गहराई को, बड़ों को संबोधित इनके इस नवगीत से समझा जा सकता है—

फूल बचाना जी

बचपन अगर बचाना हो
तो फूल बचाना जी!

फूल बचाना हो तो
पंखुड़ियों को मत मसलो,
मत नीलाम करो ख़ुशबू को
ज़हर न तुम घोलो
ज़हर घोलकर मासूमों पर
कहर न ढाना जी!

तितली की उड़ान पर
बंदिश कभी लगाना ना,
पाखी के पर कतर
दरिन्दे-सा हिहियाना ना
उन अबोध आँखों में
सूरज-चाँद उगाना जी!

पेट भूख की शाला में
मजबूरी क्यों पढ़ता,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिना तेल की बाती-सा
क्यों भभक-भभक जलता?
झंझावात न छले दिये को
जुगत भिड़ाना जी!
घर भर का, घर के कुत्ते का
खेल-खिलौना जो,
डाँट-चपत खा, आँसू पीकर
बना डिठौना जो
नींद, परी, तुतले सपने
उसके लौटाना जी!
बचपन का बचपना
और शैतानी बनी रहे,
खेल कूद, धींगामुश्ती
नादानी बनी रहे
नटखट-अल्हड़ हँसी खिलाकर
खिल-खुल जाना जी!

('नयी कोंपलों की खातिर' पृष्ठ 37 से)

जिस तरह व्यंग्य विधा को शुद्ध श्रेणी से उठाकर क्षत्री श्रेणी में स्थापित करने का श्रेय हरिशंकर परसाई (शरद जोशी भी) को दिया जाता है, ठीक इसी तरह बाल साहित्य के क्षेत्र में यह श्रेय भगवती प्रसाद द्विवेदी को दिया जाना, असंगत-अनुचित न होगा। यह बात दीगर है कि इनके पूर्व भी अनेक साहित्यकार इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर चुके हैं। द्विवेदी द्वारा प्रणीत बाल साहित्य की दस-बीस नहीं, छिहत्तर (76) पुस्तकें प्रकाशित हैं। 'मेरी प्रिय (बावन) बाल कहानियाँ' तथा 'मेरी प्रिय बाल कविताएँ (251 बाल गीत)' इस विधा की इनकी विशेष ध्यानाकर्षक कृतियाँ हैं। द्विवेदी जी द्वारा बच्चों के लायक़ उरेही तथा 'आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल' द्वारा प्रकाशित 'भोजपुरी कथाएँ' पुस्तक, साहित्य की निश्चिय ही अमूल्य निधि है, जिसमें हर कथा का, कथा के अंत में, हिंदी अनुवाद भी दे दिया गया है। 216 पृष्ठीय बड़े कलेवर वाली इस किताब की क़ीमत भी बेहद कम, केवल 50 रु. है।

बहु आयामी व्यक्तित्व के विपुर भंडार भगवती भाई, पूरी सजगता-तन्मयता के साथ विगत 4-5 दशकों से साहित्य की अधिकांश विधाओं में लगातार लिख-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छप रहे हैं। 'चीर हरण', 'अस्तित्व बोध', 'फील गुड तथा अन्य कहानियाँ' (कहानी संग्रह), 'भविष्य का वर्तमान', 'थाती' (लघुकथा संग्रह), 'भारतीय जन जातियाँ : कल, आज और कल' (शोध) आदि के क्रम में इनके दो लघु उपन्यास 'यातना शिविर' और 'चक्रव्यूह' संवेदना प्रकाशन, लखनऊ से छपी हैं। जहाँ तक द्विवेदी जी के काव्य-जगत की बात है, ज़्यादा कुछ न कह करके प्रख्यात नव गीतकार सत्यनारायण जी के इस उद्‌गार को उधृत कर देना मुझे अधिक समीचीन लगता है— '...वैसे तो इन्होंने अपेक्षित काव्य विवेक के साथ सार्थक और समाज-सापेक्ष कविताएँ भी प्रचुर संख्या में लिखी हैं, किंतु इनका कवि मन छंद की कविताओं में ज़्यादा रमता है। मेरा मानना है कि भगवती प्रसाद द्विवेदी छंद के सिद्ध और सधे हुए कवि हैं। छंद का आंतरिक अनुशासन, लय और गति की गूंज-अनुगूंज तथा शब्दों की अंतर्ध्वनि इनके गति विवेक की विशेषताएँ हैं, जिसे प्रस्तुत संग्रह 'नई कोंपलों की खातिर' में बख़ूबी लक्ष्य किया जा सकता है।...'

मैं यह नहीं कहता कि कोई विज्ञानार्थी साहित्यकार नहीं हो सकता। ऐसे हुए हैं, आगे भी होंगे। बावजूद इसके, किसी विज्ञान के विद्यार्थी द्वारा साहित्य के संसार में इस कदर गहरे उतर आने की उम्मीद कम ही की जाती है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी भाई द्विवेदी जी ने ऐसा किया है। रसायन विज्ञान में एम. एससी. की डिग्री लेते हुए इन्होंने साहित्य की अधिकांश विधाओं—कहानी, उपन्यास, आलोचना, व्यंग्य, बाल साहित्य, कविता (गीत, नवगीत, नई कविता, दोहा) आदि का बड़ा ही रम्य रसायन तैयार किया है। शायद इसीलिए इन्हें अन्य अनेक अलंकरणों, साहित्यिक सम्मानों-पुरस्कारों के साथ-साथ पी-एच. डी. (विद्या वाचस्पति) की मानद उपाधि से भी नवाजा गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आकलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जायसी का प्रेम पयोधि पद्मावत

जायसी समकालीन कवियों में शृंगार के चतुर चितेरे चूड़ांत कवि हैं। उन्होंने विप्रलम्भ शृंगार की जो रेखाएँ अपनी कुशल तूलिका से उकेरी हैं, निश्चय ही उत्कृष्ट कला का द्योतन करती हैं। उनका पद्मावत प्रेम के पीर की भावात्मक अभिव्यक्ति है। यह सूफी भावना के अनुरूप लौकिक प्रेम के माध्यम से सतत प्रवहमान है।

शृंगार का संयोग पक्ष पद्मावती और रत्न सेन को लेकर ही प्रमुखतया उद्घाटित हुए हैं। अधोलिखित पंक्तियाँ पद्मावती की तन्मयता में संयोग-माधुरी का चरम उत्कर्ष प्रस्तुत करती है—

करि शृंगार ता पहँ का जाऊँ।
ओही देखउँ ठाँवहि-ठाऊँ॥

हास-परिहास, व्यंग्य-विनोद और वाक्चातुर्य का निपुण निदर्शन निम्नांकित पंक्तियों में दर्शनीय है—

हौं रानी तू जोगि भिखारी।
जोगहिं भोगहिं कौन चिन्हारी॥
एही भेख रावन सिह हरी॥

फिर तो मनुहार की चरम परणिति इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है—'कंठ लाइ कै नारि मनाई। जरि जो बेलि सींच पलुहाई॥

प्रथम समागम की उत्कंठा और मिलन का मोहक चित्रण जायसी ने प्रस्तुत किया है। उनके वर्णन में स्वाभाविक उल्लास, अभिलाषा, पावन भावना, मिलन की उत्कट अभीप्सा और प्राण विह्वलता है। भावों की सान्द्रता से रस संकुल अभिव्यक्ति ही कवि का लक्ष्य रही है। बारात आगमन के अवसर पर छज्जे के गवाक्षों से एक टक निहारती पद्मावती किस प्रकार भाव तन्मय है, उसके हृदय-सरोवर में हर्षातिरेक और कमनीय कामना की चपल उर्मियाँ कैसे अठखेलियाँ कर रही हैं, दर्शनीय है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुलसे नयन दरस मद माते। हुलसे अधर रंग रस माते॥
हुलसा वदन ओप रवि जाई। हुलसि हिया कंचुकि न समाई॥
हुलसे कुच कसनी बंद टूटे। हुलसी भुजा वलय कर फूटे॥

दोहा— *अंग-अंग सब हूलसे, कउ कतहूँ न समाइ।*
ठाँवहिं ठाँव विमोही, गई मुरछा तन छाइ॥

कहीं-कहीं वर्णनों में संयम की कसमसाहट का रोमानी एहसास इस कदर बह चला है कि आलोचकों को सिर उठाने का अच्छा अवसर मिल गया। कुछ आलोचक इन वर्णनों को जायसी की बदनाम कलम का इजहार मानते हैं। ये इतस्तत: विलासपूर्ण चित्रण कुछ फारसी शैली के प्रभाव के कारण हैं। इन्हें परंपरा का निर्वाह भी कहा जा सकता है। संभोगान्तर्गत वर्णनों में कवि शील और मर्यादा से परे शृंगार की नितांत निकृष्ट भूमि पर उतर आता है। ऐसा इसलिए भी हुआ है कि सूफी लोग शारीरिक भोग को पूर्णतया भोग लेने के पक्ष में दीखते हैं, ताकि मन पूरी तरह विकार रहित हो जाए। कुछ वर्णनों से लगता है, कवि को प्रचलित काम सूत्रों, केलि-क्रीड़ाओं का न केवल ऊपरी ज्ञान था, बल्कि हृदयग्राही आन्तरिक अनुभव भी था यथा—

भई जूस जस रावन रामा। सेज बिंधसि विरह संग्रामा॥
कंचुकि चूरि, चूरि भइ दाने। टूटे हार मोति छहराने॥

इस प्रकार के वर्णनों में कहीं-कहीं प्रतिकूल प्रसंगों का समावेश पाठकों को खल जाता है। ऐसी कमियों को आलोचक प्रवर शुक्ल जी भी नहीं क्षमा कर पाए हैं। एक स्थल पर वे लिखते हैं—"प्रथम समागम के रसरंग प्रवाह के बीच पारा, गन्धक और हरताल का प्रसंग अनुकूल नहीं पड़ता।" किंतु कतिपय बाधक प्रसंगों के बाद भी जायसी ने अपनी रस प्रवणता का सम्यक परिचय दिया है। तद्‌युगीन परिवेश से कोई भी रचनाकार जल्दी अपने को मुक्त नहीं कर पाता, अत: जायसी भी इसके अपवाद नहीं हैं।

जहाँ तक विप्रलम्भ शृंगार का परिवेश है, जायसी अपने समकालीन कवियों में अनुपमेय हैं, अन्यतम हैं। उत्तरवर्ती कवियों में भी सूर के सिवा उनका कोई सानी नहीं दीखता। वेदना का जितना निरीह, निरावरण, मार्मिक, गंभीर, निर्मम एवं पावन स्वरूप जायसी के काव्य में उपलब्ध है, अन्यत्र नहीं। फिर नागमती का विरह वर्णन तो हिंदी साहित्य की लाजवाब निधि है। कुछ सतरें पेशे खिदमत हैं—

सावन बरसि मेह अति पानी। भरनि परी हौं बिरह झुरानी॥
जग जल बूड़ि जहाँ लगि ताकी। मोर नाव खेवक बिनु थाकी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बरसे मघा झकोरि-झकोरी। मोर दुइ नैन चुवै जस ओरी॥
धनि सूखे भरे भादो माहा। अबहुँ न आएन्ह सीचन्ह नाहा॥

इस बारहमासा की विशेषता है, विरह की तीव्र और मार्मिक व्यंजना। पं. रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं—"इस (बारहमासे) में वेदना का अत्यंत निर्मल और कोमल स्वरूप, हिंदू दाम्पत्य का अत्यंत मर्मस्पर्शी माधुर्य, अपने चारों ओर की प्राकृतिक वस्तुओं और व्यापारों के साथ विशुद्ध भारतीय हृदय की साहचर्य भावना तथा विषय के अनुसार भाषा का अत्यंत स्निग्ध, सरल, मृदुल और अकृत्रिम (स्वाभाविक) प्रवाह देखने योग्य है।"

नागमती के वियोग वर्णन में पशु-पक्षियों की साहचर्य भावना का भी पूरा-पूरा समावेश किया गया है। इस संदर्भ में उत्तरवर्ती कवियों पर भी जायसी की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। "कोइ न जाय ओहि सिंघल दीपा..." तथा "मोहिं जियाउ कंत देइ मोरा।" जैसी पंक्तियों को देखते हुए लगता है कि कवि में मानवेतर जीवों की मानसिकता की तीव्र अनुभूति भी थी।

रत्नसेन के मरणोपरांत नागमती तथा पद्मावती का यह कारुणिक कथन कितना हृदय विदारक है!—"जियत कंत तुम्ह हम्ह गर लाई। मुए कंत नहिं छोड़हिं साईं॥ औ जो गाँठि कंत लुम्ह जोरी। आदि अंत लहि जाइ न छोरी॥" अथवा "हम्ह तुम्ह नाथ दुहूं जग साथी" आदि उक्त पंक्तियों में अपनी सारी व्यथा, मधुरता, विरह, मिठास, प्रणय और अस्तित्व तथा अपनी चरम भावुकता के साथ साकार होकर नारी बोल रही है।

कवि के विरह विवेचन में गांभीर्य है और उनकी अत्युक्तियाँ भी हृदय की तीव्र वेदना के शब्द-संकेत प्रतीत होती हैं। प्रायः विरह ताप के वेदनात्मक स्वरूप की व्यापक विशद व्यंजना ही जायसी की पहचान है। यथा—"लागिउ जरै-जरै जस भारू। फिर-फिरि भूंजसि तजिउ न वारू॥... सारस जोरी कौन हरि, मारि बियाधा लीन्ह।"

जायसी ने इसी वेदनात्मक हृदय हारिणी और व्यापकत्व-विधायनी पद्धति पर बाह्य प्रकृति को भूल अभ्यन्तर जगत का प्रतिबिंब-सा दिखाते हुए अधिकांश चित्रण किया है। हेतूत्प्रेक्षा और बिम्ब-प्रति बिंब वाद का प्रभाव भी इन पंक्तियों में है—

नैनन चली रकत कै धारा। कंथा भींजि भएउ रतनारा॥
सूरज बूड़ि उठा होइ राता। औ मजीठ टेसू बन राता॥
×××

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुहुँकि कुहुँकि जस कोइलि रोई। रकत आँसु घुघुची वन बोई॥

×××

बूँद-बूँद महँ जानहु जीऊ। गुंजा गूँजि करै पिउ-पिऊ॥

नारी की विरहजन्य कृशता का अत्युत्तम निदर्शन इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है—

रकत न रहा विरह तन जरा।

रति-रति होइ नैनन ढरा॥

रक्त विहीन दुख की मारी ऐसी नारी जब हमारी कल्पना में आती है, तब मन विकल हो उठता है। वह स्त्री निश्चय ही करुणा की पात्र है। जायसी ने नागमती को यही करुणा प्रदान की है।

इस प्रकार प्रेम के नाना भावों एवं मन:स्थितियों के सृजन में जायसी ने अपने कवित्व को पूरा उत्कर्ष प्रदान किया है। उनकी सफलता एवं लोकप्रियता, शायद इसी पर अधिक अवलंबित है। उनका प्रेम पयोधि पद्मावत निर्भ्रान्त रूप से हिंदी जगत की अनुपम-अमूल्य निधि है। दोहा-चौपाई शैली में सृजित, अपने समय तक की यह बेजोड़ कृति है। कालांतर में इसी शैली का अनुकरण (श्री रामचरित मानस) कर गोस्वामी तुलसी दास हिंदी साहित्य के शीर्षस्थ साहित्यकार बन गए, जग जाहिर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोदान : गँवई गुहार की गवेषणा

आज गोदान को वर्षों बाद पढ़कर पुनः समाप्त किया हूँ और इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि यह मुंशी प्रेमचंद जी का न केवल एक उत्कृष्ट उपन्यास है प्रत्युत स्वंतत्रता पूर्व के भारतीय ग्राम जीवन पर आधारित एक अच्छा-खासा शोध प्रबंध है। इसमें मुख्यतया शोषण के विरुद्ध घुटन और आँसुओं के माध्यम से की गई गँवई गुहार का अद्योपांत जीवंत चित्रण हुआ है।

हिंदी साहित्य में संभवतः प्रथम बार भारतीय गाँवों को प्रेमचंद ने अपनी ईमानदार आँखों से देखा था। बहुत क़रीब से परखा था। वे (स्वयं) ग्रामीण थे, अतः गाँव की माटी की गंध उनके जेहन में समायी हुई थी। साँसों में रची-पची थी। इसीलिए उनकी लेखनी में गाँव की आत्मा बोलती है।

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने जहाँ शोषकों के मुख्यतः तीन वर्गों—शासक (नौकरशाही), पुरोहित तथा व्यापारी—का निरूपण किया है, वहाँ शोषित हैं केवल किसान। वे किसान, जो किसान कम, मज़दूर ज़्यादा हैं। वे इंसान नहीं देवता हैं। एक स्थान पर एक पात्र से वे कहलवाते हैं। 'इनका देवत्व ही इनकी दुर्दशा का कारण है। काश, ये आदमी ज़्यादा और देवता कम होते।' उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से अट्टहास करती उन अट्टालिकाओं पर व्यंग्य किया, जिनकी नींव मज़दूर-किसानों के ख़ून-पसीने पर आधारित है। उन्होंने मज़ाक़ उड़ाया उन मुट्ठी भर मसीहों का जो एक ओर तो ग़रीबों के हमदर्द होने का फतवा ठोंकते हैं किंतु दूसरी ओर उनके जीने तक के अधिकार को बड़ी सफाई से हड़प लेते हैं। गोदान के राय साहब (अमरपाल) इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। वे उपन्यास के किसान नायक होरी से कहते हैं, "गरीबों में अगर ईर्ष्या या बैर है तो स्वार्थ के लिए या पेट के लिए...बड़े आदमियों की ईर्ष्या और बैर केवल आनंद के लिए है। हम इतने बड़े आदमी हो गए हैं कि हमें नीचता और कुटिलता में ही निःस्वार्थ और परम आनन्द मिलता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ये रुपए तुमसे और तुम्हारे भाइयों से वसूल किए जाते हैं, भाले की नोक पर। हमें तो आश्चर्य होता है कि क्यों तुम्हारी आहों का दावानल हमें भस्म नहीं कर डालता।"

यहाँ देखिए शोषक वर्ग पर एक ज़ोरदार तमाचा—

"यह तो पाँच ही हैं मालिक?"

"पाँच नहीं दस हैं, घर जाकर गिनना।"

"नहीं सरकार पाँच हैं!"

"एक रुपया नज़राने का हुआ कि नहीं?"

"हाँ सरकार।"

"एक कागद का!"

"हाँ सरकार!"

"एक दस्तूरी का"

"हाँ सरकार।"

"एक सूद का"

"हाँ सरकार।"

"पाँच नकद, दस हुए कि नहीं?"

"अब यह पाँचों मेरी ओर से।"

"कैसा पागल है!"

"नहीं सरकार, एक रुपया छोटी ठकुराइन का नज़राना, एक बड़ी ठकुराइन का। एक छोटी ठकुराइन के पान के लिए, एक बड़ी ठकुराइन के। बाक़ी बचा एक, वह आपकी क्रिया-करम के लिए।"

प्रेमचंद का किसान, संसार का सर्वाधिक अकिंचन प्राणी है। वह जीवन भर ग़रीबी से लड़ता है, अविराम-अनवरत। उसके हाथ में चार पैसे आये नहीं कि शोषक तत्व उसी तरह टूट पड़े, जैसे किसी लावारिस लाश पर चील, कौए और कुत्ते। और फिर वह 'जैसे थे' कि पूर्व स्थिति में उतर आता है। इस संदर्भ में आगे उल्लिखित दो चित्रण पर्याप्त होंगे। पहला जब होरी को खेत बेचने पड़ते हैं तथा दूसरा जब उसे बेटी तक को बेचने के लिए बाध्य हो जाना पड़ता है। दोनों दृश्य क्रमशः दर्शनीय हैं, शोचनीय हैं—

"हारे हुए महीप की भाँति उसने अपने को इस तीन बीघे के क़िले में बंद कर लिया था और उसे प्राणों की भाँति बचा रखा था। फाँके सहे, बदनाम हुआ, मजूरी की, पर क़िले को हाथ से न जाने दिया। मगर अब क़िला भी हाथ से निकला जाता था।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"होरी ने रुपए लिए तो उसका हाथ काँप रहा था। उसका सिर ऊपर न उठ सका। मुँह से शब्द न निकला, जैसे अपमान के गड्ढे में गिर पड़ा है और गिरता चला जाता है। आज 30 साल जीवन से लड़ते रहने के बाद ऐसा परास्त हुआ है, मानो उसे नगर के द्वार पर खड़ा कर दिया गया है, और जो आता है उसके मुँह पर थूक देता है।"

चाँदी काटते पुरोहित वर्ग के ओढ़े मुखौटे को प्रेमचंद ने बेरहमी से उतार फेंका है। उन्होंने गोदान के पंडित मातादीन से ही उसकी घिनौनी वृत्ति का कितनी कुशलता के साथ पर्दाफाश किया है—

"जब तक हिंदू जाति है, तब तक ब्राह्मण भी रहेंगे और जजमानी भी। ...ऐसा चैन न साहूकारी में है, न जमींदारी में।"

गोदान की झुनियाँ दूध बेचने जाती है। उसकी स्थायी ग्राहकों में एक पंडित भी हैं। आज पंडिताइन कहीं बाहर गई हैं। पंडित इस सुअवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहते। वह ज्यों ही घर के अंदर प्रवेश करती है, पंडित दौड़कर दरवाज़ा बंद कर देते हैं। फिर तो समाज का सर्वाधिक आदर प्राप्त ब्राह्मण एक अबला के सम्मुख किस प्रकार गिड़गिड़ाते हुए दाँत निपोरता है, पठनीय है—

"भगवान पूछेंगे, मैंने तुम्हें इतना रूप-धन दिया, तुमने उससे एक ब्राह्मण का उपकार तक नहीं किया, तो क्या जवाब दोगी!" बोले, "मैं विप्र हूँ, रुपये-पैसे का दान तो रोज़ ही पाता हूँ, आज रूप का दान दे दो ना!"

जहाँ ब्राह्मण परदे की आड़ में इस स्टेज पर उतर आता है, वहीं—

"मातादीन गर्म होकर बोले, 'पीठ पीछे आदमी जो चाहे बके, हमारे मुँह पर कुछ कहे तो उसकी मूँछें उखाड़ लूँ।...हमारे ऊपर कोई क्या हँसेगा, जिसने अपने जीवन में एक एकादशी भी नागा नहीं की।"

बाल साहित्य के बहाने एक करारा व्यंग्य

बच्चे गाँव के हों या शहर के, वे केवल बच्चे हैं। गोदान में जहाँ वात्सल्य का अत्युत्तम निदर्शन प्रस्तुत है, वहीं अमीरी की कलमुँही प्रवत्तियों पर यह चोटीला व्यंग्य भी—

"काका! बहन हमको रोज़ चिढ़ाती है कि तू रूपा है, मैं सोना हूँ। मेरा नाम कुछ और रख दो ना।"

होरी ने बनावटी रोष से कहा, "तू इसे क्यों चिढ़ाती है सोनियाँ? सोना तो देखने को है, निबाह तो रूपा से ही होता है। रूपा न हो, तो रुपए कहाँ से बनें, बता?"

सोना ने अपने पक्ष का समर्थन किया—"सोना न हो तो मोहन कैसे बने,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नथुनियाँ कहाँ से आये, कंठा कैसे बने?''

होरी को एक नई युक्ति सूझ गई—''सोना बड़े आदमियों के लिए है। हम ग़रीबों के लिए तो रूपा ही है। जैसे जौ को राजा कहते हैं, गेहूँ को चमार, इसीलिए न कि गेहूँ बड़े आदमी खाते हैं, जौ हम लोग खाते हैं।''

सोना परास्त होकर बोली—''तुम सब जने एक ओर हो गए नहीं तो रुपिया को रुलाकर छोड़ती।''

रूपा ने उंगली और जीभ मटकाकर कहा, ''ए राम! सोना चमार ए राम सोना चमार, सोना चमार!'' वह ज़मीन पर उछल पड़ी और उछल-उछलकर यही रट लगाने लगी, ''रूपा राजा सोना चमार, रूपा राजा सोना चमार।''

गोदान का करुणावसान संसार-साहित्य का सर्वोत्कृष्ट सृजन

''उसकी आँखें बंद हो गईं और जीवन की सारी स्मृतियाँ हृदय पटल पर ...वह सुखद बालपन आया, जब वह गिल्लियाँ खेलता था, माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, गोबर आया है और उसके पैरों पर गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनियाँ दुलहिन बनी हुई लाल चुनरी पहने उसे भोजन करा रही है। फिर एक गाय कामधेनु-सी... ।''

'धनिया यंत्र की भाँति उठी। आज जो सुतली बेंची थी, उसके बीस आने पैसे लाई और पति के ठंडे हाथ पर...और पछाड़ खाकर गिर पड़ी।'

प्रेमचंद युगद्रष्टा और युगस्रष्टा साहित्यकार थे। उनका गोदान युग विशेष के अपकर्ष की सजीव गाथा है। इस कृति में परासचित, नियाव, पतियाना, भुरकुस, मजूर, सराप, जुम्मा (जिम्मा), दाढ़ी जार व मुँह झौंसा जैसे ग्राम्य सुलभ भोजपुरी शब्दों के साथ-साथ आवश्यकतानुसार अस्मत, तहजीब, जहन्नुम, तौफीक, मक्र तथा फरेब जैसे अहिंदी शब्दों के यथास्थान प्रयोगों ने अनुभूति की सघनता पर अभिव्यक्ति की प्रभविष्णुता की मुहर लगा दी है। लिखने के लिए उन्होंने बहुत कुछ लिखा, एक से बढ़कर एक कृतियाँ हिंदी साहित्य को दीं, पर यदि वे अकेले 'गोदान' (रंगभूमि भी) लिखकर ही संतोष कर लिए होते, तो भी उनके अमर होने के लिए यह काफ़ी होता। वस्तुतः उनका यह उपन्यास गँवईं गुहार की सच्ची गवेषणा है, कहने में तनिक संकोच नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विवेकी राय विरचित 'सोनामाटी'—पूर्वांचल का टुकड़ा भर नरक

भारत जैसे विशाल देश की अनेक आंचलिक इकाइयाँ अपने अनंत आकर्षक, वैविध्यपूर्ण जीवन छवियों को लेकर आज भी विलुप्त बेपहचान हैं। इस परिप्रेक्ष्य में करइल के एक व्यापक भूखण्ड की शोधपूर्ण शिनाख़्त के रूप में अपने समग्र ग्राम बोध एवं आंचलित प्रवृत्तियों के साथ 'सोनामाटी' का सृजन हुआ है। लोक जीवन और लोक तत्व के जिस व्यापक एवं सांस्कृतिक परिवेश की बुनावट कृति में हुई है, वह अनुपमेय है। स्वराज्यकृत राजनीतिक परिवर्तनों से प्रभावित होकर भी लोक चेतना की धारा अक्षुण्ण बनी हुई है। कृतिकार की खोजी नज़रों से अंचल विशेष गाँव-परिवार की कोई भी समस्या ओझल नहीं हो सकी है। कृति के अंदर ग्रामात्मा की सिसकन का व्यापक फलक पर बहुत यथार्थ चित्र उपन्यस्त हुआ है। गाँव टूट रहे हैं, जर्रा-जर्रा बिखर रहे हैं, यह साम्प्रतिक टूटन या बिखराव, न केवल आर्थिक, वरन राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में है। गाँव समाज के छीजते जीवन मूल्यों का, रही-सही संस्कृति के अवमूल्यन का लेखक ने बख़ूबी पर्दाफाश किया है। कृति में आधुनिकता एवं परंपराओं के बीच थपेड़े खाती गाँव की समस्त विसंगतियों-विद्रूपताओं के साथ लोक जीवन के कड़वे यर्थाथ का अत्युत्तम निदर्शन हुआ है।

'सोनामाटी' की कथा-बागडोर रामरूप के हाथों में थमा दी गई है। वह कथा का प्रमुख पात्र होकर भी एक चिंतक, आलोचक तथा सूत्रधार की भाँति है। धरती के इस स्वर्णांचल के प्रति उसमें आकर्षण कम, विकर्षण अधिक है। उसे करइल (क्षेत्र) से कोफ्त है। करइल स्वरूप हनुमान प्रसाद से घृणा है। कथारम्भ में ही वह करइल को उसकी चरम विशेषताओं के साथ परिभाषित करता है। सोनामाटी यानी करइल। क्रूर-कराल-करइल! एक कीचड़-कांदो सिक्त माटी वाला, तो दूसरा मोटा विषधर करइल-सा सदेह-सजीव। मानवीकरण की सहज अभिव्यक्ति, चरित्र चित्रण की चारुता में सचमुच सजीव हो उठी है—"रंग काला कोलतार, बाल बहुत कम पके-झड़े, मोटे-मोटे सूअर बारा होंठ और दाँतों को भी शामिल कर लें, तो उस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साकार जानवर की ठीक एक शक्ल। अनगढ़ गठे बबूल के कुंदे से हाथ-पैर, भालू जैसे बालों वाले। बोलता है तो घोड़े की तरह हिनहिनाता है और घूरकर देखता है तो भूखे गिद्ध की तरह...मोटी मिर्जापुरी लिए खेतों के बीच से बेरास्ते कहीं लपका हुआ जा रहा है तो भ्रम होता है कि करइल की करिया माटी उठकर कहाँ चली? ऐसा वह कृषकासुर करइल का दैत्य, सचमुच साक्षात् करइल!'' यानी करइल की पर्याय-प्रतिमूर्ति के रूप में हनुमान प्रसाद अपनी पूरी जीवंतता के साथ छा उठा है।

और रामरूप तो समूचे उपन्यास की रीढ़ ही है। उसके गाँव महुवारी के एक अधमति गंजेड़ी निःसंतान खुबवा की पाँच बीघे की पूरी जायदाद उसे बहकाकर हनुमान प्रसाद ने अपने नाम रजिस्ट्री करा ली है। रामरूप की शादी के समय हनुमान प्रसाद ने यही ज़मीन दहेज में देने का वादा किया है। इस दहेज रूपी ज़मीन की अंतहीन मृग मरीचिका में वह रामरूप को अनवरत उलझाये रखता है। और ससुर के काले कारनामों के ख़िलाफ़ दरिद्र दामाद का विद्रोही स्वर उठ-उठकर दब जाता है। उलझनें और भी हैं। दीन दयाल रूपी दैत्य उसके पड़ोसी खेत को लट्ठा भर चढ़कर अपने खेत में दबोच लेता है। अगर थोड़ी भी असावधानी हुई तो वह पूरा का पूरा खेत लील सकता है। एक तरफ़ 'छोड़ो मास्टरी (शिक्षकी) या फँसाओ गला' को साकार करते विद्यालयी मैनेजर विश्वनाथ पाण्डे और प्रिंसिपल राम मनोहर के दमघोटू शिकंजे हैं, तो दूसरी तरफ़ रातो रात चोरी से कटी अगहनियाँ के बालों की मानसिक चरमराहट है। इस तरह की उलझन पूर्ण परिस्थितियों में रंगीन मौसमी तकाजों की, सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की, परम्परागत ब्रत, त्यौहार तथा मेलों की अर्थवत्ता, रामरूप जैसे शिक्षक की बौद्धिकता के समक्ष सारहीन हो जाती है। जीवन में सुख-शांति का एक क़तरा नसीब नहीं हुआ कि तुरंत कोई बवाल! वह चलते-चलते अनचाहे अनजाने 'कोइली-प्रसंग' से जुड़ जाता है। कोइली को भगाये जाने के अपराध में अपने ससुर हनुमान प्रसाद द्वारा परोक्ष रूप से वह बार-बार प्रताड़ित किया जाता है। पुनः वह सीरी भाई के प्रति अपनी विवश सहानुभूति का शिकार होता है। जिसका तीन बीघा खेत दीन दयाल हड़प जाता है। उसकी खुल्लम-खुल्ला घोषणा है, कुछ लोगों से कुर्सी सट जाती है, कुछ लोगों से नौकरी चिपक जाती है और मेरी कुंडली में ज़मीन है कि अनचाहे जोत में समा जाती है। मैं क्या करूँ! इस प्रकार दीन दयाल, नवीन आदि से अपने लिए, दूसरों के लिए, जाने-अनजाने शत्रुता लेकर बेचारा रामरूप टूट-टूट जाता है। किंतु टूट-टूटकर जुटते रहने की उसकी अविराम प्रक्रिया जारी है। सीरी भाई पर लगान वसूली की नादिरशाही के ख़िलाफ़ वह अपनी आवाज़ उठा ही देता है और क्रूर कर्मचारियों को लौट जाने के लिए विवश कर देता है। अपनी कन्या कमली की शादी को लेकर तो रामरूप की परेशानी ताड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन जाती है। उसकी ग़रीबी बराड़पुर के घड़ियाल जैसे रघुनाथ बाबू के दहेज खोर जबड़े में छटपटाने लगती है। अभी तिलक-दहेज की तैयारी बैठी है कि अचानक उस पर कोआपरेटिव से पाँच हज़ार की जाली कुर्की आ धमकती है। हनुमान प्रसाद की इस कुटिल कृपा से रामरूप पूरी तरह तिलमिला उठता है।

तिलमिलाहट के इन व्यक्तिक मुद्दों के अतिरिक्त सामाजिक और क्षेत्रीय संदर्भ भी अनेक स्तर पर रामरूप को खिन्न-उद्विग्न करते हैं। गाँव और क्षेत्र के विकास में बाधक तत्वों में जहाँ हनुमान प्रसाद, नवीन बाबू, दीनदयाल आदि हैं, वहीं स्वार्थ लिप्त सरकारी तंत्र भी है; अकर्मण्य पुलिस, सुपरवाइजर, तहसीलदार, खण्ड विकास अधिकारी, विधायक और मंत्री भी हैं। कुछ उद्धरण द्रष्टव्य हैं—

"ओ हमारे देश के प्यारे प्रधानमंत्री जी! देखिये मैं जानता हूँ। किस प्रकार कीचड़ में फँसा हूँ। आपकी गाँव-गाँव में सड़क की योजना, क्या मेरे मर जाने के बाद आएगी? ...हमारे खेत का सोना खलिहान के रास्ते आपकी मंडी में चला जाता है। उस सोने से आपके लिए कार है, सड़क है, और मेरे लिए यह कांदो की कारागार है।"

"जो पुलिस साहु की रक्षा के लिए चोर पकड़ती है, वही चोर की रक्षा के लिए उपाय भी गढ़ देती है। हर टेबुल-मुनि नौकर है न कि समाज सेवक। जहाँ काग़ज़ की आँखें और नोटों के दिल हैं।"

सोनामाटी में शोषित-अवहेलित-उत्पीड़ित नारियों के कारुणिक रेखांकन अत्यंत मर्मस्पर्शी हैं। असुरक्षा, अकिंचनता, अधिकारहीनता और युगाधीन भ्रष्ट रूढ़ियों की मार से तड़पती-कलपती नारी की वेदना से बुनी घटनावली में कोइली, सुनरी और रुपिया बहुत हृदय द्रावक चित्र की भाँति उकेरी गई हैं। कोइली की अस्मत के साथ न केवल हनुमान प्रसाद और सुमेर बाबू खेलते हैं, बल्कि इसके पूर्व वह सुग्रीव द्वारा बहुतों के सामने व्यंजन बनाकर परसी गई है। इसी तरह सुनरी पहले नवीन बाबू की हवस का शिकार बनती है फिर नवीन पुत्र अच्छे लाल और उसके दोस्तों द्वारा मांस नोचते गिद्धों की तरह उसके शरीर का सामूहिक शोषण होता है। नवीन से उत्पन्न सुनरी की संतान लोक भय से खेत में फेंक दी जाती है। वह संतान हनुमान प्रसाद की हवेली में आकर 'पावल पांड़े' बन जाती है। नवीन बाबू पावलपांड़े को माँगने आते हैं और न मिलने पर चोरी से उठा ले जाते हैं। फिर सुनरी की शादी खुबवा से रचायी जाती है, ताकि दोनों को अपने यहाँ रखकर नवीन बाबू सुनरी के शरीर को निर्भय भोग सके। यानी सुनरी और कोइली जिस्म खोर भेड़ियों की खाज बनकर रह गई है। कृति में एक अवहेलित स्त्री रुपिया है। रामरूप की इस बाल प्रेमिका का पति आसाम भाग गया है। वह भूखे नंगे बच्चों सहित पति रहते ही विधवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन गई है। उपन्यास वर्णित दो किशोरियों का चित्रण कुछ अलग स्तर पर उभरा है। एक तरफ़ रामरूप की सीधी-सादी भोली कन्या कमली है तो दूसरी तरफ़ अहंस्फीत पार्थक्य लिए शहर नाज-शृंगार वाली भुवनेश्वर की गर्लफ्रेंड मिस कान्ता। दोनों को इस तरह आमने-सामने खड़ा किया गया है, मानो मौन भाव लज्जा शीलता के ख़िलाफ़ बुद्धिवादिता से अनुप्रेरित मुखर चुनौती का चमत्कार उपस्थित किया गया हो।

आलोच्य कृति में नैतिकता के सभी शिविर धराशायी होते चले जा रहे हैं। स्वार्थमूलक राजनीतिक भ्रष्टाचार की आंधी में भारतेन्दु वर्मा और खोरा जैसे वजनी पात्र भी उड़ चले हैं। इन दोनों पात्रों से रामरूप की विशेष सहानुभूति है। जहाँ जीवन की सच्चाई और नैसर्गिक सौंदर्य से मंडित खोरा की कविताएँ रामरूप को आंदोलित करती हैं, वहीं शहरी माहौल में पैदा होने के बावजूद गँवईं संस्कृति का वाहक बना तेज-तर्रार भारतेन्दु वर्मा भी उसके मन को जीत लेता है। किंतु कुछ ही दिनों बाद वर्मा अपनी निजी तरक़्क़ी के लिए रामरूप से कन्नी काट लेता है। वह न केवल रामरूप की इच्छा के विपरीत भुवनेश्वर की चुनाव जीतने में जी तोड़ मेहनत करता है, बल्कि मित्र कन्या कमली पर भी कुदृष्टि डालता है। फिर वह रामरूप की एकान्तिक निरपेक्षता तथा कमली की दुत्कार पर पूरी अलग छिटक पड़ता है। कालान्तर में पूर्वांचल विकास मंच का अध्यक्ष खोरा भी अप्रत्याशित रूप से सुविधाभोगी सरकारी कवि बन जाता है और गठिया स्टेशन रोड की योजना खटाई में पड़ जाती है। कथान्त में रामरूप के पूछे जाने पर पता चलता है कि 'वे तो लखनऊ गए!' हताश-निराश रामरूप किंर्तव्यविमूढ़ हो उठता है। वैसे सच पूछा जाए तो पूरी प्रस्तुति में रामरूप की मुद्रा ग्लानि, क्षोभ, पश्चाताप, द्विधा एवं कचोट की रह जाती है। उसका मुँह-दुब्बर व्यक्तित्व बहुत आगे बढ़कर कुछ कर गुज़रने का साहस न बटोर दुर्निवार मुद्दों के प्रश्नाकुल भँवर में छटपटाता रह जाता है।

युवा पीढ़ी के दिशाहीन आवाराओं की एक अलग जमात का भी डॉ. राय ने अपने यथार्थपरक चिंतन के साथ जमकर चित्रण किया है। हनुमान प्रसाद पुत्र भुवन उर्फ़ मगनचोला, नवीन पुत्र अच्छे लाल, प्रिंसिपल राम मनोहर पुत्र दिलीप, सभापति रघुवीर पुत्र बनारसी तथा विजय—सुर्ती, पान सिगरेट तथा मेण्डेक्स जैसे नाना नशों में धुत्त ऐसे सिंकिया जवान हैं, जो गँवईं रहन-सहन में किसी भी तरह खप नहीं पाते। आवारों का अगुआ भुवनेश्वर अपने बाप के बारे में कहता है—"इस देहात का सबसे बड़ा गुंडा मेरा बाप हनुमान प्रसाद है...ये जनाब सिक्सटीन की लौंडिया से मुहब्बत करते हैं।" और बेटे के बारे में बाप हनुमान प्रसाद की राय है—"तिलक बढ़ाने की लालच में लड़का देखते-देखते लुहेंड़ा हो गया।" और यही लुहेंड़ा आगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलकर विधायक बन जाता है। रात-रात भर नचनियों के बीच रहने वाला, सायकिल-घड़ी तिड़ी करने वाला अच्छे लाल युवा कांग्रेस का अध्यक्ष बन जाता है। शहर की पढ़ाई से निकले ये युवक हिप्पीकट बाल, ऐंठी हुई बोली तथा नशा-प्रेम लेकर लौटते हैं और गाँव के लिए सिरदर्द बन जाते हैं। इनके विलासपूर्ण अकर्मण्य जीवन पर लेखकीय सवाल कितना त्रासद है—"क्या इनसे गाँव की खेती-गृहस्थी संभलेगी ?"

चुनाव जन्य गँवईं विशृंखलता का बेबाक विश्लेषण सोनामाटी में हुआ है। गाँव में चुनाव का प्रभाव भारत की प्रजातांत्रिक प्रणाली के लिए चुनौती बन जाता है। गोल-गिरोह, सरदारी, जाति-बिरादरी तथ घरेलू स्वार्थों से चुनाव को जोड़, उसे निजी लड़ाई का रूप देकर गाँव वालों को इस कदर उलझाया गया है कि एक ही गाँव में कई-कई गाँव हो गए हैं। इसने रामरूप को पत्नी पुत्री मित्र ससुर जैसे सारे आत्मीय संबंधों से अलग-थलग कर दिया है।

अशिक्षा और अंधविश्वास की वैतरिणी में पूरा करइल बज-बजा रहा है। प्रबंधक द्वारा प्रभावित शिक्षक एवं नकल तंत्र से प्रभावित शिक्षा की अधोगति का वर्णन बहुत साफ़, दो टुक है। एक स्थल पर रामरूप की अभिव्यक्ति है, "स्कूल मैनेजर नामक जन्तु को डाकू कहकर 'डाकू' शब्द का अपमान करना है।" इसी तरह गाँव में फैले ओझैती-सोखैती, झाड़-फूँक, तंत्र-मंत्र के अंधविश्वास पर भी कृतिकार ने धारदार कलम चलाई है। कहीं छातापुर के सोखा की सोखैती है, तो कहीं पियरी झाड़ने वाली बिसुनी की तंत्र-मंत्र-सिद्धि है। हनुप्रसाद जैसे ज़बरदस्त जंतु के लिए सरकस सोखा खोरा ही बना हुआ है। सड़ी-गली रुढ़ियों से पूर्वांचलीय जनमानस के न उबर पाने की शोचनीय स्थितियों का संक्षिप्त, किंतु मारक चित्रण सुधी पाठकों को झकझोरने वाला है।

पूंजीवादी मुखौटों एवं शोषण मूलक प्रवृत्तियों के ख़िलाफ़ सुखुआ, सिटहला के नेतृत्व में साम्यवादी क्रांति का सर्वहारा तेवर भी उपन्यास में उभरा है। ये मज़दूरी बढ़ाने के लिए हड़ताल करते हैं। मारे-पीटे जाने पर शहर भागते हैं। पुनः शक्ति संचय के साथ वापस लौटकर व्यवस्था बदलने के लिए घेराव करते हैं। नारे उछालते हैं। मात्र गाली देने पर सिटहला थाने में रिपोर्ट कर देता है कि उसकी पत्नी को हनुमान प्रसाद ने पीटा है। और अनजाने ही सही रामरूप इनकी बगावत में भी भागीदार बनने की सनद पा जाता है।

कृति में प्रयुक्त नागपंचमी, सतिमी की महावीरी पूजा, पनढकौवा, बन्नीदाई की पूजा, पंचकोसी यात्रा का भंटा-लिट्टी वाला अनुरंजनकारी भोज महोत्सव, आह्लादपूर्ण होली, सनुआन देवी धाम का नौमी मेला, सत्यनारायण कथा; विविध वैवाहिक कर्मठों—मानर पूजा, हल्दी, कक्कन तथा परिहास पूर्ण जलुआ, फिर सूखा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संत्रस्त गँवईं गुंजरियों द्वारा गुंजित हरपरवरी तथा ज़मीन पर पानी गिरा-गिराकर उनकी विचित्र लोट-पोट, बाढ़ की विभीषिका से निर्लिप्त विनोदपूर्ण झिरहिरी-विहार जैसे विविध परम्परित मनोरंजनों के साथ-साथ लोक कथाओं, लोकोक्तियों एवं लोकगीतों के सुंदर-सरस वर्णन व्यापक आंचलिकता को समेटे हुए हैं। पनिहा, कठुआना, धरन, कुलबोरन, कोरो, निगहता, झोंटाइल, लोर, तड़क, अकाज, पपिया, दनाउर, लुहेंड़ा, पेटदगुई, डहर, घमउरी, रइनि, चुहानी तथा हंकड़खोखी जैसे व्यवहृत शब्द आंचलिकता की सृष्टि में सहायक हुए हैं। ललित निबंधात्मक परिदृश्यों एवं चेतना प्रवाही रिपोर्ताजों की इंद्रधनुषी बहुलता सर्वत्र निदर्शित है। भाषा बेहद जानदार है। शिल्पगत सौंदर्य अत्यंत आकर्षक है। कुछ उद्धरण अनावश्यक न होंगे—

'उसकी रत्न जड़ित अंगूठियों वाली उंगलियों में जलती सिगरेट इस प्रकार शोभा दे रही है, जैसे सरकार के हाथों में निरीह जनता।'

'सूरज का लाल गोला पश्चिम की ओर सामने के बबूल की एक बचकस छतरी में उलझा-उलझा नीचे खिसक गया।'

'हरे, पीले रंगों के मिश्रण से उभरी उत्कृष्ट नैसर्गिक कलाकारी के तृप्तिदायक आयामों से पूर्ण वे बिखरे हुए टटके अमृत-कन्दुक अब सबकी आँखों के आकर्षण केंद्र बन गए थे।'

'कुछ चारपाइयाँ मचमचाईं, चप्पल और साल सरसराये, कुछ बेलबाटम फदफदाये और छींट की रंग-बिरंगी चमकती लुंगियाँ, हनुमान प्रसाद का द्वार बुहारतीं किसी अज्ञात उमंग में बहकती-चहकती छवर पर उतर गईं।'

और क्षेत्रीय परिवेश से ओत-प्रोत एक भोजपुरी सिक्त खाँटी गँवईं संवाद का नमूना—

—'हरे बापकाटी, तेरे कुल खान्दान में मातादाई के रंथ में झोंके जाने से बचा कोई ऐसा नहीं था, जो तुझे तमाखू बढ़ाना सिखाता?'

—'ऐसा घीव पीने वाला खान्दान सरकार का है कि उस पर बजर परो!'

—'तू गाली देती है रे नट्टिन! तेरे सात पुश्त को बढ़नी बुहारों!'

उपर्युक्त सारी विशेषताओं के बावजूद उपन्यास के कथानक में अपेक्षित तारतम्य का अभाव खटकने वाला है। अनगढ़ बेतरतीब कथा यात्रा कहीं हज़ार फुट ऊपर, तो कहीं हज़ार फुट नीचे, कभी बहुत आगे, तो कभी बहुत पीछे, ऊँचे पहाड़ की दुष्कर-दुरुह चढ़ाई बन गई है। इसी तरह रामरूप के सोच, सोच के माध्यम से कृतिकार की भाषणबाजी और भाषणबाजी के बहाने गँवईं समस्याओं से संदर्भित लंबी चिंतन प्रक्रिया भी अनेक स्थलों पर उबाऊ ही लगती है। विवाह, बाढ़ तथा सूखा के पेज-दर-पेज लंबे वर्णन भी कथा-रस को बाधित करने वाले हैं। रिपोर्ताजी एवं ललित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबंधीय लटकों-झटकों की बहुलता भी खलती है। 57 वाँ परिच्छेद आते-आते तो उपन्यासकार समीक्षक का रूप ले लेता है। उपन्यास के कथानक को अधिक से अधिक विस्तार देने, या कहें पुस्तक को मोटा (पोथंगा) बनाने के लोभ में किया गया अनावश्यक पृष्ठ पेषण, इसकी पठनीयता-लोक प्रियता में निश्चय ही बाधक बनेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक अजूबा ज़िंदगी की शोधपूर्ण शिनाख्त—'शैलूष'

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों में कइयों ने दलित वर्ग को अपने सृजन का प्रतिपाद्य बनाया। ऐसे अवहेलित–उपेक्षित जनसमूहों के बारे में लिखने के प्रयास हुए जो इतिपूर्व या तो एकदम अछूते रहे या जिनकी बाबत शायद किसी का ध्यान ही नहीं गया, यथा भंगियों पर अमृतलाल नागर, बस्तरीय आदिवासियों पर राजेंद्र अवस्थी, डोमड़ों पर राम बदन राय, बुनकरों पर अब्दुल बिस्मिललाह तथा संथालियों पर वीरेंद्र नारायण आदि–आदि। ऐसे उपन्यासों में अमृतलाल नागर के 'नाच्यो बहुत गोपाल' को नितांत नई कथावस्तु, ख़ूबसूरत भाषा, दिलकश शिल्प–शैली तथा कहीं–कहीं अतियथार्थ, अतिरंजनापूर्ण वर्णनों के चलते शायद सर्वाधिक लोकप्रियता मिली।

सदी के अंतिम दशक की शुरुआत के साथ उपन्यास साहित्य के इस अभिनव प्रयोग–अखाढ़े में ग्राम चेतना के सजग कथाशिल्पी डॉ. शिवप्रसाद सिंह भी उतरे। उन्होंने खानाबदोश नटों की दुस्साहसपूर्ण विचित्र दुनिया को जिस साहसिकता, व्यापकता, प्रामाणिक ऐतिहासिकता एवं कुशलता के साथ चित्रित किया है कि इसकी अन्यत्र मिसाल मिलनी मुश्किल है। उन्होंने लिखा भी है—'शैलूष मेरे जीवन की सबसे विवादास्पद कृति बनी और फलतः सर्वाधिक मानसिक तनाव भी उसी ने दिया।' अन्यत्र पृष्ठ 14 पर वे लिखते हैं, 'पराजय, पुलिस के डंडों के नीचे लहूलुहान होते जरायम पेशे वाले शैलूष मुझसे रात में भी मेरी चादर खींच कर चिल्लाते रहे— 'कब तक हमारी व्यथा–कथा को छिपाये रहोगे!' मैं उन दुःस्वप्नों को बिना काग़ज़ पर उतारे शांति नहीं पा सकता था। वह सब सही ढंग से उतारने की कोशिश की है। उतरा या नहीं, इसे आप बताएँ। मैं तो संतुष्ट हूँ कि बबूल के काँटों को अपने कलेजे से उखाड़कर जनधारा में फेंक दिया है।'

कथा का केंद्रीय स्थल रेवतीपुर है किंतु वह रेवतीपुर से चोचकपुर, भुड़कुड़ा होते हुए चंदौली तहसील के कमालपुर क़स्बे तक फैला हुआ है। उपकथा के रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में जुड़े मिर्जापुर के नट कबीले तथा रेवतीपुर के चमार आदि भी मूलकथा के विस्तार में पर्याप्त सहायक है। लेखक की प्रथम कृति 'अलग-अलग वैतरणी' से कुछ ही कम इस कथा का लंबा कैनवस भी क़रीब 300 पृष्ठों में पसरा हुआ है। कथा-यात्रा के बीच-बीच में अनायास उगी लोक गाथा, लोकगीत, आल्हा, निरगुन, जंतसर तथा लोकनृत्य-कठपुतली नाच की आंचलिकता रसांतर के वैविध्य से पूरी तरह ओत-प्रोत है। इस औपन्यासिक कृति में सभी मज़हबों—ख़ासकर हिंदू, मुसलमान, सभी वर्णों तथा सभी जातियों, उपजातियों का जितना सुंदर समन्वय (भारतीयकरण) नट बिरादरी में देखने को मिला है, यह अन्यत्र दुर्लभ है। पिता हिंदू है तो माता मुसलमान। चाचा मुसलमान है तो चाची हिंदू। इनसे उत्पन्न लड़के-लड़कियों के विवाह भी बिना बरावा (प्रतिबंध) किसी भी वर्ग, वर्ण तथा बिरादरी में। इस प्रकार किसी भी मज़हब, वर्ण या जाति कुलोत्पन्न कोई भी उपेक्षित-उत्पीड़ित नटों में शरीक हो सकता है। अपने घर-परिवार तथा समाज से ऊब-घबराकर इस कबिलाई ज़िंदगी का हिस्सा बनने प्रायः वे ही स्त्री-पुरुष या युवक-युवती आते हैं जो अपने किसी बड़े असामाजिक अपराध या कुकर्म के चलते मुँह दिखाने के काबिल नहीं रह गए हैं। संक्षिप्त कथा-सार ब्राह्मण कन्या रेवतीपुर के विजातीय, राजपूत युवक सुधाकर से निश्छल प्रेम के चलते पैर भारी। जाति अपमान से आहत ब्राह्मणों ने दंडस्वरूप सुधारक पर इतने कोड़े बरसाये कि उसकी मृत्यु। उसी रात बस्ती से दूर कुछ पेड़ों के बीच प्रेमिका रेवती आग लगाकर जल मरी। जहाँ वह मरी, आस-पास की पचासों एकड़ ज़मीन इसलिए परती पड़ गई कि मारे डर के वहाँ लोगों ने जाना छोड़ दिया। अनिष्ट के भय से वहाँ खड़े पेड़ों के पत्तों तक का स्पर्श वर्जित। बाद में वही ज़मीन ब्राह्मणों व नटों में विवाद का कारण बनी। एक तरफ़ सवर्ण अहमन्यता से ग्रस्त, लोभी लंपट घुरफेकन तिवारी और उनके चापलूस नमक खाए गुर्गे तो दूसरी तरफ़ बतर्ज रेवती, जुड़ावन नट की सवर्ण प्रेमिका सब्बो मौसी (सावित्री) के नेतृत्व में नाना जातियों के मेल से बनी विशाल शैलूष (नट) बिरादरी। इसके बाद तो एक लंबा महाभारत। जानलेवा जंग। पिस्टल, चाकू, इलेक्ट्रानिक टेप रिकार्डर, अख़बार, कैमरामैन, जिलाधिकारी, पुलिस अधिकारी तथा पत्रकार आदि की अपनी-अपनी भूमिकाएँ। गिरते, तड़पते, मरते, लहूलुहान होते लोग और अन्याय, अत्याचार, छलकपट, संशय, कौतुक, अनहोनी, बाजीगरी, सस्पेंस, रोमांस तथा शैलूष छोंकरियों द्वारा चाकुओं की अचूक निशानेबाजी आदि का अंतहीन-सा लंबा सिलसिला। एक यायावर, जरायम पेशा, खनाबदोश तथा बदक़िस्मत ज़िंदगी की अत्यंत संघर्षपूर्ण महागाथा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नटों की अगुआ सब्बों द्वारा अंततः प्रशासन का दरवाज़ा खटखटाना। काफ़ी खींचतान और जहालत के बाद प्रशासन द्वारा परती ज़मीन का 40 प्रतिशत चमारों हेतु तथा 60 प्रतिशत नटों हेतु आवंटन। इसके बाद भी ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने के दौरान घुरफेकन का तरह-तरह से रोड़े अटकाना। जय-पराजय के इस जीवंत महाभारत में भी आख़िर जीत पाण्डवों (नटों) की ही, किंतु काफ़ी कुछ खोने-लुटाने के बाद। आततायी घुरफेकन का कुत्ते की मौत-सा पराभव पाठकीय दुखती रग पर मरहम के लेप जैसा सुखद।

'शैलूष के कुछ उल्लेखनीय उद्धरण—

1. 'ज़िंदगी क्या अंधेरे में मैथुन करके बच्चा-बच्ची जनमाने और ख़ानदान के नाम पर चाहारदीवारी में क़ैद होने का ही नाम है?'

2. 'वर्णशंकर भारत तो क्या, सारा विश्व हो चुका है। अपने ख़ून को शुद्ध बताने वाला तानाशाह जब चुल्लू भर पानी में डूब मरा, जब स्वास्तिक पताका लटक गई, तो यह गधा घुरफेकन कहाँ टिकेगा।'

3. 'यह कोई इत्तफाक नहीं था कि टीकरों को समतल बनाने का कार्य उन्हें (हरिजनों) को ही सौंपा गया जो ज़िंदगी में हमेशा समतल ज़मीन चाहते रहे और पा न सकें।'

4. 'दुनिया में न कोई पवित्र होता है बेटी, न म्लेक्ष। यह सब अपने को बुरके में छिपाने की कोशिश है...नक़ली घूंघट है...'

5. 'अरे यार, जिसके गुप्तांग तेज़ होते हैं, उसका दिमाग़ भी उतना ही तेज़ हो जाता है।'

6. 'दूध में अरारोट मिलाकर बेचने वाले कमिश्नर से ज़्यादा तनख़्वाह पाते हैं। ठीकेदार लखपती हो गए, करोड़पति कहो तो ज़्यादा सही होगा। जो जितना बड़ा चोर है, वह उतना ही विश्वसनीय है। जो जितना बड़ा गद्दार है वह उतना ही पूज्यनीय है। यानी, देश किधर जा रहा है...'

उपन्यास में अनेक पक्ष बड़े सुखद हैं तो कुछ बड़े तल्ख भी। कहीं त्याग-उत्सर्ग की अनन्य जीवंतता है तो कहीं अत्यंत तुच्छ, स्वार्थसिक्त जुगुप्सित स्थितियाँ भी। कथा प्रवाह में कतिपय ऐसे स्थल भी आए हैं जो यथार्थ को अतिक्रमित करते लगते हैं। वैसे ऐसे स्थल नटों की जातीय जिजीविषा के विकट वास्तव हैं, साथ ही आम पाठकीय रुचि को बढ़ाने वाले भी। पूरी कृति पढ़ने के बाद लगा है कि लेखक सब्बों मौसी, लल्लू, अमृत तथा ताहिरा आदि से भावना के स्तर पर काफ़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हद तक जुड़ा हुआ है। कबिलाई ज़िंदगी को नजदीक से भोगा है। डॉ. सिंह ने लिखा भी है—'शैलूषों के हक़ की लड़ाई मैंने दस वर्ष की उम्र में अपने चाचा की छावनी गोसईसीपुर में देखी।' पलभर के लिए ही सही, ऐसा लगा है जैसे पूरा हिंदुस्तान 'रेवतीपुर' में समा गया है। कथांत में वर्षों से ग़ायब पागल जैसे व्यक्ति जुम्मन का अचानक अवतरण तथा बिना किसी पारिवारिक मोह-लगाव के उसका तिरोहित हो उठना बड़ा ही हृदयद्रावक बन पड़ा है—'झरि लागे महलिया गगन घहराय' पूरी कृति से छनकर सब्बो के जीवट भरे पवित्र चरित्र की जो संश्लिष्ट रेखाएँ उभरी हैं, अपने आप में उत्कृष्ट कला की द्योतक, अद्‌भुत तथा अभिभूत करने वाली हैं। कुल मिलाकर इस जैसे लिखे गए अब तक के पढ़े उपन्यासों में मुझे 'शैलूष' अन्यतम लगा है। अगर न पढ़े हों, मैं चाहूँगा, आप भी इसे अवश्य पढ़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरी राय में डॉ. राय की रम्य रचना 'श्वेत पत्र'

पूर्वांचल विशेष ग्राम्य परिवेश के चतुर चितेरे, सशक्त सर्जक, सूक्ष्म द्रष्टा एवं यशस्वी कथाकार डॉ. विवेकी राय ने रंगभूमि के प्रेमचंद, आधा गाँव के राही मासूम रजा, मैला आंचल के फणीश्वर नाथ रेणु, बलचनमा के नागार्जुन, सत्ती मैया का चौरा के भैरव प्रसाद गुप्त, अलग-अलग वैतरिणी के शिव प्रसाद सिंह, इसी प्रकार राम दरश मिश्र तथा अमर कांत आदि की परंपरा को और भी जीवंत बनाया है, विकसित किया है। वे उनकी अपूर्णताओं को भी पूर्ण करते हुए आगे बढ़े हैं। डॉ. राय इस परंपरा के न केवल अनुकर्ता वरन् ऐसे अग्रसारक हैं, जिनकी कारियित्री प्रतिभा बेहिचक काबिले तारीफ़ है।

ललित निबंध, संस्मरण, रिपोर्ताज तथा कथा साहित्य का अद्‌भुत कोलाज बनाता 'श्वेत पत्र', लेखक की एक कालजयी कृति है। कालजयी इसलिए कि जितना यह उपन्यास है, किंचित उससे अधिक इलाक़ाई विशेष इतिहास। इतिहास भी—भोजपुरी करइलांचल के तत्कालीन (सन 1942) गुप्त आंदोलन पर आधृत-उद्वेलित राष्ट्रीय मानसिकता का। इतिहास ने जितना 'चोरी-चौरा' जैसे काण्ड (जिसमें दर्जन भर सिपाही जलाए गए) को महत्त्व दिया, 18 अगस्त, सन 42 को हुए मुहम्मदाबाद तहसील काण्ड तथा बैरियाँ थाना कांड (जिनमें लगभग 29 व्यक्ति शहीद हुए) को, उसका सतांश भी नहीं। इस प्रकार के धुंधलाए तथ्यों को लेखक ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देखा है। यद्यपि मन्मथ नाथ गुप्त, यशपाल जैसे लेखकों ने अनेक तथ्यों का पर्दाफाश किया है, फिर भी हमारा इतिहास बहुत कुछ पाश्चात्य इतिहासकारों का ही मुखापेक्षी है। इस दृष्टि से इस कृति की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।

ग़ाज़ीपुर-बलिया (उ.प्र.) की सीधी-सादी, सरल, निश्छल जनता के जाग्रत भावोन्मेष एवं जन मानस की स्वातंत्र्य चेतना का कथाकार ने बड़ी संजीदगी के साथ चित्रण किया है। वर्णन में ओज, उदात्तता, भाव प्रवणता, हार्दिक संवेदना तथा कलात्मकता के साथ-साथ तत्कालीन इतिहास की बहुलांश साफ़गोई भी है, जिनमें नामों, स्थानों, घटनाओं और तिथियों को मूल रूप में रखने का प्रयास किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपन्यास में मुख्य पात्र दो हैं तिवारी और मैं (लेखक)। ये जन जागरण में सर्वाधिक सहायक हुए हैं। वैसे इनके कार्य ऐसे नहीं हैं, जिन्हें बहुत अधिक सराहा जा सके या जिनसे अंग्रेज़ी सत्ता दहल उठी हो। वस्तुतः इस तरह के देश-प्रेमोन्मत्त क्रांतिकारी पूर्वांचल के गाँवों में अधिकांश देखे जा सकते हैं। प्रयुक्त पात्र 'तिवारी' की कार्य कुशलता, निर्भीकता तथा निर्णय क्षमता कहीं कुछ प्रभावित करती है, तो कहीं यह मात्र किसी नाटक के सूत्रधार जैसा सामने आता है, और ऐसी-ऐसी बातें कह जाता है, जो बहुत गुरु-गंभीर, तथ्यपरक एवं अपेक्षित लगती हैं। तत्कालीन वातावरण के लिए उपयोगी हैं। बावजूद इसके तत्कालीन भूली-बिसरी यादों को उपन्यास का आधार बनाना, एक बहुत बड़े जोखिम का काम है, जिसे डॉ. राय ने उठाया है, बेखटक-बेहिचक। सन् 42 के इर्द-गिर्द बिखरे इस तरह के अनगिन कारनामें पूरे देश में आसानी से देखे जा सकते हैं।

सलमा-सितारों की तरह यत्र-तत्र उपन्यास में तरह-तरह की राष्ट्रीय कविताएँ टाँक दी गई हैं, जो राष्ट्रीयता का संचार करती हैं। किंतु कहीं-कहीं बेमतलब पृष्टपेषण भी। कुछ बानगियाँ—

सोरठा— *गांधी उर अति सोच, कृप्स गए निज देश तब।*
कहहिं बृटिश सब पोच, नहिं समुझहिं खल बात अब॥

चौपाई— *उचरंग बोली देत अवाजा। जनु बाजत टुनकी कर बाजा॥*
×××
चले बियाहन ललका माटा। अहिरिन उधर ठाट सब ठाटा॥

इसी तरह बुलेटिनों का इस्तेमाल, लेखक ने ज्यों का त्यों ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में किया है, फिर भी अनावश्यक विस्तार के कारण ये पाठकों में घबराहट ही पैदा करेंगे। संभव है, इन्हें पढ़े बग़ैर ही पाठक आगे बढ़ जाए।

ग्राम्य धरती की अपनी (निजी) गंध ही उपन्यास की एकमात्र विशेषता है, जिस पर शायद पाठक डोले-मडराये। जमावड़ा, दरकना, दनाउर, कारस्तानी, ओठंगना, निचू (न चूने वाली) जैसे माटी के स्वर कृति को जीवंत बनाए हुए हैं। 'एक बाँस दिन ऊपर चढ़ आया', 'तिवारी गोले के साथ उग आया' जैसे सरल-स्वाभाविक गँवई प्रयोगों की ख़ुशबू आकर्षणीय है।

वैसे अधिक खटकने वाली बात प्रायः उपन्यास में एकरसता की अधिकता है। आगे क्या हुआ की जिज्ञासा से रहित, उपन्यास का कोई नायक है, न कोई ख़ास कथानक। एक भी नारी पात्र एकदम है ही नहीं। कहीं-कहीं कथा तारतम्य भी विशृंखलित है। डॉ. राय ने प्रचलित लोकप्रियता की परवाह न कर आजकल के बाज़ारू चटपटे मसालों से भी कृति को दूर रखा है। कुछ समीक्षकों के अनुसार तो यह लगता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही नहीं कि उपन्यास है। हाँ, कृति के कुछ स्थल अपने शिल्पगत सौंदर्य के चलते, निश्चय ही बड़े प्रभावोत्पादक बन पड़े हैं—

"...प्रत्यूष की अरुणनील लोहित नवजागरण धारा-सा समय का एक ठोस सत्य! भारत के भविष्य को गढ़ने वाला एक तूफान, जिसमें गूंज रहा है—चालीस करोड़ नहीं दबेंगे! जिसमें सनसना रहा है—इन्कलाब ज़िंदाबाद! जिसमें धमक रही है, भारत के इतिहास को गढ़ने वाली एक रोमांच-कथा!"

"खद्दर! धवल जैसे ज्ञान, कोमल जैसे भक्ति और मोटा जैसे कर्म! नई संस्कृति का अग्रदूत, स्वतंत्रता की साधना, दरिद्रनारायण का कवच, प्यारा खद्दर! जिसे धारण करने पर, हण्टर की सनसनाती साट खाकर भी सी (उफ्) न करो।"

एक और बात यह कि जिस राष्ट्रीय आंदोलन को लेकर पुस्तक का प्रणयन हुआ है, उसका अभीष्ठ पूरा नहीं होता और अचानक यह बीच में ही ख़त्म हो जाता है। अच्छा होता यदि डॉ. राय उपन्यास के देशप्रेमी पात्रों को आज़ादी का दर्शन करा दिये होते। यानी कृति को खींचकर सन 47 तक पहुँचा दिया गया होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीकृष्ण राय हृदयेश और उनका उत्कृष्ट काव्य सृजन सत्यासत्य

सही समय याद नहीं। इतना अनुमान है कि सन 1980 के आस-पास मैं डॉ. विवेकी राय के साथ हृदयेश जी से, उनके नक्खास (ग़ाज़ीपुर) स्थित आवास पर पहली बार मिला था। वे विवेकी राय जी से काफ़ी देर तक बतियाते रहे और मैं मूक दर्शक-श्रोता बना, उनकी आपाद मस्तक दिव्य काया को निहारता रहा, मधुर वाणी का सुख उठाता रहा। एक साहित्यानुरागी के रूप में डॉ. राय ने मेरा उनसे पहुँचते ही परिचय करवा दिया था। दोनों बुजुर्गों के बीच होती रही आत्मीय बातचीत को मैं मंत्रमुग्ध देर तक—कम से कम घंटा भर तक सुनता रहा। फिर कुछ खा-पीकर हम लोग वापस लौट आए। इसके पश्चात अधिक नहीं, दो या तीन बार मैं और उनसे मिला था। बातें भी की थी। उनका व्यक्तित्व बहुत ही मोहक था। वे मामूली से मामूली व्यक्ति को भी अत्यधिक स्नेह देने वाले भले मानव मुझे लगे थे।

हृदयेश जी का जन्म 1909 ई. में हुआ था। वे मूलतः ग़ाज़ीपुर ज़िले के गौसपुर क़स्बे के समीप कठउत गाँव के निवासी थे। जनपद में उनका प्रादुर्भाव एक साहित्यिक युग पुरुष के रूप में हुआ। निश्चय ही वे बहु आयामी ज्ञान के धन कुबेर थे। ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व के सान्निध्य में पुष्पित-पल्लवित होकर अनेक साहित्यधर्मी उच्च कोटि के साहित्यकार बने, बहुत आगे बढ़े। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, खोजी पत्रकार, समाजसेवी तथा श्रेष्ठ साहित्यकार के रूप में अपनी अलग छाप छोड़ने वाले इस इतिहास पुरुष ने मौलिक तथा अनूदित दर्जनाधिक कृतियों का सृजन किया, जिनमें युवक, हिमांशु, पथदीप, महाप्रकाश, गंगा मुझे पुकारे, सत्यासत्य, नवद्वीप, अमृत भर गया, संजीवनी, शंखपुष्प, बदगुमानी का मौसम तथा हृदयेश सतसई आदि प्रमुख हैं। इनका सर्वाधिक सराहना-प्राप्त सृजन सत्यासत्य नामक प्रबंध काव्य है। इन्होंने 'लोकसेवक' (सन् 1949 से आरंभ) नामक एक साप्ताहिक पत्र का संपादन किया, जो लगभग दो दशकों तक लगातार प्रकाशित होता रहा। नवांकुरों को प्रोत्साहित करने में इस पत्र की उल्लेखनीय भूमिका रही। हृदयेश जी कई साहित्यिक संस्थाओं के संचालक-संरक्षक भी रहे। और अंत में अब कुछ सत्यासत्य के संदर्भ में—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सत्यासत्य' का सारांश

290 पृष्ठों में फैला यह 'सत्यासत्य' नामक उच्च कोटीय ग्रंथ 'जन सेवा ट्रस्ट रेणुकूट' से पहली बार 1980 में छपा था। तब इसकी क़ीमत मात्र 40 रुपए रखी गई थी। सत्यासत्य हृदयेश जी के जीवन व्यापी संघर्ष और चिंतन-मनन का उच्चतम निष्कर्ष है। इस कृति के माध्यम से उन्होंने प्रश्न और उत्तर, समस्या और उसके निदान को आमने-सामने रखकर आज के आम आदमी के लिए सोचने-समझने की सामग्री प्रदान की है। वस्तुतः महाकाव्य महाभारत की कथा पर आधारित है, किंतु यह सामयिक संदर्भों को भी व्याख्यायित करने में सफल है। इसमें सत असत के युगीन संघर्षों को विश्लेषित किया गया है। कवि इस शाश्वत संघर्ष की अविराम परम्परा पर, जो सतयुग, त्रेता, द्वापर से कलियुग तक अप्रतिहत गति से चली आ रही है, दृष्टि निक्षेप करता है। वह प्रश्न उठाता है, क्या यह संघर्ष अनवरत चलता रहेगा! पुनः कथान्त आते-आते प्रश्न का समाधान भी प्रस्तुत कर देता है। इस प्रकार कवि की सतेज काव्य-दृष्टि बिंबित हो उठती है।

महाकाव्य का शिल्प-संगठन सर्वथा नए स्तर का तो नहीं, किंतु उस पुरानी परंपरा का लीक पीटने जैसा भी नहीं कहा जा सकता। लगभग 7 हज़ार पंक्तियों के इस विशाल काव्य ग्रंथ को दस सर्गों में विभक्त किया गया है। भाषा समास प्रधान और प्रवाह युक्त है। यह सहज ग्राह्य ग्रंथ, भाषा, भाव एवं शिल्प, सभी दृष्टियों से हिंदी साहित्य में विशिष्ठ गौरव का अधिकारी है। कहना चाहिए, सत्यासत्य कवि के सप्राण जीवन दर्शन एवं वैचारिक मंथन का प्रतिफल है।

परमादरणीय श्री कृष्ण राय 'हृदयेश' हमारे बीच सदेह अब भले न हों, किंतु उनका कृतित्व जल्दी नहीं भुलाया जा सकेगा। वे बड़े साहित्यकार ही नहीं, मानवता के पर्याय-प्रतिमूर्ति थे। उनके अद्‌भुत व्यक्तित्व की स्मृति को कोटिशः नमन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'महेंद्र मिश्र बनाम महेंदर मिसिर' : भगवती प्रसाद द्विवेदी

भगवती प्रसाद द्विवेदी द्वारा बड़े लगन एवं परिश्रम से प्रणीत यह कृति 'महेंद्र मिसिर', पूर्वांचलीय (उ.प्र. बिहार) लोक साहित्य के किंवदंती बने एक अति विशिष्ट व्यक्तित्व, उसके विलक्षण कृतित्व की शोधपरक शिनाख्त है। कृति के माध्यम से महेंद्र मिश्र की जीवन धारा का अवगाहन करते समय कभी मुझे ब्रिटिश साम्राज्य का (भारत में) संस्थापक, घर का नितांत उपेक्षित–अवहेलित महा आवारा क्लाइव (लार्ड) याद आया, तो कभी आरंभ में अत्यंत गर्हित जीवन से यकायक ऊपर उठकर महान दार्शनिक बन जाने वाला फ्रांसीसी विचारक रूसो। द्विवेदी विरचित वर्णनों से लगता है महेंद्र जन्मजात प्रातिभ थे। उनकी महानता कहीं से भी सायास अर्जित या थोपी–लादी गई नहीं लगती। उनका जो कुछ भी था, ज्यादातर प्रकृति प्रदत्त स्वत: स्फूर्त था। अगर भाषा के फ़र्क़ को तरजीह न दिया जाए तो वे निराला की तरह एक साथ पहलवान थे, गीतकार थे, गँवईं गायक थे, बल्कि उनसे भी थोड़ा अलग हटकर हरफनमौला हँसोड़ थे, गपोड़ थे, फक्कड़ थे, अभिनेता थे, घोड़सवार थे, आशिक़ मिजाज़ थे, बेहद भावुक सहृदय और बिना मसिकागद आशु कवि थे। अपने जीवन काल में ही वे लोकमानस, लोकसंस्कृति एवं लोकजीवन के पर्याय बन गए थे। उनकी इस तरह की तमाम विलक्षणताओं को, उन्हीं के कारनामों से, रचनाओं से, सिद्ध करने का एक अभिनव एवं सार्थक प्रयास है यह कृति। महेंद्र जी के समूचे गायन में, चाहे वे भक्ति नीति प्रकृति त्यौहार या उपदेश परक हों या शृंगार परक, कहीं भी छिछलापन या अश्लीलता का अतिरेक नहीं है। विभिन्न शैलियों में अभिव्यक्त अधिकांश गीतों में अनुभूति की ऐसी गहराई है, जिन्हें सुनकर कोई भी श्रोता अभिभूत हुए बग़ैर नहीं रह सकता। बतौर बानगी इन पंक्तियों को देखें—

अंगुरी में डंसले बिया नगिनिया रे ए ननदी! दियना जराइ दे
दियना जराइ दे, अपना भइया के जगाइ दे
नसे–नसे उठेला लहरिया रे ए ननदी! दियना जराइ दे
अंगुरी में...

पृ. 58 से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहत महेंदर मिसिर, सुनऽ दिल जानी!
केकरा से आग मागब, केकरा से पानी!
एतना बता के जइहऽ

पृ. 117 से

सबका के देहलऽ रामजी अन धन सोनवा
बनवारी हो, हमरा के लरिका भतार
लरिका भतार ले के सुतलीं अंगनवाँ
बनकरी हो, एहरी में बोलेला हुंड़ार

पृ. 119 से

महेंद्र विरचित गीत, छंद-कहन-शैली या विषयवस्तु की दृष्टि से अनेक आयामी हैं। कुछ लोक प्रचलित विभिन्न लयों-धुनों में निर्मित हैं तो बहुतेरे नितांत मौलिक भी, जिसका बोध जगह-जगह इस कृति में कराया गया है। लगता है, गँवईं जीवन का कोई कोना, सुख-दुख की संवेदना का कोई आयाम, मिश्र महेंद्र की खोजी दृष्टि से ओझल नहीं हो पाया है। वे अपने वक़्त के निर्विवाद लासानी लोक गायक थे। कुछ समय के लिए ही सही, इन्होंने अपने पूर्ववर्ती कवियों-जयदेव और विद्यापति की लोकप्रियता को भी पीछे धकेल दिया था। वे जन-जन के कंठहार बन गए थे। हाँ, महेंद्र विरचित शिखरों को छूने या यत्र-तत्र उनसे भी आगे पहुँचने की कोशिश परवर्ती लोककवि भिखारी ठाकुर ने ज़रूर की है, ऐसा कहा जा सकता है। वैसे कृतिकार द्विवेदी जी के अनुसार भिखारी, महेंद्र जी के अन्यतम शिष्य मित्र थे, थोड़े ही पीछे उनके समकालीन थे तथा उनसे बहुत कुछ प्रभावित थे।

महेंद्र मिश्र को हर दृष्टि से समझने के लिए द्विवेदी जी ने पूरी कृति को चौदह— 1. व्यक्तित्व के आयाम और जीवन यात्रा, 2. सृजन संसार, 3. स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक योगदान, 4. औपन्यासिक कृतियों में महेंद्र मिसिर, 5. महेंद्र मिसिर और पुरबी, 6. एक गायक कवि का भक्ति भाव, 7. अपूर्व रामायण और रामभक्ति काव्य, 8. कृष्ण काव्य, 9. कालजयी निर्गुण : लोक भय, लोक स्वर, 10. पारंपरिक-प्रायोगिक ग़ज़लें, 11. ऋतु गीतों की इन्द्रधनुषी छटा, 12. स्त्री विमर्श, 13. भाषा-शैली-शिल्प का वैशिष्ट्य और 14. महेंद्र मिसिर और भिखारी ठाकुर—अध्यायों में विभाजित कर नाना साक्ष्यों सहित, उनके विशद व्यक्तित्व एवं नानायामी कृतित्व की अत्यंत सम्यक-समीचीन विवेचना की है, जो न केवल पठनीय, रमणीय बल्कि संग्रहणीय भी हैं।

महेंद्र मिश्र बनाम महेंदर मिसिर : भगवती प्रसाद द्विवेदी प्रका. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली-110001, मूल्य रु. 50

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज़ादी की आग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज़ादी की आन : उग्र का योगदान

स्वाधीनता आंदोलन की प्रेरक शक्ति के रूप में न केवल अपने क्रांतिकारी साहित्य के लिए (जैसा कि निराला, दिनकर, प्रेमचंद तथा माखन लाल चतुर्वेदी आदि अनेक हुए), बल्कि बड़े जोश-खरोश के साथ सशरीर आंदोलन में हिस्सा लेने के क्षेत्र में भी उग्र जी अपना सानी नहीं रखते।

श्री विनोद शंकर व्यास 'दिन-रात' पृष्ठ संख्या 79 में लिखते हैं—''अनेक विद्यार्थियों ने उनका भाषण सुनकर स्कूल छोड़ दिया। गाँव में भी वे अपने आंदोलन का प्रचार करने जाया करते थे। उग्र केवल अपनी रचनाओं में ही क्रांतिकारी नहीं हैं। जब असहयोग आंदोलन में तिरंगा झंडा लेकर चलने पर गिरफ़्तार होना साधारण बात हो गई थी, तब उग्र ने एक तिरंगी कमीज बनवायी, जिसमें झंडे के तीनों रंग अलग-अलग झलक रहे थे। उन दिनों गाने की बाढ़ थी। उग्र ने जनता की भाषा और लय में अनेक जनकाव्य की रचना की। उन कविताओं में राष्ट्रीय जन भावना का प्रधान्य था। उग्र जी द्वारा रचित कविताओं में मिर्जापुरी बोली की प्रधानता थी, उदाहरणार्थ—

यारों अंगरेजवा कटारी मारे ना
दे के जन-धनवां, हरवलीं जरमनवां
सो बिसारे सारे ना। यारों अंगरेजवा...

श्री शांति प्रिय द्विवेदी 'परिव्राजक की प्रजा' पृष्ठ संख्या 107 में लिखते हैं, ''उग्र जी हिंदू विश्वविद्यालय की ओर देहातों में भाषण देने जा रहे थे। मैं भी उनके साथ-साथ जाता था। एक दिन सभा में पंजाब हत्याकांड का ऐसा हृदय द्रावक वर्णन उन्होंने किया कि रोंगटे खड़े हो गए। तब तक मैंने 'जालियाँ वाला बाग', मार्शल लॉ रोलट बिल इत्यादि का नाम भी न सुना था।

वस्तुत: उग्र जी की वाणी से क्रांति की चिनगारियाँ निकलती थीं। इसीलिए सर्व श्री सचींद्रनाथ सान्याल और राजेंद्र लाहड़ी ने उन्हें अपने क्रांतिकारी दल में शामिल किया। हिंदू स्कूल के सहपाठी श्री मन्मथनाथ गुप्त से भी उनके संबंध प्रगाढ़ हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्होंने अपने पीछे किशोर एवं युवा साथियों का एक अच्छा-ख़ासा जत्था तैयार कर लिया था।

'किंतु जेल तो मैं ही तुम्हें ले गया'

एक बार की बात है कि सन् 1921 में असहयोग आंदोलन के प्रचारार्थ गांधी जी काशी आए हुए थे। टीचर्स ट्रेनिंग कालेज कमच्छा के दोमंज़िले पर वे कुछ शिक्षकों के साथ आंदोलन के कार्यक्रम पर बातें कर रहे थे। गोष्ठी वाले कमरे से बाहर निकलने पर हिंदू स्कूल के छठी कक्षा के सहपाठी उग्र और कमला पति त्रिपाठी ने आगे आते गांधी जी के चरणों को पकड़ लिया। गांधी जी अचकचा कर खड़े हो गए। उग्र ने उनका दायाँ चरण पकड़ा था और त्रिपाठी ने बायाँ। 'अपनी ख़बर' पृष्ठ 120-21 में उग्र जी लिखते हैं—''महात्मा पद रज ग्रहण के चंद ही दिनों बाद इस बात पर मेरी तुम्हारी (त्रिपाठी जी) शर्त लगी थी (पाँच-पाँच रुपए की) कि आगे जेल कौन जाता है। जेल भी गए, लेकिन मैं तुमसे (त्रिपाठी से) पहले पहुँचा था, उसी जेल में, जिसमें कृपलानी जी, संपूर्णानंद जी और उ.प्र. के सैकड़ों राजनीतिक बंदी थे...तुम्हारे पूज्य पिता परम पंडित थे, तुम्हारे देश विख्यात नाना जी परम पंडित थे, किंतु जेल में तो मैं ही तुम्हें ले गया!''

कहना न होगा कि आज़ादी के आंदोलन हेतु जेल यात्रा उग्र जी के लिए उनके जीवन की एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। और उनके सहयोग ने ही त्रिपाठी जी को भी इस उपलब्धि का भागी बनाया।

'गदहा बसंत राम, पंडित अनंत राम'

इस मनोरंजक क़िस्से का वर्णन पंडित कमलापति त्रिपाठी द्वारा कथित संस्मरण 23 जून, 1966 के आधार पर डॉ रत्नशंकर पांडे ने अपनी पुस्तक 'उग्र और उनका साहित्य' पृष्ठ 27-28 में इस प्रकार किया है—''सत्याग्रह आंदोलन के दौरान उग्र, स्थानीय सभी विद्यालयों को बंद कराने में लगे रहते थे। उन दिनों 'रणवीर संस्कृत पाठशाला' के संस्कृत शिक्षक पं. अनंतराम जी थे। वे स्थूलकाय प्राचीन परिपाटी के अंग्रेज़ी शासन समर्थक डंडा लेकर चलने वाले ग्रामीण पंडित सा प्रतीत होने वाले शिक्षक थे। हम लोग पाठशाला बंद कराने के लिए आंदोलन के समय जा धमके। शोर सुनकर पंडित अनंतराम जी क्रोध में पागल हो हमारे पीछे डंडा फटकारते हुए दौड़े। उग्र ने उन पर तत्काल एक लंबी कविता दौड़-दौड़कर पढ़ना प्रारंभ किया, जिसकी आरंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार थीं—

> 'आगे अनंत राम, पीछे पढ़ंत राम गदहा बसंत राम, पं. अनंत राम'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस व्यंग्य की तीक्ष्णता अनंत राम जी सह न सके। उग्र को जितनी तेजी से वे गाली देते हुए दौड़ते, उतने ही ओजस्वी स्वर में वह इस कविता की पंक्तियों पर पंक्तियाँ जोड़ते बोलते भागते जाते। कुतूहल वश विद्यालय के सभी छात्र बाहर निकल आए और विद्यालय बंद कराने में उग्र अपनी प्रतिभा एवं नटखटपन से सफल हो गए।

सख़्त क़ैद की सज़ा, फिर भी मज़ा

सत्याग्रह आंदोलन (1921) में जेल से लौट आने पर अत्यंत ग़रीबी में महज 10 आने तब 16 आने (तब 16 आने का 1 रुपया होता था) कालम पर उग्र जी सन् 1924 जून तक राष्ट्रीय आंदोलन के समर्थन में "आज" वाराणसी में लिखते रहे। सन् 24 में ही गोरखपुर से प्रकाशित 'स्वदेश' का दशहरा अंक उन्होंने संपादित किया। विस्फोटक सामग्रियों से भरपूर वह अंक हाथों-हाथ बिक गया।

1926 में लाहौर कांग्रेस का पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास हुआ। सरकार में तहलका मचा, अनेक लोग गिरफ़्तार हुए। स्वदेश के संचालक दशरथ प्रसाद द्विवेदी भी पकड़े गए। उग्र के पीछे भी सरकार पड़ी, किंतु वे पकड़ से बाहर कलकत्ता भाग छिपे। जब उग्र का वारंट कलकत्ता भेजा गया, वह बंबई (मुंबई) चले गए। किंतु पाँचवे महीने उग्र, मालावार हिल पर गिरफ़्तार कर लिए गए। उन्हें हथकड़ी-बेड़ी और रस्सियों से कसकर गोरखपुर ले आया गया। तीन माह तक केस चलने के बाद उन्हें नौ माह की सख्त क़ैद की सज़ा मिली। उल्लेखनीय है कि बाद में 21 साल से कम उम्र का बालक मानकर जज ने सज़ा की अवधि कुछ कम कर दी। जेल में उग्र सदैव प्रसन्नचित रहे। वे स्वाध्याय, मनन-चिंतन और लेखन कार्य में निरंतर लगे रहे। भारत माँ की आज़ादी के लिए उन्हें किसी भी तरह की कठिनाई में मज़ा आता था। वे अंग्रेज़ों के बर्बर अत्याचारों को हँसते-हँसते झेल लेते थे।

कलम की मार, चिंतित सरकार

उग्र की कहानियों का प्रथम संग्रह 'चिंगारियाँ' जब 1923 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ, तो हिंदी भाषी क्षेत्र में तहलका मच गया। संग्रह की 'स्वदेश के लिए', 'नादिरशाही', 'माँ कैसे मरी', 'वीर कन्या' तथा 'देश भक्त' आदि कहानियाँ स्वतंत्रता आंदोलन की आग में घी का काम करने वाली थीं। इनमें इतना तीव्र ताप और विद्रोह भरी भावनाएँ थीं कि अंग्रेज़ सरकार चिंतित हो उठी और 'चिंगारियाँ' पर शीघ्र पाबंदी लगा दी गई।

'पंजाब की महारानी' कहानी संग्रह में ब्रिटिश शासन-काल के इतिहास और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाज की, रोमांचकारी दमन नीति की घटनाओं का वास्तविक और सजीव चित्रण उन्होंने किया। इस संग्रह की 'देशद्रोह', 'रेन ऑफ टेरर', 'एक स्मृति काल कोठरी' तथा 'नींद हराम हुई' आदि कहानियों में भारतीयों के साथ बरती जाने वाली अमानुषिक बर्बरता का स्पष्ट प्रतिबिंब देखकर घबराए ब्रिटिश शासकों ने इस पुस्तक के प्रकाशन को ही ग़ैर कानूनी (अवैध) घोषित कर दिया।

फिर तो ज्यों-ज्यों दवा की, मर्ज बढ़ता ही गया। ब्रिटिश शासन के दमन चक्र के साथ उग्र जी की दिल दहलाने वाली लेखनी की गति बढ़ती ही गई। आंदोलन के दौरान उन्होंने क्रांतिकारी कहानियों, उत्तेजक उपन्यासों तथा आग उगलने वाली कविताओं की झड़ी लगा दी। 1921 में रची उग्र जी की यह कविता देखें—

"घरों में सदा आए चरखे की हरदम
सभी कौमी गानों को गायें बिना गम
बढ़ें हम शहीदों के नक़्शे क़दम पर
न हरगिज डरें, तोप पर भी चढ़े हम।"

भारत में अंग्रेज़ी कुशासन से, बचपन से ही बुरी तरह बेचैन स्व. बेचन शर्मा उग्र की दैहिक-मानसिक उग्रता को, उनकी राष्ट्रभक्ति को, कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। देश की आज़ादी हेतु उनके तन-मन-धन से किए अविस्मरणीय योगदान को अनंत अभिवादन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दहक रही मिट्टी स्वदेश की, खौल रहा गंगा का पानी

(दिनकर-साहित्य में आज़ादी की आग)

अंग्रेज़ी दासता के ख़िलाफ़ आज़ादी की जो दीवानगी हमें दिनकर में देखने को मिलती है, वह निश्चय ही बेमिसाल है। किसी पराधीन देश में एक सच्चे राष्ट्रीय कवि को कैसी पीड़ाओं, कितनी मानसिक यंत्रणाओं से गुज़रना पड़ता है, इसकी गवाह दिनकर की आग उगलती कविताएँ, समय-समय पर साथियों को लिखे उनके मर्मस्पर्शी पत्र, यत्र-तत्र भारतीय जनता के सम्मुख प्रस्फुटित भाव-विह्वल उद्‌गार तथा समकालीन डायरी के पन्ने हैं। अब तक के चली आ रही छायावादी कुहेलिका से उबर कर उन्होंने राष्ट्रीय जागरण का जो शंखनाद किया, उसे तत्कालीन नौकरशाही बेतरह घबरा उठी। बनारसीदास चतुर्वेदी लिखते हैं—

"14 मई, सन 36 के पत्र में बेतिया से दिनकर जी ने मुझे लिखा था... 'मुझे जिलाधीश ने बुलाकर बहुत कुछ कहा। मुझसे भी, जहाँ तक बन पड़ा, अपनी सफ़ाई दी (हमारी सरकार का ख़याल है और उसे यही रिपोर्ट भी मिली है कि आपने बहुत-सी ज़ोरदार देशभक्ति पूर्ण रचनाएँ रची हैं.... हमारी सरकार इससे चिंतित है।)...... मेरे लिए अपनी भावनाओं का दमन कठिन है। इसके लिए मुझे विवश न किया जाए तो अच्छा। 'योगी' के बारे में मुझसे डायरेक्ट प्रश्न हुए। इस चेतावनी के साथ विदाई मिली कि ख़तरनाक पत्रों और व्यक्तियों के संपर्क से बचो।"

—'कादम्बिनी', मार्च 1978

अंग्रेज़ों द्वारा की जा रही देश की अनवरत उपेक्षा और बरबादी ने दिनकर को अंदर ही अंदर मथना शुरू किया। सरकारी सेवा में होने के नाते उन्होंने अंग्रेज़ों के कुत्सित कार्यों को बहुत पास से देखा और कुछ ही दिनों में उनका कवि हृदय हाहाकार करने लगा। आगे उधृत पंक्तियों में कवि की कुशल लेखनी द्वारा साम्राज्यवादी शासन के शोषण का अत्युत्तम निदर्शन हुआ है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'वे भी यहीं दूध से जो, अपने कुत्तों को नहलाते हैं
ये बच्चे भी यहीं कब्र में, दूध-दूध जो चिल्लाते हैं

('हुंकार' से)

''यह है परतंत्रता देश की, रुधिर देश का पीने वाली
मानवता कहता तू जिसको, उसे चबाकर खाने वाली''

('सामधेनी' से)

'चक्रवाल' की भूमिका में पृष्ठ 31 पर दिनकर जी लिखते हैं—''मैं समय का पुत्र हूँ और मेरा सबसे बड़ा कार्य यह है कि मैं अपने युग के क्रोध और आक्रोश को, अधीरता और बेचैनियों को सबलता के साथ छन्दों में बांधकर सबके सामने उपस्थित कर दूँ'' और महत कार्य को उन्होंने बख़ूबी पूरा भी किया। एक चित्र द्रष्टव्य है—

''क्रांति-धात्री कविते! जागे, उठ आडम्बर में आग लगा दे
पतन पाप पाखंड जलें, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।''

कवि अपने जागरण स्वर को जन-जन तक पहुँचाना चाहता था। उसका मन-मस्तिष्क कुछ गाने को नहीं कुछ कहने को नहीं बल्कि रह-रहकर ललकारने को ललक उठता था। यह चित्र देखें—

''उठ भूषण की भाव रंगिणी, लेनिन के दिल की चिनगारी
युग-मर्दित यौवन की ज्वाला, जाग-जाग री क्रांति कुमारी।''

('रेणुका' से)

दहकते अंगारों का कुंज लिए ये कविताएँ जनता को झकझोर डालने वाली थीं। इन्हें सुनकर तत्कालीन वृद्धों तक के रोम-रोम फड़कने लगते थे। सन 1942 में कांग्रेस ने जब अंग्रेज़ों के लिए 'भारत छोड़ो' का नारा दिया, जब राष्ट्रीय नेता जेलों में बंद हो गए, तब उन्होंने अपनी 'दिल्ली और मास्को' नामक कविता के माध्यम से कहा—

''दहक रही मिट्टी स्वदेश की, खौल रहा गंगा का पानी
प्राचीरों में गरज रही है, जंजीरों में कसी जवानी।''

कवि की धारणा रही है कि क्रांति जब भी आती है, बड़े जोश के साथ चारों ओर छा जाती है। उसकी पायल की पहली झंकार से चराचर सृष्टि में कोलाहल मच जाता है। उसके चरण जिस तरफ़ पड़ते हैं, उस ओर का भूगोल तक दब जाता है, किंतु नए इतिहास की सृष्टि होती है। परतंत्र राष्ट्र के रक्त का खौलते रहना दिनकर ने अपने कवि का अभीष्ट माना। 'आलोक धन्वा' में राष्ट्रकवि स्वयं युग के शैल पर 'नए प्रात के अरुण' के रूप में उदित होता है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"स्वर को कराल हुंकार बना देता हूँ,
यौवन की भीषण ज्वार बना देता हूँ।
शूरों के दृग, अंगार बना देता हूँ,
हिम्मत को ही तलवार बना देता हूँ।"

बदलते वक़्त के साथ भाव-विह्वल कवि क्रांति का प्रतीक बन जाता है। उसकी हुंकार प्रलय गांडीव की टंकार बन जाती है—

"सुनूँ क्या सिंधु मैं गर्जन तुम्हारा,
स्वयं युगधर्म की हुंकार हूँ मैं।
कठिन निर्घोष हूँ भीषण अशनि का
प्रलय गांडीव की टंकार हूँ मैं।"

आगे उद्धृत पंक्तियों में कवि एक और अतीत के गौरव गान द्वारा अपने उच्च वंशीय परंपरा की याद दिलाता है तथा दूसरी ओर कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी भारतीयों की परंपरानुसार उन्नत सिरों को न झुकने देने की साहस पूर्ण प्रेरणा भी देता है—

"हम शकारी विक्रमादित्य हैं, अरि दल को दलने वाले
रण में जमी नहीं, दुश्मन की लाशों पर चलने वाले
हम अर्जुन हम भीम शांति के लिए जगत में जीते हैं
मगर शत्रु हठ करे अगर तो लहू वक्ष का पीते हैं
हम हैं शिवा प्रताप—रोटियाँ भले घास की खाएँगे
मगर किसी जुल्मी के आगे, मस्तक नहीं झुकाएँगे"

('दिनकर के गीत' पृष्ठ 84 से)

स्व की गरिमा से मंडित कवि का अदम्य आत्मविश्वास व्यवस्था परिवर्तन के लिए स्रष्टा से भी संघर्ष करने का सहारा जुटा लेता है। कवि की क्रांति जनित आक्रोश की चरम अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में देखी जा सकती है—

"और ज़रा तू बोल, सारी धरा हम फूँक देंगे
पड़ा जो पथ में गिरी, कर उसे दो टूक देंगे
कहीं कुछ पूछने, बूढ़ा विधाता आज आया
कहेंगे हाँ, तुम्हारी सृष्टि को हमने मिटाया

('हुंकार' से)

निष्कर्षतः आज़ादी के लिए जन जागरण की जिस अग्नि को महाकवि दिनकर ने प्रज्वलित किया, वह निश्चय ही प्रणम्य है। निराला के वास्तविक निरालेपन की तरह दिनकर (रामधारी सिंह) भी, वास्तव में 'आधुनिक हिंदी साहित्य के दिनकर हैं। प्रकृति प्रदत्त उनके उच्च कोटीय व्यक्तित्व-कृतित्व को पुनः-पुनः प्रणाम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उठती जब नग्न तलवार है स्वतंत्रता की

(स्वतंत्रता आंदोलन और निराला साहित्य)

विश्व में हुई बड़ी क्रांतियों या आज़ादी के आंदोलनों को, वहाँ के साहित्यकारों ने पर्याप्त प्रभावित किया है। 1789 में हुई फ्रांसीसी क्रांति के विषय में तो यहाँ तक कहा जाता है कि क्रांति होने के पूर्व वहाँ दार्शनिक-वैचारिक क्रांति हो चुकी थी। वस्तुत: किसी भी स्थान पर होने वाली क्रांति या आंदोलन की ज़मीन वर्षों पूर्व तैयार होने लगती है। यह तैयारी कवियों, लेखकों या दार्शनिकों द्वारा ही संपन्न की जाती है। कहना न होगा, स्वातंत्र्य आंदोलन के दौरान भारत में भी यह तैयारी हुई और ख़ूब जमकर हुई। अकेले हिंदी साहित्य में माखनलाल चतुर्वेदी, मुंशी प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारी सिंह दिनकर, बेचन शर्मा उग्र, गणेश शंकर विद्यार्थी, मन्मथ नाथ गुप्त, बृज नारायण चकबस्त तथा अज्ञेय आदि अनेक ऐसे रचनाकार हुए, जिन्होंने तत्कालीन जन मानस को अंग्रेज़ों तथा उनके चमचे भारतीय जमींदारों की जालीमाना हरकतों के ख़िलाफ़ खड्गहस्त होने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए अज्ञेय तथा उग्र जैसे कुछ रचनाकारों को जेल की कठोर यातनाएँ तक सहन करनी पड़ीं। कई क्रांतिपरक प्रकाशनों, यथा प्रेमचंद प्रणीत 'सोजे वतन' पर ब्रिटिश सरकार द्वारा पाबंदी तक लगा दी गई।

इस ग्राम बहुल देश में लोक भाषाई कवियों की कविताएँ, सहज-सरल-सुबोध तुकबंदियाँ तो जन-जन का कंठहार बन गईं, जिनमें चरखा, खादी स्वदेशी, नमक निर्माण तथा असहयोग आदि की चर्चाओं के साथ-साथ राजगुरु, भगत सिंह, सुखदेव आदि की शहादतों का हृदय विगलित वर्णन बड़ी सहजता के साथ किया गया। वैसे आज़ादी के तराने गाने वाले लोक कवियों की संख्या तो गणनातीत है, फिर भी इस क्षेत्र में बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस', बंशीधर शुक्ल, चंद्र भूषण द्विवेदी, रमई काका, ब्रजनंदन पांडेय, मुक्ति भद्र दीक्षित तथा रामवृक्ष विधुर आदि के योगदान पर्याप्त प्रशंसनीय रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन समकालीन कवियों में महाकवि निराला कदाचित अग्रगण्य हैं। उन्हें अधिकांश आलोचकों ने क्रांतिकारी कवि कहा भी है। उनकी न केवल कविताओं, बल्कि कहानियों, उपन्यासों, संपादकीय टिप्पणियों आदि में भी क्रांतिजन्य विचारों के दर्शन होते हैं। वे भारत की आर्थिक गुलामी के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक दुरावस्था से भी आक्रांत थे तथा देश के शिक्षित युवा-युवतियों को इसके समाधान का साधन मानते थे। कवि की क्रांतिकारी कविताओं के संदर्भ में डॉ. भटनागर लिखते हैं, ''मुझे विश्वास है कि निराला के गीतों ने, उनके मुक्त छंदों ने और 'शिवाजी का पत्र', 'जागो फिर एक बार' जैसी सशक्त रचनाओं ने, लाहौर से कलकत्ता तक उत्तर भारत के संपूर्ण विस्तार में नव युवकों को कड़े भाव सूत्रों में बांध दिया, जो इन रचनाओं को रसानुभूति के अविकृत आनंद का कोष समझते थे... उनका अस्तित्व उत्कृष्टतम काव्य का प्रमाण था, जैसे वह अभिचार मंत्र हो या तेज़ तलवार।... वह नितांत तात्कालिक, अविजित सुसंस्कारी मानस के लिए अत्यंत संवेदनशील तथा जातीय एवं राष्ट्रीय आत्मदर्प और भाव स्वातंत्र्य के लिए अप्रतिम था।''

और 'जागो फिर एक बार (2)' में निराला की वह प्रतिक्रिया व्यंजित है, जो जलियाँवाला बाग के हत्याकांड से संबंधित है। इस घटना ने समस्त राष्ट्र में जिस आक्रोश और क्षोभ को जन्म दिया था, उससे अभिभूत निराला वीर दर्प की अप्रतिम रचनाएँ हमें दिये। 1930-32 के दिनों में उन्होंने लखनऊ के कितने ही कवि सम्मेलनों में 'जागो फिर एक बार' और 'शिवाजी का पत्र' रचनाएँ सुनाकर भारतीय जनमानस को वीर दीप्ति से भरा है। ओज निराला की विशेषता रही है और इस विशेषता के पल्लवन में उनकी सुदीर्घ देह, उनका कंठस्वर, प्रशस्त भाव-भंगिमाएँ, भावना पूर्ण काव्य और समर्थ भाषा का समतुल्य योग उन्हें प्राप्त था। निराला विरचित कुछ काव्यांश अवलोकनीय हैं—

शेरों की मांद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार

सोचो तुम
उठती जब नग्न तलवार है स्वतंत्रता की
कितने ही भावों से
याद दिला घोर दुख दारुण परतंत्रता का
फूँकती स्वतंत्रता निज मंत्र से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आएगी भाल पर
भारत की गई ज्योति
हिंदुस्तान मुक्त होगा घोर अपमान से
दासता की पाश कट जाएँगे

महाकवि निराला निर्मित कहानियों में भी जन-उद्‌बोधन और क्रांति चेतना का स्वर्ग अपनी पूरी प्रखरता के साथ प्रस्फुटित हुआ है। इस तरह की कहानियों में 'पद्मा और लिली', 'ज्योतिर्मयी', 'श्यामा', 'हिरनी', 'न्याय', 'देवी' तथा 'चतुरी चमार' का नाम प्रमुखता के साथ लिया जा सकता है। कुछ बानगियाँ प्रस्तुत हैं—

"कच्चे रंग से रंगा तिरंगा झंडा... बारिश से धुलकर धवल हो रहा था... दरोगा जी तहक़ीक़ात करने आए। झंडा देखकर दरोगा जी कुछ सोचने लगे, 'यह तो मंदिर का झंडा!' जमीदार साहब ने बहुत समझाया कि 'वह बारिस से धुल कर सफ़ेद हो गया है, लेकिन है यह कांग्रेस का झंडा।' पर दरोगा जी बुद्धिमान थे।"

"इधर दौड़े बहुत, क्वार की धूप सिर से उतरी, फाँके किए, बीमार हो गए। लेकिन जीजाजी, यहाँ कोई गाँव नहीं, जहाँ कुल्ली ने कांग्रेस के नेम्बर (मेम्बर) नहीं बनाए।"

निराला कुछ दिनों तक पत्रकारिता से भी जुड़े रहे। उन्होंने 'मतवाला' के लिए काम किया। कई साल तक उनके संपादन में लखनऊ से प्रकाशित 'सुधा' नामक पत्र निकलता रहा। सुधा की टिप्पणियों में देश के किसानों के सवाल को आगे रखकर उन्होंने एक तरफ़ अंग्रेज़ी शासन पर प्रहार करना तथा दूसरी तरफ़ स्वतंत्रता आंदोलन के प्रगतिशील पक्ष को अपना समर्थन देना शुरू किया। 'इंग्लैंड और भारत का संबंध' नामक टिप्पणी में उन्होंने अंग्रेज़ी सरकार के औपनिवेशिक चरित्र का बख़ूबी पर्दाफाश किया है। वे लिखते हैं—

"इंग्लैंड के हाथ भारत एक सोने की चिड़िया फँस गई है। वहाँ के पूंजीपति यह बात किसी तरह पसंद नहीं करते कि भारत को आवश्यकता से अधिक अधिकार दे दिए जाएँ। ...वे अपनी भलाई भूलकर भारत की भलाई का ख़याल रखेंगे, यह बिल्कुल भ्रांत धारणा है।" ('सुधा' मासिक लखनऊ, फरवरी 1930)

"...तब तक अगर घर-घर चरखे का प्रचार हो गया और वस्त्रों के लिए निवेश की राह ना देखनी पड़े, तो फिर और ही गुल खिलेगा इसी की शंका से अंग्रेज़ी शासन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के सूत्रधारों को रात में आँख नहीं लगती।'' ('सुधा' जून, 1930)

इसी तरह उनके 'अप्सरा', 'अलका', 'निरुपमा', 'कुल्ली भांट' तथा 'चोटी की पकड़' उपन्यासों में स्वातंत्र्य भावना का अत्युत्तम निदर्शन हुआ है। अप्सरा के पहले परिच्छेद में ही निराला ने एक किशोरी के साथ एक गोरे द्वारा पाशविक बलात्कार का ऐसा चित्र उकेरा है कि पाठक का हृदय घृणा और क्रोध के मारे निश्चय ही तिलमिला उठता है। किंतु पुनः शीघ्र ही एक देश प्रेमी युवक के अवतरण द्वारा उन्होंने एक अमानुषिक कृत्य का निवारण भी प्रस्तुत कर दिया है। इन दोनों स्थितियों द्वारा भारतीयों के मन में अंग्रेज़ी सत्ता के ख़िलाफ़ कुछ कर गुज़रने की मानसिक चेतना को झकझोरने का प्रयास किया गया है। दृष्टांत सामने है—

''गोरे ने हाथ पकड़कर जबरन बेंच पर बैठा लिया। युवती चीख़ उठी। ...भय से उसका कंठ भी रूंध गया। अपने आदमियों को पुकारना चाहा, पर आवाज़ न निकली। गोरे ने उसे कसकर पकड़ लिया। ...पीछे से किसी ने उसके कॉलर में उंगलियाँ घुसेड़ दी। ...साहब (गोरे) के वार करते ही युवक ने कलाई पकड़ ली, और वहाँ से बांधकर बहरल्ली (कुश्ती का एक दाँव) में दे मारा तथा छाती पर बैठ, कई रद्दे कस दिए। साहब बेहोश हो गया।'' (निराला रचनावली, भाग-3, पृष्ठ 17, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)

अपने दूसरे उपन्यास 'अलका' में निराला ने यह दिखलाने का प्रयास किया है कि जनता को किस तरह की कितनी आज़ादी प्राप्त है। उन्होंने सरकारी शोषण के ख़िलाफ़ जनता के मन में क्रांति का स्फुरण, पुनः यकायक भयाक्रांत हो उनके साथ सहयोग करने की दुर्निवार विवशता जैसी मनःस्थितियों का बड़ा ही स्वाभाविक चित्रण किया है। धन और यश की लिप्सा में आकंठ डूबे, कुछ स्वार्थी तत्वों पर उनकी व्यंग्यपूर्ण पैनी दृष्टि परिहास और जुगुप्सा की मिली-जुली तीखी प्रतिक्रिया जगाने में पर्याप्त सहायक हुई है। प्रस्तुत उद्धरण में एक क्रांतिकारी के एकनिष्ठ भाव की व्यस्त दिनचर्या व्यंजित है—

''यह सूराज की खोज में नेता की तरह तत्पर है। सरकार और जमींदारों के दो पाटों में रहकर पिसने से नहीं डरता। लोगों को अपनी लिक पर ले चलने को बछड़े जैसा दौड़ता फिरता है। कहाँ से भगवान जाने, इसके पास ख़बर आती है। अब रियाया को लगान देना होगा, दिनभर बस इसी काम में लगा रहता है।'' (निराला रचनावली, भाग-3, पृष्ठ 162)

उपन्यासों के माध्यम से जहाँ तक जन चेतना को जगाने की बात है, निराला 'कुल्ली भांट' तक आते-आते अनुपमेय हो उठते हैं। 'कुल्ली भांट' जैसे नपुंसक, यौन विकृति के शिकार कथा नायक को स्वाधीनता आंदोलन का एक जुझारू सैनिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिखाकर भारतीय जनमानस के पुंसत्व को, कि 'तुम तो और भी कुछ कर सकते हो' जैसा उत्तेजना पूर्ण उद्‌बोधन प्रस्तुत करते हैं।

इस उपन्यास की रचना स्वाधीनता आंदोलन के काल में हुई है। इनके उपन्यासों में जनवादी चेतना से ओतप्रोत नव शिक्षित तरुण और तरुणयाँ हैं, जो सामंती रूढ़ियों को तोड़कर समाज के सामने एक आदर्श रखते हैं। उनके मार्ग में बाधाएँ आती हैं, पर वे उनसे विचलित नहीं होते और संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं।

वस्तुतः निराला ने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से भारतीय जनमानस को अंग्रेज़ी सत्ता के ख़िलाफ़ खड़े होने के लिए किसी न किसी रूप में ललकारा है। उन्होंने विभिन्न मंचों से वीरत्व पूर्ण भाव-भंगिमा एवं ओजस्वी वाणी से ख़ून खौलाने आने वाली कविताएँ पढ़ीं तथा पत्रकार की हैसियत से कांग्रेस जैसी संस्थाओं की सभाओं में समय-समय पर भाग भी लिया। इस प्रकार आज़ादी के लिए युवा जागरण की जिस ज्योति को निराला ने प्रज्वलित किया, वह स्तुत्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गांधी जी और किसान आंदोलन

बीसवीं सदी के दूसरे दशक के साथ भारत की सक्रिय राजनीति में गांधी जी का पदार्पण होता है। उनके पदार्पण के साथ ही भारत में मुक्ति आंदोलन की लहर तीव्र हो उठी। अपनी सादगी, सच्चाई एवं कर्तव्यनिष्ठा से उन्होंने यहाँ की सीधी-सादी जनता, न केवल एक कुशल राजनीतिक नेता, बल्कि एक महान संत के रूप में स्वीकार करने लगी। वे शीघ्र ही भारतीय जन मानस पर इस कदर छा गए, कि देश के दूसरे नेता एकदम गौण हो उठे। गांधी के सामने दूसरे नेताओं की बात सुनने या उन्हें अहमियत देने वाले बहुत कम रह गए। प्रकारांतर से अगर यह कहा जाए, कि कभी फ्रांस में नैपोलियन बोना पार्ट या जर्मनी में बिस्मार्क की तरह, अपने समय में वे भारतीय जनता के हृदय सम्राट हो गए तो अतिशयोक्ति न होगी। कदाचित गांधी जी के नेतृत्व के चलते ही चाहे-अनचाहे भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस तथा स्वामी सहजानंद सरस्वती जैसे कतिपय नेताओं और उनके कार्यक्रमों की उपेक्षा भी हो गई। अपनी शांतिप्रिय अहिंसक प्रवृत्ति के कारण उन्होंने नेहरू जैसे चहेते सहयोगियों को भी कभी किंकर्तव्य विमूढ़ बना दिया। उदाहरणार्थ देश के लिए समर्पित अनेक नेताओं की इच्छाओं के विरुद्ध उन्होंने चौरा-चौरी हत्याकांड (1922) के साथ ही, दिन-ब-दिन सफलता प्राप्त कर रहे असहयोग आंदोलन को अचानक स्थगित कर दिया।

अत्यंत उल्लेखनीय है कि इस हत्याकांड में एक थानाध्यक्ष तथा इक्कीस सिपाहियों के जलाये जाने का ज़िक्र तो आधुनिक इतिहास की किताबों में मिलता है, किन्तु घटना से पूर्व तीन सीधे-सादे ग्रामीणों—भगवान गुप्त, नज़र अली जुलाहा और खेलावन राजभर की हत्या का उल्लेख नहीं मिलता (इतिहास का विद्यार्थी होने के बावजूद, कम से कम इस लेख के लेखक ने तो नहीं ही देखा है)। ये तीनों देशभक्त घटना स्थल पर ही भारत माँ को प्यारे हो गए, साथ ही शांतिपूर्ण जुलूस में शामिल भोली-भाली ग्रामीण जनता पर थाने के बर्बर सिपाहियों ने तब तक गोलियाँ चलाईं, जब तक उनकी सारी गोलियाँ ख़त्म न हो गईं। इसके बाद भी गांधी जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने अहिंसा के नाम पर आंदोलन को स्थगित कर दिया और देश भक्तों द्वारा अब तक के किए-कराए पर पल भर में पानी फिर गया।

लेनिन के नेतृत्व में 1917 में किसान-मज़दूरों ने रूस में समाजवादी सत्ता की स्थापना की। भारतीय किसान भी दोहरे शोषण का शिकार था। मुक्ति की छटपटाहट थी। इन्हीं परिस्थितियों में 1927 ई. में स्वामी सहजानंद सरस्वती ने 'पश्चिमी पटना किसान सभा' का गठन किया। इस सभा के गठन के पीछे स्वामी जी के दो दृष्टिकोण थे। पहला यह कि किसानों को अपनी बात कहने के लिए एक मंच मिले तथा दूसरा यह कि वे राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा से जुड़ सकें। 1929 आते-आते इस किसान सभा को भंगकर उन्होंने 'बिहार प्रान्तीय किसान सभा' का गठन किया। इस सभा ने स्वामी जी के नेतृत्व में अनेक महत्त्वपूर्ण लड़ाइयाँ लड़ीं। 1933 में काश्तकारी बिल विरोधी ज़बरदस्त आंदोलन के सामने ब्रिटिश सरकार को झुक जाना पड़ा। 1936 आते-आते स्वामी जी ने अखिल भारतीय किसान सभा बना डाली। इस सभा द्वारा जारी आंदोलनों से स्वामी जी के साथ-साथ रामानंद, एन.जी.रंगा तथा राहुल सांकृत्यायन जैसे प्रभावशाली लोग जुड़ने लगे। किसान आंदोलन क्रमशः गति पकड़ता चला गया।

इस बीच स्वामी सहजानंद सरस्वती ने चाहा कि किसान आंदोलन को गांधी जी का भी सहयोग प्राप्त हो, किंतु गांधी जी इस प्रसंग पर चुप्पी साध लिए। स्वामी जी को गांधीजी के इस व्यवहार से बड़ा कष्ट हुआ। उन्होंने भी गांधी और गांधीवादी विचारों से अपने को एकदम अलग कर लिया। 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध की घोषणा होते ही, कांग्रेस की अपील पर किसान आंदोलन स्थगित कर दिए गए।

कांग्रेस बनाम गांधी जी की तत्कालीन नीति के ख़िलाफ़, स्वामी जी ने सुभाष चंद्र बोस के साथ मिलकर 1940 में रामगढ़ में अखिल भारतीय समझौता विरोधी सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में कांग्रेस की समझौतावादी नीति एवं ब्रिटिश सरकार की जमकर आलोचना की गई। इसके फलस्वरूप स्वामी सहजानंद जी को अंग्रेज़ी सरकार ने बंदी बना लिया।

यहाँ प्रश्न उठता है कि गांधी जी ने किसान आंदोलन से अपने को क्यों अलग कर लिया! वे क्यों नहीं चाहे कि किसान आंदोलन और अधिक ज़ोर पकड़े? अथवा क्या उनके अनुसार किसानों की माँगें अनुचित थीं? दरअसल किसान आंदोलन न केवल अंग्रेज़ी राज के ख़िलाफ़ था, बल्कि परोक्षतः यह बड़े-बड़े जमीदारों के भी विरोध में था। कदाचित इसीलिए किसान आंदोलन की बढ़ती लोकप्रियता ने गांधी जी को बहुत चिंतित कर दिया। उन्हें किसानों के हितों की चिंता तो अवश्य थी, किंतु वे नहीं चाहते थे कि देश स्तर पर किसान और जमींदार एक-दूसरे के विरुद्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड्गहस्त हो लड़ने लग जाएँ और आज़ादी का आंदोलन जिसमें दोनों (किसान और जमींदार) का सहयोग समान रूप से अपेक्षित था, खटाई में पड़ जाए।

गांधी जी को जर्मनी में मार्टिन लूथर द्वारा चलाए गए पोप शाही के ख़िलाफ़ सुधार आंदोलन की अच्छी जानकारी थी। उक्त आंदोलन के दौरान जर्मनी के किसानों ने भी सामंतों (जमींदारों) के ख़िलाफ़ आंदोलन छेड़ा था। गो कि वहाँ के किसानों की दयनीय स्थिति भारतीय किसानों से भी बदतर थी, फिर भी मार्टिन लूथर ने किसानों का साथ नहीं दिया। धर्म सुधार आंदोलन की विफलता के भय से उसने उलटे सामंतों का साथ दे दिया और जर्मनी का किसान आंदोलन बुरी तरह कुचल दिया गया। इस संबंध में गांधी जी ने लूथर की तुलना में अधिक बुद्धिमानी का परिचय दिया। उन्होंने किसी भी पक्ष का न समर्थन किया, न खुलकर विरोध ही। उन्होंने जीते जी किसी भी अन्य नेता को अपने समानांतर उकसाने भी नहीं दिया। गांधी जी के चलते किसान आंदोलन भले पूरी तरह नहीं सफल हुआ, किंतु अंग्रेज़ भारत छोड़कर अवश्य चले गए। वस्तुतः किसी भी महत उद्देश्य या उपलब्धि के लिए, कुछ अन्य हितों का बलिदान तो करना ही पड़ता है।

गांधी जी के सामने उन दिनों केवल एक उद्देश्य था, देश को अंग्रेज़ों से आज़ाद कराना, और इसके लिए आवश्यकता थी राष्ट्रीय एकता की। राष्ट्रीय एकता के लिए ही उन्होंने हिंदुओं के विरुद्ध मुसलमानों का सदैव साथ दिया। हरिजन उद्धार के लिए डटकर काम किया तथा हरिजन नेता डॉ. भीमराव आम्बेडकर को पर्याप्त महत्त्व दिया। और तो और, उन्होंने हिंदी की तुलना में बांग्ला जैसी भाषाओं को भी पूरी अहमियत दी, जिसके चलते कभी सूर्य कांत त्रिपाठी निराला उनसे बहुत नाराज हो गए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वनिताभूषण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहँसे भाल-अटारी बिंदिया

शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा, जिसे बिंदिया ने विमुग्ध न किया हो। आज भी फ़िल्मों में बिंदिया से संबंधित कोई गीत होता है, तो वह जन मानस में ज़रूर रच-बस जाता है।

अनुमानतः बिंदी, बिंदु से चलकर ही बिंद या बंद होते हुए शनैः-शैनः बिंदिया तक पहुँची होगी। बूँद-बूँद से सिंधु की भाँति बिंदु (बनाम बिंदिया) विश्व में अणु रूप व्याप्त है। शून्य से महाशून्य तक बिंदी (बिंदु) का दिग-दिगंत अनंत विस्तार है।

कवि केशवदास ने कहा है, 'भूषण बिन न बिराजई, कविता वनिता मित्त।' वस्तुतः वनिता का लावण्य श्रृंगार-प्रसाधनों से निश्चय ही खिल उठता है। नारी श्रृंगार हेतु निर्मित ये श्रृंगार प्रसाधन बिंदी से लेकर मेहँदी-महावर तक बहुसंख्य हैं। इनमें सुगंधित पुष्प हैं, भाँति-भाँति के लेपक (सेण्टेड) द्रव्य हैं, विविध बहुरंगी परिधान हैं, साथ ही सीपी, गुंजा, कांच, पीतल, लाख, गिलट तथा तांबा आदि सामान्य श्री साधनों से लेकर चमकते-दमकते बहुमूल्य हीरे-जवाहरात वाले बहुमूल्य रत्नाभूषण भी। 'को बड़ छोट कहत अपराधू'—सभी की अपनी-अपनी अनन्य छटाएँ हैं, विभिन्न विशिष्ठताएँ हैं।

बिंदी के स्थान, आकार तथा समय के अनुसार अनेक नाम या पर्याय हैं। यथा तिलक, टीका, ललाटिका, बंदी, बुंदकी, दावनी, टिकली (टिकुली) इत्यादि इनकी नित नई नाना प्रजातियाँ हैं। चंदन, रोली, कुंकुम, सिंदूर, गोरोचन या गुलाल निर्मित बिंदियों से परे कृत्रिम बिंदियाँ प्रायः टिकली शब्द से ही अभिहित होती हैं। इन पर पीत, हरित, नील, बसंती, रूपहले, सुनहले नाना रंगों की बहार होती है। ये वृत्त, त्रिभुज, पंचकोणीय, बहु कोणीय या किसी पुष्प की पंखुड़ी जैसे अनेक साँचों में ढली होती हैं।

श्रमिक महिलाएँ बिंदी के रूप में प्रायः टिकली का ही प्रयोग करती हैं। एक तो इसको धारण करने में समय की बचत होती है, दूसरे ललाट पर श्रम से उपजे स्वेद के गीलेपन से यह पसीजती-बहती भी नहीं है। ऐसा होने पर भी नव परिणीताएँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राय: अपने भाल को कुंकुम की लाल बिंदी से ही सजाती हैं।

बिंदी कैसी या कितनी बड़ी हो, यह न केवल महिला की मुखाकृति या त्वचा के रंग, अपितु माथे की चौड़ाई पर भी निर्भर है। जहाँ तक इसके क्षेत्रफल का प्रश्न है, सबसे छोटी बिंदी (बुंदकी) क्षीण काया तथा छोटे चेहरे वाली महिलाओं के लिए उपयुक्त होती है। इससे बड़ी आकृति वाली बिंदी औसत चेहरे तथा साधारण शरीर की स्त्रियों के लिए शोभनीय होती हैं। अंतत: सर्वाधिक विशाल बिंदी चौड़ा ललाट, सुदीर्घ लोचन, उन्नत नासिका, कमनीय कपोल एवं चारू चिबुक वाली स्त्रियों की श्री वृद्धि में अधिक सहायक होती है। गोरी महिलाओं में गाढ़ार चटक लाल या कतथई एवं सांवली सलोनी स्त्रियों में सुनहली या रूपहली आभा वाली बिंदी अधिक फबती है। इसी प्रकार गोल आनन वाली वनिताओं में लंबी, जबकि लंबे मुखाकृति की महिलाओं में गोल बिंदी सुंदर लगती है। वैसे पसंद अपनी-अपनी, ख़याल अपना-अपना। कुछ महिलाएँ वस्त्रानुकूल बिंदी का चयन करती हैं। जिस रंग का वस्त्र विन्यास, उस रंग की बिंदी।

बिंदी छोटी (स्त्री के प्रशस्त ललाट पर अधिकाधिक एक रुपए के सिक्के जैसी) है, किंतु इसकी महिमा बड़ी है। चंद्राभ भाल के साम्राज्य की यह एक मात्र साम्राज्ञी है। माँगटीका तो साम्राज्ञी के सिर पर मात्रा स्वर्ण किरीट या छत्र जैसा है। उसकी बगल में स्थित कर्णाभूषण सुरक्षा प्रहरी हैं। प्रकारांतर से चेहरे के अन्य अलंकारों के बीच बिंदी की भुवन मोहिनी उपस्थिति नक्षत्रों के मध्य शारदीय पूर्णेन्दु सदृश है।

बिंदिया संदर्भित जायसी का यह उक्ति-वैचित्र्य देखें—

तिलक सँवारि जो चूनी रची।
दुइज मांह मानहुँ कचपची॥

असमी से सिंधी तक, मलयालम से हिंदी तक, हिंदी के न्यूनाधिक हर भाषा क्षेत्र में आपको बिंदी विराजमान मिलेगी। इसकी अल्पाधिक उपस्थिति हिंदू से मुसलमान तक, कश्मीर से अंडमान तक सर्वत्र देखी जा सकती है। उत्तर-प्रदेश तथा बिहार के भोजपुरी भाषी क्षेत्रों की एक नायिका अपने प्रियतम से किस प्रकार बंबई (संप्रति मुंबई) से फ़िल्मी बिंदी मँगाने का आग्रह करती है, दर्शनीय है—

हमके पिया, फ़िल्मी बिंदिया हो
बंबई से मंगाइ दऽ।

मीना सुरैया नूतन मधुबाला
बिंदिया बिंदु हेलन, बैजन्ती माला
नागिन नगीना कहाला हो, बंबइ से...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंगा मइया तोहके पियरी चढ़इबें
लागी नाहीं छूटे राम जइसन सटइबे
संतोषी माँ सिर लगइबें हो, बंबई से...

बक्सर बनारस के भावे ना बिंदिया
नीक नाहीं लागेले, पुरान पटनहिया
जिभिया बिरावे ननदिया हो, बंबई से...

चूँकि बिंदिया सौभाग्यवती के भाल पर भर्ता के पर्याय—प्रतिकृति या उसके विग्रह स्वरूप विभूषित है, अतएव इसकी आभा (आन-मान) को अक्षुण्ण बनाए रखना सधवाएँ अपना सद्धर्म समझती हैं। किसी भी मूल्य पर बिंदिया का रंग धूमिल न पड़ने पाए, इसकी मर्मस्पर्शी व्यंजना पूर्वांचल के इस लोक प्रचलित गीत में देखी जा सकती है—

सुरुज मुख ना जइबे, ना जइबे हाय
मोरि बिंदिया के रंग उड़ि जाय
लाख टके की मोरी बिंदिया
देवरा नजरिया लगाय कि हाय
मोरि बिंदिया के रंग उड़ि जाय
सुरुज मुख...

बिंदिया के वैभव का वर्णन इस निगोड़ी लेखनी की सामर्थ्य के परे है। यह शृंगारों की रानी है। अंततः इन काव्य-पंक्तियों के साथ इस बिंदी चर्चा को विराम देता हूँ—

वनिता वदन बिहारी बिंदिया
बिहँसे भाल अटारी बिंदिया
बिंदिया हर भूषण पर भारी,
पति प्रियतम की प्यारी बिंदिया।

धरा-धाम पर छाये बिंदिया
सब पर रंग जमाये बिंदिया
हृदय हीन पाषाण परुष वे,
जिनको नहीं लुभाये बिंदिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नयनाभिराम नथ—एक अकटा कथालाप

पता नहीं क्यों, मुझें नथ अलंकृत स्त्री अत्यंत लुभावनी लगती है। मैं जब भी किसी ऐसी वरानना को देखता हूँ, तो अपलक एकटक निहारता रह जाता हूँ। ऐसी धृष्ठता करने में मुझे कोई ख़ास असुविधा नहीं होती, क्योंकि नथिया धारिणी अपनी प्रकृतिजन्य लज्जा एवं संकोच के कारण, मेरे इस अनावृत्त चौर कर्म से सर्वथा अनभिज्ञा होती है। उसकी न केवल ग्रीवा अपितु नयन तक प्रायः नत होते हैं। ऐसा लगता है जैसे नथिया, नारी को एक स्त्री सुलभ शालीनता की परिधि में कसकर बांधे हुए हो। कोई नथ सुशोभित वनिता भी चंचल या दुर्विनीत हो सकती है, कम से कम मैं तो ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकता। वस्तुतः इस कल्पना-कथ्य में नथ ही महनीय है, नारी नहीं।

नासापुट से संलग्न इस आभरण के कई आकार-प्रकार हो सकते हैं। किंतु सुविधा के लिए इसे तीन कोटियों—नथनी, नथिया तथा नथ में रखा जा सकता है। सबसे छोटे आकार वाली होती है नथनी, जो अति सामान्य क्षीण काया तथा अल्प आनन वाली महिलाओं के लिए उपयुक्त होती है। इससे बड़ी आकृति वाली होती है नथिया, जो मध्यगत आनन तथा सामान्य शरीर की महिलाओं के लिए शोभनीय होती है। अंततः सर्वाधिक विशाल रचना नथ की होती है, जो प्रशस्त ललाट, सुदीर्घ लोचन, उन्नत नासिका, चारु कपोल एवं विस्तृत चिबुक वाली गज गामिनियों की श्री वृद्धि में अधिक सहायक होता है। लिंग भेद की दृष्टि से यदि नथनी और नथिया छोटी-बड़ी बहनें लगती हैं, तो नथ इन दोनों का बड़ा भाई। तत्वतः जल, हिम, उपल सदृश्य ये तीनों प्रकार एक ही अलंकार की भिन्न-भिन्न रूपाकृतियाँ हैं। इसलिए इस आभूषण या विषय वस्तु के प्रतिपादन में इनका भिन्न-भिन्न संज्ञा प्रयोग एक-दूसरे के पर्याय-प्रतिकृति के रूप में समझा जाना चाहिए। अर्थात एक के वर्णन-कथन में शेष दोनों के अस्तित्व बोध भी समाहित हैं।

नासिका के अलंकरण में नथ की प्रभावोत्पादक भूमिका किसी से भी छिपी नहीं है। नथिया नायिका के मुख-लावण्य को द्विगुणित कर देती है। ऐसी अनुभूति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होती है जैसे शिव की जटा पर शोभित क्षीणकाय चंद्रमा नायिका की नासिका के नीचे अपनी पूरी कलात्मक अभिव्यक्ति के साथ सहज ही उतर आया हो और उसका संपूर्ण मुख-मण्डल शारदीय ज्योत्स्ना सरिस खिल-चमक उठा हो। यदि यह कहा जाए कि नारी के सारे आभूषण मिलकर भी इस इकलौती नथिया की समानता नहीं कर सकते, तो किंचित कोई अतिश्योक्ति न होगी। निष्कर्षतः स्त्री के आनन-छवि की अभिवृद्धि के लिए नथिया न केवल अनुपमेय अपितु अन्यतम आभूषण है। कदाचित इसीलिए अधिकांश स्थलों पर पाणिग्रहण संस्कार के समय इस सौंदर्य उपादान की उपस्थिति अत्यंत आवश्यक समझी जाती है। इस माँगलिक मौक़े पर अन्य कोई आभूषण बने चाहे न बने, नथिया का निर्माण निश्चित रूप से होता है। अकिंचनता की स्थिति में इस अवसर पर लोग, इसे अल्प अवधि के लिए ही, अन्य से उधार भी माँग लेते हैं। इस प्रकार वैवाहिक अवसर पर इसकी अपरिहार्य पारंपरिक प्रस्तुति, इसकी विशेष विशिष्ठता को प्रतिपादित करती है।

अब यहाँ एक स्वतःस्फूर्त जिज्ञासा जन्म लेती है कि पाणिग्रहण के समय किसी भी नववधू के लिए नथिया की अपरिहार्य अपेक्षा क्यों समझी गई? फिर नथिया ही क्यों, एक अन्य आभूषण की उपस्थिति भी विवाहोत्सव हेतु अत्यंत आवश्यक होती है, जिसे 'तागपाट' कहा जाता है। यहाँ इस अन्यथा अनुमान के लिए सविनय क्षमा चाहूँगा—कहीं ऐसा तो नहीं कि जिस प्रकार किसी उद्धत पशु को बस में करने के लिए नथिया और पगहा की ज़रूरत होती है, उसी प्रकार यौवन की दहलीज पर पाँव रखती बालिका वधू को आजीवन वश में रखने हेतु नथिया और ताग पाट (गले का एक विशेष गहना) आवश्यक समझे गए हों। धातव्य है कि ये युगल आभूषण न केवल वैवाहिक तिथि को ही, अपितु वर पक्ष द्वारा ही, निश्चित रूप से बनवाए-लाए भी जाते हैं। साथ ही तागपाट नामक यह कंठहार वधु को प्रायः दूल्हे का बड़ा भाई (परिणीता का तथाकथित भसुर) ही अपने युगल करों से पहनाता है। इस कर्मकांड से ऐसा प्रतीत होता है, मानो ये द्वय आभूषण वर पक्ष द्वारा परिणीता को मर्यादा रूपी खूँटे में आजीवन बांधे रखने के प्रतीक चिह्न हों।

यहाँ नथ के संदर्भ में सुनी एक रोचक कथा के वर्णन का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। कथा इस प्रकार है—विवाहोपरांत नववधू मायके से ससुराल आई है। उसके अंग-प्रत्यंग माँगटीका, कर्णफूल, कंठहार, भुजबंद, वलय, मुद्रिका, कटिबंध, नूपुर प्रभृति आभरणों से सुसज्जित हैं। इन नख-शिख आभूषणों में नयनाभिराम नग मण्डित नथ भी है। अन्य आभूषणों का बोझ तो नव वधू जैसे-तैसे सह लेती है (क्योंकि इनमें से कुछ को तो वह मायके में भी धारण कर चुकी है) किंतु जीवन में पहली बार धारण किया गया नथ उसकी कोमल नासिका को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कष्ट देने लगा है। अंततः कष्ट के दुसाध्य हो उठने पर विवश वधू सास से निवेदन करती है—

"अमां! यदि आपकी अनुमति हो तो इस नथ को नासिका से उतारकर संदूक़ में रख दूँ।"

सास बोलती है—"अरे बहू, यह क्या कहती हो! इस नथ ने तुम्हारे साथ कौन-सा ऐसा अपराध कर दिया है, जो तू इसे उतारने पर तुली हो?"

वधू गिड़गिड़ाती है—"माँ, यह मेरी नासिका को बहत पीड़ा पहुँचा रहा है। देखो न, कैसी लाल हो गई है! अब मैं इस मुवे को किसी भी मूल्य पर धारण नहीं कर सकती।"

इतना सुनते ही सास के मस्तिष्क का तापमान बढ़ जाता है। वह भाद्र पक्ष के बिगड़े बादल-सी गरजती है—"तू सचमुच पागल हो गई है क्या! ऐसी अशुभ बातें मुँह से निकालते तुम्हें तनिक लज्जा नहीं आती! कम से कम लोकापवाद से तो डरो! पुर-प्रतिवेशी क्या कहेंगे, दो दिन भी नहीं आए हुए हुआ और बहू की नाक उघड़ गई।"

वधु पुनः कुछ कहने का साहस जुटाती है—"लोग कुछ भी कहें माँ, अब इसकी पीड़ा को सहन करना मेरे लिए असंभव हो गया है।"

घर के आँगन में चहल-क़दमी करती सास मारे क्रोध के चीख़ने लगती है—"चुप रह कुलक्षनी! जी में आता है, तेरी कैंची सदृश चल रही जिह्वा को काटकर मुँह से बाहर कर दूँ। जिसे अपने कुल की मर्यादा का रंचमात्र भी ध्यान नहीं, उसे इस हवेली में रहने का कोई अधिकार नहीं। मैं अविलंब तेरे पिता को बुलाकर तुझे तेरे मायके भेजने की व्यवस्था करती हूँ। अब वहीं जाकर अपनी उघड़ी नाक दिखा।" और यथासंभव शीघ्र ही बहू मायके भेज दी जाती है।

गणिकाओं के समाज में जाने कब से एक प्रथा प्रचलित है। यह प्रथा है उनकी नथिया उतारे जाने की। इस बाबत मैं पूर्णतया अनभिज्ञ हूँ कि कोई भी वार-वनिता नथिया धारण कब करती है? क्योंकि नथिया उतरने या उतारने की बात तो तब आनी चाहिए, जब वह धारण की गई हो। वस्तुत वार-कन्या की नासिका का नथावृत्त होना गौण या महत्त्वहीन है कि इस ओर किसी की दृष्टि जाती ही नहीं। इसके विपरीत नासिका को अनावृत्त किए जाने की प्रक्रिया उनके समाज में किसी उत्सवी कर्मकाण्ड सदृश संपन्न की जाती है। संभव है जिस निशा में नथिया उतारी जाती हो, उसी निशा में नौची की वारांगना माँ द्वारा उसे पहनायी भी जाती हो। जब कोई नौची प्रथमतः वेश्या-व्यवसाय में पर्दापण करती है, जब पहली बार उसका किसी निर्धारित पुरुष के साथ समागम होता है, तब सामान्यतया यह स्वीकार कर लिया जाता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि उसकी नथिया उतर गई या उक्त पुरुष के द्वारा उतार दी गई। अब वह किसी भी व्यक्ति को रिझाने-लुभाने के लिए स्वतंत्र है या कोई वेश्यागामी मूल्य चुकाकर उसका सानिध्य प्राप्त कर सकता है। इस पूरी प्रक्रिया से यह परिलक्षित होता है कि यहाँ नथिया मात्र एक प्रतीक है। वास्तविक नथिया तो उतरने से पूर्व नौची की दैहिक मर्यादा रही, जो संप्रति घोषित रूप से संपूर्णतया समाप्त कर दी गई। अपवाद स्वरूप कभी कहीं नथिया उतारने वाला व्यक्ति उतारी जाने वाली नौची को वेश्यावृत्ति के कुकर्म से विमुक्त करके, रखैल या उपपत्नी भी बना लेता है। ऐसा करते समय उसे वार-कन्या हेतु आजीवन भरण-पोषण की व्यवस्था करनी पड़ती है।

नथिया से संदर्भित कुछ लोक प्रचलित मनोहारी गीत हैं, जो पूर्वांचलीय गाँवों में आज भी यदा-कदा सुनाई पड़ जाते हैं। इन गीतों में जहाँ नायिका द्वारा अभिव्यक्त नथिया की उत्कट कामना का भाव विभोर वर्णन है, वहीं कहीं-कहीं नथ जन्य पीड़ा की छटपटाहट तथा इससे विमुक्ति की ईश्वर से हृदय विगलित गुहार का चित्रांकन भी है। आगे उद्धृत प्रस्तुत गीत में प्रियतम की प्रसन्नता हेतु नई नथिया के निर्माण की मनोहारी आकांक्षा व्यंजित है—

नथनियाँ पर जान देला पियवा हमार हो
झुमका न भावे पियके, कंगना ना भावे
हलका हुमेल नाहीं जिया ललचावे
नाहीं लुभावे पिय के गरवा क हार हो
नथनियाँ पर...
झुमका तोराइब, नया नथिया गढ़ाइब
नथिया का बीचे लाल नग जड़वाइब
घर ही बोलाइब हम सहरी सोनार हो
नथियवा पर...
अजब नथिनियाँ क गजब गढ़नियाँ
देखि मोहे पियवा कहेला दिलजनियाँ
चमके चंदनियाँ भइल उजियार हो
नथनियाँ पर...

नासिका के नथावृत्त होने से पूर्व उसका छेदन एक कष्ट साध्य क्रिया है। यह क्रिया यथासंभव बालिका की छोटी वय में ही संपन्न होती है, जब उसके नासापुट अत्यंत कोमल एवं मुलायम रहते हैं। यदा-कदा इस दैहिक पीड़ा को भुलाने हेतु इससे भयभीत बालिका को भाँति-भाँति के प्रलोभन भी देने पड़ते हैं। गँवई कहावत है, 'जे गुड़ खाई, ओकर नाक छेदाई'। किंतु गुड़-मिठाई के इस लाख लालच के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बावजूद एक बालिका नासिका छेदन के लिए तैयार नहीं होती। प्रस्तुत गीत में उसकी करुणाप्लावित कंठ विह्वलता देखते ही बनती है—

नाकी में नथनियाँ ना पहिरब रे माई
गुरवा न खाई, न नकिया छेदाई
का करे केहू, सोनार घरे जाई
खाइ जहरवा भले मरि जाई। नाकी में...
नकिया क पीरा, न हमसे सहाई
मानी ना सोनरा, जो करी बरियाई
ओकरा हवेली, देबो अगिया लगाई। नाकी में...

नासिका के छेदे जाने की पीड़ा तो फिर भी सामान्य है। लगता है, इससे भी बड़े दुखों की जन्मदात्री है यह निगोड़ी नथिया। मेरे अभ्यंतर को गहराई के साथ स्पर्श करता है यह चर्चित गीत, जब सुनता हूँ—'नथनियाँ ने हाय राम बड़ा दुख दीना'। थोड़ा नहीं, बड़ा दुख दीना। आश्चर्य है, इतनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली नयनाभिराम नथिया किसी के भीषण दुख का कारण भी बन सकती है। मैं जब भी यह मर्मस्पर्शी गीत सुनता हूँ, अंदर ही अंदर तिलमिला उठता हूँ। सोचता हूँ, क्या सचमुच नथिया इतनी दुखदायिनी है! क्या इसीलिए महिला समाज में इसके पहने जाने की प्रथा छीजती जा रही है। कम से कम मुझे तो ऐसा ही प्रतीत हो रहा है। कहीं-कहीं तो इसकी समसामयिक अपरिहार्य अनिवार्यता को भी तिलांजलि दी जाने लगी है। विवाह पर्व पर नथिया लाने-ले जाने की प्रथा आज भले शेष रह गई हो, संप्रति इसके पहने जाने की अभिलाषा मृतप्राय है।

अभी कुछ वर्ष पूर्व मेरे गाँव में विवाहोपरांत एक अभियंता-वर के घर आई नववधू मात्र इसलिए परिहास की पात्री बन गई, क्योंकि छिद्राभाव के कारण उसकी नासिका आभूषण रहित थी। तो क्या इसे नथाभूषण के महत्त्व का अवमूल्यन माना जाए अथवा वर्तमान सदी में उठी नारी मुक्ति आंदोलन की लहर का प्रभाव? किंचित दोनों ही बातें अपने-अपने स्थान पर समीचीन लगती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललित लेख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलो मन का द्वार : सावन की मनुहार

मन के दरवाज़े पर खड़ा बेचारा सावन जाने कब से सिकड़ी पीट रहा है। इधर दरवाज़ा है कि खुलने का नाम ही नहीं ले रहा। अंदर से सख़्ती के साथ बंद है। ज़िंदगी की आपाधापी, रोज़ी-रोटी के चक्कर, नमक-तेल शक्कर, इनसे-उनसे, जाने किनसे तक की टक्कर तथा कुंठा, संत्रास-हताश जैसे वजनी ताले लटक रहे हैं। सावन आए या जाए, चाहे गला फाड़ चिल्लाए, इस मूक-बधिर मन पर कोई असर नहीं। इस बेरहम को क्या पता कि रिम-झिम फुहार लिए, हरियाली का हार लिए, कली-कचनार लिए, झूला डार-डार लिए, कजरी की बहार लिए, तबला-सितार लिए, सोलह शृंगार किए, प्यार संसार लिए, प्रियतम मनुहार लिए, विह्वल कंठ से कहीं कोई पुकार भी रहा है—'प्यारे मनमीत! अब भी तो दरवाज़ा खोलो।'

आख़िर हमारे इस मन को हो क्या गया है! एक से बढ़कर एक दिल फ़रेब मौसम आ रहे हैं, निकल जा रहे हैं। रंगारंग त्यौहार आ रहे हैं, किंतु दिल-दिमाग़ पर दस्तक दिए बिना ही चले जा रहे हैं। वो पहले वाली रंगीनियाँ अब कहाँ! आज रोते मनों पर ख़ुशी की झूठी चून पोते कहीं-कहीं उदास आयोजनों की औपचारिकता भले दीख जाए, ज़िंदादिली कहीं नहीं। रागात्मक मानसिकता का एकदम अभाव हो गया है। अजीब-सा आलम है। अपने में सजनी है, अपने में बालम है। प्रतीक्षा की वो तड़प, वो गूंगे दिल की कसक, कहाँ बिला गई।! कहाँ गए वो नजारे, जब तबले की थाप और सारंगी की रणन पर, डुग्गी की कुहँक और हारमोनियम की ममक पर, टुनकी की टनक और पायल की छनक पर, कोई मनोहारी सुरीला स्वर आलाप लेता—'आजहुँ न आए बालमा, सावन बीतारि जायऽऽऽ!'

मन तो मन, आज हम मन के ऊपर तने तन को भी सावनी फुहार से भींगने नहीं दे रहे हैं। बदन पर शबनम भी गिरी तो झट छाता तान लिया, कहीं से शोख ठंडी हवा नहीं हिली, कि बरसाती ओढ़ लिया। माघ की हाड़ कँपाऊ जाड़ा हो या बैसाख की चिलचिलाती धूप, कुछ भी फ़र्क़ पड़ने वाला नहीं। इधर हम अपनी इस बेहूदा कामयाबी पर दीवाने हुए जा रहे, उधर आशिकाना सावन, माशुकाना फागुन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेगाने हुए जा रहे हैं। मस्तानी होली, लासानी ईद अपनी लाचारगी पर आठ-आठ आँसू बहा रही हैं।

यह हमारी वैज्ञानिक तरक़्क़ी का नश्तर है। भौतिक विकास का पुरज़ोर असर है, कि इस भूखे मन को असली ख़ुशियाँ मयस्सर नहीं हो पा रही हैं। टेलीफ़ोन-मोबाइल ने चोरी छिपे के सिलन स्थलों के महत्त्व को कम कर दिया है। नायक नायिका एक-दूसरे को देखे बिना ही (माफ करेंगे, यह आलेख तब का है, जब अभी देखने की सुविधा न थी।) हँसी-मज़ाक़, छेड़-छाड़, प्यार-इसरार करने को विवश हैं। सावन की शुरुआत के साथ शुरू हो जाती गाँव-गाँव में मल्लों-कुश्तीबाजों की प्रतिद्वंद्विता, मुल्लर या बरगत्ते की उठापटक, चिक्का, ऊढ़ा, दौड़, कबड्डी की रेल-ठेल, अब काबुल में गधे की तरह ही दिखलाई पड़ रही है। क्या आपको किसी भी जगह, किसी भी बाग में पेड़ पर टंगे झूले दिखाई पड़ रहे हैं? बच्चे किताबों को देख-पढ़कर ही समझ पा रहे हैं कि झूला भी कोई चीज़ होती है—"आओ साथी झूला झूलें, पेग बढ़ाकर नभ को छू लें।" क्या कहीं ग्राम बधूटियों का कोकिल कलरव आप के तन-मन को झकझोर रहा है—"कइसे खेले जइबू सावन में कजरिया, बदरिया घेरी आई ननदी..."

आइये, कम से कम कुछ घड़ी के लिए भी तो हम अपने मन के दरवाज़ों को खोलें और मन भावन सावन के दिलकश नजारे का मज़ा उठाएँ। देखिये न, बेचारा कब से खड़ा दस्तक दे रहा है।

और आख़िर में इस सावन की बाबत अवलोकनीय हैं, कुछ भोजपुरी भाषा की ये तुकबंदियाँ—

ई के आली मन भावन हऽ
जियरा क प्यास बुझावन हऽ
मरहम पट्टी हर घावन कऽ
हर हियरा कऽ सरसावन हऽ
झिंसफुस फुहार रिमझिम पानी
धरती धइलस चूनर धानी
ई रानी हऽ कि राजन हऽ
केकर आवन बूझऽ जानी
एगो कहलसि सखि राजन हऽ
दूजी कहलसि सुख साजन हऽ
तीजी चउथी पंचवीं कर्रा—
सावन-सावन बस सावन हऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहकल कजरा सखि सावन हऽ
गमकल गजरा हँऽ सावन हऽ
लहकल अँचरा, खनकल चूरी
जग तन मन भावन सावन हऽ

कहिं कजरी कासी पूरी बा
कहिं खाँटी मिर्जापूरी बा
ब्रजवाली अवधी पटनहिया
कहिं देसवाली भोजपूरी बा

घिर-घिर बदरी, झिर-झिर फुहार
ठंडी हल्की सिर-सिर बयार
केकर हियरा ना हुलसे ला
लखि रिमझिम सावन क बहार
हरियर चूरी हरियर सारी
हरियर हियरा हर नर-नारी
हरियर दिनवाँ हरियर रतिया
बतिया हरियर प्यारी-प्यारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्तिक की कमनीयता

कार्तिक की क्यारी में किस्म-किस्म के कुसुम

'उत्तम खेती मध्यम बान...' के तहत यह कहते हुए मुझे गर्व है कि मैं ख़ानदानी खेतीहर हूँ, किसान हूँ। यानी मेरे परदादा, दादा, पिता, सभी किसान रहे हैं। मैंने नौकरी (एसोसियेट प्रो. इति.) ज़रूर की, किंतु यथासंभव किसानी भी नहीं छोड़ी। और हमारे यहाँ, ग़ाज़ीपुर (उ.प्र.) के करइलांचल में, वर्ष के बारहों महीनों में, कार्तिक का महीना, कम से कम किसानों के लिए, सर्वाधिक महत्त्व का होता है। कृपया, मेरी इस स्वीकारोक्ति को, फागुन, चैत, अगहन तथा सावन आदि माहों का अपमान न समझा जाए। फागुन, चैत तथा सावन भी मुझे कम प्रिय नहीं हैं। किंतु ये सबके सब हिंदी भाषा की तरह ही हैं; अत्यंत प्रिय अपनी भोजपुरी बानी जैसी कदापि नहीं। भोजपुरी अपनी मातृभाषा है, माटी की भाषा है और सबसे अधिक अपने करइल इलाक़े की भाषा है। यह कातिक और किसान की भाषा तो है ही। आइए, अब आपको मूल संदर्भ की ओर लिए चलते हैं।

फागुन और सावन अपनी-अपनी रंगीनियों के चलते दूसरे सारे महीनों को मात दिए बैठे हैं। मिलन हो या जुदाई, एक व्रती हो हरजाई, नाराजगी हो या आशनाई, बाँस वन हो या अमराई, बारिश हो या पुरवाई, वग़ैरह-वग़ैरह सभी के लिए फागुन और सावन के महीने अधिक मुफीद माने गए हैं। शायद फागुन की अपनी अहमियत के चलते ही बैसाख-जेठ आग माफ़िक जलते हैं। इसी तरह सावन की शोहरत को देखकर भादो बेतरह आँसू बरसाता है। इस आम राय से अलग अगर मैं यह कहूँ कि गँवईं मनइयों, ख़ासतौर से किसानों के लिए, कातिक का महीना सबसे बेसक़ीमती है, तो कोई बेजा बात न होगी। आइए, इन भोजपुरी पंक्तियों के माध्यम से इस बात की तहक़ीक़ात ही कर ली जाए—

कातिक, किसान की ज़िंदगी है

कुछ कुनकुनात ठंढी आइल
कुछ गुनगुनात मस्ती आइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कातिक किसान-तन सनसनात
फुर्ती आइल चुस्ती आइल
ऊठ-ऽ ऊठ-ऽ ई कातिक ह-ऽ
बइठ-ऽ मति भइया कातिक ह-ऽ
जिव-घातक जिन सुतलन बाबू
जिनगी किसान क-ऽ कातिक ह-ऽ
केहू टड़िया बन्हवाइ रहल
केहुका टेक्टरवा धाइ रहल
एधिर-ओधिर बोवे खातिर
केहु चोखा मुँह बनाइ रहल
केहु बीया ले धरहीं बेलमल
केहु ले टड़िया खेतवा पहुँचल
केहु लट्ठा लेके नापि रहल
केहु पनपियाव ले के दउरल

अजबे दियवा-दियारी बा

तबले आइल धन तेरसिया
केहु कीनल थरिया गीलसिया
तावा तसला केहू कीनल
केहु चम्मच केहू सँड़सिया
आगे दिन दिया-दियारी बा
ना तनिक कहीं अंधियारी बा
का गाँव-गली डेहरी मुड़ेर
जगमग-जगमग उजियारी बा
का कोठा पर परकोटा पर
तक्खा दियरक्खा ओटा पर
कोना-कानी का ओरियानी
कही बलब टंगल बा सोटा पर
कहीं लइकन क किलकरिया बा
कहिं छूटि रहल फुलझरिया बा
कहिं छुटे पटाखा ठाँय-ठाँय
गहगह गलियन हर खोरिया बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुपवा बाजत बा फटर-फटर

सगरी अंजोर धुंधलाइ गइल
जागऽ ऊठ-ऽ ना भोर भइल
जल्दी ल-ऽ कजरौटा हँसुवा
सुपवा-सोपारी आइ गइल
इस्सर पिस्सर दलिद्दर जा
(हे ईश्वर (घर में) प्रवेश करें (ताकि) दरिद्रता चली जाए।)
लक्ष्मी माई भंडारे आ
दीया दिखाय, सुपवा बजाय
सब ए घर से, ओ घर में जा
सुपवा बाजत बा फटर-फटर
अन्हराहे भ-ऽइल खटर-पटर
घरवा-घरवा क दलिदरवा
उठि-उठि के भागल झटर-पटर

गोधन क अजब अवाई बा

बीतल सुपवा-सोपारी बा
गोधन कूटे क बारी बा
गोबर देहियाँ कउड़ी अँखिया
झोंटा कपरा तइयारी बा

(गाँव-क़स्बों में महिलाएँ गोधन बना, उसे कूटती (दंडित करती) हैं। कथा है, कि वह छिपकर कृष्ण-गोपियों की रासलीला देखने चला गया था और गोपियों ने उसे देख-पकड़ लिया था।)

गोधन क अजब अवाई बा
चंदन-पीढ़ा पहुनाई बा
गा-गा रिझाइ, गोड़वन लंघाइ
मुसरन से गजब कुटाई बा
रंग-रंग क चढ़त मिठाई बा
घुरली बा कुटकी-लाई बा
पूरी-बखीर बा मोरब्बा
फिर दऽही खींचि खवाई बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलिया क-ऽ ददरी—का कहल-ऽ

बलिया कऽ ददरी—का कहलऽ
मेलन कऽ पगरी—का कहलऽ
देख-ऽ घोड़हट्टा, चिड़िया घर
सरकस नौटंकी—का कहलऽ
केहू का कमरा (कंबल) की नाइल
केहू का नीबू (अँचार हेतु) खरिदाइल
बेचाइल बैला (बैल) केहू कऽ
नौ सेरही जरसी (बिलायती गाय) ली आइल
सब अपना-अपना पहुँचि घरे
ददरी मेला क-ऽ बाति करे
अजबे चीता, गजबे भालू
हाथी उपरा, पल्हवान (मल्ल) तरे
हऊ भंइसिया अजबी रहुए
देसिला गइयो गजबी रहुए
बे हाथ-गोड़ क लइका ऊ
कइसे टन-टन बोलत रहुए

और आख़िर में—

कातिक किसान कऽ कर्मभूमि
कातिक किसान कऽ रंग भूमि
कातिक गेहूँ, कातिक गुलाब
कातिक किसान कऽ जंग भूमि
सोचीं जो कातिक ना आई
कस चैती सगरो बोआई
पाकी पूरी कस न उमी (राम जन्म) के
करिहें उपास काली माई।

छठ पूजा तथा अक्षय नौमी जैसे पावन पर्व भी कार्तिक माह में ही मनाए जाते हैं। इति कार्तिक कथा!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होली जब दस्तक देती है...

होली के आने के बहुत पहले माघ के शुक्ल पक्ष की पंचमी, उसकी दूती बनकर जब धरती की ओर धीरे-धीरे अपने पाँव बढ़ाती है, तब लोग कहने लग जाते हैं, बसंत आ गया। इसके साथ ही ऋतुराज के स्वागत-अभिनंदन की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। तैयारियाँ नहीं, आनंददायी उल्लासमय आयोजन। एक अति विशिष्ट महापर्व का महायोजन, जो माघी पंचमी से शुरू होकर बैसाखारम्भ तक चलेगा।

हमारी सांस्कृतिक परंपरा है कि जब हम कोई भी आयोजन रचाते हैं, तो सबसे पहले माँ सरस्ती की (विघ्न विमोचक गणेश की भी) वंदना-पूजन करते हैं। वसंत पंचमी बनाम 'सरस्वती पूजन समारोह' के इस प्रारंभिक कार्यक्रम में छात्र-छात्राएँ उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं। वीणा पाणि भगवती की अत्यंत धूमधाम से पूजा-अर्चना की जाती है। भोजपुरी छंदों के माध्यम से एक तात्कालिक दृश्य दर्शनीय है—

अजबे बसंत पंचिमियाँ बा, माई सुरसती पुजनिया बा।
चंदा पर चंदा असुलाता, घरवा-दुवार दोकनियाँ जा॥

का बस वाला, टैक्सी वाला, धरऽ भागल तांगा वाला।
के के, के के चंदा देईं, खिसियाइ गइल ठेला वाला॥

हर राहगी के घेरि-घेरि, लम्मा वालन के टेरि-टेरि।
लइकन से डरि केतने जाना, बरकल जालन मुँह फेरि-फेरि॥

'ई सब साला नक्कल वाला, एक्को नाहीं पढ़े वाला।
ई चन्दा बा कि धंधा बा', भुसुरात चलल सइकिल वाला॥

जै-जै हो माई सुरसतिया, अजबे तोहार बनल झंकिया।
बोरा मचिया बइठऽ देखऽ, नाटक विडियो बिरहा नचिया॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन दृश्यों को देखते हुए लगता है, आज ये समारोह बैठे-ठाले छात्रों के लिए महज मनोरंजन बनकर रह गए हैं। माँ सरस्वती के प्रति श्रद्धा-भक्ति इनमें रंचमात्र भी दिखाई नहीं देती। मन क्षोभ से भर उठता है, जब कानों में ज़ोर-ज़ोर की कनफार चीख़ें टकराती हैं—

एक छात्र—'ए हो!'
सभी छात्रा—'का हो'
एक—'सरस्वती माई की!'
सभी—'जै हो'
एक—'एक-दो-तीन-चार!'
सभी—'माता जी की जयकार!'

सरस्वती पूजन के संपन्न होते-होते बसंत, प्रत्यूष की स्नेहिल किरणों सदृश आशीर्वाद बरसाता धरती को आलोकित करता है। माघ के अंत तथा फागुन के आरंभ के साथ बसंत की यह मंद-शीतल आभा धीरे-धीरे प्रखर होने लगती है, और तब—

हर डाली-डाली मउराइल
हर पत्ता-पत्ता बउराइल
हिजड़ा तक हाथ नचा बोलल—
'ए बाबा रे, फागुन आइल!'
फटहा फागुन आ खाढ़ भइल
सगरो सरीर रस बाढ़ भइल
दरकत छतिया मसकत अँगिया,
हर अंग अनंग अमाय गइल।
कहीं अजब-गजब क बोली बा
कहीं रंगा-रंग टिबोली बा
जीजा साली कऽ छेड़छाड़,
बुढ़िया भी करत ठिठोली बा।
फागुन बसंत कऽ राजा हऽ
हऽ रसगुल्ला, ना खाझा हऽ
गारी भी मीठ अंगारी बा,
मौसम क इहे तकाजा हऽ।

इस फागुनी फिजा के बीच बसंत-मलिका होली भी अपनी अद्भुत छटाओं, नाना भाव-भंगिमाओं के साथ चतुर्दिक प्रकट होती है। हाथ कंगन को आरसी क्या! दृष्टांत सामने है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं हरियर पीयर गाल भइल
कहीं टहटह लाल गुलाल भइल
सुखले अबीर ले के केहू।
मुँह गोरी पोति निहाल भइल।
हड़बड़ में छैला आ धमकल
गड़बड़ में रंगवा ना मीलल
झड़फड़ में गोरी उछ्ल परल,
कहीं कीच चलल, कहीं मूत परल,
छैला अंगना बिछिलाइ गइल
गोरी मोरी ढमिलाइ गइल
देवरा सन्हना में ऊभचूभ,
भउजी हँसि-हँसि अगराइ गइल।

अंततः इस आगे उद्धृत शुभ आवाहन के साथ—'आईं होली से प्यार करीं, तकरार जहाँ मनुहार करीं। इकरार करीं जीवन भर कऽ—'बस प्यार करीं, इसरार करीं।' इति होलिकाय नमः।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रंग बरसे भींजे—मगर महज चुनर वाली ही नहीं

आप कहेंगे, रंग तो महज रंग है, चाहे वह जोगिया हो, मटमैला हो, गोरा हो, काला हो, सुआपंख वाला हो, बसंती हो, बैगनी हो, बादामी हो, धानी हो, लाल हो, पीला हो, हरा हो, नीला हो, सूखा हो, गीला हो, मुरझाया हो, खिला हो। वैसे हर रंग का अपना अलग रंग ज़रूर है, मगर आख़िरकार है वह रंग ही—सिर्फ़ एक अदद रंग।

जनाब! ज़रा मुझे समझाने की इनायत तो कीजिए, कि इनमें वह आप वाला एक अदद रंग है कहाँ?—आज कल अमुक के बड़े रंग हैं, चाहे गमुक को उसने पूरी तरह रंग दिया है, या अमां यार ज़्यादा रंग न जमाओ, या आजकल उसके रंग-ढंग अच्छे नहीं हैं अथवा तुमने तो वहाँ रंग ही जमा दिया। इसी तरह रंग जमने, रंग उखड़ने, रंग चढ़ने, रंग उतरने जैसी रंगीन बातें भी यदा-कदा सुनने-देखने को मिल ही जाती हैं।

इस रंग ने हमें और भी रंगीन चीज़ें दी हैं। बतौर मिसाल के रंग महल, रंगसाज, रंगमंच, रंगभूमि, रंगकर्मी, रंग-रोगन, रंग-रसिया, रंग-रंगीला वग़ैरह-वग़ैरह। अगर आप के पास डाक टिकट की कमी हो, तो खत को बैरंग कर दीजिए। शायद वह बेरोक-टोक जल्दी पहुँच भी जाए। ख़ैर, इस बैरंग बात (खत) के लिए माफी दें, क्योंकि अब तो मोबाइल, स्मार्ट फ़ोन, जाने और भी क्या-क्या आ गया है।

हाँ, तो यही रंग, वक़्त के साथ कभी कुरंग हो जाता है, कभी बदरंग हो जाता है, तो कभी सुरंग भी बन जाता है। यह सुरंग यदि ख़ूबसूरत रंग के अर्थ में न लिया जाए तो बेचारे रंग के साथ इसका कोई तालमेल ही नहीं। फिर तो रंग में भंग पड़ा नहीं, कि सारा मज़ा किरकिरा। आपके सारे रंगारंग आयोजन बेरंग, ज़िंदगी की सारी रंगीनियाँ रंगहीन। 'रंगुआ सियार' शीर्षक कहानी का अंत तो आपने पढ़ा-सुना ही होगा।

दोस्तो, इस रंग-रंग के रिरियाने की गुस्ताखी माफ करें, तो आपको एक बहुत पते की, पुरअसर बात बताऊँ, और वह यह कि एक मायने में इस रंग का मतलब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(अर्थ) मुहब्बत (प्रेम) भी होता है। फिर तो इस अर्थ में रंग की बात आते ही तबियत जलतरंग माफ़िक खनखना उठती है। प्रेम की मामूली छुवन से ही सारा जिस्म सनसना उठता है। अजी जनाब, रंग है तो राग (प्रेम) है, रंगीनी है और शायद सुदूर बसा रंगून भी।

गोया सिर्फ़ 'रंग बरसे भींजे...' ही नहीं, रंग के मुतल्लिक और भी कई गीत-गाने बने हैं, जिन्हें सुनते वक़्त मेरी तरह आपकी भी तबियत रंगीन हुई होगी, मसलन—

मेरा रंग दे बसंती चोला

रंग एखलाक का है, प्यार की पिचकारी है

सुरुजमुख ना जइबें, ना जइबें हाय,

मोरी बिंदिया के रंग उड़ि जाय

रंग-रंग के फूल खिले हैं, भाये कोई रंग ना

अब आन मिलो सजना

श्याम पिया मोरि रंग दे चुनरिया

रंगीला रेऽ, तेरे रंग में...

रंग लगे फगुआ रस बसि भए, माया ब्रह्म दुनों जोड़ी (भीखा साहेब)

अरे मेरे यार! मैं तो डंके की चोट पर कहूँगा, कि रंग ही जीवन का सार है, गुलों लदा गले का हार है, बसंती बहार है, ईश्वरीय उपहार है; बाक़ी सब तो तकलीफ़देह खार है, बुखार है, बेकार है। यही ज़िंदगी का वास्तविक तत्व है, महत्त्व है। तो आइए, और मेरे साथ आप भी गाइए—'है रंग (प्रेम) जगत में सार और कुछ सार नहीं है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चितचोर चैत की चारू चितवनें

ऋतुओं में बसंत न केवल श्रेष्ठ बल्कि सर्वाधिक दीर्घजीवी भी है। माघारांभ से चैतांत तक की इसकी लंबी जीवन-यात्रा के अनेक पड़ाव हैं। इसके अनेक रूपाकर्षण हैं, नाना मोहक भंगिमाएँ हैं। लगभग तीन माह के शासनकाल में अपनी पूरी जीवंतता के साथ यह प्रजा को भाँति-भाँति के सुख पहुँचाता है। यह न केवल उनके ऊपरी मन को आह्लादित करता है, बल्कि उनकी अंतरंग क्षुधा को भी तृप्ति प्रदान करता है।

माघ पहले ही गत हो चुका है। फागुन भी अविलंब विगत होने की स्थिति में है। और चैत? चैत प्रत्यूष के चिलीमन से झाँकने लगा है। कभी उसकी बाँहें, कभी उसके पैर, कभी उसका आधा-अधूरा चेहरा झीने पर्दे के पीछे या उसके अगल-बगल से चमक-झमक के साथ रह-रहकर दिख जा रहा है। संसार-मंच के सामने बैठे विशाल जनसमूह के बीच उसके शीघ्र आने की आहट समा गई है। तभी यह लो, बा मुलाहिजा होशियार...धुलेंडी (होली) रूपी तोरण-द्वार से निकलती हुई उसकी पूरी आकृति मंच पर सजीव हो गई है। दर्शकों की आँखें चैत की चकाचौंध से चहक उठी है।

बसंत के चमन में चैत ने चहलक़दमी शुरू कर दी है। पूरी फिजा में खुमार छाने लगा है। हवा की चंचलता बढ़ गई है। पेड़-पौधे झूमने लगे हैं। डालियाँ इठला रही हैं, बल खा रही हैं, एक-दूसरे के गले मिल रही हैं। पत्तियाँ एक-दूसरे को चूम रही हैं, हिरण-शावक कुलांचे भर रहे हैं। कलियाँ मुस्कराकर फूल हो रही हैं। चंचल सरिताओं में जल-उर्मियों की थिरकनें तेज़ हो गई हैं। पक्षी ऐसे चहचहा रहे हैं, जैसे करीलकुँजों में सट्टा बाज़ार लगा हो। भौंरे सारंगी-सितार की मिली-जुली रणन बन गए हैं। गुलाबों की न केवल हँसी, बल्कि ख़ुशबू तक बढ़ गई है। आम बौरा उठे हैं। उनकी शाखों पर बैठी कोयलों की कुहुक-कसक देने लगी है। और अधिक मोहक, साझें अधिक सुहानी तथा रातें अधिक मादक लगने लगी हैं। अर्थात् बसंत के चरम उत्कर्ष को रूपायित करता चैत जीवजगत के उद्दाम यौवन का महापर्व बन गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आमतौर पर चैतागमन के पूर्व की रात्रि को होली जलाकर पुराने वर्ष की इतिश्री मान ली जाती है तथा अगले दिन धुलेंडी के रूप में नव वर्षागमन की ख़ुशियाँ मनाई जाती हैं। लोग नाचते हैं, गाते हैं, झूमते हैं, एक-दूसरे पर रंग डालते हैं तथा गले मिलते हैं। बच्चे पटाखे-फुलझड़ियाँ छोड़ते हैं। घरों में तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन बनते हैं। कहीं होली की बारात सजती है, जुलूस निकलते हैं, तो कहीं (ब्रज में) लट्ठमार होली मनती है। इसके विपरीत भारत की कुछ भील जातियों में होली के दिन कामदेव तथा रति की पूजा का प्रचलन है। इस दिन बूढ़े मुखिया या सरदार उपवास रखते हैं। काम की भूमिका में युवक तथा रति की भूमिका में युवतियाँ सामूहिक नृत्य करते हैं और नाचते-गाते एक-दूसरे के गालों पर गुलाल लगाकर अपने जीवन साथी का चुनाव कर लेते हैं।

इस प्रकार चैत कामदेव के धरती पर अवतरित होने का पूर्व-उद्घोषक भी है। आगे-आगे चैत की चतुरंगिनी, पीछे-पीछे कामदेव। तुलसी कृत मानस के अनुसार शिव के संगम को भंग करने के लिए कामदेव पहले बसंत यानी चैत को ही भेजता है, जैसे बसंत श्रीचैत से परे उसका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं—'प्रगटेसि तुरंत रुचिर ऋतुराजा, कुसुमित तरु राज विराजा।'

काम और रति से ही संसार की अनवरत संरचना है और चैत इनका वाहक है। संस्कृत साहित्य में काम को चैत्रसखा भी कहा गया है। इस अर्थ में इस चैतोत्सव का महत्त्व अनन्य हो उठता है। यह म्रियमाण मन को भी चैतन्य कर देता है, धन्य कर देता है। मानसकार के अनुसार—'जहं तहं जनु उमगत अनुरागा, देखि मुएहुं मन मनसिज जागा।' अर्थात् जीव-जगत का चंचल चित्त चंचरीक बन काथिक विषयों की ओर बलात चलायमान हो उठता है। तन में तरंग भरी सिहरन तथा मन में उमंग भरी उत्कण्ठा जागृत होने लगती है। दोनों किसी में समा-खो जाने के लिए अभीसिप्त हो उठते हैं। अनंगरंग से दसों दिशाएँ आंदोलित हो उठती हैं। ऐसे में आलिंगन के आत्म-तिरोहित चरमानंद की प्राप्ति हेतु यदि ठूंठ तक अंगड़ाइयाँ लेने लगे, तो आश्चर्य क्या?

नववर्ष के हर्ष, बसंत के उत्कर्ष तथा काम-रति के दुर्द्धर्ष प्रकर्ष के लिए तो चैत का महत्त्व है ही, माँ अन्नपूर्णा के सद्यः अवतरण से भी इसकी पर्याप्त श्रीवृद्धि हो जाती है। यह सृष्टि मात्र सृजन से ही नहीं, पोषण से भी गतिमान है। संसार का भरण-पोषण करने वाली ममतामयी अन्नपूर्णा चैत में अपने संपूर्ण वैभव के साथ प्रणम्य हो उठती है। जब पुर-प्रतिवेशी खेतों में शस्य गुंफित फसलों की सोनचैती कटने लग जाती है, जब मनुष्य से लेकर पशु-पक्षी तक अन्नावाद होने लगते हैं, जब धरती का महाअकिंचन प्रणी भी क्षुधा-तृप्ति की डकार लेने लगता है, जब इस तृप्तिजन्य सुख और आह्लाद को शब्दों में बांध पाना अत्यंत कठिन हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फसलों को बेरहमी से काट फेंकने वाले छैल-छबीले बनिहारों तथा रंग-रंगीली बनिहारिनों की सैन्य-टुकड़याँ गाँव में जमा होने लगी हैं। बिना टेण्ट-कनात जगह-दर-जगह इनके कैंप लग गए हैं। इन कैंपों में रहिमा है, रमुवा है, रनियाँ है, धनियाँ है। माँ-बाप से लेकर नाना हैं, ननियाँ हैं। अधघूंघट वाली कनियाँ है। नंग-धड़ंग अबोध बच्चों की कच-बचकनियाँ हैं।

हाथ में हँसिया है। कंधे पर रस्सियाँ हैं। खेतों में कटिया है। कटिया पर अंटिया है। अंटिया पर बिनियाँ है और बिनियाँ एलानियाँ है। कहीं खच्च-खच्च चना कट रहा है। कहीं घस्स-घस्स मटर उखड़ रहा है। कहीं पच्च-पच्च सुरती थूकी जा रही है। कहीं हच्च-हच्च बोझ बंधे जा रहे हैं।

बोझ खेतों से उठकर खलिहान तरफ़ चल पड़े हैं। कमर हिचकोले खा रही है। उरोज ऊपर-नीचे दलक रहे हैं। कांवर मचर-मचर बोल रही है। चना-मटर घनर-घनर, मसुरी-तीसीर झनर-झनर तथा गेहूँ-जौ सनर-सनर के विविध वाद्य बजा रहे हैं। साथ ही बज रही है खनर-खनर चूड़ियाँ तथा छनर-छनर पाजेबें। नवान्न पोषित अथक तन की तरंग है। पूरी तरह संतुष्ट मन की उमंग है। ऐसे में पसीने से तर-ब-तर लुंगी-लहंगे को सुलझाने कौन जाए!

शाम होते-होते अनगिन चूल्हे दग गए हैं। कहीं होरहा-हाबुस फूँका जा रहा है। कहीं डंडे से बोझ के पांजे पिटे जा रहे हैं। कोई पिटे हुए पांजे से अनाज को उचिला-ओसाकर अलग कर रहा है। कहीं 'सोरठी-बृजभार' या 'कुँवर-विजयमल' या 'रानी-सारंग' जैसी दर्द भरी कहानियाँ हो रही हैं। कहीं कोई सिर दवा रहा है, तो कहीं कोई पैर। कहीं कोई बालक बाप की पीठ पर चहल-क़दमी कर थकान दूर कर रहा है, कहीं कोई बैठे-बैठे चैता गा रहा है, तो कोई लेटे-लेटे बुझौव्वल बुझा रहा है। चतुर्दिक हावं-हावं, चावं-चावं की किचायन है। किचायन क्यों, मनसायन है। ऐ ऐसा मनसायन जो पुनः अगले चैत में ही देखने को मिल सकेगा।

चंडी, दुर्गा, देवी, भगवती जैसे विभिन्न नामों से संबोधित माँ शक्ति के उपासना-पर्व का सायास संयोजन भी चैत्र माह में ही ज़ोर-शोर के साथ होता है। पूजा-स्थलों, मंदिरों में आराधकों की भारी भीड़। 'नहि तब आदि मध्य अवसाना' जैसी करबद्ध वंदना। पूत मन से 'दुर्गा शप्तसती' का आँख बंद पाठ। 'कुपुत्रों जायते...क्वचिदपि कुमाता न भवति' की हृदय विगलित पुकार है। रह-रहकर 'जै माता की' 'जै शेरावाली' जैसी जय-जयकार। देखिये, नारियल, लाचीदाना, कच्चे सूत की बनी लाल-पीली मालाएँ तथा चुनरी। माँ के यशोगान से संबंधित लाउडस्पीकरों पर दिन-रात बजने वाले गाने, यथा 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है।' स्त्रियों के कोकिल कंठों से निःसृत भाँति-भाँति के करुणाप्लावित भजन, यथा 'माई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुआरे कोढ़िया पुकारे...।' नवरात्र के नव दिनों की एक विचित्र किंतु पवित्र चहल-पहल। गाँव के छोटे चण्डीथान से लेकर कलकत्ता, विंध्याचल तथा मैहर तक महिमा मंडित माँ का एक अनुपमेय वैभव!

यह भी एक सुखद संयोग ही है कि, भारतीय जनमानस में समाए दशरथ नंदन प्रभु श्रीराम का अवतार भी चैत महीने में ही हुआ। चैत उत्तरार्द्ध में शुक्ल पक्ष की नवमी आई नहीं कि राम-जन्मोत्सव की तैयारियाँ शुरू हो गईं। रंग-बिरंगे काग़ज़ मँगाए गए। इन काग़ज़ों से फूल-पत्ती, झण्डी-झालर आदि बनाने के लिए गुनिजन जुट गए। केला, अशोक, आम तथा नीम आदि की ढेर सारी टहनियाँ-पत्तियाँ मँगाई गईं। कोई बड़े एकरंगे कपड़े पर 'श्रीराम जन्मोत्सव' की बड़े-बड़े सुंदर अक्षरों में रचना करने लगा। कुछ लोग नाना रंगी पर्दों, धार्मिक चित्रों, गुब्बारों तथा सजावट के अन्य सामानों को यथा स्थान लगाने-सजाने में जुट गए। बाल प्रभु को झुलाने के लिए एक ख़ूबसूरत पलना भी लटका दिया गया।

कहीं पूरी सजावट संपन्न हो चुकी है, तो कहीं आधी-अधूरी पूरी होने को है। तभी हल्ला उठा, 'अरे भाई, जल्दी करो। यह सब बाद में भी होता रहेगा। अब बारह बजने में कुछ ही पल बाक़ी रह गए हैं।' और आनन-फानन में शंख-ध्वनि के साथ प्रभु श्रीराम के जन्म लेने की घोषणा कर दी गई है। घंटे घड़ियाल बजने लगे हैं। इसके साथ ही सभी छोटे-बड़े हाथ जोड़े समवेत स्वर में शुरू हो गए हैं— 'भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी...।' फिर तो कहीं सोहर गाया जा रहा है—'पहिल सगुन सिया माँगेली बहु विधि पुखहु हो...ललना माँगेली कौशल्या जसन सास-ससुर राजा दशरथ हो।' कहीं बधाई गाई जा रही है—'तेलिन ले आव तेल तमोलिन पानवां...अरे मालिन ले आव हार राम पहिरावहुँ' कहीं श्री रामचरितमानस ही गाया जा रहा है—'मध्य दिवस अति शीत न घामा...।' अथवा 'कौशल्या जब बोलन जाहीं। ठुमकि-ठुमकि प्रभु चलहीं पराहीं॥' इस प्रकार जन्मोत्सवजन्य मंगल गान की पावनता की सुरभि नगर-नगर, गाँव-गाँव चतुर्दिक फैल गई है। कहीं डुग्गी धमक रही है, कहीं ढ़ोलक कुहुक रही है, कहीं हारमोनियम-सारंगी गमक रहे हैं, कहीं घुंघरू छमक रहे हैं, तो कहीं इन सबके साथ-साथ तालियाँ भी चटक रहीं हैं। चारों तरफ़ मस्ती छा गई है। और यह मस्ती कहीं छठ (छै दिन) तक, तो कहीं बरही (बारह दिन) तक बनी रहेगी।

चितचोर चैत की चटक चाँदनी भी कम जानलेवा नहीं है। इस मतवाली को चित्रित करने हेतु मेरा अदना चितेरा चित्त साहस जुटाने लगा है। नवमी के पश्चात अब यह शरद-चाँदनी से होड़ लेने लगी है। ऐसा लग रहा है, जैसे किसी ने ढेर सारी चाँदी को बारीक पीस कर पूरे आसमान में उड़ा-फैला दिया हो। कहीं ऐसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो नहीं कि, शरद चाँदनी के मान-मर्दन हेतु ही प्रकृति ने चैत की चाँदनी को पृथ्वी पर भेजा हो। आइये, दोनों को आमने-सामने करके ही इस तथ्य की तहकीकात की जाए।

शरद चाँदनी—'मुझमें तुझसे धवलता अधिक है।'

चैत चाँदनी—'धवलता ही नहीं, शीतलता भी किंतु जहाँ तक मादकता का प्रश्न है, तुम मुझसे बहुत पीछे हो।'

शरद चाँदनी—'मैं डिर्जेण्ट सुपर पावर 'रिन' हूँ।'

चैत चाँदनी—'तो मैं इन्फेक्शन रहिन 'सन लाइट' हूँ।'

शरद चाँदनी—'मुझमें 'अल्ट्रा सर्फ' की चमकार है।'

चैत चाँदनी—'हुआकरे, मुझमें भी 'लक्स पाउडर' की स्निग्धता है।'

शरद चाँदनी—'तो तुम ऐसे मानने वाली नहीं। अच्छा यह बताओ, तुमने किसी झील तट से धवल पंखी बकुलों को एक साथ 'फुर्र' उड़ते हुए देखा है?'

चैत चाँदनी—'तुमने भी किसी निविड़ निशा में चूड़ियों की एकांत खनकार सुनी है?'

शरद चाँदनी—'तुमने कहीं अनगिन श्वेत सरसिजों को एक साथ खिलते हुए देखा है?'

चैत चाँदनी—'तुमने भी कहीं दाड़िम दशना अनगिन षोडसियों को एक साथ खिलखिलाते हुए देखा है?'

—'शांत-शांत-शांत' मुझे बीच में ही हस्तक्षेप करना पड़ा। दोनों चाँदनियाँ मेरी ओर मुखातिब हुईं। मैंने दोनों से बारी-बारी निवेदन किया—'अपनी जगह आप बड़ी...और अपनी जगह आप भी बड़ी। इस वाद-विवाद में भाग लेने के लिए आप दोनों को बहुत-बहुत धन्यवाद।'

इसके साथ ही शरद चाँदनी अपना गौरव तथा स्वाभिमान संभाले वापस लौट गई। सामने खड़ी चैत चाँदनी प्रसन्न-पुलक मुस्करा रही थी।

चैत की इस बिहँसती चाँदनी में किसी चौपाल के सामने गाती-झूमती चैता-पार्टी का दृश्य भी कम मनोहारी नहीं है। उत्तरी भारत के गाँवों में कहीं-कहीं इन पार्टियों के चैता-गायन का दंगल भी छिड़ जाता है। एक-एक पार्टी में तीस-तीस, चालीस-चालीस गायक! ढोल, झाल, तमूरा, झाझ, तासा, छीटा, हुडुक, डफली, चंग, खंजड़ी, बाँसुरी तथा कहीं-कहीं हारमोनियम भी। जातिगत भेद-भाव से दूर हर उम्र के लोग, नाना प्रकार के उनके वाद्य। आधे लोग हल्के मीठे स्वर में गाते हैं—गाते नहीं, बल्कि रेघाते हैं—'चैत मासे खिलेला गुलववा...' और इस अंतिम अक्षर 'वा' के साथ ही शेष आने लोग फूट पड़ते हैं—'हे रामा-ऽ-ऽ:ऽ चैत मासे।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झूमते-गाते बैठे गायकों के बीच पाँच-पाँच, सात-सात लौंडों (नर्तकों) की दांय बंधी है। सभी रंग-बिरंगी साड़ी पहने, सजे-संवरे। कुछ तो धागों में पिरोए एक-एक, दो-दो तथा पाँच-पाँच रुपए के नोटों की माला पहन रखे हैं। नाचते, थिरकते, कमर लचकाते, आँख मटकाते, ओठ बिदकाते, सिर और हाथों से तरह-तरह की भंगिमाएँ दिखाते सभी मस्त! वाह, क्या दिलफ़रेब समां है!

तभी यह लो, गायन-वादन तेज़ हो उठा है—धमक-धमक-धम...धम-धम-धम-धम...हे रामा-ऽ चैत मासे...दोनों बाँहों को आगे-पीछे विपरीत दिशाओं में फहराए सभी नर्तक घेरे में दौड़ने लगे हैं। पिछली पंक्तियों के सभी गायक घुटने के बल तन गए हैं। उनका संपूर्ण तन-मन एक विशेष गति-लय-ताल में झूम उठा है। दर्शकों की टकटकी लग गई है। बगरो बसंत का जीवंत सत्य पल भर में साकार हो उठा है।

अब चैत की 4 चारुताएँ भोजपुरी में—

1. *घरवा लीपाई चइते में,*
नवरात्रि-ओझाई चइते में,
जेकरा बल बा ओकरा पहिले,
चइती दंवाई चइते में।
2. *चइता गवाई चइते में,*
नउमी पूजाई चईते में,
घर-घर में राम जन्म लीहें तब,
डोल धराई चइते में।
3. *अमवां मउरेला चइते में,*
गुलाबो फूलेला चइते में,
सइयाँ से धनिया कहेलाल,
चुनरी मंगवा द चइते में।
4. *कंगना ले आवऽ चइते में,*
लहंगा ले आवऽ चइते में,
खस्टहिया चोली ना चली,
महँगा ले आवऽ चइते में।

अंत में यह आवाहन—'हे बारह महीनों के चतुर चौधरी चैत! तुम प्रति वर्ष अपनी सभी विशिष्टताओं, संपूर्ण कलाओं के साथ आओ और अपने तृप्तिदायी मधुर रसों से इस प्यारी धरती को आकंठ रसाप्लावित करो। तुम्हारा बार-बार स्वागत है, हार्दिक अभिनंदन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाह रे बिनियाँ!
बनाम उ.प्र. के पूर्वांचलीय गाँवों में ग़ज़ब की ग़रीबी

अविलंब कटने को लालायित सोनपरी चैती चतुर्दिक चमचम चमक रही है। गेहूँ-जौ की सुनहली बालियाँ दिप्-दिप् दमक रही हैं। कहीं-कहीं ताल-खाल में होरहा-हाबुस वाली सुआपंखी नवान्न की नैसर्गिक गंध भी मह-मह महक रही है। ऐसे में रमुआ, रहिमा, रनियाँ, धनियाँ की गमगीन तबियत भी बहक ही गई है। इन मेहनतकश मजूरों की दीन-दुनिया, कटिया-बिनियाँ के पीछे बाढ़ के पानी माफ़िक बेलगाम लहक उठी है। तन में तरंग है। मन में उमंग है। चहुँ दिसि ख़ुशहाली का रंग छाया हुआ है। डट के कमाओ, छक के उड़ाओ, कस के खाओ, जी भर के जमाओ, ठूस-पीस के पचाओ। पेट-पोखर को इस कदर ओवर लोड कर लो, कि अगले ग्यारह महीने तक किसी भी तरह भूख न लगने पाए। सोच लो, यह मौक़ा अब साल भर बाद ही आएगा। फिर तो 'चलऽ लूटे चलीं बिनियाँ-बहार मितवा, अब ए ही में बा तोहरो हमार हितवा।' धत् तेरी की! यह बिनियाँ की बात क्या उठी, कम्बख़्त तबियत ही कवियाने लगी। मुलाहजा फरमाएँ—

सरसों सजनियाँ क नाचेला अंग-अंग
तीसी तेलिनियाँ भी थिरके ले संग-संग
रंग-रंग जनियाँ क कटिया सिवनियाँ बा
रमुआ रहिमवाँ बा, रनियाँ बा धनियाँ बा

लतरी मटर-मसुरी धनियाँ गेहूँ चाना
रहर जौ बर्रे बिटुराई एक-एक दाना
कोर-कसर कटिया पर, बिनियाँ एलनियाँ बा
रमुआ रहिमवाँ बा, रनियाँ बा धनियाँ बा

काटत बान्हत ढोवल, बेरिया संझाइल
काँच-पाकल कसहूँ हथरोटिया सेंकाइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चोटा ले आउ तनी पजरे दोकनियाँ बा
रमुआ रहिमवाँ बा, रनियाँ बा धनियाँ बा
कटनी क थकनी निनरिया न आवे
बाका क देहियाँ नतिनियाँ दबावे
सोरठी बिजैमल नयकवा कहनियाँ बा
रमुआ रहिमवाँ बा, रनियाँ बा धनियाँ बा

यह बासंती मौसम के रोमांस का चरम निखार है। न कहीं झगड़ा है न तकरार है। अपना मुल्क है अपनी सरकार है। कटिया की मजूरी पर बिनियाँ की बादशाही बरकरार है। स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। शायद आपके दिमाग़ में सवाल सनसनाए कि इस बिनियाँ की स्वतंत्रता तो सन् सैंतालिस के पहले भी थी। तो जनाब, यहाँ इस स्वतंत्रता नाम का जंतु किसी विलायती पागलख़ाने में होगा। अपने देश की पचपन प्रतिशत प्रजा, उसे आज भी नहीं जानती। हाँ, साल भर में कम से कम एक बार, बिनियाँ की बादशाहत का एहसास उसे अवश्य हुआ करता है। यह बिनियाँ की बादशाही भी अजीब है—मवेशियों माफ़िक छुट्टा, जंगली जानवरों माफ़िक पूरी तरह आज़ाद, चिरई-चुरुंग की तरह स्वतंत्र, अपने मन का! संसार का शायद एक-अकेला प्रजातंत्र—वाह रे बिनियाँ!

बिनियाँ धर्मी सुराजियों का नया साल जनवरी से नहीं, चैत से शुरू होता है। इसके साथ ही वे बिनियाँ का बारहमासी बिगुल तड़-तड़ाकर फूँकते हैं। फिर तो हर मौसम में इन बिनियाँ बहादुरों को विजय पर्व मनाते हुए देखते जाइए—लतरी मसुरी मटर रहर आदि वासली चैती की बिनियाँ, ज्वार-बाजरे की बिनियाँ, उर्दी-मूंग की बिनियाँ, आम-महुआ की बिनियाँ, गुठली-कोइना की बिनियाँ तथा सावाँ-कोदो की बरसाती बिनियाँ से लेकर गोबर-कंड़री, लौना लकड़ी की बिनियाँ, जामुन बेर निबकौड़ी आदि की बिनियाँ। फिर कहीं-कहीं तो भोज-भात में फिंके अवशिष्ट-उच्छिष्ठ, नाना प्रकारीय, भोज्य पदार्थों की बिनियाँ। माँगलिक अवसरों पर अमीरों द्वारा उड़ाए-लुटाए दस-बीस-पचास-सौ रु. के नोटों की बिनियाँ!

मगर सबसे बढ़कर है चैती की बिनियाँ—जैसे पत्तल पर पूड़ी-पूवा, ऊपर से बुनियाँ! एक अजीब है दुनिया, इस बिनियाँ की भी! अत्यंत सुलगता सवाल है, हमारे बेहया बिलोचन बिनियाँ के इस बेनजीर, दुर्निवार नजारे को, आख़िर कब तक निहारते रहेंगे?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गँवईं साहित्य बनाम भोजपुरी लोक गीत

गँवईं साहित्य लोक मानस से संपृक्त गहरी संवेदना की अनुभूतिजन्य भावात्मक अभिव्यक्ति है। ग्राम्य जीवन की पावनता, कोमलता, आडंबरहीनता और सहृदयता का अनायास सहज प्रकटीकरण हमें गँवईं साहित्य में मिलता है। सामान्य जन जीवन की विविधायामी निश्छल उर्मियों का इस ग्राम्य साहित्य सागर में सहज ही दर्शन किया जा सकता है।

नगरी साहित्य से पृथक, गँवईं साहित्य धरती की असली उपज होता है। यह किसी भी प्रदेश, क्षेत्र, जाति की सभ्यता एवं संस्कृति का प्रतिबिंब होता है। यही वह साहित्य है जो व्यक्ति को व्यक्ति से और उसकी माटी की महक से जोड़ता है। लोक माटी की गंध, वहाँ का परिवेश, वहाँ के निवासियों की संवेदना, उनका हार्दिक स्पंदन, इसके माध्यम से स्वतः स्फूर्त प्रस्फुटित होता है। सीधी-सादी, हृदय से निःसृत अकृतिम भाव धारा क्षेत्रीय बोली-बानी में, ग्राम्य साहित्य के रूप में जन-जन के गले का हार होकर हर एक के अधरों पर खेलती है। इसकी अद्वितीय प्रभावशीलता और उपयोगिता के विषय में कोई दो राय नहीं हो सकती।

यह साहित्य मानव जीवन का अविभाज्य अंग है। मनुष्य ने आनंदातिरेक से विह्वल होकर गीत गाया और दुख के क्षणों में भी अपनी व्यथा को शब्द रूप देकर, उसे सहन करने की क्षमता प्राप्त की। उसने यदि अकेले गाया, तो सबके साथ मिलकर भी गाया। हँसते-खेलते नाचते-झूमते गाया, तो चुपचाप अकेले में बैठकर भी गुनगुनया। अपनी भावना के अतिरेक को उसने कथाकाश में, काव्याकाश में उन्मुक्त छोड़ दिया। अपनी कल्पना को उसने कहानी में बुन दिया। अपनी बुद्धि को उसने पहेली का जामा पहनाकर निखारा और अपने अनुभव के सार को गिने-चुने शब्दों में बांधकर आने वाली पीढ़ी को सचेत किया, समझदार बनाया। जब-जब उसका अंतःकरण उत्साहित या उत्पीड़ित हुआ, वह सहज भाव से फूट पड़ा। वस्तुतः लोक जीवन का यह अनायास प्रस्फुटन ही गँवईं साहित्य है।

इस साहित्य को कब रचा गया, किसने रचा, क्यों और किस लिए रचा?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह प्रश्न प्रायः अनुत्तरित है। उत्तर मात्र इतना है कि संसार के कोने-कोने में, विभिन्न भाषाओं-रूपों में, सीधे-सादे अनपढ़ लोगों से यह आज भी जीवित है, प्रवाह कमोबेश अक्षुण्ण है।

अपनी संप्रेषणीयता और अनुभूति की गहनता में अद्वितीय इस लोक साहित्य ने हिंदी साहित्य को अनेक धरातलों पर प्रभावित किया है। हिंदी साहित्य के लेखकों का दायरा क्षेत्रीय धरातल पर अधिक विस्तृत है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य के माध्यम से संपूर्ण भारतीय संस्कृति प्रतिध्वनित हुई है। लोक साहित्य एक सुदृढ़ परंपरा के परिणाम स्वरूप संस्कारों में रच-बस जाता है। मौखिक अभिव्यक्तियाँ, इनकी संवेदनाएँ, हृदय के मसृण पृष्ठों पर लाखों-लाख शब्द लिख जाती हैं। अस्तु ऐसे मधु पर्क-साहित्य का अवगाहन हिंदी द्वारा होना ही चाहिए। और कम से कम भारत के तो प्रत्येक क्षेत्र के लोक साहित्य का सुंदर संगुम्फन हिंदी साहित्य में सहज-संभावित है। इससे भारत की राष्ट्रीय एकता का भी द्योतन होगा।

भारतीय ग्राम्य साहित्य बहुत समृद्ध है। यदि हिंदी लेखक इसके माध्यम से अपनी समस्याओं-भावनाओं को संप्रेषित करें, तो किंचित उन्हें अधिक सुविधा होगी। जबकि लेखक, गाँव से गहरे नहीं जुड़ेगा, तो वह समस्याओं की जड़ तक नहीं पहुँचेगा। जैसे गाँव से गहरे जुड़कर लिखने वाले हिंदी लेखकों में नागार्जुन, अमरकांत, मारकंडेय, रेणु, शिवप्रसाद सिंह, रामदरश मिश्र, भैरव प्रसाद गुप्त, विवेकी राय तथा मिथिलेश्वर आदि प्रमुख नाम हैं।

लोक साहित्य धरती पर अनायास उग आए उस नैसर्गिक सुमन-सा है, जिसका नाम, पता-ठिकाना कुछ भी नहीं मालूम। बिना खाद-पानी या सुरक्षा के यह विश्वव्यापी बना हुआ है, इसके ठीक उलट परिनिष्ठित साहित्य चारदीवारी से घिरे बाग़ में ख़ूबसूरत क्यारियों के बीच खिलता हुआ वह पुष्प है, जिसकी देखभाल के लिए माली नियुक्त होता है, जिसकी नाम की प्लेट लगी होती है। जबकि लोक साहित्य ऊपरी अलंकरण से आवेष्ठित नहीं होता। इस पर किस वाद-विधा का आरोप नहीं होता। इसके विषय हमारे घरों में समय-समय पर होने वाले मौसमी अनुष्ठान, भजन, कीर्तन, संस्कार आदि होते हैं। दिल-दिमाग़ के भीतर से स्वयमेव निकले हुए होते हैं।

गँवई साहित्य का संवर्धन-संरक्षण पुरुषों की अपेक्षा नारी जाति ने अधिक किया है, जबकि लोकेतर साहित्य का अधिकांश पुरुषों द्वारा रचा गया है। विशिष्ट साहित्य से लोक साहित्य का श्रोता और रचनाकार भी प्रायः अलग होता है। स्वाद और संप्रेषणीयता की दृष्टि से भी दोनों के अभिप्राय भिन्न-भिन्न हैं।

लोक साहित्य अपने अभिप्राय, शिल्प और मूल संवेदना में प्रायः सर्वत्र समान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। इनकी आंचलिक विभिन्नताएँ एक ही वस्त्र खंड द्वारा निर्मित बहुरंगी लहंगे की तरह है। भाषा, परिवेश और आंचलिकता के भेद तो ऊपरी हैं, आत्मा सबकी समान है, एक है। इस साहित्य के पद्य में न केवल क्षेत्र विशेष बल्कि प्रायः समस्त मानव जीवन का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। जन्म से मृत्यु पर्यंत उसके सभी संस्कार, सभी गतिविधियाँ, उसके सुख-दुख, उसकी धार्मिक-सामाजिक गँवईं मान्यताएँ, सभी कुछ लोकगीतों में अभिव्यक्त होता है। इस दृष्टि से यदि देखा जाए तो भारत के सभी प्रांतों-क्षेत्रों के लोकगीतों में बहुत साम्य है। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक वातावरण प्रायः सर्वत्र एक-सा है। हाँ, थोड़ा-बहुत अंतर भौगोलिक कारणों से अवश्य है।

बारात के भोजन करते समय बारातियों तथा लड़के के संबंधियों को दी जाने वाली गेय गालियाँ अवधि, ब्रजी, भोजपुरी, मैथिली, मगही तथा राजस्थानी आदि हर लोकगीतों में मिल जाएँगी। इसी तरह लड़की के पीहर जाते समय विदाई गीतों में एकरूपता है। बारह मासे की संवेदना प्रायः हर जगह समान है। अवध और ब्रज का लोक साहित्य बुंदेली और बघेली में भी अपना प्रभाव छोड़ता है। राम, कृष्ण, आल्हा-ऊदल, संवरु-लोरिक, हीर-रांझा की कथाएँ तथा गांधी, सुभाष आदि की आज़ादी में भूमिका, अपनी उद्भव-स्थली से दूर अन्य अंचलों तक अपना प्रभाव छोड़ती हैं।

आइए इसी क्रम में कुछ भोजपुरी लोकगीतों की चर्चा की जाए। ये गीत अपने नैसर्गिक माधुर्य के लिए बहुत ही कर्ण प्रिय हैं। इन गीतों के अनेक प्रकार हैं, यथा आल्हा, लोरिक, विजयमल, भरथरी, गोपीचंद, सदाबृज तथा इसके साथ ही अनेक तरह के ऋतु गीत, उत्सव एवं संस्कार गीत। इन विविध आयामी गीतों के वर्णन के लिए अलग, अत्यधिक स्थान चाहिए, फिर भी कुछ की झांकी प्रस्तुत की जा सकती है।

सबसे पहले डोमकच गीत। डोम कहे जाने वाले अत्यंजों द्वारा गाए जाने वाले डोमकच गीतों की ओर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है। दरअसल उच्च वर्गीय अधिकांश हिंदू, अछूत समझ कर उनसे दूर रहते हैं। ये डोम ख़ुद भी बस्ती से अलग-थलग दूर रहने के लिए मजबूर हैं। एक्कीसवीं सदी में भी इनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। यही कारण है कि इनका डोमकच गीत प्रायः इन्हीं के इर्द-गिर्द घूमता रह जाता है। बतौर बानगी एक 'डोमकच' का अंश—

तोरे कारन ना रे डोमिनियाँ, तोरे कारन ना
हम त धोती में रोटी चोरवली डोमिनियाँ तोरे कारन ना
हम त खोरी में चिउरा बिटोरलीं डोमिनियाँ तोरे कारन ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बड़ा ही दर्दीला लोक गीत है बिदेसिया। जीविकोपार्जन के सिलसिले में विदेश गया पति-प्रियतम जल्दी लौटकर नहीं आ पाता। पत्नी अपनी विरह-व्यथा को किसी बटोही (यात्री) के द्वारा किस प्रकार भेजती है देखें—

गवना कराइ पिया घर बइठवले कि
अपने गईले परदेस रे बटोहिया
चढ़ली जवानियाँ, बैरिन भइलि हमरि कि
के मोरा हरिहें कलेस रे बिदेसिया
दिनवाँ बितेला सइयाँ, बटिया जोहत तोरि
रतिया बितेले जागि-जागि रे बिदेसिया
घरि राति गइली, पहरि राति गइलि कि
धधके करेजवा में आगि रे बिदेसिया

इसी तरह सावन की रिमझिम फुहार और कोयल की जानलेवा कूक पर नारी कंठ से कजरी फूट पड़ी। भाभी ननद से ठिठोली करती है—

कइसे खेले जइबू सावन में कजरिया,
बदरिया घेरि आइ ननदी।
तू त चलेलू अकेली,
संगे साथी ना सहेली
गुंडा घेरि लीहें हो, गुंडा घेरि लीहे तोहरि डगरिया
बदरिया घेरि आइ ननदी। कइसे...

गाँवों में गाये जाने वाले कहंरवा गीत की भी अपनी अलग समां है। मिसाल के तौर पर—

देखि-देखि मोहलऽ ए रघुबर, जनकऽ नगरिया
राम लक्षुमन संग बहु बालक
फिरत जनकपुर खोरिया ए रघुबर, जनकऽ...
देखत नगर-गलिन की सोभा
निरखत ऊँची अटरिया ए रघुबर, जनक...
देखि-देखि...

आइए देखें खंजड़ी के ताल पर बजा-बजाकर गया जाने वाला यह संतउ निरगुन गीत—

एक ही बुंदवा से साहेब, मंदिर-ऽ उलेहेलन हे राम
कि आही मोरे रामा, बिना नींव मंदिरवा, अजबखन लागेलन है राम
कहंवा से जीव अइलन, कहंवा समाइ गइलन हे राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि आहो मोरे रामा, कहंवा के कइलन पयान,
कहाँ लपिटाइ गइलन हे राम
निरगुन से जीव अइलन, सगुन समाइ गइलन हे राम
कि आहो मोरे रामा, कायागढ़ कइलन पयान,
माया में लपिटाइ गइलन हे राम
गहिरी नदिया भयावन, जहाँ केहु नाहीं आपन हे राम
कि आहो मोरे रामा, दस सरिवर मैदान, अकेले हंसा डोलेलन हे राम
हंस पुछलन सुनु सरिवर, हम उड़ि जाइब हे राम
कि आहो मोरा रामा, मोरा-तोरा एतने दीदार, बहुरि नहिं आइबि हे राम

और यह रहा धोबऊ (धोबी) गीत—

मोटी-मोटि लीटिया लगइहे रे धोबिनियाँ
कि बिहने चले के परि घाट
तीनि चीजु मति भुलिहे धोबिनियाँ,
कि हुक्का चिलम अरु आग
धोबिया त धोवेला उड़ुही से गुड़ही,
कि धोबिनि धोवेलि बिचे धार
आ धोबिनि का टांगी में टेंगरा कटलसि,
धोबिया लवंग ले-ले ठाढ़

और अंत में प्रस्तुत है यह हृदय द्रावक चइता। यह मौसमी गीत चैत के महीने में ही गाया जाता है, ठीक उसी तरह, जिस तरह सावन-भादो के बरसाती महीनों में कजरी या माघ-फागुन में होरी। एक विवाहित बेटी क्यों नहीं ससुराल जाना चाहती है, इसका वर्णन इस चइता में देखें—

हम नाहीं जइबें गवनवां हो रामा, हम नाहीं जइबें

ब्याह बेरि बिकि गइले खेत-खरिहनवां
घर में ना रहि गइले एगो बरतनवां
गवना में बिकिहें भवनवां हो रामा, हम नाहीं जइबें

पिया मोर पराया लागे धन का अभाव में
आगि लागो दुनिया का अइसना सुभाव में
लुगरी में रोवेली मयनवां हो रामा, हम नाहीं जइबें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइया भिखारी होइ घूमेलन बजरिया
फटहा कुरुतवा में झांकेली पंजरिया
कइसे मो तजि दीं परनवां हो रामा, हम नाही जइबें

पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार का अधिकांश, (जहाँ से मैं ज़्यादा संबंधित हूँ) इस प्रकार के सरस लोक गीतों से अँटा पड़ा है। अभी तक इसका प्रभूत साहित्य मौखिक ही रहा है, किंतु अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि अब इसके संकलन और संपादन के प्रयत्न होने लगे हैं। कहना न होगा, इस तरह के लोक गीतों का गँवईं साहित्य में अपना अलग और विशिष्ठ स्थान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यंग्य-विनोद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उफ्, यह बेवफा बाढ़!

अमां बड़ी राढ़ है यह बाढ़ भी! हुंक-बाँ करते छुट्टे साँड़ की मानिंद यह हर वक़्त धमकी ही रहती है। इसके तहत मामूली मुश्किलाहटें भी तनकर ताड़ हो जाती हैं। पेड़, पक्षी, पशु-परानी यानी बाढ़ प्रभावित सारी दुनिया पछाड़ खा जाती है। आज तक एक भी ऐसा चांड़ सोखा पैदा न हुआ, जो इस बेरहम बाढ़ को मुल्क से झाड़ सके, लातों से कांड़ सके या ज़मीन में गाड़ सके। समय-समय पर बने सरकारी आयोगों की रिपोर्ट-रूपी लताड़ से, जगह-दर-जगह बने बांधों के पहाड़ से या बड़े-बड़े वैज्ञानिकों की अनुसंधानिक छेड़छाड़ से ही, आज तक बाढ़ का रोआँ भी टेढ़ा न हो सका। मेरा तो ज़ोरदार चैलेंज है कि है कोई माई का लाल या है कोई देश में दारोगा—एस.पी.-एस.एस.पी., जो इस बेख़ौफ़-बेलगाम बाढ़ को तिहाड़ दिखा सके? इस सरनामी साँड़ की पूंछ उखाड़ सके या इसकी विकराल काया को ही पटक-पछाड़ सके? जानता हूँ, आपके पास कोई जवाब नहीं।

फिर तो ला-जवाब ही क्यों, यह बाढ़ ला-इलाज भी है। इसकी कई क़िस्में, अनेक अदाएँ भी हैं। मसलन सरकारी संस्था परिवार-नियोजन के तहत लाखों रुपए व्यय किए जाने के बावजूद बेतहाशा बढ़ती आबादी की बाढ़, बड़े-बड़े नगरों में बढ़ते प्रदूषण की बाढ़, प्रदूषण और कुपोषण के चलते हस्पतालों में बेतरह बढ़ती बीमारों की बाढ़, सीलन और गंदगी के चलते क्या गाँव, क्या शहर, मच्छरों की बाढ़, चतुर्दिक बढ़ती शिक्षित बेरोज़गारों की बाढ़, पैसे के बल अदालतों में घसीटे जाते बेकसूर-बेसहारों की बाढ़, चारों तरफ़ आफ़िसों में बढ़ती रिश्वतखोर भ्रष्ट ऑफ़िसरों की बाढ़, ट्रेनों, टैक्सियों, बसों या मेट्रो में धक्के खाते मुसाफ़िरों की बाढ़, आये दिन सुरसा समस्याओं को सुलझाते सरकारी आयोगों की बाढ़, समूचे मुल्क में बढ़ते शोषण, उत्पीड़न, व्यभिचार या बलात्कार की बाढ़। और भी बाढ़, जैसे बिना टिकट यात्रा करने वाली, कक्षाओं का बहिष्कार करने वाली, नक़ल के लिए मार करने वाली, छात्राओं से छेड़छाड़ करने वाली या बंद के नाम पर बाज़ार (दुकान) लूटने वाली जोरे जवानी की बाढ़। आए साल हहराती-घहराती, गाँव का गाँव बरबाद कर देने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाली पानी की बाढ़। और समूचे देश को दीमकों-सी चाट-खाकर छलनी कर दने वाली बेइंतहाँ बढ़ती बेईमानी की बाढ़।

वैसे किसी भी मुल्क के लिए सबसे बदख्वाह बाढ़ बेईमानी की ही है। उक्त वर्णित सभी तरह की बाढ़ें, इस एक बाढ़ में ही पुंजीभूत हैं। इस बेहया बाढ़ का बेवफा नारा है, 'बन बेशर्म-बहादुर मुझको फ़िक्र नहीं अपमान की, जय बोलो बेईमान की। आन-मान की, शान की; अभिमान की, शैतान की; जय बोलो बेईमान की॥' फिर तो 'जय बोलो बेईमान की' के इस शंखनाद के साथ ही जहाँ देखिए, वहीं बाढ़। दूध के नाम पर पानी की बाढ़, अरहर की दाल में खुले दिल खेसारी की बाढ़, पिसे मसाले में बुरादे की बाढ़, काली मिर्च में आसानी से छिप जाते पपीते के बीज की बाढ़, तेजपत्ते में छिप जाते युकिलिप्टस के पत्तों की बाढ़, कैपसूलों के भीतर पिसी हल्दी की बाढ़, यूरिया खाद में धकापेल नमक की बाढ़, सरसों के दानों में भगरभाड़ के बीजों की बाढ़। यानी बरसाती पानी वाली बाढ़ से परे सिर्फ़ बेईमानी की बाढ़। और अब तो इस बेवफा बाढ़ ने जनता का जीना दूभर कर दिया है। बाढ़ की आड़ में चानी काटते चुटकी भर चोर-बेइमान इसकी बेगवती धारा में बहते हुए देश को देख-देखकर उन्मुक्त अट्टाहास लगा रहे हैं—'हा-हा-हा-हा!' आख़िर कब तक चलेगा यह तमाशा?

पानी की बाढ़ आती है चली जाती है। अगर बहुत कुछ बरबाद-तबाह करती है, तो जाते-जाते किसानों के खेतों को काफ़ी-कुछ उर्वरता भी दे जाती है। फसल नुकसान करने वाले कीड़े-मकोड़ों को भी कुछ दिनों के लिए नष्ट कर जाती है। कुछ नहीं तो बरसों से जमी, बस्तियों की गंदगियों को ही साफ़ कर जाती है, मगर यह बेईमानी बनाम बेईमानों की बाढ़? जनाब, पूछिए मत! यह तो सिर्फ़ बिगाड़ना जानती है। यह न मरती है न बुरी तरह बुढ़ाती है। दूज के चाँद की नाईं दिन-ब-दिन बढ़ती ही जाती है। क्या इसे रोकने के नाम पर देश के देवी-देवता, मुल्क के पीर-औलिया भी बेदम हो गए हैं। लगता है, भगवान शंकर की अगम-अथाह जटा भी इसके लिए छोटी पड़ गई है। उनकी हाई पावर तीसरी आँख का वोल्टेज भी डाउन पड़ गया है। रामजी का धनुष-बाण, कृष्ण का सुदर्शन चक्र, देवी का खंग तथा हनुमान जी की गदा, सबके सब फेल मार गए हैं। माफ करें, आप की ईश्वरीय आस्था को धक्का देने या ठेस पहुँचाने का दिली इरादा मेरा कत्तई नहीं है। यह बेईमानी की बाढ़ में आकंठ ऊभ-चूभ होते मेरे मायूस मन की बेकसी है, महज जिह्वा की बेकरी है, लाचार लेखनी की लड़खड़ाहट है।

इधर जातिवाद, प्रांतवाद, भाषावाद, सत्तावाद, अवसरवाद, मंदिर-मस्जिदवाद, वोटवाद, नोटवाद वाली बेईमानियाँ हैं, तो देखा-देखी उधर मौसम भी बेईमान हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उठा है। कभी चैत के चमन में भादो की पिकनिक है, तो कभी भादो के साम्राज्य में बैसाख की चहलक़दमी। इस बहुमुखी-बहु आयामी बाढ़ से आम परेशान है, इन्सान परेशान है, किसान परेशान है, मुट्ठी भर धन पशु बेईमानों को छोड़ सारा जहान परेशान है। और जिनके हाथों में अधिकार देकर मुल्क सौंप दिया, वे बाढ़ की बटलोही में स्वजन-सपरिजन, मौज-मस्ती की खीर पका रहे हैं। उन्हें रोका भी कैसे जाए? मछलियाँ नहीं, प्रशासनीय खूंटे के बल भारी-भारी मगरमच्छ इस वीभत्स बाढ़ में पूंछ फटकारते, जबड़ा खोले, छोटे-छोटे कमज़ोर जीवों की, मस्ती में जुगाली कर रहे हैं—यह लो गल्ला, पावरोटी-केक के पैकेट, यह लो मिट्टी का तेल, यह लो नमक, यह लो माचिस, यह लो...बाढ़ बनी रहे, बेईमानी तनी रहे। प्रजा आबाद, तंत्र ज़िंदाबाद। क्या शहर, क्या गाँव, हर चौराहों, तिराहों, रास्तों, गलियों तथा नुकड़ों से एक ही स्वर लहरा रहा है—बड़ा बेईमान है आज मौसम...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दोस्ती की दयनीय दास्तां

उस मरियल कुत्ते की मानिंद यह फटेहाल सड़क भी वर्षों से लावारिस थी, लिहाजा दोनों में अच्छी-ख़ासी दोस्ती हो गई। कुत्ता पहले गाहे-ब-गाहे सड़क से मिलने आया करता, मगर जबसे सड़क पर रिक्शों, स्कूटरों, टैक्सियों या बसों आदि का गुज़रना एकदम ख़त्म हो गया, तबसे वह दिन-रात सड़क को गले लगाए, उसी की छाती पर बेफ़िक्र सोया रहने लगा था। जब तक न थकते, दोनों अपनी-अपनी तकदीर पर जी भरकर आँसू बहाते तथा रोते-सिसकते थककर सो जाते। जब किसी मुसाफिर का संभलता-डगमगाता क़दम या कभी-कभार कोई उछल-कूदकर धाँय-ठाँय का शोर मचाता दु:साहसी ट्रेक्टर आकर सड़क को जगाता, तब वह उनींदी आँखों 'आह-ओह' की कराह के साथ उठकर बैठ जाती। फिर वह किसी बीमार बुढ़िया की तरह हाँफती-खाँसती जैसे-तैसे अपने हमदर्द कुत्ते को झकझोरती, "अरे उठ ना रे अभागे, क्यों जान देने पर तुला है? तुझे मेरी कसम! बस्ती में जाकर कुछ तो खा-पी आ।" कसम के नाम पर न चाहते हुए भी विवश बेचारे कुत्ते को उठ जाना पड़ता और कुछ पेट में डालने की गरज से वह बस्ती की ओर निकल पड़ता। पाँच-दस घरों में वह इधर-उधर मुँह मारता और ताजा-बासी जो भी मिलता, निगल-चाटकर जल्दी-जल्दी उलटे पाँव वापस लौट आता।

बीतते वक़्त के साथ सड़क की देह पर जगह-दर-जगह कूबड़, गड्ढे तथा गीले घाव उग आए थे। कुत्ता भी कम खस्ताहाल नहीं था। बेढंग-बेवक़्त नहाने-खाने तथा मौसमी लुत्तों की बेतरह छेड़खानी से उसे भी खौरा (रोग) लग गया था। पेट, छाती तथा गले के मुलायम हिस्सों में ढेर सारी किलनियाँ चिपक गई थीं। वह रह-रहकर अगले दायें पैर से, पैर के नुकीले नाखूनों से, अपनी गर्दन-छाती को लाख खुजलाता, हज़ारों चिपकी किलनियाँ उसका ख़ून चूसने से बाज न आतीं। कहना न होगा, दोनों एक-दूसरे की दिन-ब-दिन दयनीय होती स्थिति से बेहद दुखी थे, परेशान थे। ज़िंदगी की न ख़त्म होने वाली बेइंतहाँ लंबी उम्र को कोसते हुए, दोनों आए दिन गालियाँ बकते रहते, "यह मुवा मौत भी हम लावारिसों को नहीं आती!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और एक दिन।

उस दिन कुत्ते को बस्ती से लौटने में देर हो गई। इत्तफाक से कुछ खाने-पीने को भी न मिला। जिस घर में घुसा, पकड़ा गया और मारपीटकर भगा दिया गया। बूढ़ी उम्र की कमज़ोर आँखें और ऊपर से अंधेरी रात की घनघेर कालिमा। कुत्ते को कुछ भी सूझ नहीं रहा था। जैसे-तैसे वह भूखे पेट बस्ती से बाहर निकला। देखा, सड़क अपनी जगह से नदारद थी। उसने बहुत दौड़-धूप की, किंतु उसकी महबूबा सड़क का कहीं पता नहीं चल सका। उसके जी में आया, फूट-फूट कर ख़ूब रोए तभी एक गठीला जवान ट्रैक्टर, अपनी आँखों की तेज़ रोशनी के साथ हड़हड़ाया। घड़घड़ाते हुए चीख़ा, "अरे ओ कलमुँहें कुत्ते! कहाँ मारा-मारा फिर रहा है? तुम्हारी हमदम दुलारी सड़क यहाँ है। आओ देखो, मैं उसी की छाती पर क़दम-ब-क़दम घिसट रहा हूँ।"

कुत्ता दौड़ते हुए रोशनी के क़रीब पहुँचा। उसकी आँखें आश्चर्य से फैल गईं। आँखों में आँसुओं का सैलाब उमड़ आया। मारे तकलीफ़ के गला भर आया। किसी तरह धुंधली आँखों से देखा, लहूलुहान सुर्ख सड़क का जिस्म, दो हिस्सों में बेमरौव्वत विदीर्ण बँट चुका था। उसकी स्पंदनहीन संज्ञा शून्य काया पर लाचार कुत्ता सिर पटक-पटककर कें-कें करने लगा, "ओ मेरी मासूम महबूबा! ओ मेरी जाने-जिगर!! मेरी प्यारी हमदम-हमसफ़र!!! तुम इस कदर बेरहमी के साथ चुप क्यों हो? तुम पहले की तरह भला बोलती क्यों नहीं?" कुत्ता लाख रोया, लाख गिड़गिड़ाया, पर सड़क की ओर से कोई जवाब नहीं आया। वह मुर्दा जिस्म की मानिंद पूरी तरह खामोश थी।

अपने आख़िरी दिनों में महाकवि निराला की तरह कुत्ता एकाएक पागल हो उठा। वह बदहवास, बेजान सड़क की सीध में बेतहासा दौड़ पड़ा। देखा, हर दस-बीस क़दम पर सड़क कटी हुई है। उसका जर्जर जिस्म टुकड़े-टुकड़े हो चुका है। जगह-दर-जगह बिखरे छितरे ख़ून के छींटे तथा मांस के चकत्ते जम-सूख गए हैं। मक्खियाँ भिन-भिना रही हैं। मृत्यु महोत्सव की ख़ुशी में चील, कौए मंडरा रहे हैं। असंख्य गीदड़ धमा-चौकड़ी मचाए हुए हैं। उधर पास खड़े बस्ती के लोग, बेख़बर, नींद में सुबह के सपने बुन रहे हैं। और ससुरी सुबह है कि ख़ुद के होने का नाम ही नहीं ले रही है।

बेचारे कुत्ते से यह दुखद दृश्य और देर तक नहीं देखा जा सका। वह दौड़ता-हाँफता अचानक बेहोश हो गिर पड़ा। आसमान में बेतरह मंडरा रहे चील-कौए, सड़क के साथ-साथ कुत्ते के बेजान जिस्म पर भी टूट पड़े। दम निकलते-निकलते पीड़ाक्रांत कुत्ते ने नजदीक से देखा, "अरे यह क्या! ये सारी शक्लें तो जानी-पहचानी लग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रही हैं। इन्हें ज़रूर कभी मैंने यहीं-कहीं देखा है। 'ये रंग-बिरंगी पोशाकों में ठेकेदार नुमा चीलें, ये सूट-टाई डटाये अभियंतानुमा कौए!!'...अभी कुत्ता सोच ही रहा था कि एक नेतानुमा खद्दरधारी गीदड़ झपट्टा मारा और उसकी मरियल गर्दन को अपने ज़बरदस्त जबड़े में दबोच लिया। बेसहारा कुत्ता आह भी न कर पाया, उसकी आँख के कोए बाहर निकल आए और रही-सही मामूली साँसें भी थम गईं।

कुत्ता मर गया। सड़क भी नहीं रही। किंतु दास्तान! जी हाँ, दास्तान अभी भी बदस्तूर ज़िंदा है। औरों के बारे में तो मैं ठीक से कुछ नहीं कह सकता, मगर मेरे गाँव जोगा मुसाहिब (ग़ाज़ीपुर) से गुज़रने वाली इस सड़क के समीपवर्ती लोग, कम से कम यहाँ के बुद्धिजीवी, इस दास्तान से पूरी तरह बावस्ता हैं। वे सड़क की आइंदा पैदाइश तक, इस दास्तान को किसी भी क़ीमत पर दफन नहीं होने देंगे, मुझे यक़ीन है।

(माफी चाहूँगा, यह दयनीय दास्तान आज एक जनवरी 2010 से कई साल पहले की है।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाले होली, कमाले के.पी.

बतर्ज 'झूठ बोले कौआ काटे...'—तू मैके चली जाएगी, मैं अण्डा लेकर खाऊँगा। मैं लाइन (रेलवे) पर सो जाऊँगा। मैं सिग्नल नहीं गिराऊँगा। मैं...

माफ कीजिए जनाब, यह और कोई नहीं, बाकलम ख़ुद राम बदन, बतौर के.पी. गा रहा है। गोया गीत के.पी. (सक्सेना) का है और गाने की गुस्ताखी यह नाचीज़...

नफासत से लबरेज शहरे नफलऊ, एक दफा माफी चाहूँगा नफलऊ नहीं नखलऊ, नखलऊ भी नहीं लखनऊ। मगर हजरतगंज या अमीनाबाद नहीं, चार बाग से चार फाल आगे। बड़ी लाइन की पतली पटरी। रेलवई बाने में डबल तलवार मूँछ ताने यह मनहूस मनई मरने की मुद्रा में मन मारे मिमिया रहा है। चेहरा चारों खाने चित्त है। आँखें आसमान छेद रही हैं। बाँह पकड़कर झकझोरता हूँ—"ए गुरु, इहाँ का झख मार रहे हो? कहीं कट-मरने का इरादा तो नहीं है न?"

मूँछों में मायूस मोशन। आँखों में सिग्नल वाली ठंडी हरी बत्ती। आवाज़ मोम-सी चिपचिपायी है—"ऐसा मुकद्दर कहाँ रे! कब से तो लेटा हूँ, ठेला तक नहीं गुज़रा। और मान लो, जैसे-तैसे कट भी गया..."

"तौबा-तौबा-तौबा! ख़ुदा के लिए ऐसी बद जुबान मुँह से न निकालो उस्ताद्! अगर कुछ इस तरह का (खुदा न करे) हो ही गया, तो सोचो, तुम्हारे हज़ारों-लाखों पाठकों का क्या होगा? मरहूम परसाई और जोक धन्य जोशी की विरासत का क्या होगा? बेचारे सैकड़ों संपादकों का क्या होगा? और मार्च महीने के साथ ही, होली की तो हुलिया ही बिगड़ जाएगी!"

"मगर मुझे सिर्फ़ मिसेज सक्सेना की बधिया बैठानी है। उनकी अच्छी-खासी खटिया खड़ी कर देनी है। जाएँ मायके कौन रोकता है उन्हें?"

"समझने की कोशिश करो मेरे अग्रज उस्ताद! ये बुजुर्गानी मूँछें, यह गंजी होने को लालायित खब्त खोपड़ी! मिसेज सक्सेना का क्या बिगाड़ लोगे! हाँ, तुम्हारे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेगुनाह भक्त पाठक ख़ुदकशी ज़रूर कर लेंगे। और उनमें से एक यह नाचीज़ राम बदन भी होगा।''

''अरे गधे की दुम, पहले बात तो सुन!'' कोयले की आग माफ़िक आवाज़ धधकी है, ''के. पी. का कहना भले मुमकिन हो मगर मरना, यानी मरकर दुनिया से रुख्सत होना! हुंह!! तुम्हारे नितंब से निकली पूंछ की मानिंद एकदम मुश्किल है। ये मुवा संपादक किसी भी क़ीमत पर इसे मरने नहीं देंगे। पूरे जिस्म की बोटी-बोटी जोड़, फेफड़े में फूँक मार 'जहं चितवहिं के.पी. आसीना' की हालत में अपनी-अपनी मैग्जीनों में ज़िंदा कर देंगे।'' कहता हुआ कौतुकी के.पी., रेल की पटरी से उतर कर सिग्नल वाले खंभे सरीखा तन गया है। मैं हैरत से देखता हूँ, उसके पटरी से हटते ही सहमी-थथमी सभी रेल गाड़ियाँ आगे-पीछे गुज़रने लगी हैं।

''मान गया मेरे आका उस्ताद!'' उसकी दिल फ़रेब दमदारी की दाद देता हूँ। पूछता हूँ—''मगर यहाँ इत्ती दूर आकर अकेले और इस हालात में''

वह फिलास्फराना अंदाज़ में अंगिराया है, ''अंऽऽ ऐसा है कि बस, बीबी का मारा, मैं बेचारा, यहाँ आ, यूँ ही बैठे-बैठे हिला रहा हूँ।''

''वह क्या?''

''मार्च में होने वाली होली, और क्या? हालाँकि भेजा ख़ाली है, किंतु होली की हाली (जल्दी) है, इसलिए कुछ न कुछ तो हिलाना ही है।''

''कुछ समझा नहीं उस्ताद?''

''सब समझ जाओगे।''

''मगर कैसे?''

''अरे बर्खुरदार! समुद्र मंथन की कर्णप्रिय कथा तूने ज़रूर सुनी होगी। उसमें से इकट्ठे चौदह रतन निकले रहे। मैं होली को मथ रहा हूँ। कूड़ा-कचरा कुछ न कुछ तो निकलेगा ही। क्या समझे?''

''खाक!'' मैं बकर-बकर मुँह ताकता रह गया हूँ। इसके साथ ही वह यथास्थान जम गया है और बतर्ज बाल्मीकि मरा-मरा, आँख मूँद रटने लगा है, ''होली, हो, ली, लनी हो, लीहो, लिहो-लिहो, लिहो-लिहो...'' वह खड़ा हो, दोनों बाँह फैलाए होलियाने अंदाज़ में आगे बढ़ा है।

माथा चक्करघिन्नी! हिले होली बहाने मौत!! लिहो-लिहो, होली-होली के साथ उसका आगे बढ़ना देख भयाक्रांत भाग चला हूँ। देर बाद पीछे मुड़कर देखता हूँ, वह हाथों में मालगाड़ी के इंजन वाले कोयले का क्विंटल भर घोल लिए अभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी पों किया रहा है। मन में त्रिविधा उठ गई है—'यह मिस्टर के.पी. है या सक्सेना, या फिर दोनों का भूत?'

(अपने वक़्त के मशहूर मज़ाक़बाज, रेल मुहकमे में मुलाजिम, के.पी. सक्सेना की यादगार को सादर समर्पित यह व्यंग्य-बकवास। उनकी पाक रूह को बाअदब, तहे दिल बेहिसाब, बेलगाम सलाम!)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहिमन सड़क बनाइए

कहते हैं 'गलत रास्ते पर मत चलो'! मगर जनाब, जहाँ कोई सही रास्ता ही न हो, जहाँ सारे के सारे रास्ते गलत हों, वहाँ की बेचारी जनता भला क्या करे? अगर ख़ुदा झूठ न बोलवाये तो अपने आवासीय क्षेत्र में, एक ज़िले से दूसरे ज़िले में जाने वाले मुख्य मार्गों को छोड़कर, ग़ाज़ीपुर (उ.प्र.) के प्रायः सभी संपर्क मार्ग गड़बड़ हैं। यहाँ की जनता चल नहीं, क़दम-ब-क़दम घिसट रही है या कहें, दुनिया गोल है को चरितार्थ करती, घूम-फिरकर जहाँ की तहाँ खड़ी है। पिछले कुछ दशकों में हर जगह की तरह यहाँ भी रास्तों में इज़ाफ़ा हुआ है, किंतु जनता को चलने के लिए नहीं, सिर्फ़ दुनिया को दिखाने के लिए। आप भी सिर्फ़ देखिए, चलने की तकलीफ़ न उठाइये।

'अरे-रे-रे...यह क्या! रपट गए नऽ। अमा यार, आपको चलने के लिए किसने कह दिया? मैंने तो सिर्फ़ देखने के लिए कहा, वह भी दूर से। शुक्र है, छोटा गड्ढा था, ज़्यादा चोट नहीं आई। बस, अब और आगे बढ़ने की हिमाकत कत्तई मत कीजिए। प्लीज़, अब लौट ही जाइए। बरसात बीत जाने के बाद इधर कहीं, किसी तरह जाने की सोचिएगा।' यह एक दुखद दृश्य है, कड़वा यथार्थ है, यहाँ की सड़कों से संदर्भित, जिससे लेखक बुरी तरह रू-ब-रू हो चुका है।

धौंस, सड़क पर उतर आने की—अभी कुछ साल पहले, ग़ाज़ीपुर से प्रकाशित 'पूर्वांचल टाइम्स' में एक ख़बर पढ़ी—'मुलायम' कुशासन के ख़िलाफ़ भा.ज.पा. सड़क पर उतरेगी।' पढ़कर पहले तो हँसी आई, फिर यकायक फूट-फूटकर रोने लगा। किसी ने पूछा, 'अमा यार, इस कदर रो-रोकर, क्यों आसमान सिर पर उठाए जा रहे हो?' हिचकते हुए बोला, 'रो रहा हूँ अपनी ग़रीब ग़ाज़ीपुर की अजीब तकदीर पर, कि अपने यहाँ तो सड़कें ही नहीं, भला भा.ज.पा. के पवित्र पाँव उतरेंगे कहाँ?' वह धड़ले से जवाब दिया, 'अजी किसी ऊँची-नीची पगडंडी पर उतर जाएँगे, किसी खेत-खलिहान में उतर जाएँगे। इसमें इस तरह अफ़सोस जाहिर करने की क्या बात है?...अजीब घोंचू हो, किसने तुझे लेखक बना दिया?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अजब जहमत! उस नासमझ को मैं कैसे समझाता कि समस्या सड़क पर उतरने की है, खेत-खलिहान या पगडण्डी पर नहीं। अब आप ही बताएँ, कि अगर कोई सड़क पर ही उतरने को आमादा हो, तो भला उसे और कहीं कैसे उतारा जा सका है।

सड़क नहीं तो वोट नहीं—अभी पिछले एक चुनाव में खरडीहा गाँव, ग़ाज़ीपुर के बवंडर (उपनाम) महाराज ने एक अभियान चलाया था कि 'सड़क नहीं तो वोट नहीं'। यह नारा लिखे सैकड़ों पाम्फलेट पेड़ों, मकानों तथा दुकानों आदि पर लगा दिए गए। लोगों को समझाया गया कि वे वोट का बहिष्कार करें, किसी क़ीमत पर मतदान करने न जाएँ। मुझे ख़ुशी हुई, शायद इसी बहाने सड़क-उद्धार हो जाए। किंतु ये पाम्फलेट सटे नहीं, कि अगले दिन विभिन्न दलों के बड़े-बड़े रंगीन इश्तहार उक्त पाम्फलेटों पर या उनके इर्द-गिर्द इस कदर चस्पा कर दिए गए, कि पूरा का पूरा अभियान ही उलट गया। पाम्फलेट की सारी इबारत ही उलट गई। अजीब चुनावी करिश्मा! मूर्ख मतदाताओं का भेजा एकदम फिर गया। वे पढ़ने लगे, 'वोट नहीं, तो सड़क नहीं' सुरेंद्र तिवारी उर्फ़ बवंडर महाराज ने लाख समझाया और बाबा ठीक से पढ़ो, साफ़ लिखा है 'सड़क नहीं तो वोट नहीं।' किंतु अधिकांश की आँखें उलट गईं। समवेत स्वर में आवाज़ें उठने लगीं, 'वोट नहीं तो सड़क नहीं।' गोया पहले वोट, बाद में सड़क। बेचारा अकेला बवंडर इस अंधी आंधी के सामने क्या कर पाता! उसके साथ मैं भी सिर थाम कर बैठ गया।

भूतल-परिवहन मंत्री पायलट की पहलक़दमी—महा विद्यालय खरडीहा, ग़ाज़ीपुर का दीक्षांत समारोह। कालेज संस्थापक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कांग्रेसी नेता बृज मंगल राय (संप्रति स्वर्गीय) के विशेष प्रयास एवं आग्रह पर तत्कालीन कांग्रेसी सांसद जनाब जैनूल बशर, श्री राजेश पायलट को खरडीहा ले आए। पायलट ने अपने दीक्षांत उद्‌बोधन के दौरान बड़े ज़ोरदार शब्दों में बताया कि किस तरह वे एक मामूली किसान परिवार में पैदा होकर अपने श्रम के बल पर पहले पायलट, फिर सांसद व मंत्री बने। पूर्व योजना के अनुसार उनके हाथों कबीरपुर-लट्‌टूडीह मार्ग का उद्घाटन कराया गया। कालेज से सटे मार्ग के समीप लगी शिला-पट्टिका पर पायलट साहब का नाम आज भी उक्त उद्घाटन की गवाही दे रहा है। 'अब सड़क अवश्य बन जाएगी' की आशा लिए हज़ारों की तादाद में लोग अपने-अपने घरों को लौटे थे। किंतु उल्लेखनीय है कि उक्त उद्घाटन के बरसों बाद तक सड़क ज्यों की त्यों बनी रही, पीच न हो सकी।

अपनी बेलगाम जबान के शाहंशाह केंद्रीय मंत्री कल्पनाथ राय ने भी ग़ाज़ीपुर की सड़कों को ठीक कराने की कई बार घोषणा की। इस ज़िले में उनकी (ससुराल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और बहिनौरा) दो-दो रिश्तेदारियाँ होने के नाते लोग, इस बनिस्पत उनसे आशान्वित भी रहे, किंतु बरसों तक कहीं कुछ न हो सका।

सोते सांसद ऊँघते विधायक—चलते-चलाते यहाँ के कुछ जन प्रतिनिधियों की, उनकी क्षेत्रीय विकास के प्रति वफादारी की पड़ताल कर ली जाए। स्व. विजय शंकर बाबू ईमानदारी का टोकरा सिर पर उठाए, एक हाथ में छड़ी तथा दूसरे में पनडब्बा लिए दुनिया से रुखसत कर गए, सो अब उनके अकर्मण्यता की बात ही क्या करनी है। चूँकि वे एकदम पुराने विचार के थे, इसलिए क्षेत्र के नए विकास या सड़क निर्माण के बारे में उनके लिए सोचना भी पाप था।

विजयशंकर बाबू के उत्तराधिकारी विधायक स्व. राम जनम राय ने, हर गाँव को सड़क से जोड़ने की सरकारी स्कीम के तहत कुछ दौड़ धूप ज़रूर की। लगा, शीघ्र ही चारों तरफ़ सड़कों का जाल बिछ जाएगा। कुछ काम हुए भी। किंतु उनके विधायकी से हटते ही लोगों की आशाओं पर पानी फिरना शुरू हो गया।

और आख़िर में—खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि जहाँ आज की नई दुनिया चाँद और मंगल ग्रहों तक पहुँच रही है, वहाँ ग़ाज़ीपुर की गुमराह जनता सही-सलामत, चुस्त-दुरुस्त, कायदे की सड़कों के लिए तंगहाल है। कोई छुट्टी बिताकर समय से नौकरी पर न पहुँच पाने के लिए सज़ा काट रहा है, किसी का बीमार बच्चा वक़्त पर अस्पताल न पहुँच पाने के कारण बीच रास्ते ही दम तोड़ दे रहा है, तो कोई वक़्त पर कचहरी न पहुँच पाने की वजह से, उचित न्याय पाने से वंचित रह जाता है। ऐसे हालात में आज अगर रहीम कवि ज़िंदा होते, तो सड़क की अहमियत के तहत ज़रूर लिख मारते—

रहिमन सड़क बनाइए,
बिना सड़क सब जाए।
सड़क रहे ना ऊ बरे,
रोजी, रोगी न्याय॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहम का वहम बनाम बाबूजी की फहम

(कांग्रेस फार डेमक्रेसी के जमाने का राजनीतिक व्यंग्य)

आपने सुना, अर्स जी हर्ष में गा रहे हैं—'मन मंदिर के द्वार खुले हैं, आओ अतिथि चले आओ।' इस गर्दभ स्वर, फटे बाँस जैसी आवाज़ से मुझे कोफ्त हो रही है। हाँ, अगर कोई कमनीया मेरा मेजवान बने तो मज़ा आए, जब वह कोकिल कंठ से मनुहारे, 'तड़पता हुआ जब कोई छोड़ दे, तब तू मेरे पास आओ अजी, मेरा दर खुला है, खुला ही रहेगा तुम्हारे लिए।' मगर मेरे लिए तो यह दिवा स्वप्न है। ऐसी स्थिति में मेरे अमीर-ग़रीब, हिंदू-मुसलमान, बौधी-जैनी, सिक्ख-इसाई, स्त्री-पुरुष और बूढ़े-युवा साथियों! तुम सभी मिलकर मेरे नए दल में आओ और मुझ मायूस को प्रधानमंत्री बनाने की इनायत करो, मेरे बरसों पुराने सपने को साकार करो। देखो, इस प्रतिष्ठित पद की बाबत मैंने कितना त्याग किया है। मगर इसके पहले कि मैं कांग्रेस से त्याग या आवाम के प्रति अपने त्याग की गाथा सुनाऊँ, तुम लोग पहले प्रधानमंत्री पद की महत्ता सुनो।

सारे हिंदुस्तान—महाराष्ट्र, राजस्थान, असम, अंडमान, सबका महान! मुल्क का प्रधान!! अनोखी आन, शोहरत व शान! हार्दिक बधाइयाँ, आनरेरी उपाधियाँ, शुभ कामनाएँ, अनगिन व्यर्थीय विशेषताएँ...कितना सुख, कितना आराम, छप्पनों खान-पान, एयरकंडीशंस मकान, विशेष वायुयान, चमचे गुलाम, सुबहो शाम सलाम, तमाऽम तामझाम, जीते जी सम्मान, मरने पर भी नाम!

छींक आए, समाचार बन जाए। हँसी आए, दूरदर्शन झूम जाए। नाक खुजलाए, पूरी पार्टी (दल) को जुकाम हो जाए। एक स्वर्गिक आनंद! एक अद्‌भुत रस जिसकी अनुभूति मात्र से मेरी रसना रसाप्लावित हो उठी है। और अब तो भई मैं किसी भी तरह देश का प्रधान बनना चाहता हूँ। इस साठोत्तरी जइफी में ऐसा कहते-कहते मैं पूरी तरह शरमा गया हूँ। पेशे खिदमत मेरा लाज से लटकता थोबड़ा, इस शर्मिंदगी का बेबाक सबूत है। हालाँकि इस शर्मिंदगी से बचने के लिए, मैं आसानी से कह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकता हूँ, कि मंत्री सुखाभिलाषी मेरे तमाम दोस्तों ने, विभिन्न सरकारी पदों के सेवाकांक्षी रिश्तेदारों ने, मुझे ऐसा कहने के लिए मजबूर कर दिया है।

बात छुटपन की। प्रधानमंत्री पद तथा इसके सुख से पूरी तरह नावाक़िफ़। मेरे वालिद अपने आका का हुक्म बजाकर शाम को घर लौटे। मैं कोदो के पुवाल पर लेटा ककहरा रट रहा था। मुझे देखते ही उनका पारा सौ से ऊपर चढ़ दौड़ा। बोले, "यह क्या र रा रि री रु रू रटे जा रहा है। जाकर मालिक के घर कुछ टहल-मजूरी करता, तो कम से कम कुछ खाने-खर्ची का सामान जुट जाता। इस तेरी रिरियाहट से तो मेरा नाको दम हो गया है।"

इस बिन बादल बरसात से बचने की मैं कोशिश ही कर रहा था, कि पता नहीं किधर से सोटा टेकती मेरी बानबे वर्षीया दादी आ पहुँचीं। उन्होंने पंचम स्वर में इस पानी पर आग उगलना शुरू किया, "ख़बरदार, जो कभी इसे कुछ कहा! क्या चाहते हो, यह भी तुम्हारी तरह किसी का हल जोते, बेगारी-चरवाही करे।...मेरा लाल पढ़-लिखकर बाबू बनेगा, राजा बनेगा।"

फिर तो मेरी बत्तीसी ऐसे झलकी, जैसे अमावस की घटाटोप अंधेरी रात पर शरद पूनम की चमकार ज्योत्स्ना का सोमनाथी हमला। पलोपरांत संपूर्ण शरीर गदगदायमान हो उठा। रग-रग में बबुआनी संचरित हो उठी। राजा बनूँ न बनूँ, बाबू तो मैं बन ही गया। आज सारा मुल्क मुझे बाबूजी कहता है। ऐसा क्यों कहता है, कब से कहता है, इस बाबत शोध वाले सोचें, तथाकथित बड़े-बड़े दलित साहित्यकार पता लगाएँ। मेरी जानिब तो यह ख़ुदा रूपी दादी की इनायत का नतीजा लगता है

सन '47 के बाद की बात। मुल्क को आज़ाद कराने का सेहरा कांग्रेस के माथे या तो बंध चुका था या उसके अनुयायियों द्वारा बिना किसी की सहमति या इज़ाजत के, ज़बरदस्ती बांध लिया गया था। बापू की इस ख्वाहिश की कि कांग्रेस अब तोड़ (समाप्त) दी जानी चाहिए, क्योंकि इसका अंतिम उद्देश्य पूरा हो चुका है, कांग्रेसियों ने फूँक मारकर उड़ा दिया था। बदले में उनके बुढ़ौती की तस्वीर को छाती से चिपकाए, होने वाले चुनाव हेतु वे गली-गली घूमने लगे। औचक उनकी गिद्ध दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी। मैं एक खेत की मेड़ पर बैठा दूब की घास झील रहा था। गिरोह का एक युवक अपने साथियों के कान में फुसफुसाया, "देखते क्या हो, लपक कर इस कलूटे को पकड़ लो। कहीं बचकर भागने न पाए। इसे हम दिल्ली ले चलेंगे। अगर यह अपने शिकंजे में आ गया तो मुल्क की सारी सांवली चमड़ी वालों का वोट भी कांग्रेस का ही समझो।"

"हाँ, इसकी जेब में अंटकी कलम बता रही है, कि वह पढ़ा-लिखा भी है, हमारे काम के लायक़ है।" यह गिरोह का दूसरा व्यक्ति था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं चौतरफ़ा घेर लिया गया। बच निकलने की गुंजाइश तनिक न थी। फिर क्या था, दिन-रात की पारिवारिक चख-चख पल भर में ख़त्म! ख़ुदा देता है तो छप्पड़ फाड़ के देता है, इसी को कहते हैं। मेरी बदक़िस्मती का ताला वैसे ही अनायास खुलकर गिरा, जैसे कभी कंस के कारागार का। अपने दोनों हाथों से गांधी जी के कंधे के सहारे कांग्रेस की पीठ को मैं अकड़कर जकड़ लिया और पलक झपकते लेफ्ट-राइट दिल्ली...। बेचारे दूसरी पार्टी वाले हाथ मलते रह गए।

कांग्रेस की हर विजय में मेरा पूरा-पूरा हाथ रहा। छाती-पेट पर बापू, पीठ पर बाबू, ऐसे में अगर कांग्रेस को बहुमत न मिलता, तो लोगों का भगवान पर से विश्वास न उठ जाता!

दुनिया बदली, जमाना बदला, सो झख मार कर मुझे भी बदल जाना पड़ा। वक़्त के तकाजे को नकारा भी कैसे जाए! हालाँकि इसके लिए मुझे काफ़ी नाज-नखरे करने पड़े। सबसे पहले मैंने अपने एवं लोकतंत्र की जीवात्मा के रक्षार्थ एक अलग जमात तैयार की। फिर आगे-पीछे, पीछे-आगे करते-करते कांग्रेस की पीठ से उचककर जनता के कंधे पर सवार हो गया। देखने वाले तमाशा देखते रह गए।

अब लोगों ने मुझे कुशल कूटनीतिज्ञ एवं समय का पारखी कहना शुरू किया। प्रधानमंत्री बनने वाले अन्य अभ्यर्थियों की सूची में एक-आध सीढ़ी नीचे मेरा नाम भी चढ़ गया। गोकि मैंने खुलेआम एलान कर दिया कि इस उत्तरदायित्व पूर्ण पद को संभालने से मैं कतराऊँगा नहीं, फिर भी मेरी अक्लमंदी को, विभिन्न मंत्रालयों में काम करने की काबिलियत को, चुनौती दी गई। मेरी नारदमोही चतुर चाहत पर यह दिन-दहाड़े डकैती, ऊपर नीली छतरी वाले को रास न आई। वह आग-बबूला हो उठा। फिर तो ऐसा भूचाल आया कि मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे साथ-साथ हिल उठे और जनता दो टुकड़े हो गई।

मैं क्षत-विक्षत जनता दल का स्वच्छ नेता बना। अंग-भंग साम्राज्य का दबंग संप्रभु। ऐसा क्यों बना, किसलिए बना इसमें मेरी मजबूरी थी या दल वालों की मेरे प्रति दिलेरी, इसका विश्लेषण आप करें। हाँ, प्रधानमंत्री बनने की तमन्ना की बाबत अपनी मजबूरी की सफ़ाई मैं ज़रूर देना चाहूँगा।

आप जानते हैं, बाबू तो मैं बहुत पहले ही बन गया। अब अगर राजा (भारतीय सरकार में प्रधानमंत्री) न बनूँ, तो मेरी दादी की आत्मा अशांत रह जाए। मैं रौरव नर्क का भागी बनूँ।

आन पेपर मैं सबसे अधिक क्वालिफाइड भी था। कई बार सांसद तथा अनेक प्रकार के सफल मंत्री बने रहने का लंबा अनुभव। लोकतंत्र तथा तानाशाही का एक समान ज्ञान। ग़रीबी में पैदा हुआ, अतः ग़रीबों का भाई। लाखों का बैंकबैलेंस, इसलिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमीरों का दोस्त भी। कुछ अनुयायियों के अनुसार अंबेडकर का मिनी संस्करण, दलितों का लघु मसीहा।

प्रधानमंत्री बनने के लिए इससे अधिक चाहिए ही क्या! मगर धत् तेरी की! इतना सब होने के बावजूद जनसंघ (संप्रति भा.ज.पा.) वालों की वजह से मेरा बेड़ा किनारे पहुँचते-पहुँचते गर्क हो गया।

लोगों का वहम है कि मैं 'स्व' का शिकार हो चुका हूँ। मगर सच्चाई यह है कि अब भी मैं तख्त-ए-प्रधान मंत्री का एक काबिल उम्मीदवार हूँ और निहायत अदब से आवाम से गुजारिश करता हूँ कि वह मेरी सदीच्छा को मूर्त रूप प्रदान करे। इसके लिए ज़रूरी है कि जितनी जल्दी हो सके, आप सभी मेरे नायाब झंडे के नीचे आ जाएँ, क्योंकि मुकद्दर का मारा मेरा जिस्म इस कदर बढ़ रहा है, जैसे राजनीतिक भ्रष्टाचार। डर है, कहीं कुर्सी छोटी न पड़ जाए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिंदी भाषायाम पी-एच.डी. प्रपंच

यूँ तो यह संसार ही एक प्रपंच है। किंतु संसार में रहकर पी-एच.डी. प्राप्त करना तो प्रबल प्रपंच है। अगर कोई सवाल उठाए कि संसार में सबसे कठिन काम क्या है, तो मेरा दो टुक जवाब होगा, पी-एच.डी. प्राप्त करना। माफ कीजिएगा, मेरा यह जवाब उन भाग्यवानों के लिए लागू नहीं होता, जो—

1. जो इत्तफाक या ख़ुश क़िस्मती से किसी रसूखदार गाइड के बेटे, नाती, पोते, पुत्री, भाई, बहिन, बहनोई, भानजे, साले या दामाद जैसे रिश्ते में आ जाते हैं।

2. जो पी-एच. डी. से पूर्व सेवकोत्तम-डी. की प्रकृति प्रदत्त जन्मना उपाधि से अच्छी तरह अलंकृत हों। यानी जिन्हें किसी भी तरह की सेवा करने में आत्मिक आनंद हासिल हो।

3. जो मादा जाति में जन्म लिए हों, या जो दुर्भाग्य वश नर जाति में जन्म लेकर भी सौभाग्यवश स्त्रियोचित गुणों से संपन्न हों। गोया जिनके बाल काले हों, चेहरे चिकने हों, तथा बाइस बरस से कम उम्र के लगते हों। जिनकी हया को देख, कदाचित सुंदरियाँ भी शरमा जाएँ।

4. पी-एच. डी. प्राप्त करना उनके लिए भी आसान है, जिन्हें ईश्वर ने स्त्री जाति में जन्म दे देने की भूल कर दी हो। अर्थात जिनके आंचल में दूध भले हो, आँखों में पानी कत्तई न हो।

5. जो गाँठ के बहुत मजबूत हो। यानी जो गाइड के पौत्र के मुंडन संस्कार से लेकर सुपुत्री की शादी तक में मुक्त हस्त हाथ बँटा सकते हों।

6. संयोगवश जिनका वर्ण, वंश, जाति तथा गोत्रादि पूरी तरह गाइड के साथ मिल जाता हो।

7. जो किसी आइ.ए.एस. अधिकारी, उच्च कोटीय न्यायाधीश अथवा मिनिस्टर आदि के निकट संबंधी हों तथा गाइड के किसी अंटके काम को विश्वास पूर्वक निकलवा सकने की कूव्वत रखते हों।

कुछ इक्के-दुक्के गाइड, काबुल के गधे हैं, जो स्वयं की सींग माफ़िक तिक्के-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौके, उक्त अर्हताओं से रहित (अच्छे) अभ्यार्थियों को भी पी-एच. डी. दान कर देने की जोखिक उठा लिया करते हैं। ऐसे अभागे गाइड तथा भाग्यशाली अभ्यर्थी शोध-संसार के अभिशाप हैं। हिंदी साहित्य के लिए महापाप हैं। और वे सज्जन भी निश्चय ही बेहद बेवकूफ़ हैं, जो धन्य, प्रणम्य या अनन्य बताकर ऐसे पशु-पर्यवेक्षकों एवं पक्षी-शोधार्थियों से संसार रूपी चिड़ियाघर को रहित होने नहीं देते।

अपने मुल्क में पैसे लेकर पी-एच. डी. प्राप्त कराने के क्षेत्र में कुछ विश्वविद्यालयी शिक्षक काफ़ी तरक़्क़ी कर चुके हैं। ऐसे गाइड-शिक्षकों को शोध कराने के लिए औरों की तुलना में अधिक मशक्कत उठानी पड़ती है। ये बेचारे विविध विश्वविद्यालयों में बरसों पूर्व हुए शोध प्रबंध के विषयों (टापिकों) की जानकारियाँ एकत्र करने में अनवरत लगे रहते हैं। अगर किसी विश्व विद्यालय में हुए शोध का सब्जेक्ट है 'प्रसाद की कामायनी में कला एवं भाव पक्ष', तो ये अपने कृपा पात्र शोधार्थी को इस रहस्य या कहें, 'गूढ़ज्ञान' की गुफ़्तगू सुंघाते हुए होने वाले शोध का शीर्षक दे देंगे 'जय शंकर जी की कामायनी का काव्य सौष्ठव'। इसके साथ ही हुए उक्त शोध-पोथे को प्राप्त करने में शोधार्थी एड़ी-चोटी का पसीना एक कर देगा। फिर किसी तरह उस धवलागिरी-संजीवनी के प्राप्त हो जाने के बाद कुछ मामूली परिवर्तनों के साथ पूरा शोध प्रबंध अलग उतार लिया जाएगा। दो से चार माह की कष्ट रहित कसरत के पश्चात पुरानी शराब की बोतल पर नए लेबल की मानिंद नया शोध-प्रबंध तैयार।

एक चश्मदीदी दिलचस्प तजर्बा

अचानक ख़बर की आग लगी कि मेरे एक पड़ोसी ने एम.ए. रूपी गंदे कुरते के ऊपर आनन-फानन में पी-एच. डी. रूपी पशमीने की शाल ओढ़ ली है। रामलीला मंच पर रात के क़रीब नौ बजे उनकी तकरीर होने वाली है। उन्हें देखने-सुनने के लिए तमाम लोग सिर पर पाँव रखकर भागे चले जा रहे हैं। मेरे भीतर भी उनके दीदार की लालसा जगी।

पहुँचकर देखा, उक्त पी-एच. डी. दाँ को मंच पर तकरीर करने की तकलीफ़ दे दी गई है। श्रोता-दर्शकों को कृतार्थ करने के मूड में वे उठकर आहिस्ता-आहिस्ता मंच पर चढ़ गए हैं। सामने खड़े मुर्दा माइक के मुँह में दो-तीन बार फूँक मारकर उसे ज़िंदा किया है। फिर दर्शकों की टकटकी के बीच उनकी काक-चोंच खुली है—''बंधुओं! (शुक्र है उन्होंने पुत्रों नहीं कहा है।) आज बहुत दिनों के बाद यह ख़ुशी का दिन देखने को मिला है (मैं नहीं समझ पाता हूँ कि वह यह बात सिर्फ़ अपने लिए कह रहे हैं, या सामने बैठे शताधिक श्रोताओं के लिए भी)। बाबा तुलसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने जगत हिताय यह रामायण भी ख़ूब लिखी है (सोचता हूँ, इतने बड़े पी-एच.डी. दाँ से कैसे पूछें कि 'श्री रामचरित मानस' किसने लिखी है?)।'' इसके बाद उक्त शोध-प्रवर ने तुलसी दास जी का ही एक बड़ा जानदार शेर सुनाया, जिसे अब तक मैं ग़ालिब का समझता आ रहा था। उनकी पूरी तकरीर ख़त्म हो जाने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि पी-एच.डी. करने के पश्चात निश्चय ही आदमी का भेजा खुल जाता है। उसमें पूर्णता आ जाती है। हिंदी के ऐसे शोध-सिद्ध सिरमौरों पर भी शोध किया जा सकता है। एक अच्छी-खासी किताब तो बन ही जाएगी। किंतु फ़िलवक़्त बस इतना ही, पी-एच.डी. दाओं से करबद्ध माफी माँगते हुए। वह भी ख़ास तौर से हिंदी साहित्य के साम्प्रतिक शोध-सिद्धों से, बिहार तथा उ.प्र. के पूर्वांचलीय पी-एच. डी. पंडितों से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धार्मिक-पौराणिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव परमात्मा की प्राचीनतम परिकल्पना

शिव स्वयंभू हैं, अनादीश्वर हैं। जिस शिव को हम स्वयं उत्पन्न स्वयंभू (शम्भू) कहते हैं, उसी शिव को मुसलमान भाई ख़ुद से उत्पन्न ख़ुदा कहते हैं। ठीक जैसे, जिसे हम अम्बु (जल) कहते हैं, उसे ये आब कहते हैं जिसे हम ईश कहते हैं, इसाई भाई ईशा बोलते हैं। जिस निराकार शिव को अनेक हिंदू साकार रूप में मानते-पूजते हैं, उसी शिव (अल्लाह) की इबादत मुस्लिम भाई निराकार रूप में करते हैं।

शिव अनाम अरूप हैं। फिर भी भक्त उन्हें शंकर, शिवंकर, विश्वनाथ, भूतनाथ (जीव जगत के स्वामी), अखिलेश्वर, महेश्वर, महादेव, अमरनाथ आदि नाना नामों से पुकारते हैं। वस्तुतः शिव शब्दातीत हैं। अभिव्यक्ति से परे सिर्फ़ अनुभवजन्य हैं। शिव (ईश्वर) को ध्यान में लाने के लिए हिंदू ओऽम् उच्चारण का अनुभव करता है, मुसलमान अमीन का तथा ईसाई आमीन का।

शिव ईश्वर की प्राचीनतम परिकल्पना हैं इसकी जानकारी हमें विश्व की अति प्राचीन सभ्यताओं के अध्ययन से, खुदाई से प्राप्त मूर्तियों से मिलती है। जब प्रभु श्री राम तथा श्रीकृष्ण का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था, तब भी शिव थे। जब भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, प्रभु ईसा मसीह आदि नहीं थे, तब भी शिव थे। अर्थात प्रागैतिहासिक काल से, जब मनुष्य पूरी तरह जंगली था। बस्तियाँ नहीं बनी थीं, तभी से ईश्वर के रूप में भगवान शिव की मान्यता है। प्रमाण स्वरूप शिव का जटाजूट वाला जंगली रूप उनका विचित्र वाहन बैल आज भी मूर्तियों-चित्रों में देखा जा सकता है।

शिव ब्रह्माण्ड स्वरूप हैं। कहते हैं, शिव का अनादि आवास कैलाश पर्वत है। पर्वत पुत्री पार्वती (गिरिजा पर्वत से उत्पन्न) से उनका विवाह है। उनके सिर पर शोभित विशाल जटा जूट पर्वत की असंख्य वनस्पतियों का प्रतीक है। जहाँ से गंगा-यमुना जैसी नाना नदियाँ निकलकर धरती को अभिसिंचित करती हुई समुद्र को गले लगाती हैं। सिर आसीन द्वितीया का चंद्रमा नाना ग्रह नक्षत्रों का प्रतिनिधित्व करता है। चौरासी लाख भूत समूहों के प्रतीक स्वरूप उनके घर पर बैल, मूस तथा मयूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाहन हैं, तन पर सर्प, बिच्छू, गोजर, छिपकली आदि नाना जीव हैं। पहाड़ से निकली नाना नदियों को स्पर्श करते मैदान, पठार, मरुस्थल, समुद्र सभी शिव के आगार हैं या कहें सबके आगार शिव हैं। इस प्रकार शिव ब्रह्माण्ड के पर्याय हैं, ब्रह्माण्ड स्वरूप हैं।

शिव पंचानन हैं, त्रिनयन हैं, त्रिशूलधर हैं, विषपायी हैं, कामारि हैं तथा इसके साथ ही और भी बहुत कुछ हैं। इन रूपों-नामों के भी अपने-अपने विशेष प्रतीकार्थ हैं। जहाँ शिव सदाशिव हैं, शिवंकर हैं, वहीं संसार शिवाय प्रलयंकर भी हैं।

एक ही शिव (ईश्वर) कई रूपों में विभक्त हैं, अभिव्यक्त हैं—पुरुष रूप में, पुरुष-नारी संयुक्त रूप (अर्द्धनारीश्वर) में। शैव-शाक्त-वैष्णव रूप में। द्वैत-अद्वैत-विशेषाद्वैत रूप में। इसी तरह शिया-सूनी रूप में कैथलिक प्रोटेस्टेंट रूप में। और भी अनेक रूपों में। जैसे हमारे यहाँ कोई बल का ईश्वर (बजरंग बली) है। कोई बुद्धि का ईश्वर (गणेश जी) है। कोई धैय, मर्यादा और त्याग का ईश्वर (श्रीराम) है। कोई मर्यादा से परे निर्बाध प्रेम की पराकाष्ठा का ईश्वर (श्रीकृष्ण) है। इसी तरह ज्ञान की देवी सरस्वती हैं, धन की देवी लक्ष्मी हैं तथा शक्ति की देवी दुर्गा हैं। भिन्न-भिन्न गुणों से लैस देवियाँ भी नौ (9) हैं। अर्थात् पूरी तरह गुण समूह के पृथक्करण का सिद्धांत लागू है। समय पाकर हमने शिव को भी ब्रह्मा, विष्णु, महेश में विभाजित कर लिया। कहा, शिव सिर्फ़ संहार के मालिक हैं। जन्म देना और पालन करना क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु के कार्य क्षेत्र में है। आवागमन से मुक्ति ही मनुष्य की चरम उपलब्धि है। कह कर हमने ब्रह्मा को पूजा प्रतिष्ठा से निकाल बाहर किया। अब बचे मात्र विष्णु और महेश—वैष्णव और शैव (विष्णु और शिव के अनुयायी)। वस्तुतः विष्णु और शिव एक ही ईश्वर के दो रूप-नाम हैं। इस संदर्भ में कुछ काव्य पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

1. हे शिव अजीब लीला तेरी, नहिं समझ किसी को आई है
जो ऊँचे शिखर हिमालय से, नीचे सागर तक छाई है।

2. गिरि गृह सर्पों का उत्तरीय, तन पर ओढ़ते सजाते हो
फिर सर्पों का ही बिस्तर तुम, सागर तल पहुँच बिछाते हो
यह ओढ़न डासन सर्पों का, क्यों कैसे तोहिं सुहाई है
हे शिव...

3. ऊँचे हिम गिरि पर रहकर तू, गर विश्वनाथ कहलाते हो
नीचे सागर में आकर फिर, कैसे विष्णु देव बन जाते हो
अणु-अणु व्यापी विष्वाणु विष्णु की, श्री सर्वत्र समायी है
हे शिव...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

4. अपनी-अपनी सुविधा खातिर, हमने ही तुझको बाँट लिया
जो लगा लिबास जिसे प्यारा, उसको ही तन पर ठाट लिया
अभिव्यक्ति परे अनुभूति परक, तू शिवानंद सुखदायी है
हे शिव...

शिव द्वारा विषैले पदार्थों के सेवन का अभिप्राय

यह संसार एक-दूसरे के विरोधी—पाप-पुण्य, अंधकार-प्रकाश, ताप-शीत, विष-अमृत, दुख-सुख, घृणा-प्रेम, पुरुष-स्त्री आदि अनेक उलटे-सीधे आयामों पर अवलंबित है। अब सुख तो सबको चाहिए। ऐसे में दुख बेचारा कहाँ रहे? इसी तरह जीवन की अमरता तो सबको चाहिए। नश्वरता प्रदायी विष कौन पिये? शिव ने विष पी लिया। सृष्टि लयकारी हलाहल! कोई दूसरा पीने के लिए तैयार ही। नहीं, पीकर पचाने में समर्थ नहीं। शिव ही पी सकते थे, प्रसन्नता पूर्वक पी लिया।

शिव विषधर हैं। विष्पायी हैं नाना विषैले जीवों—सर्प, बिच्छू, गोजर, छिपकली, बर्रे आदि निराश्रितों के आश्रय हैं। जो सबके घृणा के पात्र हैं, वे उनके स्नेह पात्र हैं। जिन्हें सभी मारते-दुत्कारते हैं, उन्हें वे—'अरे आओ भाई मैं हूँ ना!'... गीत है—'जिनका कोई नहीं, उनका तो ख़ुदा है यारो।'

शिव ज़हरीले पदार्थों का सेवन करते हैं। अब अंगूर, संतरा, आम, अनार आदि तो सबको चाहिए, बेचारा धतूर का कड़वा फल कहाँ जाए! अंततः इस तरह के सारे उत्पीड़ित-उपेक्षित पदार्थ शिव के प्रिय मधुर निवाले बन गए। कहने का तात्पर्य कि सुख भरी सुविधाएँ तो सबको चाहिए, ऐसे में बेचारी दुख भरी दुश्वारियाँ कहाँ जाएँ! जबकि जीवन-मृत्यु की भाँति सुख-दुख भी ज़िंदगी के मीठे-तीखे सत्य हैं।

वास्तव में दूसरे के बड़े से बड़े दुख को, सुख जैसी बेपरवाह अनुभूति के साथ अपना लेने का अभिप्राय ही शिव है और शिव से संलग्न ये सारे कष्टकारी विषधर जीव, सारी पीड़ा प्रदायी ज़हरीली वनस्पतियाँ, जीवन की जटिलताओं के प्रतीकात्म रूप हैं, जिन्हें सच्चे शिव व्रती जीवन में साधने-उतारने का यथासंभव प्रयास करते हैं। वरना शिव को गांजा-भांग धतूरा का सेवन करते हुए किसने देखा है?

निष्कर्षतः

शिव है परहित आचरण, शिव है परहित कर्म
शिव ॐ नमः शिवाय का, बुध जन बूझहिं मर्म

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीकृष्ण संपूर्णावतार क्यों?

पहली बात तो यह कि श्रीकृष्ण ने अध्यवसाय श्रम या साधना से पूर्णता प्राप्त नहीं की है। जन्म (कारागार) से लेकर शैशवावस्था के बीच की कठिन साजिशों, मरणान्तक यातनाओं को उन्होंने जिस सहजता के साथ हँसते-मुस्कराते काट फेंका है, वह अत्यंत आश्चर्यजनक, या कहें बेहद चमत्कारपूर्ण लगता है। अबोधावस्था में ही उन्होंने पूतना तथा तृणावर्त जैसे दुष्टों का वध करके अपनी पूर्णता की आधारशिला रख दी है। जबकि बुद्ध, महावीर, जीसस, राम आदि के साथ ऐसा नहीं है। अपने-अपने सीमित आयामों में ये सभी भी पूर्ण हैं, सिद्ध हैं। किंतु आगे चलकर जीवन की कुछ दूरी तय कर लेने के बाद। इनके व्यक्तित्व में बहुत कुछ एक जैसी संगति है, एकरसता है। इन्हें समझने के लिए दिमाग़ को बहुत तकलीफ़ देने की ज़रूरत नहीं है। बुद्ध या राम का कुछ हिस्सा समझ लिया जाए तो ये पूरे समझ में आ सकते हैं। समुद्र की एक बूँद उसके पूरे खारेपन को बता देती है। सभी चावल पके हैं या नहीं, यह जानने के लिए एक चावल को चुटकिया देना काफ़ी होता है किंतु कृष्ण के साथ ऐसा न हो सकेगा।

कृष्ण की पूर्णता बहुत कुछ जन्मना है, अनेक आयामी है। उनका व्यक्तित्व बहुत मीठा है, तो कहीं खारा भी है। काल परिस्थिति तथा स्थान सापेक्ष पका, अधपका, कच्चा कई तरह का है। जैसे कृष्ण चोर नहीं है। उनकी मानसिकता चोर की कतई नहीं है फिर भी चोरी करते हैं। दही-मक्खन चुराते हैं। गोपियों को औचक छेड़ते हैं। चीर चुराकर उन्हें नग्नावस्था तक पहुँचा देते हैं और चोर ही नहीं, छिछोर भी बन जाते हैं। किंतु यह चोरी भी कैसी है। एक गोपी दुखी है, कन्हैया अब तक उसकी दही चुराने नहीं आया। दूसरी दुखी है, कई दिन हो गए, कन्हैया ने उसे छेड़ा नहीं। कइयों की मटकी फोड़ डाली, अकेली निगोड़ी उसकी क्यों नहीं! फिर तो कृष्ण ऐसी शरारतें करेंगे ही। लोग उन्हें चोर-बनोर बनाते रहें। आचरणहीन, अमर्यादित कहते रहें।

श्रीकृष्ण प्रेम स्वरूप हैं, प्रेम के पर्याय हैं। विवाह से उनका कोई लेना-देना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं, किंतु विवाह कर लेने में उन्हें कोई गुरेज भी नहीं है। वे पूरी तरह राधामय हैं। उनके भीतर राधा का एकाधिकार है, किंतु दरवाज़ा ललिता, बिसाखा, कुब्जा, रूक्मिणी, सत्यभामा, सत्या, लक्ष्मणा, जाम्बवती आदि किसी के लिए भी खुला है। जगह इतनी ज़्यादा है कि उसमें संसार की सारी स्त्रियाँ समा सकती हैं। यहाँ तक कि भौमासुर द्वारा अपहृत सोलह हज़ार विवश लाचार रखैलें भी। तथाकथित अन्य अवतारों, भगवानों के लिए यह संभव नहीं है।

सत्यनिष्ठता कृष्ण के अंदर कूट-कूट कर भरी है। किंतु वे अंतरे-कोने कुछ जगह झूठ के लिए भी बचाकर रखते हैं। वे झूठ बोल ही नहीं सकते, दूसरों को बोलने के लिए, आवश्यकता पड़ने पर, सफलतापूर्वक प्रेरित भी कर सकते हैं। इसी तरह वे पूर्ण निश्छल हैं, किंतु बहुत ज़रूरी होने पर उन्हें छल से परहेज भी नहीं है। शांति स्वरूप हैं, शांति के पक्षधर हैं। कर्णप्रिय बाँसुरी बजाते हैं, मोहक नृत्य करते हैं, रास रचाते हैं और यह सब शांति में ही संभव है। किंतु बहुत आवश्यक होने पर युद्ध में भी उतर सकते हैं। चक्र तक उठा सकते हैं। रणछोड़ होने का अपयश भी ओढ़ सकते हैं। युद्ध का इरादा कतई नहीं रखते किंतु सुलह की लाख कोशिशें की। असफलता पर मुस्कराते हुए युद्ध के लिए तत्पर हो जाना भी उनके लिए अत्यंत सहज है। शांति के लिए अनिवार्य युद्ध की सार्थकता से भी वे बख़ूबी परिचित हैं।

दूसरों के यहाँ ढेर सारे निषेध हैं। चोरी निषेध है। झूठ निषेध है, हिंसा निषेध है, युद्ध निषेध है। यह करो, यह न करो। यह सही, यह ग़लत। यह पुण्य, यह पाप। इस तरह की अनेक वर्जनाएँ हैं। कृष्ण के यहाँ कोई निषेध नहीं है, किसी भी मर्यादा का बंधन नहीं है। उन्हें सब सहज स्वीकार है। वे द्वारिकाधीश कहलाते हुए भी अर्जुन का रथ हाँक सकते हैं। युद्ध में पाण्डवों के घायल घोड़ों की परिचर्या कर सकते हैं। सानंद उनकी मालिश कर सकते हैं।

संसार की सभी महान आत्माएँ, महावीर, बुद्ध, जीसस, राम या कोई और, किसी सुरलोक, किसी स्वर्ग या मोक्ष की बात करते हैं। जबकि कृष्ण इस धरती के पूरे जीवन को ही पूरी तरह स्वीकार करते हैं। उनके लिए इसी जीवन में, इसी धरती पर स्वर्ग मोक्ष सबकुछ है। बुद्ध के अनुसार यहाँ जो भी है, जन्म जीवन ज़रा मृत्यु, सब के सब दुःख हैं। कृष्ण इन सभी में भी सुख ढूंढ़ लेते हैं। वे सुख और दुख दोनों को स्वीकार करते हैं, या उनके लिए ये दोनों ही निरर्थक हैं। ये आनंद को दो हिस्सों में बाँटकर पैदा की गई व्याख्याएँ हैं। सच्चा सुख, परम शांति या मुक्ति की अवस्था का नाम आनंद है, जिसमें सुख और दुख दोनों ही नहीं हैं और आनंद की मस्ती शब्दों की पकड़ में नहीं आ सकती, जो यहीं, इसी धरती पर है। यहाँ नहीं है तो कहीं, किसी लोक-धाम में नहीं है। जिसे महाप्रभु चैतन्य जैसे विरले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही प्राप्त कर पाते हैं।

जीवन की संपूर्णतया जब भी किसी व्यक्ति में चरितार्थ होगी, तो उसमें अनेक व्यक्तित्व एक साथ दिखाई देंगे। शब्दकोश में शांति और अशांति एक-दूसरे के विपरीतार्थक हैं। सुख और दुख एक-दूसरे के विरोधी हैं। जबकि ज़िंदगी में सुख-दुख बन जाता है। दुख सुख हो जाता है। शांति अशांति बन जाती है। अशांति शांति हो जाती है। इसी तरह जन्म-मृत्यु, बचपन-बुढ़ापा, प्रकाश-अंधकार सभी एक-दूसरे के छोर हैं, आधार हैं। इन्हें अलग नहीं किया जा सकता। बुराई के बिना अच्छाई, दुर्जन के बिना सज्जन अकल्पनीय हैं। बुद्ध और महावीर की शांति, उनका मोक्ष, उनकी पूर्णता सुख की ऊब से उपलब्ध है। बुद्ध, राम या महावीर, जीवन में जो शुभ है, जो प्रकाश है, जो पूर्णिमा है, जो मर्यादा है, उसके ही प्रतीक हैं। जबकि कृष्ण की पूर्णता सुख की ऊब से नहीं उपजी है। वे जन्म से ही शुभ-अशुभ, प्रकाश-अंधकार, पूर्णिमा-अमावस, मर्यादा-मर्यादाहीनता आदि सबके प्रतीक हैं। उनका संपूर्ण जीवन विसंगतियों की संगति पर, विरोधों के एकत्व पर आधारित है। भगवान शिव की भाँति उनका काम अमृत की जगह ज़हर से भी चल जाएगा। उन्हें आम-अंगूर की जगह भाँग-धतूर भी स्वीकार है।

रूप, रस, गंध के साथ गुलाब अपने आप में पूर्ण है। चमेली भी अपने आप में पूर्ण हैं। राम, ईसा मसीह, महावीर तथा बुद्ध आदि की पूर्णता प्रायः इसी तरह की है। जबकि कृष्ण एक साथ गुलाब भी हैं, चमेली भी हैं, बेला भी हैं। अर्थात जो कृष्ण बाँसुरी बजाकर नाच सकता है, वह चक्र लेकर लड़ भी सकता है। जो मटकी फोड़ सकता है, वह गीता का उद्घोष भी कर सकता है। जो छेड़खानी कर सकता है, वह परम योगी भी हो सकता है। व्यक्ति एक है, गुण अपार हैं, क्षमता असीम है। यही कृष्ण के व्यक्तित्व की निजता है, उनका पूर्णत्व है, जो क्राइस्ट, बुद्ध, महावीर या राम आदि को उपलब्ध नहीं है। ऐसी और भी विशेषताएँ हैं, जो कृष्ण को पूर्णावतार बनाती हैं। कृष्ण के पास ही अमोघ सुदर्शन चक्र है, जिसका काट व जवाब किसी और के पास नहीं है।

कृष्ण के अद्‌भुत सौंदर्य में जो आकर्षण है, उनकी मुस्कान में जो मोहकता है, आँखों की चितवन में जो कशिश है, वह बहुत सुंदर होते हुए भी राम, बुद्ध, महावीर क्राइस्ट आदि में नहीं है। होंठ पर बाँसुरी लिए कृष्ण भी त्रिभंगी मुद्रा दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती है, ब्रज-वनिताओं को विक्षिप्त बना देती है। इतना सब होने के बावजूद वे एकदम अनीह (इच्छारहित) हैं, अनामय (निष्पाप) हैं।

श्रीकृष्ण सर्वोच्च कलाकार हैं, किंतु दो-चार कलाओं के नहीं। वे कला के पर्याय हैं। स्वयं कला हैं। अगर कलाओं की कुल संख्या सोलह है, तो सब की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब उनमें विद्यमान हैं। कदाचित इसीलिए कृष्ण पूरी तरह किसी की भी पकड़ में नहीं आते। कोई सिर पकड़ता है तो कोई कटि, तो कोई पैर। अधिकांश वात्सल्य वर्णन तक ही अटके रह जाते हैं। भागवत के कृष्ण, गीता के कृष्ण से पूरी तरह मेल नहीं खाते। सूर के श्याम से, मीरा के श्याम भिन्न हो जाते हैं। संभवत: इसीलिए उनका विविध आयामी उत्सवी व्यक्तित्व, उनका पूरा जीवन राम, बुद्ध, ईसा, महावीर आदि से अधिक आकर्षक होते हुए भी बहुत अनुकरणीय नहीं हो पाया। यह बात अलग है कि कृष्ण को चाहने–मानने वाले दुनिया भर में हैं और शायद सर्वाधिक हैं—हिंदुओं के साथ–साथ बौद्धी, जैनी, सिक्ख, मुसलमान तथा इसाई आदि भी।

वास्तव में कृष्ण के व्यक्तित्व–कृतित्व का मूल्यांकन आसान नहीं है। बहुत थोड़े में कहना चाहूँ तो उनका प्रकृति प्रेम—पेड़–पौधे (कंदवादि वृंदावनीय वनस्पतियाँ), पहाड़ (गोवर्धन पूजा), पशु (गाय, बाछादि वनचर), नदी (कालिंदी)। उनकी मित्र वत्सलता (रैता, पैता, मना, मनसुखा, सुदामा विदुरादि)। उनकी परंपरा से परे पुरंदर प्रतिरोधकता। उनका सुभद्रा (अपनी बहिन) हरण योगदान। द्रौपदी की रक्षा जैसे महान कार्य भी उन्हें अनन्यता प्रदान करने, या कहें पूर्ण परमात्मा की पराकाष्ठा तक पहुँचाने में सहायक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोहली की राम कथा

देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में बाल्मीकि से लेकर नरेंद्र कोहली तक राम कथा के संदर्भ में जितनी पुस्तकों का प्रणयन हुआ है, उतनी कदाचित किसी दूसरे संदर्भ में नहीं। कथा से संबंधित कुछ मूलभूत तथ्यों, यथा अयोध्या में दशरथ नंदन श्री राम का प्राकट्य, सीता-स्वयंवर, राम वन गमन, सीता हरण, सीता की खोज, राम की सुग्रीव से मित्रता, लंका पर चढ़ाई, रावण वध और अंत में सीता लक्ष्मण सहित राम की अयोध्या-वापसी आदि का उल्लेख तो प्रायः सभी पुस्तकों में एक जैसा हुआ है, किंतु बीच के अन्य कई प्रसंगों की प्रस्तुति में जहाँ-तहाँ अंतर पाया जाता है। किसी ने वियोगिनी उर्मिला की 14 वर्षीय पीड़ा को हृदय विगलित सहज अभिव्यक्ति प्रदान की है, तो किसी ने सीता के कोमल करों में तकली, चरखा तथा खुरपी पकड़ा दी है! राम राज्याभिषेक के पश्चात वाले प्रसंगों में अभिव्यक्ति के अंतर तो और भी खुलकर सामने आए हैं। यानी सभी रचनाकारों के अपने-अपने पूर्वाग्रह हैं, अपनी-अपनी वैचारिक काल्पनिक दृष्टि है।

आधुनिक लेखक श्री नरेंद्र कोहली द्वारा उपन्यस्त रामकथा कई स्थलों पर अधिक तर्क संगत, यथार्थपरक एवं व्यावहारिक प्रतीत होती है। यहाँ मैं कोहली द्वारा कल्पित-सृजित दो प्रसंगों का उल्लेख करना चाहूँगा—

पहला प्रसंग गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या से संबंधित है। सपत्नीक गौतम ऋषि जिस स्थान पर रहते हैं, वह एक बहुत बड़ा शिक्षा-केंद्र है। उक्त महा शिक्षालय में दीक्षांत समारोह संपन्न होने वाला है। भद्रजनों को दूर-दूर से आमंत्रित किया गया है। वरिष्ठ गुरु गौतम शिक्षा-संस्था के सबसे बड़े अधिष्ठाता (कुलपति या प्राचार्य) हैं। यद्यपि अधिकांश लोग अच्छी तरह जानते हैं कि तत्कालीन देवराज इंद्र भ्रष्ट, लंपट एवं अत्यंत व्यभिचारी है, फिर भी उसके कोप से भयभीत, स्थानीय राजा की इच्छा-दबाव के चलते, उसे भी समारोह में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर दिया जाता है। विवश बेचारे गौतम चुप रह जाते हैं। आमंत्रित इंद्र दीक्षांत समारोह में निर्धारित तिथि को निजी विमान से आता है। उसके ठहरने की भव्य व्यवस्था पहले से ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की जा चुकी है। उसे भाँति-भाँति के बहुरसीय स्वादिष्ट व्यंजन खिलाए जाते हैं। वह सुरा का भी सेवन करता है। फिर उपस्थित जन समूह के सामने ही वह अनिद्य सुंदरी अहिल्या के कक्ष में प्रवेश कर अंदर से दरवाज़ा बंद कर लेता है। उसके भय से सभी किंकर्तव्य विमूढ़ हैं। इस बीच वहाँ भीड़ लग जाती है। कुछ देर पश्चात वह ऐंठते-मुस्कराते हुए कक्ष से बाहर निकलता है। भीत-चकित असहाय भीड़ को देखकर अट्टाहास करते हुए वह शान के साथ विमान में बैठकर वापस लौट जाता है। उसके दुर्धर्ष कोप को चुनौती देने का साहस किसी में भी नहीं रह गया है।

इस दुर्घटना के परिणाम स्वरूप प्रतिव्रता अहिल्या का शील भंग हो जाता है। यद्यपि अहिल्या पूर्णतया निर्दोष-निष्कलुष है, फिर भी तत्कालीन लोक अवधारणाओं के अनुसार वह अस्पृश्य घोषित कर दी जाती है। लोक भय के कारण उसकी परछाई से भी लोग कतराने लगे हैं। चूल्हा जलाने के लिए उसे कोई दिन-दहाड़े आग तक नहीं प्रदान करता। मृत्यु से भी अधिक त्रासद स्थितियों में वह बेचारी जीने के लिए विवश हो जाती है। उसका शेष जीवन निर्जीव पाषाणवत हो उठता है। ऋषि गौतम निष्पाप पत्नी का किसी भी क़ीमत पर परित्याग करना नहीं चाहते, किंतु इसके लिए विदुषी अहिल्या अनुनय-विनय से समझा-बुझाकर अपने पति को मना लेती है। वह नहीं चाहती कि गौतम जी भी कुलपति का महान पद त्यागकर उसी की तरह नारकीय जीवन जीने के लिए अभिशप्त हों। क्योंकि वह भविष्य में पूर्ववर्ती जीवन पाने के प्रति अब भी आशान्वित है। और यह तभी संभव हो सकेगा, तब पति गौतम कुलपति पद पर बने रहें तथा उसका कुछ समय के लिए परित्याग कर दें।

उपर्युक्त पूरे प्रकरण तथा ऋषि दंपति की दयनीय दशा की जानकारी महर्षि विश्वामित्र को भी है। अवसर आने पर वे अहिल्या की दुखद गाथा राम को विस्तार के साथ सुनाते हैं। श्री राम इस सच्ची करुण कथा को सुनकर द्रवीभूत हो उठते हैं। फिर अहिल्या का उद्धार करने के लिए राम, लक्ष्मण तथा अनेक ऋषियों सहित विश्वामित्र जी अहिल्या के पास पहुँचते हैं। वह ऋषि मंडली के साथ सुंदर-सलोने राज कुँवरों को देखकर आह्लादित हो उठती है। उसकी आँखों से प्रेम की अविरल अश्रुधारा बहनें लगती है। तत्क्षण ऋषियों द्वारा भोज्य सामग्री की व्यापक व्यवस्था की जाती है। अंत में वह सबको एक साथ भोजन कराकर कृतार्थ हो उठती है और अहिल्या उद्धार का महत कार्य संपन्न हो जाता है। वह तत्कालीन समाज द्वारा ससम्मान पुनः स्वीकार कर ली जाती है।

कोहली वर्णित इस कथा में न चंद्रमा को मुर्गा बनना पड़ता है, न आधी रात को भोर समझकर गौतम को स्नान करने जाना पड़ता है, न गौतम के शाप से अहिल्या शिला हो पाती है और न ही भगवान राम के चरण-स्पर्श से उसका सजीव स्वर्गारोहण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होता है। कथाकार की कुशल कलम ने सारी स्थितियों को व्यावहारिक एवं विश्वसनीय स्तर पर ला खड़ा किया है। ऐसी स्थिति में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का चरित्र और भी उदात हो उठता है। वे न केवल उत्पीड़ित-अवहेलित-अपमानित अहिल्या का उद्धार करते हैं, बल्कि तत्कालीन समाज में सदियों से व्याप्त एक कुत्सित रुढ़ि को भी कुचल डालते हैं।

दूसरा प्रसंग उस स्वर्णमृग से संबंधित है, जिसे पाने के लिए सीता का मन मचल उठता है। अधिकांश कृतियों में मारीच स्वर्णमृग का रूप धारण कर सीता के सामने उछलकूद मचाता है, जबकि कोहली प्रणीत पुस्तक में वह स्वर्ण मंडित बनावटी मृगचर्म का अधोवस्त्र धारण कर साधु वेश में सीता के समक्ष सशरीर उपस्थित होता है। कपटी मारीच का एक तपस्वी के रूप में सीता द्वारा स्वागत-सत्कार किया जाता है। बातचीत के बीच सीता उस अद्‌भुत मनोहर मृग चर्म के प्रति जिज्ञासु होती हैं। मारीच बताता है कि ऐसे चर्म वाले मृग तो मात्र अमुक अरण्य में ही पाए जाते हैं। अंत में सीता प्रेरित श्री राम धनुष-बाण लेकर उक्त सुनहले मृग के शिकार हेतु मारीच के पीछे-पीछे चल पड़ते हैं जो उन्हें सुदूर किसी भयानक जंगल की ओर लेकर चला जाता है।

अनेक कृतियों के अनुसार तत्कालीन अनेक राक्षस रूप बदलने की कला में सिद्धहस्त हैं। जहाँ तहाँ वे इसका लाभ भी उठाए हैं। समरांगण में अचानक उपस्थित अनेक रावण, राम की बानरी सेना को भयाक्रांत कर देते हैं। ऐसी स्थिति में मारीच द्वारा मृग का रूप धारण कर लेना कोई बहुत आश्चर्य की बात नहीं। फिर भी नरेंद्र कोहली की इस नई प्रस्तुति ने उक्त प्रसंग को निश्चय ही अधिक तर्क संगत एवं स्वाभाविक बना दिया है। यत्र-तत्र आई इस तरह की प्रस्तुतियों को कोहली की कुशल कलम का कमाल ही कहा जाएगा। निश्चय ही वह आचार्य चतुरसेन शास्त्री की तरह पौराणिक आख्यानों के सिद्धहस्त उत्कृष्ट कथा शिल्पी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धाश्रम बनाम बक्सर

(भगवान विष्णु की पावन तपस्थली)

बिहार का भारत-विश्रुत महान तीर्थस्थल—सिद्धाश्रम; कितना शांत! किंतु नीरव नहीं, शोर गुंजित सुखद और मनसायन। कण-कण आह्लादित—ऋषियों के परित्राण हेतु भगवान राम जो यहाँ पधारे थे! पाँवों में लोटती माँ सुरसरिता की लहर-लहर में थिरकन, जैसे नीलाम्बुज श्यामल राम के कमलवत् चरणों की सर्वत्र बिखरी पवित्र धूलि के स्पर्श सुख से यह क्षण मात्र भी वंचित रहना नहीं चाहती। गंगा की इस तटीय शोभा का दर्शन कर किसका तन-मन उन्मुक्त मयूर सदृश नहीं थिरक उठेगा! कूल प्रदेश पर फैले यहाँ से वहाँ तक कच्चे-पक्के घाट। छोटे-बड़े मंदिर। श्रद्धालु स्नानार्थियों की चहल-पहल। हंसों की तरह धारा में तैरती लघु-दीर्घ नौकाएँ। नदी के अपर कूल पर सुदूर तक फैली शस्य श्यामला धरती की मखमली हरियाली। तभी दिखाई दे जाता है, बिहार और उत्तर-प्रदेश को गले मिलाता, करोड़ों की लागत से बना विशाल सरकारी पुल। पुल पर अबाध गति से दौड़तीं अनगिन सवारियाँ—कार, टैक्सी, बस, रिक्शे तथा साइकिलें।

सिद्धाश्रम की समस्त पावन भूमि ग्रहण, आमवस्या, कार्तिक षष्ठी, मकर संक्रांति तथा 'माई बिसरी रे बहिन बिसरी, पंचकोसवा के भंटा-लिट्टी ना बिसरी' वाली पंचकोसी परिक्रमा, आदि विशेष पर्वों पर तीर्थ यात्रियों से संकुल हो उठती है। विशाल जनसमूह किसी खेत पर छायी हरियाली की भाँति सड़कों पर छा उठता है। कौशल्या नन्दन प्रभु श्रीराम की चरण रज के स्पर्श की सुखद अनुभूति को संजोये, युवा तो युवा, बार्धक्य की चिंता से मुक्त बूढ़े तक, यानी हज़ारों स्त्री-बालक, नर-नारी उमड़ पड़ते हैं। उनकी आँखों में महर्षि विश्वामित्र के पीछे-पीछे चल रहे किशोर वय राम और लक्ष्मण की युगल छवि साकार हो उठती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धाश्रम, व्याघ्रसर और बक्सर

विश्व में अणु रूप व्याप्त विष्णु ने बहुत समय पहले, सिद्धाश्रम में कई युगों तक कठोर तपस्या की थी। कठिन तप के फलस्वरूप उन्हें यहीं पर सिद्धि प्राप्त हुई। तभी से यह स्थान सिद्धाश्रम के नाम से जाना गया। इसकी पुष्टि वाल्मीकीय रामायण से होती है—

'सिद्धाश्रम इति ख्यात: सिद्धोह्यत्र महातपा: ॥ एतस्मिन्नेव कालेतु... ॥4 ॥' तथा 'अयं सिद्धाश्रमो नाम प्रसादात्ते भविष्यति। सिद्धेकर्मणि देवेश उत्तिष्ठ भगवन्नित: ॥18 ॥ (देवेश्वर भगवन! आप की कृपा से यह स्थान, सिद्धाश्रम के नाम से विख्यात होगा। अब आपका तप रूप कार्य सिद्ध हो गया है, अत: यहाँ से उठिए।)

(—बाल काण्ड, सर्ग 29)

उसी समय की बात है। बलि ने अन्य देवताओं सहित इंद्र को पराजित करके उसके विशाल साम्राज्य पर अधिकार कर लिया। विजयोपरांत उन्होंने एक यज्ञ का आयोजन किया। इधर असुरराज बलि को पराभूत करने के उद्देश्य से अग्नि आदि देवताओं ने विष्णु भगवान से इसी सिद्धाश्रम में बार-बार विनम्र वन्दना की। विष्णु प्रसन्न हुए। वे बलि से तीन पग भूमि की याचना कर तीनों लोक प्राप्त कर लिए। इस प्रकार तीनों लोक पुन: इंद्र के अधीन हो गए।

सिद्धाश्रम का वाल्मीकीय रामायण में बड़ा महात्म्य दिया गया है। महर्षि विश्वामित्र (स्वयं) भगवान राम से कहते हैं—'विष्णु ने पूर्व काल में यहाँ निवास किया, इसलिए यह आश्रम सब प्रकार के श्रम (दुख, शोक) का नाश करने वाला है। उन्हीं भगवान में भक्ति होने के कारण मैं भी इस स्थान को अपने उपयोग में लाता हूँ।'

गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित श्री मद्वाल्मीकीय रामायण के अनुवादक पं. राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम' ने सिद्धाश्रम के सामने कोष्ठक में 'बक्सर' लिखकर इस स्थान की प्रामाणिकता इस प्रकार सिद्ध की है—अहंहि नियमाद्रामहित्वा तांसमुपागत: ॥ सिद्धाश्रम मनुप्राप्त: सिद्धोस्मि तव तेजसा ॥12 ॥ (श्री राम! मैं यज्ञ संबंधी नियम की सिद्धि के लिए ही अपनी बहिन का सानिध्य छोड़कर सिद्धाश्रम (बक्सर) में आया था। अब तुम्हारे तेज से मुझे यह सिद्धि प्राप्त हो गई है ॥12 ॥

(बाल काण्ड, सर्ग 34)

इस प्रकार बक्सर ही सिद्धाश्रम था, या कहें, पूर्व का सिद्धाश्रम ही संप्रति बक्सर है। इस तथ्य को विविध विद्वानों ने स्वीकार किया है। भगवान विष्णु और विश्वामित्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अतिरिक्त यहाँ अनेक ऋषियों ने भी सिद्धि प्राप्त की। गंगा का सुरम्य-रमणीक तट तथा वनाच्छादित प्राकृतिक परिवेश इस स्थल के आकर्षण का कारण रहा होगा। कभी त्रेता युग में रावण रक्षित महिला ताड़का ने भी यहाँ अपना निवास बनाया था।

अब प्रश्न उठता है, कि सिद्धाश्रम का नाम बक्सर किस प्रकार तथा क्यों हुआ? कहा तो यह जाता है कि यहाँ घने जंगलों के बीच एक ऐसा सर (तालाब) था, जिसकी तटीय आकृति व्याघ्र से मिलती-जुलती थी। इस सर में बनांचल के छोटे-बड़े अन्य जीवों, जानवरों के साथ-साथ व्याघ्र जैसे हिंसक पशु भी पानी पीने आते थे। अतः कालांतर में लोगों ने इस स्थान को व्याघ्रसर कहना शुरू कर दिया। और व्याघ्रसर का ही अपभ्रंश है बक्सर। जलकुंभियों से आच्छादित यह सर काफ़ी दिनों तक विद्यमान रहा है। किंतु इसकी प्रामाणिकता, किसी पुरानी या प्रामाणिक पुस्तक में नहीं प्राप्त होती।

वाल्मीकीय रामायण के बालकांड के 24वें सर्ग में तीन वनों का उल्लेख आया है। बक्सर से थोड़ी-थोड़ी दूर पर स्थित इन तीन—मलद, करुष और ताटक वनों के अवशेष, गाँवों के रूप में आज भी विद्यमान है। महर्षि विश्वामित्र ने मलद और करुण का वर्णन भगवान राम से इस प्रकार किया है—"राम! पहले की बात है। वृत्रासुर का वध करने के पश्चात देवराज इंद्र मल से लिप्त हो गए। क्षुधा ने भी उन्हें धर दबाया और उनके अंदर ब्रह्म हत्या प्रविष्ट हो गई। तब देवताओं तथा तपोधन ऋषियों ने मलिन इंद्र को गंगा जल से भरे कलशों द्वारा स्नान कराया और कारुष को (क्षुधा को) छुड़ा दिया। इस प्रकार इंद्रजनित मल को धारण करने वाले ये दोनों देश (वन) मलद और करुष कहे गए।

कुछ ही दिनों बाद यहाँ इच्छानुसार रूप धारण करने वाली ताटका नामक एक भयंकर यक्षिणी आई। वह मलद और करुष क्षेत्रों में उत्पात करने लगी। बालकाण्ड के 24वें सर्ग में विश्वामित्र श्री राम से कहते हैं, वह यक्षिणी डेढ़ योजन तक के मार्ग को घेर कर इस वन में रहती है। अतः हम लोगों को, जिस ओर ताटका वन है, उधर ही चलना चाहिए।

ताटका का वध करने के पश्चात भगवान राम ने रात की बेला में उस ताटक वन में ही विश्राम किया। उसी दिन वह वन शाप मुक्त होकर रमणीय शोभा से संपन्न हो गया और चैत्ररथ (कुबेर का बाग) की भाँति अपनी मनोहर छँटा दिखाने लगा।

उल्लेखनीय है कि वर्तमान बक्सर में वह चैत्ररथ (ताटका) वन आज भी चरित्र (चरित्तर) वन के नाम से जाना जाता है। यहाँ प्रभु श्री राम के आगमन, साथ ही उनके द्वारा अनेक राक्षसों के वध की लीला (चरित्र) किए जाने के कारण भी अधिकांश लोग, इसे चरित्तर वन कहते हैं। यहाँ से डेढ़ योजन (क़रीब बीस किलो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मीटर) की परिधि में दो गाँव महदह और करहंसी (थोड़ी ही दूर पर एक गाँव चकरहंसी भी है) क्रमशः करुष और मलद के अवशेष के रूप में अपनी प्राचीनता की आज भी पुष्टि करते हैं।

रामागमन से पूर्व बक्सर एक दुर्गम दनुजारण्य था। तदनंतर राघवेंद्र ने यहाँ पधार कर जंगल में मंगल कर दिया। यह स्थान जिस तरह से तपोभूमि के रूप में प्रसिद्ध है, उसी तरह युद्ध भूमि के रूप में भी। पुरुष सिंह श्री राम ने यहाँ ताटका, मारीच और सुबाहू जैसे दुर्धर्ष राक्षसों से युद्ध कर उन्हें बुरी तरह पराभूत किया।

कालांतर में यहाँ 1764 ई. में अंग्रेज़ों तथा मीर कासिम, शाह आलम और शुजाउद्दौला के बीच लड़े गए निर्णायक युद्ध ने एक नए युग का सूत्रपात किया और भारत में अंग्रेज़ों के पैर पूरी तरह जम गए। भारत में नितांत नए (आधुनिक) इतिहास ने जन्म ले लिया। इस नए ऐतिहासिक वैशिष्ठय के बावजूद इस पावन भूमि का सर्वाधिक महत्त्व जन्नियंता पुरुष-पुराण विष्णु को सिद्धि प्रदान करने में ही निहित है। इस प्रकार यहाँ की पौराणिकता एवं धार्मिकता के सम्मुख ऐतिहासिकता ओछी (गौण) पड़ जाती है। यही कारण है कि इस नमनीय भूमि के दर्शनार्थ, प्रतिवर्ष विभिन्न पर्वों पर यहाँ लाखों नर-नारी एकत्र हुआ करते हैं।

आज देखने पर बक्सर, वाराणसी का लघु संस्करण जैसा लगता है। एक शिव रक्षित है, तो दूसरा विष्णु (राम) रक्षित। एक अपने विश्वनाथ मंदिर के लिए प्रसिद्ध है, तो दूसरा अपने नव निर्मित 'बैकुंठधाम' के लिए। अर्थात एक शिवपुरी है तो दूसरा विष्णुपुरी। अपने लघु परिसर में, काशी जैसी शांति (कोलाहल भी) और शुचिता, यहाँ भी देखी जा सकती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथा-कहानी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्लीज़ आप उसे पागल न समझें

वह पागल होना नहीं चाहता। फिर वही क्यों, कोई भी पागल होना नहीं चाहेगा। किंतु अगर किन्हीं वजहों से होना ही पड़ जाए तो? तो पागल होने से उसे कोई गुरेज नहीं, बशर्ते कोई भी उसे पागल समझने-कहने की हिमाकत न करे। क्योंकि जाहिर है, पागल होने के बनिस्पत लोगों द्वारा पागल समझा या कहा जाना ज़्यादा जानलेवा है। वैसे यह बात दीगर है कि कोई व्यक्ति पागल हो और उसे पागल न समझा-कहा जाय, सवाल ही नहीं उठता! हाँ इस बाबत एक बात और, और वह यह कि हज़ारों-लाखों पागलों, कम अक्लों, खब्तमिजाज़ों के बीच एक सही-सलामत जीनियस शख़्सियत की शिनाख़्त क्या एकदम उलट नहीं हो जाएगी? गोया एकमात्र वही नासमझ-पागल, बाक़ी सब समझदार, एकदम दिमाग़ी दुरुस्त।

बहरहाल मेरी छानबीन के तहत वह शख़्स सिर से पाँव तक, कहीं से भी रत्ती भर भी पागल नहीं है। उसके दिमाग़ी स्क्रू हर जगह से कसे हुए पूरी तरह टाइट हैं। हाँ, कभी-कभार उसे बिजली के करंट माफ़िक डर के हल्के-भारी झटके ज़रूर आते हैं और तब वह बेहद बदहाल, कभी-कभी बेहोश भी हो जाया करता है। अब ऐसे में लोग उसे पागल समझ बैठें, तो समझा करें। मैं कौन होता हूँ उन्हें रोकने-टोकने वाला। फिर मेरे अकेले रोकने-टोकने से सभी मान जाएँगे, यह सवाल भी कहाँ उठता है!

सच पूछिये तो यह उस व्यक्ति की दास्ताँ है जिसे मुझसे ज़्यादा, ख़ुदा को छोड़ कोई नहीं जानता। जबसे होश संभाला, उसकी ज़िंदगी के एक-एक पल का मैं प्रत्यक्ष द्रष्टा हूँ, चश्मदीद गवाह हूँ। क़रीब बहत्तर वर्षीय उस व्यक्ति की बाबत अब पूरी तरह यह बता पाना तो बहुत मुश्किल, शायद नामुमकिन है कि अब तक वह कितनी मर्तबा कब-कब डरा, कितना डरा या उसके डरने की वाजिब, ग़ैरवाजिब वजहें क्या थीं। किंतु इतना मैं धड़ल्ले के साथ साबित कर सकता हूँ कि 'जो डर गया वो मर गया' के लिहाज से वह आज भी बहुत डरा हुआ या कहें, डर कर मरा हुआ इन्सान है। ऐसा वह बड़ी शिद्दत के साथ ख़ुद को महसूस करता है और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस बाबत मुझसे गाहे-ब-गाहे दो-चार दफ़ा बता चुका है। याद दिला चुका है कि यह डर किसी क्रॉनिक डिजीज माफ़िक उसके भीतर से किसी भी तरह बाहर निकल नहीं पा रहा है और इस वजह से वह पागलपन की हद तक बहुत परेशान रहा करता है। बावजूद इसके, वह अभी तक पागल नहीं हुआ है, यह ताज्जुब की बात है।

दरअसल वह बचपन से ही ज़रा ज़्यादा भावुक है, एक्स्ट्रा इमोशनल। जिसके चलते आज उसकी हालत यह है कि आये दिन वह जीते-जीते मर जाया करता है और मरते-मरते जी जाया करता है। कल तक चीन की विस्तारवादी बेहूदा हरकत तथा उससे उपजे जंगी ख़ौफ़ ने उसे अधमरा कर दिया था, तो आज उसके आसानी से पीछे हट जाने की ख़ुशी में वह पूरी तरह जीवंत हो उठा है। कल तक वह हरियाणा के अंधभक्तों द्वारा 'मारो, काटो, फूँको, जला दो' वाले ख़ौफ़नाक हादसे से बुरी तरह हिलक उठा था, तो आज निर्लज्ज-निर्दयी शातिर रेपकारी गुरमीत की बीस वर्षीय बा-मशक़्क़त सज़ा सुनकर जी उठा है। तभी यह लो, यकायक मुंबई में विनाशकारी बाढ़ का दिलदहलाऊ मंजर! दो मंज़िली, बहु मंज़िली कई जर्जर इमारतें ढहीं। बीसों मरे पचीसों घायल! अनेक डूबे, बहुतो बहाए!! पल-पल बढ़ती जा रही वहाँ की अपार जन-धन की हानि ने, हानि की पीड़ा प्रदायी परिस्थिति ने, उसे पुनः भय के बीहड़ बियाबान में इस कदर धकेल दिया है कि बस किसी तरह उसकी साँसें भर कायम हैं इसी तरह और भी अनेक...जैसे कोरोना का विश्वव्यापी ऐसा कहर, जिसकी उसने कल्पना तक न की थी।

"अमा यार, ये कौन-सी नई बातें तुम बता रहे हो ऐं, फिजूल की बकवास! ऐसा तो अमूमन सभी के साथ होता है। किसी बात पर कमोबेश ख़ुशी तो कभी किसी पर थोड़ा-बहुत ग़म। इसमें मरने-जीने जैसी बात कहाँ से आ गई? हुँह! अजी सुख-संताप, फ़ायदे-घाटे से पूरी तरह परे स्थितप्रज्ञ, परमपुरुष तो लाखों-करोड़ों में विरले कोई हो पाता है।" यही सब न कहेंगे आप। तो यक़ीन मानिए, कम से कम उसके साथ ऐसा नहीं है। तसदीक के तौर पर उसकी सही शिनाख़्त के लिए मैं आपको कुछ तफसील में ले चलना चाहूँगा। आपकी बेजा जिरहों से बचने के लिए ज़्यादा नहीं, उससे जुड़े अनेक हादसों में से कुछ मुख़्तसर वाकयातों का ज़िक्र किया जाना मुझे ज़रूरी लग रहा है।

जब वह बहुत छोटा अबोध बच्चा था और पहली दफ़ा डरा था, तब की यह बात, सन साठ यानी उन्नीस सौ साठ से भी कुछ समय पहले की है। माफ कीजिये, मेरी याददाश्त बड़ी कमज़ोर है। यह क़िस्सा चौवन-पचपन का हो सकता है।

तो बच्चे-बूढ़े सभी उन्हें काका कहते थे, रामननन काका। वैसे वे सौ के पार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे और बच्चों के अधेड़ पिताओं, बूढ़े बाबाओं के भी बाबा लगते थे। किंतु गाँव-जवार में जो चल गया सो चल गया। तो उन्हीं रामननन काका के दरवाज़े पर कुछ अधेड़-बूढ़े, बैठे-ओठँगे बोल-बतिया रहे थे। कुछ खैनी-सुर्ती खा-थूक रहे थे तो कुछ एक-दूसरे से ले-लेकर हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। वहीं एक सज्जन, काठ की नंगी चौकी पर दोनों हाथ पीछे टिकाए पाँव लटकाए अकेले बैठे थे, जिनके बगल में एक लग्गी (कच्चे बाँस की पतली छड़ी), चौकी और ज़मीन के सहारे खड़ी पड़ी थी। लग्गी के ऊपरी सिरे पर सफ़ेद चिरकुट के साथ एक लोहे की छोटी कील बँधी थी। महज दो-चार क़दम दूर वहीं कुछ छोटे-बच्चे खेल रहे थे। धक्का-मुक्की करते एक-दूसरे को दौड़-दौड़कर छू रहे थे, जिनमें सबसे छोटा बच्चा वह भी था।

खेल-खेल में यकायक एक लड़का राम निवास कहने लगा, "जानते हो तुम लोग, वह चौकी से टिकी जो लग्गी रखी है नऽ, उसे जो छू देगा, मर जाएगा।"

"एकदम झूठ बात!" वह छोटा बच्चा बोल उठा, "उसे छू भर देने से भला कोई कैसे मरेगा, क्यों मरेगा?"

"तो जा हिम्मत है तो छूकर देख।" आवाज़ को ऐंठते हुए राम निवास ने अविलंब चुनौती दे दी।

"देख, अभी जाता हूँ मैं!"

वह ज्यों ही चलने को हुआ, राजकिशोर ने उसे पकड़ लिया। कहा, "रहने दो भाई, क्यों जान देने पर तुला है? कहीं मर ही गए तो..." इसके साथ ही पारसनाथ, बालि, तुमनाथ, नगिन्दर सभी उसे घेरकर खड़े हो गए। किंतु वह नहीं माना। घेरे को तोड़-हटा फौरन दौड़कर गया और हरे बाँस की उस छड़ी को छूकर सकुशल वापस लौट आया। विजयी टीम के कप्तान की तरह गर्वातिरेक से उल्लसित हो बोला, "देखो तो, छू दिया और तुम सबके सामने ज़िंदा खड़ा हूँ। बोलो-बताओ, कहाँ मर गया मैं? यह चचवा (रामनिवास) सरासर झूठ बोलता है।"

"क्या कहा, मैं झूठ बोलता हूँ? अभी तो छूकर न आये हो" हाथ नचाते हुए रामनिवास बोला, "अरे बच्चू, आज रात-रात तक तुम ज़रूर मर जाओगे, देख लेना। अगर न मरे तो आकर बताना।"

"एकदम पागल है! मैंने तो बहुत मना किया, किंतु यह पगला माना ही नहीं!" यह राजकिशोर था, जो न सिर्फ़ उम्र में, बल्कि क़द में भी सबसे ऊँचा था, रामनिवास से भी चावा भर बड़ा।

"इसमें भला हमलोगों का क्या कुसूर!" नगिन्दर ने कहा।

"यह किसी का कहना ही नहीं मानता! क्या ज़रूरत थी लग्गी छूने की? पूरा पागल है।" बालि बोला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस तरह और भी बहुत कुछ कहते, अफ़सोस जताते सभी अपने-अपने घर चल दिए। चल तो वह भी दिया अपने घर की ओर, किंतु अब वह कुछ उदास था। बेचारे की उम्र ही क्या थी! बच्चों में सबसे छोटा, सिर्फ़ पाँच साल से कुछ अधिक का। फाँसी की सज़ा पाये क़ैदी की तरह उसके दिमाग़ पर रफ़्ता-रफ़्ता मौत तारी होने लगी, "तो क्या मैं सचमुच आज मर जाऊँगा? एक नहीं, दो नहीं, सभी तो ऐसा ही मान रहे थे।" उसका अनवरत सोच एकांत पाते ही ख़ौफ़ में तब्दील होने लगा। सिर चकराने लगे। इत्तफाकन घर में घुसते हुए उसे किसी ने देखा नहीं। वह चाहा भी नहीं कि इस हालत में उसे कोई देखे। शाम ढल चुकी थी। वह एक अंधेरे कमरे में पहुँच, चारपाई पर निढाल ढह गया और फफक-फफक कर रोने लगा।

चाहे तन की तकलीफ़ हो या मन-मस्तिष्क की चिंता, अपने अंधेरेपन की तरह रात उसे और गाढ़ा बना देती है। और इसके ऊपर नितांत अकेलापन! यह तो आग में पड़ा बम-बम घी बन जाता है। धुँधलाती शाम के बढ़ते अंधेरे के साथ उसके दिल की धुकधुकी भी तेज़ होने लगी। वह रह-रहकर हाथ-पाँव हिलाता, कभी उठकर बैठ जाता, फिर विवश असहाय मरने के लिए आँख बंद कर कभी चित्त कभी पट पसर जाता। आख़िर एक अकेला रामनिवास ही क्यों, राजकिशोर, बालि, नगिन्दर, तुमनाथ, पारस ये सारे के सारे झूठ थोड़े न बोलेंगे! आज वह रात-विरात ज़रूर मर जाएगा। बालि ने ठीक ही कहा, वह सचमुच पूरा पागल है! जो किसी की भी न सुने, उसे ही तो पागल कहते हैं।

इधर उसकी माँ परेशान कि इतना अंधेरा हो गया और अब तक वह घर लौटकर नहीं आया। उसे लेकर सारा घर हैरान-हलकान। उसके बड़े भाई राम बचन को रामननन काका के दरवाज़े पर भेजा गया। शायद वहीं कोई उसके बारे में बताए। पड़ोसी घरों में पता लगाने उसकी बहन वैदेही निकल पड़ी। आठ बजा नहीं, कि तभी यकायक हल्ला मचा, "मिल गया, मिल गया, अरे आओ जी देखो मिल गया!" उसकी काकी उसी कमरे में लालटेन लेकर पहुँचीं, जहाँ वह मुरदा माफ़िक औंधे मुँह चुपचाप पड़ा था। काकी के चिल्लाते ही आनन-फानन में घर की सभी औरतें उस कमरे में धम-धम धमक पड़ीं। आश्चर्यचकित अनेक स्वर एक साथ उभरे, "अरे ई अकेले इस अंधेरे कमरे में क्या कर रहा है?" और उसे लगभग घसीटते हुए लेकर सभी आँगन में आ गईं।

लालटेन के चटक उजाले में सबने उसे देखा। बेतरतीब बिखरे बाल। ज़्यादा रोने से सूख चुकी सूजी-सूजी उदास आँखें। निर्जीव-सा रुआँसा चेहरा। चारपाई पर गोद में सँभाले उसकी माँ ने पूछा, "का बात है बचवा? किसी ने तुझसे कुछ कहा है? किसी ने मेरे लाल को मारा-पीटा? बोल, आख़िर बात क्या है, कुछ तो बता?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके साथ ही उसकी सूख चुकी आँखें फिर से डबडबा उठीं। वह हिचक-हिचककर सुबकने लगा। लोहे से चिपके चुम्बक की तरह माँ की गोद में ऐसे चिपक गया, जैसे वह उसे मरने से निश्चय ही एकतरफ़ा बचा लेगी। देर बाद काफ़ी समझाने-बुझाने पर किसी तरह उसका रुँधा कंठ खुला। हकलाते हुए उसने आहिस्ता-आहिस्ता एक-एक कर सारी बातें खोलकर सबके सामने रख दीं। इसके साथ ही घर की अधिकतर औरतें—आजी, अम्मा और बड़ी अम्मा को छोड़, दोनों काकियाँ, तीनों भौजाइयाँ, पहले तो सबकी सब 'हि-हि-हि-हि खि-खि-खि-खि' हँसी की बेसाख्ता फुलझड़ियाँ छोड़ीं, किंतु तुरंत बाद कई "ई हरामजादा रमनिवसवा, ओ के माटी लागो...ऊ मटिलगना रजकिसोरवा, ओ के पिलुआ पड़ो, ऊ मुतपियना बलिया, दोगला नगिन्दरा, सुर्तवल्ला तुमनथवा..." जैसी एक से बढ़कर एक फूहड़ गँवई गालियों के पटाखे छोड़ने लगीं। बड़ी अम्मा बोली, "हो लेने दे बिहान, तब एक-एक हरामखोर की ख़बर लेती हूँ।... ले आ रे वैदेहिया (बहिन वैदेही), जा ज़रा जल्दी पानी ले आ, बचवा का मुँह-हाथ धो दूँ। और तू बहू! तनी ठंडा तेल लेकर आ, इसके सिर में मल दूँ।...दुष्टों ने मिलकर मेरे लाल को बुरी तरह डरा-रुला दिया। एकदम से अधमरा करके रख दिया हरामियों ने। तू घबरा मत बचवा, देख लेना, कल सबको उनके किए का मज़ा चखा के छोड़ूँगी। ई लुच्चे अपने आप को समझते क्या हैं? भला देखो इनकी हरमजदगी!" बड़ी अम्मा और आजी देर तक भन्नर-भन्नर करती रहीं और वह संभावित मौत के मुँह से सकुशल बाहर आ गया, पूरी तरह महफूज, बेख़ौफ़, सही-सलामत।

नासमझी की ग्लानि

अब वह थोड़ा और बड़ा हो गया। संभव है दर्जा आठ तक की बेसिक कक्षाएँ पास कर चुका हो। दरवाज़े पर उसके काका थे, भैया थे, आये दिन बैठकी करने वाले दो-तीन सदस्य मोहल्ले के थे और सबके साथ वह भी था। हाँ, प्रतिदिन रहने वला गाय-भैंस का चरवाहा खुरचन उस दिन नहीं था। शायद वह बीमार था या किसी अन्य वजह से छुट्टी पर था। भैंस के घूम-चरकर दरवाज़े पर लौट आने का समय हो गया था। सूर्यास्त होने में अब बहुत देर न थी। अतः नदी किनारे जाकर भैंस को हाँक ले आने का काम उसे भैया द्वारा सौंप दिया गया।

वह हाथ में एक सोटा लिया और भैंस को हाँक ले आने के लिए चल पड़ा। नदी-किनारे से सटी परती (मैदान) में गाँव की पचासाधिक भैंसें अपने छोटे-बड़े पड़रुओं (बच्चों) सहित आ गई थीं, जिनके साथ उनके अपने-अपने चरवाहे भी थे। अब वहाँ पहुँचकर अचानक बहुत चक्कर में पड़ गया। भैंसों के विशाल झुंड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में वह अपनी वाली भैंस को पहचान ही नहीं पा रहा था! इस बाबत वहाँ किसी चरवाहे से दरयाफ्त करना भी अपनी बेहद बेवकूफ़ी का परिचय देना था। ऐसी स्थिति को अपनी गँवई भाषा में घनचक्कर, महा घनचक्कर बोलते हैं, जिसका वह बुरी तरह शिकार हो चुका था। वह थोड़ी देर तक इधर-उधर तजबीज करता रहा और अंत में निराश-हताश हो, दरवाज़े पर न जाकर रोनी सूरत लिए घर भाग आया— 'भाड़ में जाय भैंस ढूँढ़ना-पहचानना!'

दरवाज़े से कुछ दूर बनी औरतों वाली हवेली में आकर वह एक अंधेरे कमरे में पड़ी चारपाई पर पसर गया। रोज़-रोज़ की देखी अपनी ही भैंस को वह नहीं पहचान सकता, यह महसूस कर वह बहुत दुखी था, ग्लानिजन्य पीड़ा से मर्माहत था। ऐसा नासमझ बेवकूफ़ लड़का तो शायद ही कोई दुनिया में हो, जो अपनी गाय-भैंस तक न पहचान पाये, अपने खेत-बधार न चीन्ह सके! उसे तो किसी जमींदार-किसान के घर जन्म ही नहीं लेना चाहिए था। यही सब सोच-सोचकर वह रोने लग गया, पहले सुबक-सुबककर, फिर फफक-फफककर। यह निश्चित है कि उससे गाय-भैंस की चरवाही न होगी, खेती-बारी न हो सकेगी, वह तय कर उठा। तो? तो बैठे-ठाले ज़िंदगी भर उसे खिलाएगा कौन? घर तो घर, ऐसे में गाँव वाले ही उसका जीना मुहाल कर देंगे। फिर तो एक ही रास्ता है! ख़ूब तहेदिल रात-दिन पढ़ाई करना और पढ़ाई के बल पर कोई खाने-जीने भर की नौकरी ढूँढ़ लेना। वह घंटों यही सब सोचता रहा। सोच-सोचकर रोता रहा।

उधर भैंस दरवाज़े पर अपने आप पहुँच चुकी थी। उससे काका, भैया किसी ने भी पूछा नहीं, कि अब तक वह कहाँ रहा! भैंस को लेकर क्यों नहीं लौटा? हाँ इस मामूली घटना ने उसकी दुनिया ज़रूर बदल दी। उस दिन से वह हर घड़ी मन लगाकर पढ़ने लगा और आगे चलकर महाविद्यालयी शिक्षक बन गया। पत्र-पत्रिकाओं में लिखने वाला छोटा-मोटा लेखक बन गया। फिर कालांतर में व्यंग्य, उपन्यास और महाकाव्य आदि लिखकर साहित्यकार कहलाने लगा। अगर आप उसे कृपाकर कालीदास का साम्प्रतिक लघु संस्करण कह सकें, मुझे अपार प्रसन्नता होगी। वैसे इस 'छोटे मुँह बड़ी बात' के लिए क्षमा चाहूँगा।

जब वह आख़िरी बार पागल बनते-बनते बचा

कोई माने या न माने, किंतु अधिकांश की तरह मेरा भी मानना है कि हर जीव नियति-नटी का खिलौना है। जीवन धारण करने से लेकर मृत्यु के मुँह में जाने तक कुछ भी उसकी सामर्थ्य का नहीं है। हम झूठे इस मुगालते में जीते हैं कि हमने ऐसे यह कर लिया, वैसे वह कर लिया। अपने बुद्धि-बल-ज्ञान या कर्म से यह रण जीत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिया, वह क़िला फ़तह कर लिया। इस नकारात्मक भीरु सोच के लिए आप मुझे निरा भाग्यवादी कह सकते हैं। किंतु मेरे लिए ऐसा है तो है। भई मुझे तो यह कथ्य कि 'मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है' सुनकर हँसी आती है। गीता का '...मा फलेषु कदाचन' नियति ही तो है! कहने का तात्पर्य यह कि किसी भी व्यक्ति के साथ कब-कैसा-क्या हो जाएगा, कब उसे नियति आकाश में पहुँचा देगी, कब रसातल में भेज देगी, वह नहीं जानता।

तो एक बार उसे नियति ने इस कदर डरा दिया, कि उस डर के सदमे से वह पूरी तरह आज तक उबर न सका। यह वाकया बीसवीं सदी के आख़िरी दशक का है। अब साल का सही सन मुझे याद नहीं। वह अपने सहयात्रियों—डॉ. द्वारिका नाथ राय, डॉ. राम ललक यादव, दयाराम राय तथा वीरेन्द्र राम आदि के साथ कोलकाता, गंगा सागर, जगन्नाथ पुरी तथा भुवनेश्वर की यात्रा पर था। चूँकि घटना गंगा सागर में घटी, अतः शेष स्थानों की यात्रा का इस आलेख से कोई संबंध नहीं है।

वह सबके साथ कोलकाता से गंगा सागर पानी वाली जहाज से शाम के समय पहुँचा था। रात को कहाँ डेरा डालना है, इसकी जानकारी यात्री-दल के अगुआ सिर्फ़ डॉ. द्वारिका नाथ को थी। ठहरने की जगह बहुत अच्छी तो नहीं, किंतु बुरी भी न थी। खाने-पीने, सोने-बैठने तथा शौचालय आदि की व्यवस्था काम चलाऊ थी। ख़ैर, किसी तरह उसे रात बितानी थी और यथासंभव शीघ्र सवेरे शौचादि से निवृत्त हो सबके साथ समुद्र में स्नान करना था।

सुबह अपने यात्री-दल के साथ समुद्र के निकट पहुँचने पर उसने अपार भीड़ देखी। स्त्री-पुरुष, बूढ़े, जवान तथा बच्चों की दूर-दूर तक अथाह तादाद। जिधर देखो, सिर्फ़ सिर ही सिर। इस समय तक सुदूर आसमान में सूरज झाँकने लगा था। किंतु अभी ठंड में कमी तनिक न आ सकी थी। उसने सोचा, क्यों न वह सबके बाद में स्नान करे, जब थोड़ी धूप आ जाए, गर्मी बढ़ जाए।

अपने-अपने शरीर से सभी पहने-ओढ़े कपड़े निकालने लगे, जिनकी निगरानी, जब तक वे नहा-धोकर लौट नहीं आते, उसके जिम्मे थी। जब सभी आगे-पीछे स्नान कर वापस लौटे, वह भी नहाने के लिए तैयार होने लगा। कच्छी छोड़ सभी कपड़ों को शरीर से बाहर निकाल वह भी जल्दी ही समुद्र में प्रवेश कर गया।

गंगा सागर में समुद्र का पानी दूर-दूर तक काफ़ी छिछला है। पचास मीटर तक चलते चले जाइये, कमर भर पानी नहीं मिलेगा। ऊँची-ऊँची लहरें भी रामेश्वरम या पुरी की तरह नहीं उठा करतीं।

काफ़ी आगे तक न पानी में गहराई है, न स्वच्छता है। ऐसा लगता है जैसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसी बस्ती के पास अभी-अभी पहुँचा बाढ़ का पानी हो। अब यह स्थिति उसे पहले से तो मालूम थी नहीं। वह कुछ अधिक गहरे पानी की लालच में आगे बढ़ता चला गया और चलते-हेलते काफ़ी दूर निकल गया। जब जाँघ से भी ऊपर पानी नहीं पहुँचा, वह विवश हो वहीं बैठकर नहाने लगा। सिर से पाँव तक शरीर को हाथों से रगड़-रगड़कर वह जल्दी-जल्दी दो-तीन डुबकियाँ लगाया और वापस लौट पड़ा।

असली भीषण समस्या अब आई। यकायक लगा, मारे भय और आशंका के उसके प्राण निकल जाएँगे। भारी भीड़ के बीच उसके सहयात्री किधर-कहाँ खड़े हैं, उसे पता ही नहीं चल रहा था। जबकि किंकर्तव्य विमूढ़ वह एकदम नंगे शरीर सिर्फ़ कछिया पर था। उसे यह भी पता नहीं था कि वह सबके साथ रात को कहाँ, किस स्थान पर ठहरा था! उस अस्थायी पंडालनुमा आवास और जगह का नाम क्या था। किसी से पूछकर पता भी लगाये तो किस तरह, क्या बताकर! जबकि वह पूरी तरह वयस्क था, महाविद्यालयी एसोसिएट प्रोफ़ेसर था। ऐसा सोच उसके दिल की धड़कन बढ़ गई। लगा, वह खड़े-खड़े गश खाकर गिर पड़ेगा, पागल हो जाएगा। ऐसे हालात में कपड़ा तो कपड़ा, पैसे भी तो उसके पास नहीं रह गए थे।

किंतु यह असहनीय संकट, हौलनाम हादसा दो-तीन मिनट से ज़्यादा न टिक सका। वह जिस सीध में आगे बढ़कर इत्ती दूर पहुँचा था, अंदाज़न उसी सीध में हिम्मत बाँधे धीरे-धीरे वापस लौटने लगा। जब समुद्र के किनारे की सूखी धरती बमुश्किल दस-बारह मीटर दूर रह गई, अचानक वह दोनों हाथ उठाकर फूट पड़ा, "जय श्री राम!" असल में उसके कुछ साथी तभी दिखलायी पड़ गए। फिर तो उन्हें पहचानते ही उसकी जान में जान आ गई। मन-मस्तिष्क की क्षिप्र छटपटाहट शिथिल पड़ गई। लगा, जैसे किसी धूँ-धूँ जलती बहु मंज़िली इमारत से वह महफूज बाहर निकल आया हो। जैसे-जैसे पानी कम होता गया, उसके बढ़ते क़दम तेज़ होते गए और वह शीघ्र ही अपने साथियों के समीप पहुँच गया।

वह क्षणिक किंतु ख़ौफ़नाक मंजर टल तो ज़रूर गया, मगर उसके विक्षिप्त दिल की धक्-धक् को सामान्य होने में घंटों लग गए। और सच पूछिए तो उसका ज़बरदस्त असर आज भी उसकी जेहन में तारी है। उसे जब-तब आज भी उसके झटके आ जाया करते हैं। उसे आज भी ऐसे सपने दिखलाई पड़ जाते हैं कि वह किसी अनजान जगह की घनी वीरान बस्ती में, बस्ती की टेढ़ी मेढ़ी गलियों में, किसी भीड़ भरे बड़े शहर में या बीहड़ घने जंगल आदि में भटक गया है, रास्ता भूल गया है। उसे समझ में नहीं आता है कि अब वह क्या करे, कैसे अपने आवास तक पहुँचे! और तभी अचानक उसकी नींद खुल जाती है, वह ख़ुद को अपने शयन-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कक्ष में पा जाता है। और जब भी ऐसा होता है, उसे गंगा सागर वाली घटना ज़रूर याद आ जाती है।

और आख़िर में

डरने-भूलने अथवा किसी बात या व्यक्ति से सशंकित होने से जुड़ी कुछ और उल्लेखनीय घटनाएँ उसकी स्मृतियों में हैं, जिनका ज़िक्र करना आपके लिए ऊबाऊ, पृष्ठपेषण हो सकता है। मसलन एक बार ऐसा लगा, जैसे उसे किडनैप कर लिया गया है। वह भी उसके ही आवास से उसे बाहर बुलाकर। किंतु वास्तव में ऐसा था नहीं। वह सिर्फ़ उसका वहम था। महज पंद्रह-बीस मिनट बाद ही उसे कार से सादर उतार दिया गया। कार वालों को किसी के घर की जानकारी करनी थी। किंतु थोड़ी देर के लिए ही सही, जब उसे बिठाकर कार के काले ग्लास वाले सारे दरवाज़े बंद कर दिए गए, तब दिल की धड़कन तो उसकी बढ़ ही गई थी। क्योंकि कार वाले तीन या चार, सबके सब उसके लिए अपरिचित थे। उसे लेकर गाड़ी स्टार्ट करने से पूर्व, उनमें से दो, एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराये भी थे। उनकी रहस्यपूर्ण लगने वाली मुस्कान ने ही उसे बेतरह डरा दिया था।

इस तरह की कतिपय घटनाओं का असर कहिये या कुछ बुढ़ापे का तकाजा, आज इस बहत्तर वर्षीय उम्र में वह कहीं दूर की यात्रा अकेले करने में एकदम असमर्थ है। वह हमेशा ख़ुद को डरा हुआ महसूस करता है। कहना चाहिए, वह खौलते दूध से कई-कई बार इस कदर जल चुका है कि ठंडा छाछ पीने से भी मुकर जाता है। किंतु मेरा यक़ीन मानिए, वह ज़रा भी पागल नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह कब कहा?

—"जीव-हिंसा बहुत बड़ा पाप है। आख़िर किसी को काटने से हमें मिलता क्या है! बेचारा जीव तड़फड़ाकर मर जाता है।" पहले साँप ने दूसरे साँप को समझाया।

—"बात तो एकदम ठीक कहते हो भाई, किंतु मैं पूछता हूँ, हमें देखते ही लोग मारने क्यों दौड़ते हैं?" दूसरे ने प्रतिवाद किया।

—"इसलिए कि हम बिना मतलब, अकारण उन्हें काटते हैं। वे हमें अपना काल समझ बैठते हैं।"

—"इसका मतलब तो यह हुआ कि यदि हम उनको काटना छोड़ दें, तो वे भी हमें नहीं मारेंगे।"

—"बेशक हमें नहीं मारेंगे।"

और उस दिन से दूसरे साँप ने भी, किसी को भी न काटने की कसम खा ली।

आषाढ़ की उमस। शाम के क़रीब पाँच बज रहे होंगे। मारे गर्मी के परेशान दूसरा साँप हवाखोरी के लिए निकला। अभी वह कुछ ही क़दम आगे बढ़ा होगा कि विद्यालय से चले आ रहे कुछ नटखटी छात्रों ने उसे देख लिया। फिर क्या था! शुरू हो गई उस पर ढेलों की बरसात। सनसनाते-पड़ते ढेलों से बेचारे की पीठ-पूँछ लहूलुहान हो उठी। वह बुरी तरह घायल हो गया। भागते-हाँफते-छिपते किसी तरह उसने अपनी जान बचायी।

यह बुरी ख़बर सुनते ही पहला साँप दूसरे के यहाँ पूछार करने पहुँचा। इसे देखते ही दूसरा घायल साँप मारे क्रोध के उबल पड़ा। कहा, "भाई, तुम तो मेरी जान लेने पर ही तुल गए। तुम्हारी ऐसी दोस्ती से मैं बाज आया!"

—"अरे यार, बात क्या हुई, ज़रा मैं भी तो सुनूँ।"

—"सुनोगे क्या, मैं चुपचाप टहलते हुए चला जा रहा था, कि कुछ लड़कों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने अचानक मुझ पर ढेलेबाजी शुरू कर दी। मेरे शरीर की हालत तुम देख ही रहे हो। फिर पूछते हो बात क्या हुई! अब मैं तो तुम्हारी एक न सुनूँगा। तुम यहाँ से जा सकते हो!''

—''अरे मेरे भाई! मैंने तुमको न काटने की सलाह ज़रूर दी थी, पर यह कब कहा कि संकट पड़ने पर फुँफकारना भी नहीं? अरे एक बार फुँफकार कर दौड़े होते तो देखते, सारे के सारे बच्चे मारे डर के भाग खड़े होते।''

क्षण भर में ही दूसरे साँप को भी बात समझ में आ गई। उसने सिर झुकाकर अपनी ग़लती स्वीकार कर ली।

तभी से संसार में साँपों की एक ऐसी जाति पैदा हुई, जो ज़्यादा फुँफकारती है, जान जाने के ख़तरे की स्थिति में ही किसी को काटती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

औकात

दोनों खेल रहे थे। जब भी पिंकू जेब से टाफी निकाल कर मुँह में डालता, कल्लू की ललचाई नज़रें उस पर अटक जातीं। आख़िर कल्लू से नहीं रहा गया। वह फूट पड़ा, "एक हमें भी दो ना!"

"हाथ फैलाओ।" पिंकू ने कहा, किंतु टाफी उसके हाथ के पास ले जाकर अपने मुँह में डाल ली।

कल्लू ने हाथ नीचे कर लिए। उसका चेहरा लटक गया।

"अच्छा मुँह फैलाओ, ज़रूर दूँगा।"

"जाओ तुम बड़े वो हो!"

"कहा न, ज़रूर दूँगा। ज़रूर-ज़रूर-ज़रूर दूँगा।" कल्लू ने मुँह फैला लिया।

"थोड़ा और फैलाओ, आँ-हाँ। अब आँखें बंद कर लो।"

कल्लू ने सब कुछ किया, पर टाफी उसके मुँह में न जाकर इस बार भी पिंकू के मुँह में ही गई। ऐसा देख कल्लू की आँखों में आँसू तैरने लगे और पिंकू के ठठा-ठठाकर हँसने पर तो वह सिसक-सिसककर रोने भी लगा।

"क्यों वे, टाफी खाएगा। अच्छा ले...आ-आ-आ... चु-च्चू-च्चू।"

मुँह में भर आए लार को कल्लू गटक गया और उसने अपने घर की राह ली।

पिंकू को ऐसा लगा, मानो उसके फुटबाल की हवा निकल रही हो। वह जायकेदार टाफी को हथेली पर लिए तेज़ी से कल्लू के पास पहुँचा, "क्यों बे कलुआ! नाराज हो गया?"

कल्लू ने पिंकू के हाथ झटक दिये और टाफी दूर जा गिरी। फिर तो मार-पीट, गुत्थम-गुत्थी। तभी एक संभ्रांत महिला घर से बाहर निकली और तड़-तड़-तड़, एक साथ कई चांटे कल्लू पर बरस पड़े। वह वहीं पसर गया।

"तुम्हारी ये मजाल कि मेरे बेटे पर हाथ उठाओ। अपनी औकात नहीं देखता! अगर टाफी ही खाना था, तो किसी बड़े घर में पैदा हुआ होता।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुधार में सहयोग

भरतपुर गाँव से क़रीब कोस भर पश्चिम वन-प्रांतर में एक विशाल और भव्य मंदिर अवस्थित था। सघन कुंज मध्य उसकी दुग्ध धवल गगनचुंबी चोटी बहुत दूर से ही लोगों को आकर्षित करती थी। मंदिर पर स्थायी रूप से सर्वानंद नामक एक महात्मा रहा करते थे। उनका व्यक्तित्व अत्यंत मोहक था। अपने उदात्त व्यवहार एवं शहद मिश्रित वाणी से वे किसी का भी मन जीत लेते थे।

ग्रामवासी एवं पुर-प्रतिवेशी प्रति दिन मंदिर पर अर्चन-दर्शन के लिए आया करते। इधर कुछ दिनों से वहाँ जयनाथ भी आने लगा था। वह गाँव में जुआ खेलने तथा चोरी करने के लिए कुख्यात था। धीरे-धीरे लोगों के द्वारा सर्वानंद जी को भी उसके इस स्वभाव की जानकारी मिली। किंतु उन पर इसका कोई प्रभाव देखने में नहीं आया।

एक दिन जयनाथ ने चुपके से मंदिर के उस कक्ष में प्रवेश किया, जिसमें ढोल, झाल, तबला तथा हारमोनियम आदि वाद्य-यंत्र रखे हुए थे। उसने सर्वानंद जी की पगध्वनि को सुनते ही हाथ में उठाई झाल को ज्यों का त्यों यथास्थान रख दिया तथा यह कहते हुए बाहर निकल आया, ''सब जगह छान मारा, गांजे की मेरी चिलम ही नहीं मिल रही है। पता नहीं, किसने कहाँ रख दी है!''

सर्वानंद जी ने जयनाथ को झाल उठाते हुए देख लिया, किंतु कुछ बोले नहीं। वे जयनाथ से देर तक धर्म-आध्यात्म तथा व्यवहार आदि की बातें करते रहे। समझाते रहे कि जीवन क्षण-भंगुर है और यहाँ से सब कुछ छोड़कर ही जाना है। जब जयनाथ घर लौटने लगा तो बोले, ''बच्चा! मेरे पास एक बड़ी-सी फूल धातु की क़ीमती झाल है, जिसे कोई बजाता नहीं। बेकार पड़ी है। कई दिनों से सोच रहा था कि तुम्हें दे दूँ। तुम्हारे बच्चे खेलेंगे। किंतु समय पर याद ही नहीं रहता था। इसे आज लेते जाओ।'' सर्वानंद जी ने झाल को ले आकर बलपूर्वक जयनाथ के हाथ में पकड़ा दिया।

जयनाथ आश्चर्य चकित था। वह रास्ते भर बाबा की इस उदारता पर सोचता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहा। उसने घर आकर यह बात पत्नी को भी बतलाई। पत्नी ने जयनाथ को बड़ा समझाया कि वह चोरी करने की आदत छोड़ दे। और जयनाथ ने उस दिन से चोरी न करने की कसम खा ली।

कहावत है 'लगी लगन छूटे नहीं, जीभ-चोंच जरि जाय'। अभी साल भर भी नहीं बीता कि जयनाथ कसम खाने वाली बात भूल गया। इस बार उसकी नज़र मंदिर में लटक रहे विशाल घंटे पर थी। सर्वानंद जी के पास वह पुनः जाने-बैठने लगा। और एक दिन रात्रि के निविड़ अंधकार में घंटा ग़ायब हो गया।

अगले दिन जयनाथ की इच्छा न हुई कि वह मंदिर पर जाए। किंतु यह सोचकर कि उसके न जाने का लोग ग़लत अर्थ लगाएँगे, वह चल पड़ा। उसे दूर से ही कुछ आवाज़ें सुनाई पड़ीं—

पहला—"मुझे लगता है, यह काम जयनाथ का ही हो सकता है"

दूसरा—"जयनाथ के सिवा दूसरा कर ही नहीं सकता। यह दुस्साहस किसी और वे वश का है भी नहीं।"

तीसरा—"और जयनाथ को पूजा-पाठ से क्या मतलब। वह तो घंटा चुराने की नीयत से ही यहाँ आता था।"

सर्वानंद तो जानते ही थे, फिर भी वे बोले, "आप लोग कुछ भी कहें, किंतु मुझे जयनाथ पर रत्ती भर भी संदेह नहीं। बिना किसी आधार-प्रमाण के आप लोगों को ऐसी बातें मुँह से नहीं निकालनी चाहिए। पहले वह जैसा भी रहा हो, किंतु अब जयनाथ निहायत सज्जन बन चुका है। उस पर इस तरह कीचड़ उछालना अच्छी बात नहीं। यह किसी बाहरी आदमी का ही काम हो सकता है।"

सभी ग्रामीण चुप हो गए। वे सर्वानंद जी की सरलता पर सोचते हुए अपने-अपने घर की ओर चले। लोगों के बाहर निकलने के साथ ही जयनाथ ने मंदिर में प्रवेश किया। सभी लोग हैरान थे। उन्हें महात्मा जी की बातों पर काफ़ी कुछ विश्वास होने लगा।

इधर सर्वानंद जी को देखते ही जयनाथ उनके चरणों पर ढेर हो गया। रोते-रोते उसकी घिग्घी बंध गई। महात्मा जी ने उसे छाती से लगाकर ढाढ़स बंधाया। सिर सहलाते हुए स्नेह से कहा, "बेटा! तुम्हारा इसमें रंचमात्र दोष नहीं। दोषी तुम्हारा संस्कार है। इस दोष परिहार के लिए तुम नियमित सत्संग करो। इस अपनी बलिष्ट काया से ख़ूब खटकर ईमानदारी के साथ कमाओ और ऊपर वाले को याद करते हुए मौज उड़ाओ।"

घंटा उसी दिन पुनः मंदिर में लटक गया। जयनाथ पूरी तरह आदमी बन गया। अब गाँव के लोग उसकी इज़्ज़त करने लगे। वह सर्वानंद जी का शिष्य बन, प्रतिदिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंदिर की साफ़-सफ़ाई करने लगा। और सर्वानंद जी के गोलोक वासी होने के बाद, ग्रामीणों द्वारा उसे मंदिर का प्रमुख पुजारी बना दिया गया।

वस्तुतः अच्छा, बिगड़ते-बिगड़ते बहुत बुरा बन जाता है, ठीक उसी तरह कोई बुरा बनते-बनते सुधर भी जाता है, अति सामान्य से महान तक बन जाता है। अतः पवित्र वातावरण के निर्माण में अपेक्षित सहयोग, हम सबका बहुत बड़ा दायित्व है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यतीम

शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहा था, "...मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जितना संभव हो सके, ग़रीबों पर दया करनी चाहिए। अनाथों, बेसहारों की मदद करना हमारा परम कर्तव्य है। तुलसी दास जी ने लिखा भी है, 'पर हित सरिस धर्म नहिं भाई'। अच्छा आज इतना ही..."

"मान्यवर! क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"

"हाँ-हाँ, आओ।" अनुमति पाते ही भिखारी अंदर दाखिल हुआ। दुबला-पतला शरीर। उलझे-सूखे बाल। फटे-पुराने कपड़े। मुरझाया चेहरा। सिर से पाँव तक ग़रीबी का आलम।

"आज से आठ वर्ष पूर्व मेरे पिता जी अचानक एक सड़क दुर्घटना में चल बसे। तभी से एक जवान बहिन तथा अंधी माँ का बोझ मेरे सिर पर है। इस निहायत यतीम के लिए आप ही जैसे लोगों का आसरा है, सहारा है। आप सबकी मामूली मदद से इस यतीम का...ईश्वर आप सबका भला करे।" वह हाथ जोड़कर एक साँस में गिड़गिड़ाया।

पूरी कक्षा करुण रस में डूब गई। शिक्षक के सामने रखी मेज़ पर रुपए, दो रुपए, पाँच रुपए, फटाफट गिरने लगा। शिक्षक ने भी एक दस रुपए का नोट उसमें मिलाया और पलक झपकते तैंतालिस रुपए हो गए।

शिक्षक प्रतिदिन विद्यालय पैदल ही चला जाता है। किसी कारणवश आज उसे देर हो रही थी। वह एक रिक्शे वाले से पूछ बैठा, "कीर्ति नगर का कितना लोगे?"

"दस रुपए।"

"किंतु वहाँ तक तो मैं चार रुपए में ही कई बार जा चुका हूँ। तुम अधिक से अधिक पाँच ले लो।" अभी शिक्षक पूछ ही रहा था कि अचानक एक सूटधारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युवक रिक्शे पर सवार हो गया। वह सिगरेट पी रहा था। वी.आई.पी. मार्का धुआँ उछालते हुए बोला—"चलो मुझसे दस ले लेना"

रिक्शा आगे बढ़ चला। युवक पीछे मुड़कर मुस्कराया, "मास्टर जी, नमस्ते!"

"अरे तुम?" कहते हुए शिक्षक हक्का-बक्का रह गया। यह वही यतीम था, जो पिछले दिन कक्षा में गिड़गिड़ाकर भीख माँग रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरा कुसूर क्या है?

भगवान शंकर के त्रिशूल पर आसीन नगरी अविनाशी–काशी में, टिड्डी दल की भाँति, विशाल जन समूह उमड़ पड़ा था। ग्रहण का पर्व था। जाह्नवी के पावन जल में स्नान हेतु लोग प्रत्यूष काल से पूर्व तड़के ही चल दिए थे—अपने–अपने पापों की गठरी को विसर्जित कर देने।

इसी भीड़-समुदाय का एक सदस्य मैं भी बनने चला। रोशनी बुझाई और पुस्तक–पुस्तिकाओं को अस्त–व्यस्त, ज्यों का त्यों छोड़कर चल दिया। नहाने की इच्छा से, या यूँ कहिए भीड़ के दर्शनार्थ भी। सोचा साथ में सहपाठी प्रकाश को भी ले लूँ। मेरी आहट पा उसने दोनों हाथों को पैर के बीच और पैरों को यथासंभव पेट के अंदर समेट, निद्राधीन होने का अच्छा–सा स्वाँग बना लिया। आख़िर वह क्यों जाएँ! आधुनिक भौतिकवादी स्टूडेंट जो ठहरा। मैंने भी ज़बरदस्ती जगाना उचित न समझा और अकेले ही निकल पड़ा।

भगवान भास्कर प्रातःकालीन अंगड़ाई लेते हुए अलसाई मुद्रा में मन्थर गति से आकाश पर छाये कुहरों से उलझते हुए आगे बढ़ रहे थे। शरद ऋतु का ठंड से भरा पवन उस दीर्घ पथ पर शरीर में कँपकँपी पैदा कर रहा था। कालोनी पार कर सड़क पर आया। देखा, बूढ़े, बच्चे और वयस्क सभी चले जा रहे थे। कुछ सुदूर ग्रामों से आई स्त्रियाँ पैदल, तो कुछ अधेड़-बूढ़ी बैल गाड़ी या रिक्शे पर बैठ, बैलों के गले की घंटियों के मधुर स्वर में अपने ग्राम्य–गीतों का आलाप मिला रही थीं—
'भोर भइलऽ विहान हो–ऽ, जाग–जागऽ ए रघुवर!'

भीड़ के साथ अभी कुछ ही दूरी तय की थी कि एक टैक्सी कुछ तीव्र गति के साथ आई और अचानक रुक गई। पीछे मुड़कर देखा, साथ ही किसी के मुँह से सुना, "अरे, यह तो लगता है, किसी का ऐक्सीडेंट हो गया!"

फिर तो तत्काल में दौड़ पड़ा और पास पहुँचकर बालिका के सिर–कपोल को अपने तौलिए से कस कर बांध दिया। अब तक काफ़ी लोग पहुँच चुके थे। भीड़ में सभी दब्बू टाइप के देहाती ही जान पड़ते थे, केवल तमाशा देखने वाले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ड्राइवर बकवास कर रहा था, "आँख और कान बंद करके चलते हैं। दिमाग़ तो इनका ताक पर था...अब जीवन भर याद रहेगा।"

ड्राइवर की बकबक अब और अधिक न सुन सका। एक तो चोरी, दूसरे सीना ज़ोरी। पास पहुँचकर उसे कस के दो-तीन थप्पड़ मारा। फिर क्या था! मारो-मारो, और मारो का शोर मच गया। ड्राइवर भुनभुनाते हुए जल्दी से गाड़ी में बैठा और उसे तुरंत स्टार्ट कर भाग निकला।

चोट अधिक नहीं थी। एक झटका-सा लगा था। सिर का थोड़ा भाग सड़क पर गिरने के कारण फट गया था। एक गाल का ऊपरी हिस्सा भी रगड़ खाकर लाल हो गया था। धीरे-धीरे लोग तितर-बितर हो गए। बालिका अब होश में आ गई थी। कुछ पलोपरांत अब मैं चलने को हुआ। एक बूढ़ी औरत जो कदाचित घायल बालिका के साथ थी, कहा—"बेटा! अपनी तौलिया तो कम से कम लेता जा। वह माँ धन्य है, जिसकी गोद तूने उजागर की है। भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।"

"तौलिए को ऐसे ही कुछ देर तक और बंधी रहने दीजिए। फ़िलहाल इसकी मुझे कोई ख़ास ज़रूरत नहीं है। फिर किसी की ज़िंदगी से बढ़कर यह तौलिया नहीं हो सकती। मेरा काम इस तौलिया के बग़ैर भी चल जाएगा।"

वह घायल बालिका, जिसका सौम्य चेहरा बादल से घिरे चाँद की भाँति धूमिल हो गया था, विस्फारित नेत्रों से मुझे एकटक निहार रही थी और मैं चल पड़ा था, कुछ पाकर कुछ खोकर।

सरलता की वह सौम्य मूर्ति आँखों के सहारे मेरे हृदय में उतर गई थी। विदा होते समय का वह रूप, उसकी अपलक चितवन मेरी आँखों के सामने ज्यों की त्यों थी। सच पूछिए तो यह कल्पना भी मेरे मस्तिष्क में उभर आई, 'काश! मेरी जीवन संगिनी भी ऐसी ही होती!' किंतु मेरे यहाँ तो तिलक प्रथा थी, सजातीय विवाह का रिवाज था और साथ ही, घनघोर पर्दा परंपरा का परिपालन भी। मेरी घर वाली कैसी होगी, यह तो भाग्य पर ही निर्भर था। जबकि मेरी शादी तय हो गई थी। मैं बेच दिया गया था, चंद चाँदी के टुकड़ों पर। मेरे दहेज विरोधी आदर्श को चुनौती दे दी गई थी।

जीवन का एक महत्त्वपूर्ण महोत्सव, यानी ख़ुशियों से भरी-पूरी शादी, संपन्न हो चुकी थी। किंतु घर की चहल-पहल कुछ ख़ास कम न हुई थी। घर दहेज से भर गया था—कुर्सी, टेबल, सोफा, पलंग, आलमारी, बक्से, अटैचियाँ और उसके अंदर रखे भाँति-भाँति के कपड़े, खिलौने, तस्वीरें व पुस्तकें आदि-आदि। औरतों तथा छोटे बच्चों का तांता-सा लगा था। घर की एक औरत का काम आए हुए सामानों को दिखाना फिर यथास्थान सहेजना, जो आए उसे बैठाना तथा यथोचित आदर-सत्कार करना था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बार्धक्य की चिंता से मुक्त बूढ़ी महिलाएँ, जिनमें कुछ की आँखों पर बाबा आदम के जमाने का, कनपटी तक तागों से युक्त, एक पर्त धूल से ढंका हुआ अंधा चश्मा है, चली आ रही है। शृंगार-सज्जा से युक्त युवतियाँ छोटे बच्चों को गोद में लिए शालीनता से आ-जा रही हैं। अविलंब यौवन की दहलीज पर पहुँचने वाली उन बालिकाओं का क्या कहना, जो आ गईं, तो जाने का नाम नहीं लेतीं, जब तक कि उन्हें कोई काम याद न आ जाए।

इधर मित्र मंडली के साथ ताश, रेडियो और क़हक़हों के बीच (तब टी.वी. का जमाना न था) मैं शराबोर हो रहा था। सभी अपनी-अपनी हाँक रहे थे। सुनने वालों से सुनाने वालों की संख्या कुछ अधिक ही रही होगी। सबसे कम बोलने वालों में केवल मैं ही सर्वोपरि था।

"अच्छा अब शोर गुल हम लोग थोड़ा कम करें। पिताजी भी यहीं पास वाले कमरे में हैं, वे क्या कहेंगे!" मैंने मैत्री-भाव से कहा।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं। एक से दो हुए। चंद दिनों के बाद दो से चार हो जाओगे। घर के मालिक बनोगे और श्रीमती जी कमर में चाभियों का गुच्छा लटकाए मालकिन कहलाएँगी। अब तो पिताजी की चिंता होनी ही चाहिए। उन्हें तो अब कुछ नहीं करने देना चाहिए, सिवा भजन और भोजन के।" और न जाने क्या-क्या, व्यंग्य भरे शब्दों में, अबाध गति से बहते जल की भाँति प्रकाश कह गया।

क़हक़हों के बीच ये सब बातें वायु में विलीन हो जातीं। परिवार के कुछ सदस्य सुनते, कुछ न सुनते और कुछ सुनकर भी अनसुनी कर देते। ये क्रियाकलाप प्राय: प्रतिदिन के थे और समय होता क़रीब-क़रीब ग्यारह से तीन।

दिन और सप्ताह उलझते चले गए। अप्रैल, मई और जून एक-एक कर सभी समय-चक्र की परिधि पर कर्तव्यरत गुज़र गए। अब जुलाई थी, जो विद्यार्थी-जगत को सुषुप्तावस्था से कर्म-मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर रही थी। स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय सभी खुलने लगे। कोई बनारस, कोई इलाहाबाद (अब प्रयाग) आदि अपने-अपने गंतव्य स्थानों पर चल पड़े। उन्हीं गृह त्यागियों में एक मैं भी था।

छुट्टी जहाँ एक से दो दिन की होती, मैं घर चल देता। मित्र मंडली का अब अभाव था। मस्तिष्क में श्रीमती जी को एक नज़र देख लेने या उनसे दो-चार प्रेम भरी बातें कर लेने की आकांक्षा भी अब ज़ोर पकड़ रही थी। किसी न किसी बहाने दरवाज़े से घर तथा घर से दरवाज़े तक आने-जाने का क्रम भी अब पहले की अपेक्षा तेज़ हो गया था। किंतु, उस समय मेरी सारी आकांक्षाएँ फर्श पर गिरे हुए शीशे की भाँति चूर-चूर हो जातीं, जब मैं बात करना तो दूर, पत्नी को ठीक से देख तक नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाता। विवाह के समय जलाया गया उल्लास-दीपक अब धीरे-धीरे धुंधला होता जा रहा था। कभी-कभी तो अपने ऊपर ही बेहद क्रोध आता, फिर कभी वही दीर्घ निःश्वास, रुढ़िगत दबाव की विवशता। इस प्रकार आवेश और सहिष्णुता का द्वंद्व घंटों चला करता।

पर्दा प्रथा मेरे लिए जितनी पहले अच्छी थी, आज उतनी ही बुरी लग रही थी। क्योंकि इसकी भी एक सीमा होनी चाहिए। यह अन्याय मेरे लिए असह्य हो गया कि गाँव की अधिकांश औरतें जिसे देख चुकीं, अपने घर की सभी औरतें-दादी अम्मा, चाची, भाभी, फुवा, बहने—जिससे बातचीत तक कर चुकीं, उसे अब तक मैं कायदे से देख भी न पाऊँ। जाने कब से चली आ रही यह कुप्रथा कितनी जानलेवा है!

दूध की बाल्टी लिए ज्यों ही मैं घर के अंदर दाखिल होना चाहा, कि सामने से प्रकाश आता हुआ दिखाई पड़ा।

"घर वाली के आते ही कुछ लोगों को घर-बार की चिंता अधिक लग जाती है।" मेरी ओर देखकर मुस्कराते हुए उसने व्यंग्य किया।

"यार मैं तो उसे अभी देखा भी नहीं हूँ।" मैंने अन्यमनस्क भाव से कहा।

"अजी अब नहीं बनोगे तो फिर कब समय आएगा।"

"बन नहीं रहा हूँ यार, सच कह रहा हूँ। मेरा मन इस घर से एकदम उचट गया है। अब जल्दी ही किसी ऐसे सुदूर प्रदेश को जाने वाला हूँ, जहाँ मैं रहूँगा, केवल और केवल मैं। और साथी होंगे, नदी, पहाड़, झरने, वृक्ष और पशु-पक्षी।"

"और वहाँ जाकर ऐसी रचना करो कि महाकवि कालीदास भी पीछे छूट जाए। इतना वैराग्य! वाह रे तुलसी बाबा!! अच्छा फिर कभी, नमस्ते।" कहकर प्रकाश चला गया।

रात काफ़ी खिसक चली थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे किसी ने सब पर जादू डाल दिया हो। गाँव में कुत्ते कहीं-कहीं जगे थे, जो भौं-भौं कर पहरेदार का काम कर रहे थे। समयोपरांत चाँद और उसकी चाँदनी मेरी बेबसी का उपहास करते हुए आलिंगनबद्ध हो गए। चतुर्दिक निविड़ अंधकार छा गया। सोने का असफल प्रयास करने लगा, मगर नींद आने का नाम नहीं ले रही थी। पत्नी से न मिल पाने की मर्मांतक पीड़ा से मेरा युवा मन-मस्तिष्क बुरी तरह आक्रांत था, आहत था।

तभी अनगिन कई करवटों के बीच, अचानक एक श्वेत परिधान में लिपटी हुई स्वप्नपरी-सी युवती सहमते क़दमों में धीरे-धीरे मेरे पास आई और पैताने की तरफ़ खड़ी हो गई। कुछ पल तक खड़ी रही। निष्कंप दीप शिखा-सी एकदम चुपचाप।

मैंने अधिक देर करना उचित नहीं समझा और अत्यंत धीमी आवाज़ में पूछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैठा—"कौन?" इसके साथ ही मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई।

वह अविलंब कटे पेड़ की तरह मेरे पैरों पर गिरकर सिसकने लगी। अपने हाथों से उसे ठीक से बैठाने की कोशिश की। सिर को ऊँचा किया। "अरे यह कौन?" मैं पुनः फूट पड़ा।

वह तुरंत मेरे पैरों को पकड़, फफक-फफककर रो पड़ी। हिचक-हिचककर कहने लगी, "मैं आपकी पत्नी...आपकी दासी! मैं न आती, किंतु आने के लिए विवश हो गई। मैंने खिड़की के सहारे सब कुछ सुन लिया है, जब आप और प्रकाश जी..."

"बस-बस, भगवान के लिए चुप हो जाओ।" मैंने उसके मुँह पर अंगुलियाँ रखते हुए कहा।

किंतु वह मान न सकी। उसके अंदर आज नारी जाति का स्वाभिमान जग पड़ा था। कहने लगी, "मुझको छोड़कर कहाँ चले जा रहे थे? मैं तो एकदम डर गई थी। आख़िर मेरा कुसूर क्या है! जो आप मुझे छोड़ पहाड़-जंगल..." कहते-कहते उसका गला भर आया और वह पुनः हिचकियाँ भरने लगीं। उनके नेत्रों से अविरल अश्रुओं की लड़ी लग गई। माहौल पूरी तरह कारुणिक और ग़मगीन हो उठा।

मेरी दशा एक अक्षम्य अपराधी की भाँति थी। कुछ पल तक स्तब्धता बनी रही। पत्नी के साथ ऐसी पहली (सुहाग) रात दुनिया में शायद किसी की गुज़री हो। फिर मैंने रोशनी जलाई और ज्यों ही उसकी ओर देखा, मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। यह वही घायल बालिका थी, जो काशी की सड़क पर मुझे अचेतावस्था में मिली थी। कनपटी पर घाव का हल्का निशान अब भी वर्तमान था। मैं ठगा-सा रह गया। कुछ देर तक उसे निर्वाक विस्मय के साथ निहारता रहा। मेरा दाहिना हाथ उसकी कनपटी के सूखे घाव को सहलाने लगा।

वह मेरी आँखों में आँखें डाल बोली, "आपकी वह तौलिया भी मैंने आज तक सहेजकर रखी है, जिसे बांध-छोड़कर आप चले गए थे। आप द्वारा प्रदत्त वह अमूल्य उपहार मेरे लिए दुनिया की किसी भी वस्तु से क़ीमती है।"

"सो तो ठीक है, एतदर्थ बहुत-बहुत प्यार, धन्यवाद।" मैंने मुस्कराते हुए बात आगे बढ़ाई। कहा, "आख़िर इसे क्या कहा जाए? महज एक संयोग या कृपा रूपी ईश्वरीय चमत्कार या कोई फ़िल्मी ड्रामा!"

"मैं तो इसे ईश्वर की असीम अनुकंपा ही मानती हूँ। किंतु मुझे छोड़ आप जंगल-पहाड़ चले जाते तो यह अहेतुकी कृपा अभिशाप भी बन जाती। कम से कम मेरे ऊपर तो बज्रपात ही हो जाता।"

मैंने अपने को संयत कर आर्द्र स्वर में कहा, "मेरा भी क्या कुसूर! इस पर्दा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रथा की बुराई से मैं बुरी तरह तंग आ चुका था। माता-पिता, जिन्होंने मुझे जन्म दिया, पाल-पोसकर इतना बड़ा किया, पढ़ाया-लिखाया, का खुला विरोध करना भी मेरे संस्कार के विपरीत था। इसलिए मुझे एक अजीब तनावपूर्ण घुटन-सी महसूस होने लगी थी। यह तो अत्यंत अच्छा हुआ, कि तुमने शीघ्र ही पहुँचकर मुझ डूबते को बचा लिया।'' यह कहते हुए मैंने हर्षातिरेक से विह्वल हो उसे अपने अंक में भर लिया। मेरी पलकें अनायास ही बंद हो गईं। उसने मेरे वक्ष पर अपने सिर को टिका दिया। स्नेह और समर्पण के इस असंभावित आलिंगन ने दोनों को आत्म विभोर कर दिया। उच्छवास और हृदय की धड़कन धीरे-धीरे तिरोहित हो गई। दोनों ने एक-दूसरे को जाना, एक-दूसरे को समझा और वह ध्वनि जिसे किंचित केवल मैं ही सुन रहा था, अब भी मेरे कानों में शंखनाद कर रही थी—'आख़िर मेरा कुसूर क्या है?' किंतु मैं निरुत्तर था।

(इस कहानी की कहानी—यह कहानी तब की है, जब मेरी उम्र बमुश्किल बीस बरस की रही होगी। मैं इंटरमीडियट फाइनल ईयर का छात्र था और मेरी शादी हो चुकी थी। इसके कुछ साल बाद इसी थीम पर आधारित 'मैं चोर हूँ' शार्षक से मैंने एक और कहानी लिखी, जो 'ज्योत्स्ना' पटना में छपी तथा जिसे मैं (कहीं भी छपने वाली) अपनी पहली कहानी मानता हूँ। दरअसल ये दोनों कहानियाँ आज 2020 से 55-56 साल पहले के, मेरे क्षेत्रीय (गाँव-घर) परिवेश का सामाजिक-पारिवारिक इतिहास है—मेरे भोगे हुए जीवन का कटु यथार्थ। 'मैं चोर हूँ' 'अंतिका' से ही प्रकाशित मेरे कहानी संग्रह 'परांत:' में संकलित है।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झूठ क मोटरी

एक भोजपुरी हास्य कथा

(सुना है, उस जमाने में हवाई जहाज का चलन बहुत कम था। सामान हो या मवेशी-आदमी, पानी के जहाज से ही ढोये जाते थे। तो आज से कुछ सौ साल पहले बर्तानियाँ से हिंदुस्तान में एक जहाज आया, जिस पर लाखों टन झूठ लदा हुआ था। उस झूठ को थोड़ा-थोड़ा करके, क्या शहर, क्या क़स्बा और क्या गाँव, पूरे देश में घूम-घूमकर बेंचा गया। उसमें से कुछ झूठ की मोटरियाँ (थैले) मेरे गाँव जोगा मुसाबि में भी आईं। औकात मुताबिक़ सौ ग्राम से किलो भर तक की कई लोगों ने ख़रीदारी की। हमारे शिव प्रसाद दादा ने अधिक दाम देकर झूठ की एक पूरी मोटरी ही ख़रीद डाली। फिर क्या था, आनन-फानन में उन्हें झूठ का नोबुलप्राइज मिल गया। 'झुठवा सिपरसाद' के तखल्लुस से वे समूचे गाँव में नामजद हो गए। हाँ, तब मैं बमुश्किल 12 साल का था और पैसे की कल्लित के चलते, रत्ती भर झूठ भी न ख़रीद सका था। एक ख़ास बात और। अंग्रेज़ों ने उस जहाज में भरे झूठ-फ़रेब को भारत भर में इतना बेंचा, फैलाया, कि उसे समाप्त करने में गांधी जी की जान चली गई। उनके 'सत्य के प्रयोग' का प्रभाव बहुत टिकाऊ न हो सका। ख़ैर, थोड़ा लिखना ज़्यादा समझना, बात बढ़ाने से कोई फ़ायदा नहीं। अब कहानी का ही मज़ा उठाया जाए।)

अथ कथा

ओही दिन हम जानि गइलीं कि झुठवा सिपरसाद बिना बैटरी कऽ रेडियो हउवन, जाहि दिने हम मदरसा ना जाये पवंलीं, आ ऊ हमके बिचही में रोकि लिहलन। सितार बादन क लमहर कार्जक्रम शुरू हो गइल। बीच-बीच में भारतीय रेडियो का समाचार लेखा—'ये आकाशवाणी है', ऊ हो 'जे बा से का बीच में' बोले लगलन। बिना ए (जे बा से का बीच में) तकिया कलाम क-ऽ उनकर कवनों बाति पूरा ना होखे। रस्ता में मिलते ज़ोर लगा के बोललन—"नतिया-ऽ-ऽ-ऽ!"

"पाँव लागीं बाबा!" हम परनाम कइलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तोरा नानी का जेउवां (जुड़वां बच्चे) हो खो।" झट दे आशीर्वादो मिलि गइल।

"सुनिहऽ–सुनिहऽ। निछान (केवल) मदरसा का लेचर (व्याख्यान) से जज-कलक्टर ना होइब–ऽ। अपना ले बड़–पुरान क बातो सुन ले अकिल–गियान होला। हम 'करिया अक्षर भैंस बराबर' कुछ ना पढ़लीं–जनलीं। जे बा से का बीच मे, हमरा से ज़्यादा चेतगर (अक्लमंद) के बा? जब गियान का गगरी से छन–छनके हमरा मुँह से एकहगो रस टपकेला, ओकरा आगे गाइ (गाय) क गोरसो (दूध–दही) फेल हो जाला। नीके बुझिहऽ नाती राम। हम ख़ाली (केवल) तोहसे कहत बानी। आ पढ़ल–लिखल टेढ़की अक्षर वालन के का कहीं! आजकाल टंग पईस (पैंट) चलल बा। हमरा जमाना में पंच पाँच गज क धोती पहिरसु, जेवन ओढ़हु का कामे आवे। आ ए घरी, मति पूछऽ, अब जेवन न हो जा।"

फिलिम का रील लेखाएक का बाद एक चौचक चित्र झुठवा सिपरसाद खींचे लगलन—

"जे बा से का बीच में, जनिहे जे एक दिन जात रहलीं भैंस ले के। मनहिं मन दुर्गा जी क पाठो करत रहलीं—'आगे चले राम रघुराई, पीछ रहलन लछुमन भाई। चलते–चलत पहुँचि गए तहँवा, सुग्रीवहि अनुमत रहे जहँवा॥' तबले एतने में एगुड़ा जहाति ले के आइल, आ हमरा उपरे घुमावे लागल। 'जेबा से का बीच में' जब हमरो पारा नीकन कऽ गरमाइली, तऽ चट देना लाठी तनलीं, आ कहलीं कि हटि जा, ना त मारि के तोहार जहाज बरबाद कइ देबि!

बेचारा लाठी तनते डेरा गइल, आ थर–थर काँपत हाथ जोरि के कहे लागल—'ए बाबू, जाये दीं माफ करीं। ई बताईं। कि दिल्ली के डहरिया (रास्ता) के पड़े जाइ।?"

हमहूँ ओकरा के तिरिछे रास्ता देखा के कहलीं—'हेही दक्खिन–पच्छिम का कोन पड़े निकल जो, नियखलहीं बाड़े।"

"अब हमके मदरसा (स्कूल) जाये के देरी होति बीया बाबा, छुट्टी देतऽत चलतीं।" हम भींजल बिलार लेखा मुँह बना के कहलीं।

"धत् तेरी की, पहिले बतिया त सुनू (एतना कहते उनका मुँह का टुटहा दाँत में से आधा सुरती फर्र–ऽ से बहरा छिटा गइल, आ कुछ हमरो मुँह पर परि गइल), फेरु ऊ कहे लागल, 'ए बाबू साहेब, आईंना जहजिए पर बइठि जाईं। थोरे दूर रस्तवा देखा के चलि आइब। बड़ा करिपा होई। हम रउरा पूत के दादा कहबि।'

जे बा से का बीच में, ओकर मुँह चियारल देखिके हमहूँ जहाजि पर बइठि गइलीं। ऊपर तकलीं (देखा) तऽ तीनों तिरलोक लउके लागल। बरम्हा, बिसुन आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महेस, देवतन का सँगे कबड्डी खेलत रहे। नल, नील, अंगद, हनुमान सब केहू मिलि के, इंदर महाराज के पदावत रहे। तनिकिये दूर हटि के, लक्ष्मी जी, पारबती जी, सीता जी आ सुरसती जी क गोटियो जमकल रहे। रधिका जी ललिता सखी आ किसुन जी का संगे झुलुआ खेलत रहली। रामजी कसरत करत रहलन, आ लवकुश आँखि मुदौवल खेलत रहे। हमरो मन ई कुल्हि देखिके लहालोट हो गइल। हँ, तनी खीसू बरल। जे बा से का बीच में, देखलीं कि सुरुजा, चनरमवाँ, कुबेरवा आ पवनवाँ, चारू गोलिया के तास खेलत रहलन सऽ।"

हम कहलीं, "त काहें ना तूहूँ, जहाज रोकवा के, दू हाथ तसवा खेलि लिहल-ऽ। तूँ त ओह लोगन के हराई देतऽ।"

"सुनु त पहिले। जे बा से का बीच मे, साँझि हो चलल रहे। तबले देखलीं जे लक्षुमन, भरत आ सतुरधन, बड़का परात में, लरकि के, लोटा भर सुद्ध घीव डालिके, ताबड़ तोड़ गूर-सातू मींजत बा। जनिहे जे हमरो जीभि पनियाये लागल। कहलीं कि अब जल्दी रोकु जहाज, तबले एतने में जहाजि भन्न दे लाल किला पर पहुंचि गइल। ओ इ जा गइला पर (दूनों हाथ फइला के) इहे-इहे पूवा, रसगुल्ला, गुलजामुन...।"

एतना कहते, उनका हाथ क सात फूटक भारी-भरकम बड़की लाठी ठक् दे गीरलि। आ हम दूनों हाथे आपन कपार थामि लिहलीं।

"धत तेरी की! तोहके ई लठिये गोला-बरुदि हो गइल! चीन-पाकिस्तान का मोरचा पर तू। का करबऽ? अरे 'जाइ जवानी फेर ना लौटी, केतनो खइब-ऽ घीव-मलीदा' अब का दोहरा के जवान होइबऽ!"

"अच्छा, बतियो बतावऽ" हम मनहिं-मन खिसिया के कहलीं।

"का बताईं! दिल्ली का लाल किला में बाटी, चोखा, सतमेझरा क दाल—तेल-घीव-मसाला वाली, ऊ चउचक, की मुँह से ना छूटे। खात-खात हमार आधा दाँत, ताही दीने टूटि गइल। ना त का हम अजुए बूढ़ भइल रहतीं?"

"तोहरा ले जवान के बा ए बाबा। तूँ त अबहीं वियाह करे लायक़ बाड़-ऽ। तू काहें अइसे गीरल बाति कहत बाड़ऽ" हम उनकर झुरात बाति का फेंड़ा में पानी डलली।

"बियाह के का कहीं नतिया! बक्सर, बलिया, चाहे बनारसे, हमके एगो कनियाँ पसंद ना आइल। पता लगवलीं त कुल्हि-क-कूल्हि मर्दमारनि, एक से बढ़ि के एक झगराहिन! फेर त हम 'सलाम भाइ हाँडी, सलाम भाई पतुकी', बियाह क नावें लेहल छोड़ि दिहलीं। आ अब त उमिरू अधेड़ भइल।...हँ त का कहत रहली हँ? तूँ हूँ, कहाँ क कहाँ, बाति के बियाह में बहका देहले...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...हँ त भउरी-चौखा-दाल, आ ऊपर ले चउचक जाउर, ई कूल्हि खाते, अब हमरा लोटवाँसि आ गइलि। तोसक आ गलइचा लागले रहे। सोचलीं, रहऽ एक नीनि मार लिहीं। एतने में कीलो-कीलो भर क मच्छर आ कुन्तल-कुन्तल भर क चिल्लर (खटमल) हमके काटे खातिर लखेदलन-सऽ। बच्चा, तहिया हमरा देंहि में बड़ा ख़ून रहे। छन्ने भर मे हमार देंहि आधा हो गइल। हम चललिं पराइ, आ एके साँसी घरे आ के दम मरलीं।

...हमरा देहिं में से इगारह गगरी पसीना गीरल। हमरा पसीना से पूरा घर जले-जल हो गइल। दउरी-डाली, खटिया-मचिया आ बक्सा-सनूखि, कूल्हि बहाये लागल।

अतने मे झुठवा सिपरसाद क भइँस, एगो ऊगो ऊखि का खेत में परलि। ऊ हाँकि दउरलन, आ हम जान ले के अपना मदरसा क रस्ता लेहलीं। अबहीं त ई इण्टरभल रहे, पता ना इण्ड कब होइत। इति कथा

आपो बोलीं—'भोजपुरी माई की जै-ऽ'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रत्यावर्तन

वह हर समय लटकता रहता। ध्यानावस्थित योगी की तरह शांत, स्थिर। चाहे अरहर की टट्टी को या इस्पात की तिजेरी, उसके लिए कोई फ़र्क़ नहीं। किंतु बंद करने या खोलने के इरादे से जब साहुकार उसे हाथ लगाता, वह झूम उठता। क्षण भर के लिए पेण्डुलम माफ़िक अनवरत दायें-बायें।

"मैं उसे दिल में प्रवेश कर उसकी सुसुप्तावस्था को जब झकझोरती हूँ, वह जाग उठता है। उसका यूँ डोलना मेरी स्पर्शानुभूति के सुख का ही परिणाम है।" इस बड़बड़ाहट के साथ ही ताली के चेहरे पर एक ख़ुशफ़हम अहंमन्यता पसर गई।

और एक दिन—

"आज आप बहुत तेज़ी से झूम रहे हैं। आख़िर बात क्या है?" ताली पूछ बैठी।

"कहीं बंद होने का ढोंगकर मैं खुल न जाऊँ, इसीलिए आज मुझे ज़ोर से हिलाया गया। साहूकार मुझे पहले से अधिक अक्लमंद समझ रहा है।"

यह सुन ताली को अपनी भूल का एहसास हुआ। वह दुखी हो बोल उठी, "मैं सोचती थी, मेरा आत्मीय साहचर्य पाकर ही आप झूमने लगते हैं।"

"तुम निरी गधी हो। तुम्हारी अक्ल खोटी है। मैं यह सोचकर भी झूम उठता हूँ, कि इस देश के लक्ष्मीभक्तों को मेरी कितनी ज़रूरत है!"

"किंतु क्षण भर बाद आप एकदम मौन और उदास क्यों हो जाते हैं?

"अपनी सैलाबी तरक़्क़ी को देखकर। मैं देख रहा हूँ, मुझे दिन-ब-दिन और अधिक शक्तिशाली बनाया जा रहा है।"

"यह तो आपके प्रसन्न होने की बात है।"

"इसी बात का तो रोना है जानेमन! साहूकार मुझे जितना शक्तिशाली बनाता है चोर मुझे भारी चोट पहुँचाकर उतनी ही पीड़ा।"

"हाँ प्यारे, यह बात तो ज़रूर है।" ताली ने करुण स्वर में सहानुभूति जताई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"यही क्यों, आये दिन बढ़ रहे चोरों के आतंक से लोग आतंकित हैं। लगता है, कोई भारी विपत्ति आने वाली है।"

"वह क्या, ज़रा मैं भी तो सुनूँ!" ताली की आँखें चौड़ी हो उठीं। उसने चिहाते हुए जिज्ञासा प्रकट की।

"यही कि वह दिन दूर नहीं, जब विवश जनता किसी न्यायी और सशक्त शासक चंद्रगुप्त की खोज करेगी और उसके आते ही, हमारा-तुम्हारा इस देश से दुखद निर्वासन...!"

भविष्य की इस संभावना से संत्रस्त ताली, ताले के साथ फूट-फूटकर रोने लगी।

(किंवदंती है कि चंद्रगुप्त के शासन-काल में लोग घरों में ताले नहीं लगाते थे। ख़ुदा न खास्ता, अगर कहीं चोरी हो ही गई, तो चोर के दोनों हाथ सरेआम काट दिए जाते थे।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनुष्यत्व बोध

यदि वह आज शाम तक नहीं पहुँचा, तो गाँव लुट जाएगा, तबाह हो जाएगा। कितनी बहनों के सिंदूर धुल जाएँगे। बहुत बच्चे अनाथ हो जाएँगे। उसे गिरीडीह गाँव के मुखिया को खूंखार-निर्दयी आतंकियों के आक्रमण की ख़बर पहुँचानी थी, जितना संभव हो सके, जल्द से जल्द।

ऊबड़-खाबड़ दुर्गम पहाड़ी पथ। वह सुबह से शाम तक अनवरत चलता रहा। सर्प-श्वापदों के भय से मुक्त, नदी-नालों, झाड़-झंखाड़ों को पार करता, वह चलता ही रहा अविराम, लगातार। अब उसके पाँव जवाब देने लगे। आँखों से चिनगी छूटने लगी। मारे भूख-प्यास के वह थककर बैठ गया।

अचानक पथिक को प्रकाश की एक नन्ही किरण दिखाई दी। दूर खड़ी अत्यंत सुखद, सुकोमल और चित्ताकर्ष, पगडंडी की हरी दूब मुस्करा रही थी। उसने देखा— नंगे पाँवों, जूतों-चप्पलों के नीचे घिस-घिसकर संघर्षरत, वर्षारंभ से वर्षांत तक, प्रति वर्ष यह दूब, जेठ की चिलचिलाती धूप आते-आते दम तोड़ देती है। किंतु आषाढ़ के आगमन के साथ ही पुनः सिर उठाना शुरू कर देती है।—"आख़िर अनादि काल से चला आ रहा तुम्हारा यह संघर्ष किससे और क्यों है?" पथिक दूब से पूछ बैठा।

सरल चित्त दुर्वा का प्रमाद रहित उत्तर था, "मनुष्य मात्र से, मनुष्यत्व के लिए। मैंने मनुष्य के तन-मन और आत्मा को सुख दिया है। उसी के लिए जिया है। और उससे इस अपेक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया है, कि वह भी मेरी तरह औरों के लिए जिए।"

पथिक ने दूब को हृदय से धन्यवाद दिया और अपने गंतव्य की ओर वह और तेज़ी के साथ चल पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जूता और आदमी

एक था जूता। बेहद ख़ूबसूरत, मजबूत और चौचक। वह आदमी को पैरों में डाले बड़ी बेरहमी के साथ चहलक़दमी करता कड़बच-कड़बच चल रहा था। उसके पैरों तले घिसते-घिसते आदमी पूरी तरह घिस चुका था। हालत एकदम फटेहाल थी।

मुझे आदमी की दुर्दशा देख दया आ गई। पूछा, "क्यों बेऽ निखट्टू, तेरी ये मजाल कि आदमी को पैरों में डालकर चले! जल्द से जल्द छोड़ दे इसे।"

इतना सुनना था कि मारे गुस्से के लाल वह जूता, आदमी को पैरों में लिए-दिए उछल पड़ा। रुआब में ऐंठते हुए बोला, "नहीं जानते! मैं किस कंपनी का कितना क़ीमती जूता हूँ?"

जी में तो आया कह दूँ, आख़िर हो तो जूता ही, पैरों में पहनने की चीज़! फिर क्या कम क़ीमती, क्या बेशक़ीमती। पर जज्बात को भीतर ही भीतर दबा लिया। तब तक वह पुनः मुखर हुआ, "तुम्हें जानना चाहिए कि अब हमारे रहन-सहन का स्तर बदल रहा है आज के समाजशास्त्र में आदमी की सेहत की जगह मेरी सेहत की सुरक्षा ज्यादा ज़रूरी हो गई है..."

अभी जूता अपनी पूरी बात भी नहीं कह पाया कि उसके पाँव तले पिसता मरियल आदमी रिरियाया, "ऐ मेरे लख्ते जिगर जूते! इस चिलकती धूप में खड़ा रहकर अपनी मासूम सेहत बरबाद न कर।" और अपनी फीतेदार मूँछों को इधर-उधर झटकारता मस्त जूता, मेरी तरफ़ बत्तीसियाँ झलकाते आगे बढ़ गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्यार और दीवार

"अरे-रेरे-रे!" एक अपरिचित ध्वनि सुनाई पड़ी। पीछे मुड़कर देखा, वह फिसल चुका था। दाहिने हाथ में अधघिसा हवाई चप्पल, दायाँ पाँव कीचड़ में सना, ज़मीन छूते धूल-धूसरित बायें हाथ पर पूरे शरीर को टेके, उसने खड़ा होते हुए ज़ोर से पूछा, "गुरु जी! राजधानी (निकटवर्ती शहर) चल रहे हैं क्या? अभी-अभी पता चला है कि आप..."

"हाँ, क्यों क्या बात है? ऐसे हाँफ क्यों रहे हो?"

"आपको देखकर दौड़ता हुआ आ रहा था कि यकायक फिसल गया। अगर आप आज्ञा दें तो मैं भी, मेरा मतलब मुझे भी लेते चलिएगा?" कुछ मुस्कराते, किंतु झेंपते हुए उसने पूछा।

"इसमें पूछने की क्या बात है! मेरे कंधे पर बैठकर तो चलोगे नहीं। मगर काम क्या है?"

"है कुछ। बता भी दूँगा, भला आपसे कुछ छिपाऊँगा!"

वह दौड़ा हुआ गया और बिना नहाये-खाये, कपड़ा बदल कर कुछ ही पल में लौट आया। बताया, "ऐसा है सर, कि मैं उससे प्यार करता हूँ। बेहद प्यार और मेरी तरह वह भी। उसके पत्र कई दिनों से इधर नहीं आ रहे हैं, जबकि अब तक कम से कम दो आ जाने चाहिए। चल के एक नज़र देख लूँगा, बस।"

"सर, साढ़े दस बजने को हैं।" उसने मेरी दीवाल घड़ी देखी। कब तक ख़ाली हो जाएँगे आप?" उसने पूछा।

"अजीब लड़के हो! तुम जाओ अपना काम करो। ट्रेन के वक़्त स्टेशन पर आ जाना।"

"नहीं, आप भी चलें। मैं आप के साथ ही..."

"पागल हो क्या! हम तुम्हारे साथ क्या जायें! तुम विद्यार्थी हो, और मैं तुम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से, कम से कम सात साल बड़ा शिक्षक हूँ।''

''नहीं आपको भी चलना पड़ेगा। बस वह आती ही होगी। उसके कालेज जाने का यही समय है।'' कहते हुए, वह मेरा हाथ पकड़कर खींच ले चला।

सड़क पर लगभग 50 मीटर की एक निश्चित दूरी को वह अपने पैर के स्केल से कितनी बार नापा, बता पाना कठिन है। मैं एक टी-स्टाल पर बैठा सब देख रहा था। दुकान पर पड़े अख़बार के प्रायः सारे कालम मैंने खंगाल डाले। घड़ी देखी। बारह से ऊपर होने लगे थे। थोड़ी देर में वह मुँह लटकाए वापस आ गया। मुझे कहना पड़ा, ''चलो, आज वह नहीं आएगी। वह जान गई है कि तुमने मुझे भी साथ ले रखा है।'' निराश हो, वह मेरे पीछे हो लिया। उसकी आँखें गीली होने लगी थीं।

''गुरु जी! वह देखिए आ रही है।'' वह साश्चर्य ख़ुशी से उछल पड़ा। उसके चेहरे पर पूनम की पूरी चाँदनी पल भर के लिए चमक उठी।

''जाओ तुम मिल आओ। तब तक मैं यहीं बैठा हूँ।'' कहकर मैं दुकानदार से माँग पुनः चाय पीने लगा।

वह पाँच-सात मिनट में लौट आया। बोला, ''चलिए ना गुरुजी पिक्चर देख ली जाए, बड़ी अच्छी लगी है।''

''मैं चला। तुम दूसरे ट्रेन से आते रहना।''

''आप के पाँव पड़ता हूँ। आप भी चलिए। आपके बारे में वह बहुत पहले से जानती है। मैं उसे सब कुछ बता चुका हूँ। लीजिए वह आ भी गई।''

''नमस्ते सर।'' मेरे पाँवों को छूते हुए एक मधुर स्वर साकार हो उठा।

पिक्चर शुरू होने में कुछ देर थी। दोनों ने ढेर सारी, न ख़त्म होने वाली बातें कीं, जिन्हें सुनना मुझे भी अच्छा लगा।

लड़की—''जानती हूँ, तुम नाराज होगे। असल में इस बीच मैं बीमार पड़ गई, इसलिए तुम्हारे पत्र का जवाब न दे सकी।...तुम्हारे लिए स्वेटर बुन रही हूँ। अगले वीक तक तैयार हो जाएगा। आ के लेते जाना। रात को सबके सो जाने के बाद बुनती हूँ। डर लगता है, कोई पूछ न बैठे, किसका स्वेटर है...शौक में, कान में बांधने के लिए एक तौलिया तक नहीं लिए हो, ठंड लग जाएगी।....लगता है, कुछ सोच रहे हो!''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लड़का—"यही कि तुम मेरा कितना ख़याल रखती हो। मुझे कितना प्यार करती हो! सोचता हूँ, क्या मैं अपने को इस काबिल बना सकूँगा।"

लड़की—"फिर वही पुराना राग...अच्छा यह बताओ, गुरुजी किस स्कूल में पढ़ाते हैं?"

लड़का—"ये स्कूल में नहीं, डिग्री कालेज ग़ाज़ीपुर में पढ़ाते हैं। ये कविता-कहानी भी लिखते हैं। जी में आया नहीं कि बस, हमारे-तुम्हारे पर ही कहानी गढ़ देंगे। किसी न किसी पत्रिका में छप जाएगी।"

लड़की—"तब तो ग़ज़ब हो जाएगा। और तो और, घर वाले ही जीना मुश्किल कर देंगे।...आज कल तुम बहुत दुबले होते जा रहे हो, क्या बात है?"

लड़का—"पंडित कहते हैं कि शनि का प्रकोप है।"

लड़की—"और ओझा कहते हैं कि किसी प्रेत का साया है।" कहते हुए वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"अरे इस नालायक़ से तुम पढ़ने-लिखने को भी कहती हो, या केवल स्वास्थ्य ही देखती हो।" मुझे बीच में ही बोलना पड़ गया।

लड़की—"क्या कहूँ, ये तो ख़ुद ही समझदार हैं।...सुनो, गुरुजी क्या कह रहे हैं? यह एकदम अच्छी बात नहीं है। अगर परीक्षा में अच्छे मार्क्स नहीं आये, तो सोच लेना, मैं तुमसे कुट्टी कर लूँगी, हाँ।"

पिक्चर शुरू हुई, मध्यांतर आया, बातें हुईं और ढाई घंटे की फ़िल्म पलक झपकते कैसे ख़त्म हो गई, कि कुछ पता ही नहीं चला। हम लोग हाल से बाहर आ गए। जाने से पहले लड़की ने मुझे ध्यान से देखा, जैसे कह रही हो, अपने इस नालायक़ पर ज़रा ख़याल रखना। फिर उसकी पनीली आँखें लड़के पर अटक गईं। उसने मुझे हाथ जोड़ नमस्ते की और बोझिल क़दमों के साथ चल पड़ी।

दरअसल इन दोनों की जोड़ी, मुझे बहुत ही अच्छी लगी। वात्सल्य भाव उमड़ आया। लगा, मैं बूढ़ा हो चला हूँ। गहरे चिंतन में खोया सोचने लगा, 'प्रेम के बाद विवाह या विवाह के बाद प्रेम या प्रेम की मलाई में विवाह रूपी मक्खी को आने ही न दिया जाए?'

बिजली के खंभे से टकराते-टकराते बचा तो पीछे पलट कर देखा, वह मेरे पीछे-पीछे खामोश चला आ रहा था। शायद वह ख़ुश था, बेहद ख़ुश। मैंने सहज भाव से पूछ दिया, "क्या तुम दोनों का अंतर्जातीय विवाह हो सकता है? इस बारे में तुम्हें बहुत पहले सोच लेना चाहिए था।"

"तब सोचने की समझ कहाँ थी सर।" वह उदास हो गया, या कहें, अनजाने-अचाहे मैंने उसे दुखी कर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ऐसा है सर,..." वह पुनः मुखर हुआ, "जब वह आठवें में थी, मैं उसकी ओर झुकने लगा था। नाइन्थ में आते-आते, वह मेरे बारे में काफ़ी कुछ जान गई थी।...और उसके दसवें में पहुँचते-पहुँचते हम दोनों एक-दूसरे के हो चुके थे। मैं सिर्फ़ और सिर्फ़, उसी के विषय में रात-दिन सोचने लगा था।"

"कोई बहादुरी नहीं की। अरे तीन साल में तो पी-एच. डी. भी मिल जाती है। उसके विषय के विषय में भी ऐसे ही रात-दिन सोचना पड़ता है।" मैंने परिहास करते हुए उसकी ओर देखा। वह अमुखर तो था, किंतु निर्भाव नहीं।

मुझे ही बोलना पड़ा, "क्या सोच रहे हो?" मैंने पूछा, फिर कहा, "देखो, पहले पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करो। यानी ख़ूब परिश्रम करो। उसके बाद वह (लड़की) क्या, हर आने वाला कल तुम्हारा होगा। तुम दोनों मिलकर एक उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकोगे।"

"जी।" प्रत्युत्तर में उसकी उदास आवाज़ गले में अटक कर रह गई।

(यहाँ एक बात, जो अब तक छिपी थी, साफ़ ही कर दूँ, कि लड़का बचपन से ही गाने-बजाने का शौकीन था। उसका गला बहुत अच्छा था। किशोरावस्था में ही उसने हारमोनियम, बेंजू और तबला बजाना सीख लिया था। काफ़ी संभव है, उसके इन्हीं गुणों पर लड़की फिदा हो गई हो! संक्षेपतः लड़के का नाम, जो अब अट्ठावन साल से ऊपर का लड़का नहीं, बड़का है, रामजी राय है। लड़की का नाम जो अब बूढ़ी हो चली है, नहीं बताना चाहूँगा। दोनों अब भी एक-दूसरे के जिगरी दोस्त हैं, मगर मियाँ-बीवी नहीं।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घुमक्कड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरी नज़रों में नेपाल–1979

नेपाल पहाड़ों, घाटियों तथा मंदिरों का मुल्क है। संसार की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट यहीं है। यह विश्व का एकमात्र हिंदू राष्ट्र रहा है, जहाँ राजतंत्र के अंतर्गत पंचायती राज्य व्यवस्था है। काठमांडो (काष्ठ मंडप) यहाँ की राजधानी है। संपूर्ण देश 14 अंचलों तथा 75 जनपदों में विभक्त है।

बहुत प्राचीन काल से नेपाल और भारत धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से एक–दूसरे से संबद्ध रहे हैं। भगवान राम की ससुराल जनकपुर, भगवान बुद्ध की जन्मस्थली लुंबनी तथा शंकर भगवान का तथाकथित निवास कैलाश आदि नेपाल में ही अवस्थित हैं। आज भी दोनों देशों की जनता के बीच आपसी सौहार्द एवं प्रेम–भाव पूर्ववत विद्यमान है।

भारत से नेपाल (काठमांडो) पहुँचने के मुख्यतः दो मार्ग हैं। इस बात की जानकारी हम लोगों ने यात्रा शुरू करने से पहले ही कर ली थी। नेपाल को अधिक से अधिक देखा–समझा जा सके, इस उद्देश्य से सोनौली–भैरहवा से जाने का तथा रक्सौल वीरगंज होते हुए लौटने का कार्यक्रम बनाया गया।

23 फरवरी, 1979। मैं अपने साथियों—डॉ. द्वारिका नाथ भू.पू. एसोसिएट प्रो. हिंदी, डॉ. राम ललक यादव प्रो. अंग्रेज़ी तथा डॉ. राज मंगल मिश्र प्रो. संस्कृत—के साथ सुबह क़रीब 7 बजे गोरखपुर से सोनौली के लिए एक जीप पर सवार हुआ। इस टैक्सी जीप पर कुछ सवारियाँ पहले से विद्यमान थीं, जिनमें एक स्त्री तथा दो पुरुष थे। लगभग सबके शरीर पर गैरिक वसन सुशोभित था। ये सभी आचार्य रजनीश के अनुयायी जान पड़ते थे। गले में काले मनियों की मालाएँ और सबकी मालाओं के बीच ओशो की लटकती छोटी–छोटी तस्वीरें। दुनिया से बेख़बर ये आपस में चहचहा रहे थे। मेरे तीनों सहयात्री मित्र भी आपस में कुछ कह–सुन रहे थे। इधर मैं सबसे अलग बैठा गुमसुम नेपाल की कल्पना में खोया–खोया। रास्ते में जीप दो–तीन स्थलों पर रुकी। दिन के क़रीब साढ़े ग्यारह बजे हम लोग सोनौली तथा बारह बजते–बजते रिक्शा से भैरहवा पहुँच गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय सीमा से सटा भैरहवा नेपाल का एक अच्छा शहर है। फिर भी यहाँ से काठमांडो के लिए कोई बस या टैक्सी नहीं मिल रही थी। लगभग आधे घंटा बाद एक बस आई। पूछने पर पता चला कि यह बस पोखरा (भैरहवा से काठमांडो के बीच सबसे अच्छी जगह) तक जाएगी। देखते-देखते यह बस भी यात्रियों से भरने लगी। किसी तरह लोगों को स्टैंडिंग में जगह मिली। यह बस लगभग छः घंटे बाद पोखरा पहुँचेगी, ऐसा सुनकर मुझे पसीना छूटने लगा। टिकट ख़रीदा जा चुका था, अतः अब उतरने का सवाल भी टेढ़ा ही था।

बस चल पड़ी। मेरे तीनों साथी जहाँ-तहाँ किसी तरह बैठ गए। कुछ ही देर में खड़ा-खड़ा मुझे चक्कर आने लगा। बस बुटवल पहुँचकर ज्यों ही रुकी, मैं खिड़की के बाहर सिर निकालकर कै करने लगा। मेरे साथी राम ललक जी खड़े हो गए और उनकी जगह मैंने ले ली। राजमंगल जी मेरे लिए संतरा या नींबू लाने बाहर निकले। किंतु शीघ्र ही निराश होकर लौट आए। बैठ जाने से मुझे काफ़ी राहत मिली। बस भी अब कुछ ख़ाली और हवादार हो चुकी थी।

सड़क के अगल-बगल पहाड़ी दृश्य बहुत भले लग रहे थे। जीवन में पहली बार मैं इस तरह के ऊँचे-नीचे, नम-सूखे, पेड़-पौधों, झाड़ियों तथा विरल बसे पहाड़ी घरौंदों आदि को देख भी रहा था। प्रायः सड़क के एक तरफ़ तरह-तरह की वनस्पतियों से आच्छादित पहाड़ तथा दूसरी तरफ़ पत्थरों-चट्टानों को तोड़ती गहरे नाले के रूप में प्रवाहित कोई नदी। स्थान-स्थान पर पहाड़ों से फूटकर झर-झर झरते झरने। कहीं पहाड़ों में शुष्कता तो कहीं बेहद नमी। चलते-चलते लगता था कि बस सैकड़ों फुट नीचे चली गई और दिन में ही अंधेरा छा गया। फिर जल्दी ही धीरे-धीरे प्रकाश का चमकदार उजाला। बस पुल पर से गुज़र रही थी। पूछने पर पता चला कि गण्डकी नदी है। स्थान का नाम रामदीं है। पुल पर से पहाड़ और नदी के सुरम्य दृश्यों का हृदयंगम कराती बस आगे बढ़ गई।

साँझ घिरने लगी थी। देर तक बैठने से कमर में हल्का-हल्का दर्द होने लगा था। तभी दाहिनी तरफ़ कुछ दूरी पर असंख्य जुगनू झिलमिलाते दिखे। 'पोखरा आ गया' कुछ लोगों के मुँह से सुनने को मिला और इसके साथ ही कमर का दर्द तिरोहित। विद्युत बल्बों की जगमगाहट को देखते हुए लगा कि पोखरा बस दस क़दम और है। किंतु सड़क की ऊँची-नीची आँख-मिचौनी में 20-25 मिनट तक बेसब्री से प्रतीक्षा करनी पड़ी। तभी दिखाई पड़ी महाराजा महेंद्र की विशाल भव्य प्रतिमा। बस चौराहे को पार कर आगे बढ़ गई। ठीक साढ़े सात बजे हम लोग पोखरा शहर के बस स्टैंड पर उतर गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेपाल का सौंदर्य शिखर स्वर्ग

रात को हम लोग पोखरा के एक साफ़-सुथरे 'संतोष' नामक होटल में शरण लिए। होटल के बेयरे द्वारा पोखरा के विषय में हमें ढेर सारी जानकारियाँ मिलीं। यह सुनहले पहाड़ों और सुंदर झीलों जैसे प्राकृतिक दृश्यों के लिए नेपाल की सर्वाधिक सुंदर, अत्यंत आकर्षक जगह है। खा-पीकर हम लोग जल्दी ही सो गए। आश्चर्य की बात यह थी कि बस की इस सात घंटे उठा-पटक के बाद भी शरीर में कोई विशेष थकान न थी।

प्रातः उठने पर तय हुआ कि पहले काठमांडो के लिए बस का पता कर लिया जाए, तब आराम से घुमा-फिरा जाए। हम लोग साफ़-सुथरी सीधी चौड़ी सड़क पर बस स्टैंड की ओर बढ़े। कुछ दूर चलने पर अचानक मिश्र जी फूट पड़े, "अरे ज़रा उधर तो देखिए!" सबकी निगाहें एक तरफ़ ऊपर उठकर टंगी की टंगी रह गईं। प्रकृति का यह अद्‌भुत रचना कौशल देखकर सबकी बुद्धि चकरा उठी। हिम गिरि नहीं, कल धौत धाम! जैसे असली सोने की अपार संपदा दूर-दूर तक फैल-पसर गई हो। प्रातः कालीन सूर्य की स्वर्णिम रश्मियों ने सोने का संसार खड़ा कर दिया था। "ये अलकनंदा की चोटियाँ हैं। वह अन्नपूर्णा है। और उधर वह माच्छेपुच्छरे।" पास ही खड़ा एक लड़का दिखला रहा था। कुछ और सैलानी भी वहाँ यह सब निहार रहे थे। जी चाहता था, इस स्वर्गीय सौंदर्य को अपलक निहारते रहें। आँखों में हमेशा के लिए क़ैद कर लें। अनिर्वचनीय आनंद का अनुभव हो रहा था। यह अमानुषी कृति कल्पनातीत थी। कोई भी चित्रकार अपनी तूलिका से ऐसा रंग शायद उकेर पाए।

बस स्टैंड पर ही हम लोगों ने आठ बजा दिए। बस साढ़े आठ बजे ही खुलेगी और इसके बाद आज काठमांडों के लिए शायद ही कोई साधन मिले। आज यहाँ रुकने का तात्पर्य शिवरात्रि के दिन पशुपतिनाथ के दर्शन से वंचित रह जाना था। हमारे मिश्रजी इसके लिए कदापि तैयार न थे। निदान पोखरा की सर्वाधिक दर्शनीय झील 'फेवा' को देखे बिना ही हम लोग काठमांडो चलने के लिए तैयार हो गए, जिसकी कमी हमें आज तक (शायद आजीवन) खटकती रही है।

पोखरा से आगे की सड़क और अधिक अच्छी है। चौड़ी सड़क से सटे थोड़ी-थोड़ी दूर पर विश्रामालय बने हुए हैं। आगे पड़ा गगन गोडा, जहाँ वी (V) आकार की टोकरियों को पीठ पर लादे, घुटने तक रंग-बिरंगा घाघरा तथा खुले ब्लाउज़ जैसा परिधान पहने पहाड़ी युवतियों का एक झुंड दिखाई पड़ा। वह पहाड़ की ऊँचाई से क़तार बांधे नीचे उतर रहा था। वे सभी दूर से गौर वर्ण, स्वस्थ एवं आकर्षक लग रही थीं। कुछ दूर बढ़ने पर छोटे-बड़े, गोल-तिकोन-चौकोर असंख्य पत्थर के टुकड़ों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से भरी मादी नदी दिखाई पड़ी। कमलबारी से सड़क सर्पाकार हो ऊपर-नीचे होने लगी।

आगे दिखा नारायणी नदी का मनोरम अंचल। एक से बढ़कर एक नयनाभिराम उपत्यकाएँ। पुल पर ही कुछ क्षण के लिए बस खड़ी हो गई। अत्यंत मनोहारी दर्शनीय दृश्य! कल्पना से परे प्रकृति का आश्चर्यजनक अद्‌भुत शिल्प!! प्रायः पीले तथा अनेक रंगों के फूलों से आच्छादित संपूर्ण वातावरण महमहा रहा था। चारों तरफ़ सुदूर कहीं-कहीं लकड़ी, ईंट तथा पत्थरों से निर्मित नेपालियों के सफ़ेदी किए निवासालय। देखने से जी नहीं भरता था। मन करता था, बस से उतरकर यहीं कहीं, सदा-सदा के लिए बस जाया जाए। ज़िंदगी में कुछ ऐसे पल भी आते हैं, जिनकी स्मृतियाँ मानस पटल पर गहरी लकीरें उकेर जाती हैं। ऐसी गिनी-चुनी कुछ लकीरों में ये लकीरें (पोखरा और नारायणी अंचल) भी ऐसी ही हैं, जिन्हें हम शायद ही कभी भूल पाएँ।

नारायणी से काठमांडो अभी एक सौ दस किलोमीटर है। सड़क से सटकर बहती त्रिशुली नदी पर कुरीट घाट का दृश्य भी आकर्षक है। फिर पड़ा प्रसिद्ध वाग्मती नदी का मनोहारी अंचल। इधर की पहाड़ी भूमि कुछ बलुई क़िस्म की है। कृषि के साथ कहीं-कहीं फलों के पेड़ भी दिखलाई पड़े। अब बस की रफ़्तार बढ़ गई थी। काठमांडो पास आ रहा था। इधर खेती का विकास क्रमशः अच्छा था। नौबिसे तिमुहानी पर बस पहुँचकर खड़ी हो गई। अभी दो मिनट भी नहीं बीता होगा कि हम लोगों की बस के पीछे दर्शनार्थियों से भरी एक ट्रक जैसी गाड़ी आकर खड़ी हो गई, जिस पर ताली बजा-बजाकर ज़ोर-ज़ोर से लोग गाए जा रहे थे—''चल-चल रे काठमांडू, मिलेंगे वहाँ शंभू...''

नौबिसे एक अच्छी जगह है। पोखरा से नौबिसे का लंबा मार्ग नेपाल सरकार तथा चीन सरकार के संयुक्त सहयोग से निर्मित है। इसे पृथ्वीराज मार्ग (पृथ्वी हाई वे) कहते हैं। यहाँ से आगे की सड़क अच्छी नहीं थी। संभव है अब (2020) अच्छी हो गई हो। बहुत कुछ बदल चुका हो। इधर खेती की स्थिति ज़्यादा ठीक-ठाक है। जहाँ-जहाँ मोड़ हैं, पहाड़ को यथासंभव काटकर सड़क सीधी की जा रही थी। जैसे-जैसे काठमांडो पास आ रहा था, बस्तियाँ घनी होती जा रही थीं। आगे थांगकोट चौराहे पर त्रिभुवन नारायण (नेपाल के भू. पू. महाराज) की विशाल भव्य मूर्ति खड़ी है। रात के लगभग आठ बजे हम लोग काठमांडो बस स्टेशन पर उतर गए।

पशुपतिनाथ : भारत नेपाल का धार्मिक संगम

महाशिवरात्रि के दिन सुबह तड़के उठकर नित्यक्रिया से निवृत्त हो, हम लोग पशुपति नाथ का दर्शन करने पैदल ही चल पड़े। चूँकि चौड़ी सड़कों से गलियों तक सभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार्ग दर्शनार्थियों से भरे थे, अत: रास्ता पूछने की ज़रूरत नहीं पड़ी। जैसे-जैसे मंदिर पास आता गया, भीड़ बढ़ती गई। ऐसी दुकानें जो संभवत: कल-आज में सजाई गईं थीं, सड़क की दोनों पटरियों पर दिखाई देने लगीं। इन पर रंग-बिरंगी मालाएँ, गमछे, सस्ते खिलौने, मूर्तियाँ, तस्वीरें, शीशे-कंघी तथा सिंदूर जैसे स्त्रियों के शृंगार प्रसाधन, लाची दाना के प्रसाद के निमित्त छोटे-बड़े पैकेट, गले के धागे, धार्मिक पुस्तकें आदि बिक रहे थे।

मंदिर का विशाल प्रवेश-द्वार समीप आ गया। हम लोग उमड़ रहे अपार जनसमूह के बीच धक्के पर धक्के खा रहे थे। इसी भीड़ में संस्कृताचार्य डॉ. राज मंगल मिश्र पता नहीं किधर बहक गए। ऐसी स्थिति में मुझे डा. राम ललक यादव का हाथ अपने हाथ में पकड़ लेना पड़ा। काफ़ी कठिनाई के बाद मैं यादव जी के साथ मंदिर के अंतिम मुख्य द्वार के पास पहुँच सका। यहाँ आकर भीड़ इतनी अधिक हो गई कि लगता था, जान निकल जाएगी। दूर-दूर तक चतुर्दिक भीड़ का कोलाहली सागर हिलोरें ले रहा था। समुद्री ज्वार-भांटे की तरह सैकड़ों लोग, कभी दस क़दम आगे, तो कभी दस क़दम पीछे हो जा रहे थे। मैंने यादव जी का हाथ कस कर पकड़ रखा था। ख़ैर, किसी तरह हम लोगों ने भगवान पशुपति नाथ के विग्रह का दर्शन किया। थोड़ी ही देर बाद मिश्र जी को भी ढूंढ़ लिया गया।

पशुपतिनाथ का यह मंदिर बड़ा ही भव्य एवं विशाल है। धार्मिक दृष्टि से इसका नेपाल में सर्वाधिक महत्त्व है। भारतीय भी मुख्यतया इसी मंदिर का दर्शन करने जाते हैं। मंदिर में चाँदी का काम अधिक हुआ है। गर्भगृह के भीतर पशुपतिनाथ शिव की पंचमुखी प्रतिमा है। आसपास और भी छोटे मंदिर हैं। आँगन में ऊँचे चबूतरे पर स्थित लगभग 5 मीटर लंबी, डेढ़ मीटर ऊँची नंदी ताम्र-सुनहली प्रतिमा मंदिर-परिसर का विशेष आकर्षण है। सटकर बहती पवित्र वाग्मती नदी के दूसरे छोर से मंदिर का सौंदर्य दर्शनीय है, अधिक आह्लादकारी है।

गुह्येश्वरी माँ का रहस्यमय मंदिर

पशुपतिनाथ मंदिर से कुछ ही दूरी पर गुह्येश्वरी देवी (पार्वती) का विचित्र मंदिर है। विचित्र इस मामले में कि इसके गर्भ गृह के ठीक बीचोबीच, चौबिसों घंटे, भल्-भल्-भल्, मामूली ध्वनि के साथ जल निकलता रहता है। लगभग संपूर्ण मंदिर पर तांबे-चाँदी के पत्र मढ़े हुए हैं, जिन पर सुनहरा पालिश किया हुआ है। मंदिर के बीच का ऊपरी भाग खुला है, जिस पर चार सुनहले सर्प गले मिलते बनाए गए हैं। गर्भ गृह के जिस स्थल (कुंड) से सदा जल निकलता है, उसका मुख ढक्कन से ढंका रहता है, जिसे उठाकर श्रद्धालु दर्शक प्रसाद स्वरूप जल प्राप्त करते हैं। जल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का कभी कम न होना ही इस देवी-स्थली का अजूबा रहस्य है। मंदिर के द्वार के समीप महाराजा महेंद्र तथा महारानी रत्नराज्यलक्ष्मी की करबद्ध मूर्ति खड़ी है। इस माँ के मंदिर का बड़ा ही पौराणिक महत्त्व है।

स्वयंभु सदन

स्वयंभु (स्वयं उत्पन्न) या शम्भु शब्द का प्रयोग अक्सर हमारे यहाँ भगवान शिव के लिए होता है, किंतु यहाँ इस संज्ञा या विशेषण का प्रयोग भगवान बुद्ध के लिए किया गया है। उल्लेखनीय है या कहें, मेरी निजी निगाह की अनुभूति है, कि नेपाल के कुछ मंदिरों में भगवान शिव के आनन की आकृतियाँ बुद्ध से काफ़ी मिलती-जुलती हैं। ख़ैर...

अगले दिन सुबह लगभग आठ बजे हम लोग स्वयंभु दर्शन के लिए निकले। भगवान बुद्ध का यह चैत्य (स्तूप) काठमांडो शहर से पश्चिम थोड़ी ही दूर पर अवस्थित है। यह सुदूर ऊँची पहाड़ी पर बनाया गया है, जहाँ पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। नीचे सीढ़ी के अगल-बगल बुद्ध की दो विशाल भव्य पीली प्रतिमाएँ हैं। डॉ. यादव जी ने सारी सीढ़ियाँ गिन डालीं। ये कुल 330 हैं। गोल और ऊँचे स्तूप के चारों ओर चार बुद्ध जी की मूर्तियाँ हैं। पास ही बुद्ध जी से संदर्भित एक संग्रहालय है। दूसरी ओर एक ख़ूबसूरत मंदिर है, जिसमें सैकड़ों दीप एक साथ जल रहे थे। इस बुद्ध भवन से संलग्न एक और विशाल भवन है, जिसमें अनेक भक्त भजन-कीर्तन करते दिखाई दिए। उनकी पूजा पद्धति, पहनावा, कीर्तन गाते समय हाथ में लिए विचित्र वाद्य यंत्रों का कर्णप्रिय बजना, बहुत ही मोहक, श्रवणीय लगा। गो कि वे क्या, किस भाषा में गायन कर रहे थे, हम लोग रंचमात्र भी समझ नहीं पाए। हमारी स्थिति बीन की मधुर धुन-सुनकर रीझ उठने वाले सर्पों की सी थी।

बूढ़ा नीलकंठ

काठमांडो से बाँसवारी होते हुए यहाँ पहुँचा जाता है। यहाँ एक छोटे तालाब में भगवान विष्णु की शेषशायी विशालकाय प्रतिमा है। यह प्रतिमा बहुत ही कलात्मक ढंग से बनाई गई है। तालाब की जल भींगी सीढ़ियों से होकर धीरे-धीरे मूर्ति के समीप पहुँचा तथा उसे स्पर्श (प्रणाम) किया जा सकता है। कहा जाता है, कि किसी प्राचीन अभिशाप के चलते राज-परिवार का कोई व्यक्ति, दर्शनार्थ वहाँ नहीं जाता। अतः ऐसा ही स्थल राज-परिवार के लिए कहीं अन्यत्र बनाया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुद्धनाथ— यह विशालकार स्तूप संसार के बड़े-बड़े स्तूपों में से एक है। इसके ऊपर चार जोड़ी भगवान बुद्ध की आँखें मानव व्यवहारों को देखती हुई बनाई गई हैं। इसके चारों ओर लामाओं और बौद्ध पुजारियों के आवास बने हुए हैं। यह काठमांडो से क़रीब 4 मिलोमीटर पूर्व में स्थित है।

आकाश भैरव—यह तिमंज़िला मंदिर मुख्य बाज़ार के इंद्र चौक पर स्थित है। इसमें वर्षा के देवता स्वरूप इन्द्र की प्रतिमा है, जो साल भर में केवल एक बार इंद्र यात्रा के समय बाहर निकाली जाती है।

हनुमान टोका—यह राजवंश का ऐतिहासिक स्थल है। यह दरबार स्क्वायर अपने पुराने मंदिरों और राजभवनों के द्वारा समकालीन जन जीवन के धार्मिक-सांस्कृतिक विशेषताओं को व्यक्त करता है। यहाँ का तेलजू मंदिर, विनाश के देवता कालभैरव की दीर्घकाय प्रतिमा, राजा प्रताप मल्ल की मूर्ति, विशाल घंटा व नगाड़ा देखने लायक़ हैं।

गोकर्ण वन—यह काठमांडो से क़रीब 10 कि. मीटर उत्तर-पूर्व वाग्मती के किनारे स्थित एक सुंदर क्रीड़ा स्थली है। यहाँ बहुत से जंगली जानवर पाए जाते हैं। पास ही गोकर्णेश्वर महादेव का पैगोडा पद्धति से बना मंदिर है।

मच्छेंद्र (मत्स्येंद्र) नाथ—यह कलात्मक सुंदरता से युक्त एक कांस्य मंदिर है, जिसके चारों तरफ़ पहाड़ियाँ हैं। मंदिर के तीन तरफ़ लोगों के आवास बने हैं तथा सामने की ओर विभिन्न प्रकारीय दुकानें हैं, जो प्राय: व्यस्त रहती हैं।

दक्षिण काली—यह सौंदर्य विहीन, किंतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण काली का मंदिर है। मंदिर के पास ही सुदूर पहाड़ी ऊँची टेकरी पर एक अत्यंत छोटा मंदिर है, जिसमें नेपालियों के अनुसार काली की माँ की मूर्ति है। वैसे काली के मंदिर तो भारत में भी हैं, किंतु काली की माँ हम लोगों को नेपाल में ही देखने को मिलीं।

पाटन : एक दर्शनीय नगर

पाटन नेपाल का एक प्राचीन नगर है। यहाँ का मुख्य आकर्षण दरबार स्क्वेयर है, जो नगर के लगभग मध्य में स्थित है। यहाँ पुराने राजभवन के अतिरिक्त कई मंदिर हैं। एक ऐतिहासिक पुरातत्व संबंधी सुंदर संग्रहालय है। यहाँ का कृष्ण मंदिर सर्वाधिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भव्य एवं विशाल है। यह सिद्ध नरसिंह मल्ल द्वारा 16वीं शताब्दी में बनवाया गया बताया जाता है। तीन मंज़िलों वाला पैगोडा पद्धति पर आधारित हिरण्यवर्ण महा विहार (लोकेश्वर भगवान बुद्ध का मंदिर) भी देखने लायक़ है। यहाँ का वर्ण विहार नामक एक अनूठा बौद्ध मठ भी आकर्षण का केंद्र है। इसके चारों ओर काँसे की बनी बहुत-सी कलाकृतियाँ हैं।

वह अविस्मरणीय नेपाली छात्र

हम लोग पाटन से काठमांडो लौट रहे थे। बस खुलने में कुछ देर थी। मैं बस के अंदर लिखी इबारत—"तपाई की यात्रा सफल होस। आपनू सामान को सुरक्षा आफै गर्नू होला। हाथ रटाउ की बाहर न निकालू होला।" आदि-आदि पढ़ रहा था। तभी मेरे पास की सीट पर एक बीस-बाइस बरस का लड़का आकर बैठ गया। उसके हाथ में कुछ किताबें थीं, जिससे लगा, वह किसी विद्यालय का विद्यार्थी है।

"आप कहीं पढ़ते हैं?" मैंने पूछा।

"जी, यहीं पाटन में।" संक्षिप्त-सा उत्तर था।

"यहाँ किस क्लास में पढ़ते हैं आप?"

"इंजीनियरिंग का प्रथम वर्ष है।"

उसके हाथ में लिए अंग्रेज़ी नावेल को देखकर मैंने पूछा, "क्या नावेल पढ़ने में आपकी विशेष रुचि है?"

"जी थोड़ी-बहुत। अंग्रेज़ी और संस्कृत साहित्य में थोड़ी रुचि ज़रूर है।"

"और हिंदी?"

"तुलसी, प्रेमचंद आदि को कुछ-कुछ पढ़ा है।"

मैं किशोर बालक की बातों को सुनकर दंग रह गया। मातृभाषा नेपाली के अतिरिक्त इस छोटी वय में उसकी तीन-तीन भाषाओं की जानकारी सामान्य बात न थी। वह भी ऐसे देश में, जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पीछे है। मैंने सूर और तुलसी के बारे में थोड़ा-बहुत पूछा। उसने भी मुझसे बहुत सारी बातें जाननी चाही। बस से उतरने से पूर्व उसके दोनों कर अभिवादन की मुद्रा में जुड़ गए। यह तब की बात है, जब हम सबकी उम्र भी 30-32 से ज़्यादा न थी। यह अविस्मरणीय है कि हिंदी, संस्कृत, अंग्रेज़ी और इतिहास से जुड़े, हम चारों भारतीयों के ज्ञान की बराबरी, वह नेपाली विद्यार्थी एक-अकेला कर रहा था। जबकि मूलत: वह विज्ञान (अभियंत्रण) का अध्येता था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भदगाँव (भक्तपुर) के दर्शनीय दृश्य

यह प्राचीन नगर मध्ययुगीन शिल्प कला का केंद्र है। इसकी नींव सन 889 ई. में महाराज आनंद देव के द्वारा डाली गई बताई जाती है। यह 55 खिड़कियों वाले राज महल का मुख्य सुनहरा द्वार (गोल्डेन गेट से मशहूर) देखने लायक़ है। यह गेट राजा रणजीत मल्ल द्वारा बनवाया गया है। प्रवेश द्वार पर विष्णु वाहन गरुड़ पर विराजमान भगवती की भव्य मूर्ति है।

1708 ई. में महाराज भूपतीन्द्र मल्ल द्वारा पैगोडा पद्धति से निर्मित 5 मंज़िला न्यतपोला मंदिर भी अपनी विशालता के लिए ख्यातिलब्ध है। अनेक सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुँचना पड़ता है। इन सीढ़ियों पर ऊपर से क्रमशः दो मल्ल (पहलवान), दो हाथियों, दो शेर, दो अद्भुत ग्रिफिन (एक काल्पनिक जानवर जिसका शरीर और पैर सिंह के समान तथा चोंच और डैने बाज पक्षी के सदृश होता है) तथा दो सिंहनी की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। सबसे निचले जोड़े में दो शक्तिशाली पुरुष जयमल्ल और फत्तामल्ल की आकृतियाँ भी बनी हुई हैं।

यहाँ दत्तात्रेय का मंदिर भी दर्शनीय है। कहा जाता है कि यह एक ही विशाल पेड़ के तने से काट-काटकर बनाया गया है। इसके अलावा सूर्य विनायक (गणेश) की पवित्र वेदिका, जहाँ से सूर्य की प्रत्यूषी किरणें बहुत मोहक लगती हैं। निकट ही शंगुनारायण का उत्कृष्ट काष्ठ शिल्प भी देखने योग्य है।

उल्लेखनीय है कि इन सभी स्थलों को दिखाने में नारायण भक्त श्रेष्ठ (भक्तपुर, तौलाछे टोल, बड़ा नं.1) नामक एक सहृदयी युवक ने हम लोगों की बड़ी मदद की, अन्यथा काठमांडो लौटने वाली आख़िरी बस हमें नहीं मिल पाती।

बौद्धिस्टों की लुभावनी लुंबिनी

अपने उत्कृष्ट दर्शन से दुनिया को प्रभावित करने वाले, शांति, प्रेम, अहिंसा और त्याग की प्रतिमूर्ति भगवान बुद्ध का यहीं जन्म हुआ था। यह पुनीत स्थली नेपाल की पश्चिमी तराई में स्थित है। यहाँ सड़क मार्ग के अतिरिक्त भैरहवा और काठमांडो से हवाई मार्ग द्वारा भी पहुँचा जा सकता है। भगवान बुद्ध की माता माया देवी की प्रतिमा, खंडित अशोक स्तंभ तथा पुराने मठ के अवशेष आदि यहाँ देखे जा सकते हैं।

जगत जननी जानकी की जन्म भूमि

रामायण कालीन पौराणिक इतिहास का जनकपुर से बड़ा गहरा संबंध है। महाराज जनक की पुत्री सीता जी यहीं जन्मीं थी। यहाँ उनका एक बहुत बढ़िया मंदिर है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो 'नौ लखा' मंदिर के नाम से ख्यातिलब्ध है। कहा जाता है कि बहुत पहले सस्ती के जमाने में इस पर नौ लाख रुपए ख़र्च हुए थे।

विराट नगर (पुरी)—कोशी जोन में स्थित महाभारत कालीन प्रसिद्धि प्राप्त विराट नगर तथा आधुनिक नेपाल के संस्थापक राजा पृथ्वी नारायण शाह की जन्म भूमि गोरखा भी नेपाल के अच्छे दर्शनीय स्थल हैं।

स्वदेश यानी भारत वापसी

हमारी बस सुबह साढ़े सात बजे वसुंधरा बस स्टैंड से चली। इस बस पर एक घनी दाढ़ी-मूँछ वाला साधु भी चल रहा था, जो रास्ते भर अपनी विचित्र भाव-भंगिमाओं एवं बोलियों से सभी यात्रियों को चौंकाता-हँसाता रहा। बस के कहीं कुछ देर तक खड़ी होने पर वह नाचने भी लगता। कभी अपनी छोटी ट्रांजिस्टर को कान के पास ले जाकर चिल्ला उठता, "हल्लो राम-जानकी! बाबा (अमुक स्थान से) बोल रहा है।...घबराओ नहीं, अब पहुँचने वाला ही हूँ।" कहीं वह यह कहते हुए चिलम फूँकने लगता, "बम-बम शंकर, दुष्टों को तंग कर, आमद बढ़ाकर, खर्ची को कम कर।" यह साधु वीरगंज तक यात्रियों के मनोरंजन का अच्छा साधन बना रहा।

हम लोग काठमांडो से रक्सौल वाले मार्ग से लौट रहे थे। यह संचार सेवा वाली डाक बस थी, जो अधिकतर स्थानों पर रुकती हुई चल रही थी। यह रास्ता भैरहवा वाले मार्ग से निकट का है। इधर वैसी सुरम्य घाटियाँ नहीं हैं। आगे सड़क बहुत ऊपर नीचे सर्पाकार होने लगी थी। सामान्य पहाड़ों के बीच सूदूर कहीं-कहीं धवल बर्फ़ीले पहाड़ भी शर्मीली दुल्हन की तरह झाँकते नज़र आए। दामन पहुँचकर बस कुछ देर के लिए खड़ी हो गई। यहाँ 'एवरेस्ट न्यू टावर' दिखाई पड़ा, जो भारत और नेपाल के संयुक्त सहयोग से बनाया गया है। हम लोगों ने अनेक पर्यटकों को उस पर चढ़ा हुआ देखा, जो आँखों में दूरबीन लगाए दूर-दूर तक का नजारा ले रहे थे।

हैंटोडा एक अच्छा-खासा क़स्बा है। यहाँ अनेक लघु उद्योग हैं। यहाँ से रक्सौल अब महज 55 कि. मीटर दूर है। इस शहरनुमा क़स्बे को बस छोड़ रही थी। पहाड़ों पर ऊँचे-ऊँचे शाल के सैकड़ों दरख़्त दिखाई पड़े, जो वन विभाग द्वारा लगाए गए लगते थे। सड़क के अगल-बगल कहीं लंबी और मोटी लकड़ियों के टाल भी दिखाई पड़े।

पथलैया एक बहुत बड़ा चौक है। यहाँ से जनकपुर जाने वाली सड़क रूस के सहयोग से बनी है। इधर ईख तथा गेहूँ की फसल भी दिखाई पड़ी। केले और अरहर (दाल) की खेती भी कहीं-कहीं क़ी गई थी। इधर गाँव थोड़े पास-पास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं, जिनमें बिजली पहुँच गई है। बस तेज़ चलने लगी थी। कुछ ही देर बाद हम लोग नेपाल की आख़िरी सीमा वीरगंज पहुँच गए। यह नेपाल का एक विकसित शहर है। यहाँ कृषि विकार संयत्रों का अच्छा कारख़ाना है। चावल तथा चीनी की मिलें हैं।

अचानक बस में बैठा साधु खिड़की के बाहर सिर निकालकर चिल्ला उठा– "नेपाली! अरे ओ नेपाली!!" एक नेपाली प्रहरी (सिपाही) पास आ गया। साधु पुनः मुखरित हुआ, "बच्चा! ज़रा बाबा को कहीं से गांजा पिला दे...देख, फिर बाबा तुम्हारे मुल्क में कभी नहीं आएगा, फिर कभी नहीं, हाँ।"

कुल मिलाकर नेपाल-यात्रा बड़ी सुखद अविस्मरणीय रही। सात मार्च, 1979 को हम लोग एक नेक, निश्छल एवं सुहृदय देश को अलविदा कर स्वदेश लौट आए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलते-चलाते—आइए आपको अपना घर घुमा दें

शायद आप पूछें, आपका घर (जो.मु., ग़ाज़ीपुर, उ.प्र.) भी कुछ देखने लायक़ है क्या? इसके उत्तर में मेरा प्रतिप्रश्न है कि क्या दुनिया में कोई ऐसी जगह भी है, जहाँ कुछ न कुछ देखने लायक़ न हो? चाहे वह सहारा का विशाल मरुस्थल हो या प्रायः जनशून्य, सुदूर बसा आइसलैंड। मेरी नज़र में दोनों देखने लायक़ हैं। तो असल सवाल जगह का नहीं, नज़रिए का है, क्यों? क्यों बाबा तुलसी की तरह मैं भी नहीं लिख सकता—'जन्म भूमि मम पुरी सुहावन, दिसि पूरब गंगहर बहे पावन।' और जब लिख सकता हूँ तो प्लीज़, मुझे अपनी गंगहर की बाबत कुछ और निवेदन करने की छूट दीजिए।

गंगा मेरी माँ है, तो गंगहर मेरी कई मौसियों में लगभग सबसे छोटी मौसी। और सभी को मालूम है, माँ से रत्ती भर भी कम नहीं होती मौसी की ममता। दूसरे शब्दों में कहें तो मेरी गंगहर माँ गंगा जी के गर्भ से उत्पन्न अनेक धाराओं जैसी एक अत्यंत छोटी क्षीण धारा है। इस नाते यह गंगाजी की एक बेटी भी है, और तब गंगा हमारी नानी माँ हुई। फिर तो गंगहर हमारी मौसी नहीं, सीधे माँ हुई। हम, हमारे समूचे ग्राम बासी माँ गंगहर की कोख जायी संतानें हैं, सगर्व कह सकते हैं। गोया कानपुर-काशी माफ़िक हम भी गंगा-गंगहर तीरी हैं—धीरे समीरे (जमुना न सही) गंगहर तीरे...तो ऐसी मौसी माँ की गोद में, दक्षिण से उत्तर तकरीबन बारह किलो मीटर वाला पुरमलसा से करीमुददीन पुर के मध्य, रेड़मार से खेमपुर तक पाँव पसारे मेरा गाँव—मेरी अमरावती, मेरी अलकापुरी (जोगा मुसाहिब), बहुत ही रम्य...ज़रा रुकिए..'है' लिखूँ या 'था'? कलम काँप उठी है, इसकी स्याही उगलती नोक लड़खड़ाने लगी है। था और है के बीच फँसा बेचारा मन-राम बदन, माँ गंगहर की बदहाली देख संप्रति घायल है। अत्यंत उदास है।...खैर छोड़िए भी।

मेरा पैतृक निवास ग़ाज़ीपुर (उ.प्र.) ज़िले का एक गौरवशाली गाँव है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गौरवशाली इसलिए कि भारत प्रसिद्ध पहलवान मंगलाराय जी मेरे ही गाँव-ज़िले के थे। मेरे गाँव में एक से बढ़कर एक साहित्य सेवी, संगीत प्रेमी, स्वतंत्रता सेनानी, चिकित्सक, अभियंता तथा प्रशासनिक अधिकारी आदि हुए हैं, किंतु इस गाँव को मंगला जी के अलावा महामल्ल कमला राय जी, हनुमान राय जी राजाराम यादव जी, कई खेलों के प्रदेश-स्तरीय अग्रणी खिलाड़ी पारस 'पटियाला', महीनों जेल की सज़ा काटने वाले दृढ़ निश्चयी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी नारद राय जी, स्वराज्य प्रेमी पशुपति राय, विशुद्ध गांधीवादी द्वारिका राय 'गौतम' एवं ग्राम-समाज सेवी शिवदेनी राय 'गौतम' आदि की वजह से भी मेरे गाँव को जाना जाता है।

आइए, अब आपको अपने जनपदीय मुख्यालय ग़ाज़ीपुर लिए चलते हैं। यह वाराणसी और बलिया के बीच बसा हुआ शहर है। इसकी थोड़ी-ज़्यादा कुछ सीमाएँ बक्सर (बिहार), मऊ, आजमगढ़ तथा जौनपुर को भी स्पर्श करती हैं। इस शहर का अधिकांश हिस्सा वाराणसी की ही भाँति गंगा के एक किनारे फैला हुआ है, जहाँ छोटे-बड़े कई मंदिर हैं, कच्चे-पक्के घाट हैं। गंगा के उस पार जाने के लिए नव निर्मित पक्का पुल है। संप्रति ग़ाज़ीपुर को बिहार (बक्सर) से जोड़ने वाली रेलवे लाइन भी बन रही है, जो पूर्व रेल राज्य मंत्री माननीय मनोज सिन्हा के प्रयास के चलते संभव हुआ है।

ग़ाज़ीपुर प्रगति के क्षेत्र में पिछड़ा एक पुराना शहर है। छोटे-पतले लाहौरी ईंटों से निर्मित कुछ सल्तनत या मुगलकालीन खंडहर आज भी इसकी प्राचीनता के द्योतक बने हुए हैं। दर्शनीय स्थलों के नाम पर यहाँ सिर्फ़ दो जगहें मशहूर हैं, पहली लार्ड कार्नवालिस का मकबरा तथा दूसरी अफीम फैक्ट्री, जिसकी संक्षिप्त चर्चा हम आगे करना चाहेंगे।

जहाँ तक साहित्य सृजन का क्षेत्र है, मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक ग़ाज़ीपुर ने देश को बहुत कुछ दिया है, जो प्रेरणाप्रद है, विशिष्ट है, मूल्यवान है। पुराने साहित्यकारों में मलिक मुहम्मद जायसी, ईश्वर दास तथा उस्मान का नाम अधिक उल्लेखनीय है। भुड़कुड़ा मठ से उद्भूत संत साहित्यकारों की भी यहाँ एक सुदीर्घ परंपरा रही है, जिनमें बूला, गुलाल तथा भीखा अधिक लोकप्रिय हुए हैं। अन्य साहित्य-सर्जकों में गोपाल राम गहमरी, रामचरित उपाध्याय तथा भागवत मिश्र के नाम मुख्य हैं।

भारत के सुप्रसिद्ध समाज सुधारक, राष्ट्रवादी क्रांतिकारी और किसान हितैषी नेता स्वामी सहजानंद सरस्वती एक अत्यंत ओजस्व वक्ता होने के साथ-साथ विद्वान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखक भी रहे। आपकी प्रायः दो दर्जन प्रकाशित पुस्तकों में कर्मकलाप, ब्रह्मर्षि वंश विस्तर, किसान क्या करें, गीताहृदय तथा ब्राह्मण समाज की स्थिति प्रमुख हैं। अनन्य देश भक्त नेता जी सुभाषचंद्र बोस इनसे पर्याप्त प्रभावित थे।

इधर के आधुनिक साहित्यकारों में पं. श्रीनाथ मिश्र, सिंहासन राय सिद्धेश, श्री कृष्णराय हृदयेश, श्री राम सिंह गहलौत, डॉ. भोलानाथ तिवारी, राही मासूम रजा, कुबेर नाथ राय, डॉ. पी. एन. सिंह, हृषीकेश जी, डॉ. जितेंद्र नाथ पाठक, रमाशंकर राय रेवती पुरी, डॉ. विवेकी राय एवं रामावतार आदि शताधिक साहित्यकारों की साहित्य साधना से भी ग़ाज़ीपुर की पहचान बनी।

आज़ादी के बाद ग़ाज़ीपुर में सन् 2014 से 19 के बीच पहली बार बड़े पैमाने पर विकास के कुछ उल्लेखनीय कार्य अवश्य हुए, जिसका अधिकांश श्रेय भू.पू. सांसद एवं केंद्रीय मंत्री श्री मनोज सिन्हा को जाता है।

और अब अंत में आप को ओपियम फैक्ट्री घुमाने ले चलते हैं, जिसका निर्माण अंग्रेज़ों ने कभी अपने व्यापारिक फ़ायदे के लिए किया था।

अपने पूर्वांचल (ग़ाज़ीपुर) में एशिया की लासानी अफीम फैक्ट्री :

अफीम एक नशीला पदार्थ है, जिससे प्रायः सभी लोग परिचित हैं। इसकी आरंभिक उपज पौधे के रूप में होती है। पूर्वी देशों में इसका उत्पादन अधिक होता है। इसका सेवन चीन में बहुत पहले से होता आया है। आज इसके सेवन करने वालों की संख्या पूर्वी देशों की अपेक्षा पश्चिमी देशों में अधिक है।

इस समय अफीम उत्पादन के क्षेत्र में भारत एशिया में सबसे आगे है। भारत का सबसे बड़ा अफीम तथा क्षारोद कारख़ाना ग़ाज़ीपुर (उ.प्र.) में है। यह गंगा के किनारे कलक्टरेट के समीप लगभग 45 एकड़ भूमि में फैला हुआ है। इसका निर्माण सर्व प्रथम 1820 ई. में किया गया। संप्रति कारख़ाने का जो मुख्य भवन है, वह प्रारंभ में ग़ाज़ीपुर जेल के पास था।

बहुत दिनों तक इस कारख़ाने का प्रबंध इस्ट इंडिया कंपनी की 'बनारस ओपियम एजेंसी' द्वारा होता रहा। आजकल इसका प्रबंध भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के अधीन है। इस कारख़ाने के निर्माण का मुख्य उद्देश्य चीन को अफीम निर्यात करना तथा अफीम से संबंधित दवाओं का निर्माण करना था। अब यह उद्योग मुख्य रूप से दो विभागों में बँटा हुआ है—अफीम विभाग तथा क्षारोद विभाग।

अफीम विभाग में देशी अफीम (कन्ट्रबैंड ओपियम) एकत्र करने के बाद उसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखाया जाता है। सूखी अफीम पैकेटों में भर-भरकर विश्व के विभिन्न देशों—अमेरिका, इंगलैंड, जर्मनी, रूस, जापान तथा कोरिया आदि को निर्यात किया जाता है। इस कारख़ाने में लगभग 3000 टन अफीम एक साथ रखी जा सकती है। इसमें 700 टन से अधिक अफीम प्रति वर्ष सुखाई जाती है। यह अफीम विभाग भी दो उप विभागों में विभाजित है—माल खाना आबकारी तथा धोईखाना। मालखाना उपविभाग में कच्ची अफीम एकत्रित की जाती है। आबकारी एक प्रक्रिया है, जिससे अफीम सुखाकर निर्यात के योग्य बनाई जाती है। विभाग में अफीम के बोरों को साफ़कर उन्हें निर्यात हेतु भरा जाता है। इस विभाग का कार्य प्रायः मौसमी है। इसमें अप्रैल से जून तक प्रति वर्ष अफीम ख़रीदी जाती है। अक्टूबर से दिसंबर तक सुखाने का काम किया जाता है। इस अवधि में लगभग 400 अतिरिक्त श्रमिक भर्ती किए जाते हैं। विभाग में प्रायः सवा सौ से अधिक श्रमिक स्थायी हैं।

इस कारख़ाने का क्षारोद विभाग 1944 में प्रारंभ हुआ। उस समय द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्वी क्षेत्र के लिए मार्फीन इंजेक्शन हेतु मार्फिया की बहुत ज़रूरत महसूस की गई। युद्ध के पश्चात भी यह विभाग चालू रहा, क्योंकि देश में दवा बनाने वाले उद्योगों को अफीम से बने हुए क्षारोद प्राप्त कराने का एक मात्र यही स्रोत था। इस विभाग में मार्फीन, कोडीन सल्फेट, डायोनिन तथा नारकोटिन आदि क्षाराव बनाए जाते हैं। इन क्षारावों की बढ़ती हुई माँग की पूर्ति के लिए यह विभाग अब तीन पाली में कार्य कर रहा है। इसकी वर्तमान क्षमता 6000 कि. ग्राम छाराव बनाने की है। इस विभाग में 400 से अधिक श्रमिक काम करते हैं। विभाग की उत्पादन पद्धति पुराने ढर्रे की है। अभी (1977 तक) भी कोई नवीन सुधार नहीं हो सका है।

उपर्युक्त विभागों के अलावा कारख़ाने के अंतर्गत कुछ अन्य विभाग भी हैं, यथा प्रशासन विभाग, सुरक्षा विभाग, इंजीनियरिंग विभाग, मुतफरिक विभाग, विद्युत विभाग, जनरल स्टोर आदि। सम्प्रति इन सभी विभागों के संयुक्त प्रयास से फैक्ट्री संगठित तथा नियमित रूप से कार्यरत है।

भारत में अफीम तथा क्षारोद कारख़ाने की दो प्रमुख इकाइयाँ कार्यरत हैं—उत्तर प्रदेश में ग़ाज़ीपुर तथा मध्य प्रदेश में नीमच। दोनों के मैनेजिंग डायरेक्टर भारत सरकार के नारकोटिक कमिश्नर होते हैं, जिनका कार्यालय ग्वालियर (म.प्र.) में है। स्थानीय अधिकारियों में सबसे बड़े अधिकारी महा प्रबंधक हैं जिनका पद डिप्टी नारकोटिक कमीश्नर का होता है। इस अधिकारी के अंतर्गत कारख़ाना प्रबंधक, अफीम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसायन शास्त्री, बिक्री प्रबंधक, श्रम कल्याण अधिकारी, एकाउंटेंट, प्रशासनिक अधिक्षक, इंजीनियर आदि होते हैं।

अफीम निर्यात से हमारे देश को अच्छी आय हो जाती है। वैसे तो यह एक विशेष मादक पदार्थ है, किंतु अनेक प्राण रक्षक दवाओं के निर्माण में इसके प्रयोग का बड़ा महत्त्व है। इसलिए विश्व के प्रय: सभी देशों को कमोबेश इसकी आवश्यकता है।

(भारत सरकार की पत्रिका 'योजना' में प्रकाशित यह आलेख 1980 से पूर्व का लिखा हुआ है, अत: इस समय तक फैक्ट्री के अंतर्गत निश्चय ही ढेर सारे परिवर्तन (विकास) हो चुके होंगे।)

●●●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGango... Funding IKS-MoE-...

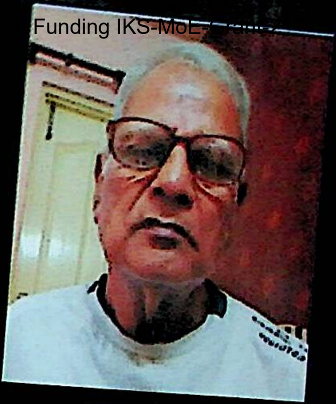

राम बदन राय

जन्म : 7 जुलाई, 1950 (माँ के द्वारा बताई जन्म ति 1948 के क्वार मास की अमावस्या) को गाज (उ.प्र.) ज़िले के जोगा मुसाहिब गाँव में।

गँवई गुहार (काव्य-संग्रह), फिरकी व (डोम जीवन पर आधारित उपन्यास), पर (कहानी-संग्रह), कुछ शरीफ कुछ शरारती (व्यंग संग्रह), शिवायन (खण्ड काव्य), कृष्णायन (प्रब काव्य), कश्यप कीर्ति (इति.), द्वार खड़ा अभिस (काव्य-संग्रह) तथा 'फागुन भर हमसे मति बोल (भोजपुरी काव्य-बारहमासा) पुस्तकें प्रकाशित। कु प्रकाशनाधीन। इनके अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाअ एवं आकाशवाणी से तक़रीबन तीन सौ रचनाओं क प्रकाशन-प्रसारण। वाराणसी से प्रकाशित 'जनवात एवं युसुफपुर-गाजीपुर से प्रकाशित 'अगुआ दस्त' अख़बारों में कुछ दिनों तक क्रमशः 'सोचनीय सोचते हैं' तथा 'राम बदन राय का रविवारीय रोजनामचा' स्थायी स्तंभों का लेखन।

'अरावली का नाहर', 'पिघल उठा चम्बल', 'कण-कण में भगवान', 'शेर-ए-कश्मीर' (युद्ध 1965) एवं 'औरंगजेब का सिरदर्द' शीर्षक नाटकों का लेखन एवं मंचीन निर्देशन। ग्रामीणों से चंदा माँगकर, साथ ही वैवाहिक कार्यक्रमों में नाट्यमंचन द्वारा धन उगाहकर, अपने गाँव में एक गर्ल्स स्कूल तथा शिवालय के नाम पर एक सार्वजनिक सभावास का निर्माण।

संप्रति, इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफ़सर पद से 2013 में अवकाशोपरांत, गाँव की खेती-गृहस्थी के साथ-साथ स्वतंत्र लेखन।

संपर्क : जोगा मुसाहिब, गाजीपुर (उ.प्र.)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

मूल्य : ₹ 490/-

ISBN 978-93-88799-49-2
9 789388 799492